UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182288
UNIVERSAL
LIBRARY

मण्डियाली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन

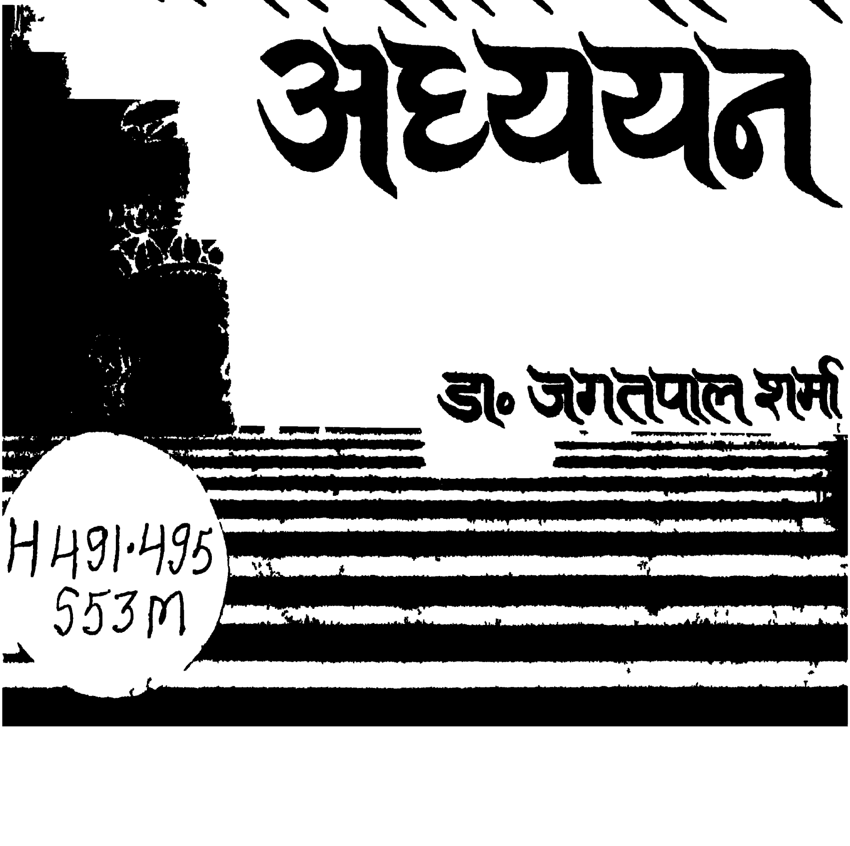

डा० जगतपाल शर्मा

H491.495
S53M

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 891.495 S53M Accession No. H 6688

Author [illegible]

Title [illegible]

This book should be returned on or before the date last marked below [illegible]

मण्डियाली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन

मण्डियाली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन

डॉ० जगतपाल शर्मा
हिन्दी विभाग
हिमाचल-प्रदेश विश्वविद्यालय

शब्द और शब्द
दिल्ली-आगरा

लेखक | डॉ० जगतपाल शर्मा
प्रकाशक | प्रवीण शर्मा
शब्द और शब्द
डी-118, अशोक विहार, दिल्ली-110052
संस्करण | प्रथम
मूल्य | 200 रुपये
मुद्रक | मानस प्रिंटिंग प्रेस, गांधीनगर, दिल्ली-110031

MANDIYALI KA BHASHA-SHASTRIYA ADHYAYAN
by Dr. Jagatpal Sharma Price: Rs 200-00

स्वर्गीय माँ तथा पिताजी
को
सादर समर्पित

भूमिका

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला की पी-एच० डी० उपाधि से अलकृत और विद्वानो द्वारा यथेष्ठ रूप से प्रशसित डॉ० जगतपाल शर्मा की प्रस्तुत शोधकृति कई अर्थों मे बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस शोधकृति की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमे हिमाचल प्रदेश की एक बहुत महत्त्वपूर्ण बोली मण्डियाली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, पहली बार, पूरे विस्तार और वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इस शोधकृति की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसे आधुनिक भाषाविज्ञान के प्रतिष्ठित विद्वान प्रोफेसर रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के निर्देशन मे सम्पन्न किया गया है। और इसमे डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा, डॉ० अशोक केलकर, डॉ० बाल गोविन्द मिश्र, डॉ० डी० एन० एस० भट्ट, डॉ० ए० एम० घाटगे, डॉ० पी० भास्कर राव, डॉ० मुरगइन आदि जाने-माने भाषा वैज्ञानिको का सहयोग भी मिला है। भाषाशास्त्रीय उच्चस्तरीय अध्ययन के लिए विश्रुत डिकन कालेज, पुणे और अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडु के भाषाविज्ञान सम्बन्धी उच्च शिक्षा सस्थानो तथा मैसूर के केन्द्रीय भाषा सस्थान मे उपलब्ध सुविधाओ का सम्यक् उपयोग करके डॉ० जगतपाल शर्मा ने इस शोध-प्रबन्ध को पर्याप्त श्रम और समझदारी के साथ वर्तमान रूप दिया है। अछूते शोध-विषय, योग्य निर्देशक, व्यवस्थित प्रशिक्षण और निष्ठा से सम्पन्न किए गए इस शोधप्रबध की एक विशेषता यह भी है कि हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग से सम्पन्न होने वाला यह भाषाविज्ञान सम्बन्धी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शोध-प्रबन्ध है।

भारतीय भाषाओ और बोलियो के सर्वेक्षण तथा भाषाशास्त्रीय अध्ययन का जो क्रम डॉ० ग्रियर्सन ने प्रारम्भ किया था, आगे चलकर उसे अधिक तथ्यपरक, अधिक विस्तृत और अधिक वैज्ञानिक रूप देने का काम व्यापक स्तर पर किया जाना चाहिए था, जो नही हुआ। यह बडे तोष का विषय है कि डॉ० जगतपाल शर्मा ने इस महत्त्वपूर्ण दिशा मे अच्छी पहलकदमी की है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि हिमाचल प्रदेश की एक बोली के व्यवस्थित भाषाशास्त्रीय अध्ययन का जो क्रम डॉ० जगतपाल शर्मा ने शुरू किया है, उससे प्रेरणा लेकर हिमाचल प्रदेश की अन्य महत्त्वपूर्ण बोलियो के व्यवस्थित भाषाशास्त्रीय अध्ययन भी प्रस्तुत किए जाएँ। मेरा विश्वास है कि इस शोध-ग्रंथ के प्रकाश मे आ जाने के बाद भाषावैज्ञानिक अध्ययन एव अनुसधान के प्रति निष्ठा रखने

वाले अन्य बहुत सारे शोध-छात्र आगे आएँगे और इस तरह हिमाचल प्रदेश की बोलियो का सम्यक् भाषाशास्त्रीय अध्ययन सम्भव हो सकेगा ।

आजकल श्रमसाध्य विषय और दिशा मे अनुसधान करने का उत्साह बहुत कम दिखाई पडता है । हिन्दी मे सास्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और भाषा-वैज्ञानिक अध्ययनो की बाढ तो अवश्य आई किन्तु इनके लिए शोधार्थियो ने उक्त ज्ञाना-नुशासनो को पूरी तरह समझने और उनमे प्रशिक्षित होने का प्रयास नही किया । डॉ० जगतपाल शर्मा की इस बात के लिए प्रशसा की जानी चाहिए कि 'मण्डियाली' बोली के अध्ययन के लिए इन्होने भाषाशास्त्रीय अनुशासन को अच्छी तरह समझने और उसमे प्रशिक्षित होने के बाद ही इस शोध-प्रबन्ध को वर्तमान रूप दिया है । मेरी मगल-कामना है कि डॉ० जगतपाल शर्मा स्वय भी इस दिशा मे आगे बढे और अन्य शोधको को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा दें । अस्तु ।

—राजदेव सिंह

दो शब्द

प्रस्तुत ग्रन्थ मेरे पी-एच० डी० के शोध-प्रबन्ध 'मण्डियाली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन' का संशोधित रूप है।

'मण्डियाली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन' विषय को चुनते हुए मेरे सामने दो समस्याएँ थी। एक तो यह कि इस बोली का अध्ययन भाषिकी के संदर्भ मे अभी तक नही हो पाया है। दूसरी यह कि अन्य बोलियो की तरह यह बोली भी थोडी-थोडी दूरी पर बदलती रहती है। इसलिए विषय के अछूतेपन और भाषिकी की तकनीकी विशेषताओ के आधार पर इसका विश्लेषण और भी कठिन मालूम पडने लगा। लेकिन् हिमाचल प्रदेश की सम्भवत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बोली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन अपने आप में महत्त्वपूर्ण तो होगा ही, इसकी देखा देखी पहाड की अन्य आचलिक बोलियो के भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की ओर भी लोगो का ध्यान आकृष्ट हो सकता है।

'मण्डियाली' बोली मेरी मातृ भाषा तो नही है, किन्तु जहाँ पर इसका क्षेत्र समाप्त होता है, वहो से मेरी मातृ-भाषा 'बिलासपुरी' की शुरुआत होती है। 'बिलासपुरी' और 'मण्डियाली' की व्याकरणिक-सरचना, स्वनिम-प्रक्रिया तथा रूप-प्रक्रिया मे बहुत कुछ साम्य है। इसलिए मै मण्डियाली के निकट भी हूँ तथा दूर भी। ऐसी स्थिति मे मैं इस अध्ययन मे उक्त बोली को जहाँ तक सम्भव हो सका है पूरी वस्तु-निष्ठता के साथ विवेचित करने के लिए प्रयत्नशील रहा हूँ।

इस अध्ययन के सिलसिले मे मुझे बहुत पापड बेलने पडे हैं। कई वर्षों तक अपनी अध्ययन क्षमता को बढाने के लिए शिमला ने अन्नामलाई-विश्वविद्यालय, [उच्च शिक्षा-सस्थान, भाषा-विज्ञान, तामिलनाडू] जाना पड़ा है। मगर अन्नामलाई-विश्वविद्यालय जाने से पूर्व यू० जी० सी० [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग] द्वारा भाषा विज्ञान ग्रीष्मकालीन शिविर जो कि पुणे-डेक्कन-कॉलेज मे मई-जून, 1975 मे आयोजित किया गया था, मे शामिल होने का अवसर मिला। यदि सच पूछा जाए तो यही शिविर, मेरे भाषा विज्ञान के अध्ययन की आधार-शिला कहा जा सकता है। इस अवसर के लिए मै केन्द्रीय भाषा-सस्थान, मनसागगोत्री, मैसूर के निदेशक महोदय डॉ० डी० पी० पट्टनायक तथा डेक्कन-कॉलेज [उच्च शिक्षा सस्थान भाषा-विज्ञान, पुणे] के निदेशक महोदय डॉ० अशोक केलकर का अत्यन्त आभारी हूँ। इस शिविर मे

आए भाषाविदो—डॉ० बालगोविन्द मिश्र, डॉ० डी० एन०एस० भट्ट, डॉ० ई० अन्नामलाई, डॉ० ए० एम० घाटगे तथा डॉ० पी० भास्कर राव आदि का अत्यन्त आभारी हूँ।

इसके पश्चात् 1976-1977, दिसम्बर, जनवरी, मे अन्नामलाई-विश्वविद्यालय 'स्वन-प्रक्रिया' के लिए विशेष अध्ययन हेतु जाना पडा है। इसके पश्चात् 1977-78 दिसम्बर-जनवरी, मे फिर अन्नामलाई-विश्वविद्यालय 'स्वनप्रक्रिया' सम्बन्धी अनेक समस्याओ को सुलझाने के लिए जाना पडा। 'स्वन-प्रक्रिया' विशेष-अध्ययन तथा उलझनो के समाधान हेतु मै अन्नामलाई-विश्वविद्यालयो के निदेशक महोदय [भाषाविज्ञान विभाग] प्राचार्य एस० अगस्थियालिंगम तथा स्वन-प्रक्रिया विशेषज्ञ, डॉ० मुरगइयन का अत्यन्त आभारी हूँ। 'स्वन प्रक्रिया' सम्बन्धी अनेक समस्याओ के समाधान-हेतु मैं डॉ० पी० भास्कर राव का भी अत्यन्त आभारी हूँ।

फरवरी-मार्च, 1979 मे मुझे डेक्कन-कॉलेज, पुणे, केन्द्रीय भारतीय भाषासस्थान, मनसागगोत्री-मैसूर तथा उसके पश्चात् अन्नामलाई-विश्वविद्यालय, पुस्तकालयो मे जाना पडा। मै उक्त सस्थानो तथा विश्वविद्यालय के निदेशको का भी अत्यन्त आभारी हूँ। इसी तरह अपनो अनक समस्याओ के समाधान हेतु अनेक सस्थानो तथा विश्वविद्यालयो मे जाता रहा हूँ। इसके अतिरिक्त अनेक समस्याओ को लेकर प्रो० सिद्धेश्वर वर्मा स मिलता रहा हूँ। इसी सदभ मे डॉ० भोलानाथ तिवारी से मिलता रहा हूँ और उनके सुझावो के लिए भी अत्यन्त आभारी हूँ।

मै अपन परिवार क सभी सदस्यो के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनकी असीम अनुकम्पा से यह शोध-प्रबन्ध सम्पन्न हो सका।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के लिए सूचक [इन्फार्मेंट] पण्डित भवानीदत्त शास्त्री जी हैं—

आयु • • ••• ••65 वर्ष शिक्षा • • स्नातक निवास स्थान•••••• • समखेत्तर मुहल्ला-मण्डी कार्य • • •• ••सचालक साहित्य सदन-मण्डी, हिमाचल प्रदेश।

शोध-प्रबन्ध की सामग्री के लिए शास्त्री जी को अनेक बार परेशान किया है तथा उन्होने हर तरह स मुझे पूरा-पूरा सहयोग दिया है। आवश्यकतानुसार सूचक के रूप मे किसी प्रकार का सन्देह दूर करन के लिए यादवेन्द्र शर्मा [शोध-छात्र, एजूकेशन, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय] से भी पूरी सहायता ली गई है। मै इनके सहयोग के लिए अत्यन्त आभारी हूँ।

विद्वानो का मत है कि जिन विद्वानो के प्रति आभार व्यक्त करना शब्दो के माध्यम से सम्भव न हो उनके प्रति मौन अभिव्यजना सबसे उचित माध्यम है। मै अपने निदेशको के प्रति मौन रहना उचित समझता हूँ। निदेशक डॉ० बच्चन सिह, प्राचार्य एव अध्यक्ष, हिन्दी विभाग तथा अधिष्ठाता, हि० प्र० विश्वविद्यालय, ने जहाँ एक

ओर विषय को लेकर प्रोत्साहन दिया तथा हर तरह से सुविधा प्रदान की वहाँ दूसरी ओर निदेशक डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव [आचार्य एव अध्यक्ष, भाषा विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली] ने विषय को लेकर मेरी हर गुत्थी का समाधान किया।

विषय-सम्बन्धी समस्याओ के समाधान का श्रेय जहाँ कुछ अन्य विद्वानो को जाता है, वहाँ पर मेरी हर समस्या के समाधान का श्रेय डा० श्रीवास्तव जी को जाता है। एक निदेशक ने जहाँ मुझे मार्ग दर्शाया दूसरे निदेशक ने मार्ग पर चलना तथा आगे बढना सिखाया। यही कारण है, मैं निदेशको के प्रति चुप रहना ही उचित समझता हूँ।

मैं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला का भी आभारी हूँ, जहाँ से मुझे इस विषय पर शोध-कार्य करने के लिए छात्रवृत्ति मिली, जिससे मेरी कार्य क्षमता मे अभिवृद्धि हुई।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पुस्तक रूप मे लाने का श्रेय डॉ० राजदेव सिह, प्रो० एव अध्यक्ष हिन्दी विभाग, हिमाचल-प्रदेश विश्वविद्यालय को भी जाता है। अत. मैं मैं उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ।

—जगतपाल शर्मा

सकेत तथा संक्षेप

स	=	स्वर [ह्रस्व]
स ·	=	स्वर [दीर्घ]
स	=	अनुनासिक स्वर [ह्रस्व]
स :	=	अनुनासिक स्वर [दीर्घ]
स	=	रूपस्वन-प्रक्रिया मे 'स' व्यजन
व	=	व्यजन
व	=	रूपस्वन-प्रक्रिया मे ऐच्छिक व्यजन
पृ०	=	पृष्ठ
/ /	=	स्वन-प्रक्रिया मे स्वनिम लेख-चिन्ह तथा रूप-प्रक्रिया मे रूपिम लेख-चिन्ह
[ ]	=	स्वन-प्रक्रिया मे उपस्वन लेख-चिन्ह तथा रूप-प्रक्रिया मे सरूप लेख-चिन्ह
{ }	=	रूपिम लेख चिन्ह
√	=	धातु लेख-चिन्ह
≈	=	मुक्त-वितरण या मुक्त-वितरक लेख चिन्ह
→	=	रूपस्वन प्रक्रिया तथा रूपप्रक्रिया मे परिवर्तित लेख चिन्ह
ϕ	=	शून्य रूपिम लेख चिन्ह या रूपिम की अनुपस्थिति लेख-चिन्ह
#	=	रूपिम या शब्द सीमा लेख-चिन्ह
००-	=	रूप-प्रक्रिया मे सरूप प्रतिबन्धित लेख चिन्ह
अ०	=	अघोष
अ० धा०	=	अकर्मक-धातु
अ० पु०	=	अन्य-पुरुष
अल्प०	=	अल्पप्राण
अव्य०	=	अव्यय
आज्ञा०	=	आज्ञार्थक
अनिश्च० वा० सर्व०	=	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
उ० पु०	=	उत्तम पुरुष
एक व०	=	एक वचन
क्र० वा० वि०	=	क्रमवाचक विशेषण
क्रि०	=	क्रिया

क्रि० प०	=	क्रिया-पदबन्ध
क्रि० प० स०	=	क्रिया पदबन्ध सरचना
क्रि० वि०	=	क्रिया-विशेषण
क्रि० वि० प०	=	क्रिया-विशेषण पदबन्ध
क्रि० प्राति०	=	क्रिया-प्रातिपदिक
गणना० मू० वि०	=	गणनामूलक-विशेषण
प० स०	=	पदबन्ध संरचना
पर प्र०	=	पर प्रत्यय
प्र० प्रे० धातु	=	प्रथम प्रेरणार्थक-धातु
पु०	=	पुल्लिग
पू०	=	पूरक
पू० प०	=	पूर्ण पक्ष
प्रभा० वा० वि०	=	प्रभागवाचक-विशेषण
बहु० व०	=	बहुवचन
भा० स०	=	भावार्थक-सज्ञा
भा० वा० स०	=	भाववाचक सज्ञा
म० पु०	=	मध्यम पुरुष
महा०	=	महाप्राण
मु० क्रि०	=	मुख्य-क्रिया
द्वि० प्रे० धातु	=	द्वितीय प्रेरणार्थक-धातु
निश्च० वा० सर्व०	=	निश्चयवाचक सर्वनाम
निर्दे०	=	निर्देशक
वा०	=	वाक्य
विशे०	=	विशेषण
वि० प्राति०	=	विशेषण प्रातिपदिक
स०	=	सघोष
स०	=	सज्ञा
सर्व०	=	सर्वनाम
स० प०	=	सज्ञा-पद [सज्ञा-पदबन्ध]
स० प्राति०	=	सज्ञा-प्रातिपदिक
समु०	=	समुदायवाचक
सयो०	=	सयोजक
स्त्री०	=	स्त्रीलिंग
सके०	=	संकेतक
सहा० क्रि०	=	सहायक-क्रिया
सं० प० स०	=	सज्ञा पदबन्ध संरचना

प्रस्तावना

भाषा और सस्कृति की दृष्टि से हिमाचल प्रदेश अपनी विलक्षणता और सपन्नता मे अद्वितीय है। भाषा और संस्कृति का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। पर इधर सस्कृतियो के विभिन्न स्तरो का उद्घाटन करने के लिए भाषा का अध्ययन अनिवार्य माना जाने लगा है। लेकिन अभी तक अपने देश मे भाषाओ और बोलियो का भाषा शास्त्रीय (लिंग्युस्टिक) अध्ययन अपनी प्रारम्भिक अवस्था मे है। यहाँ तक कि ग्रियर्सन के बाद यहाँ की बोलियो का पुन भाषा सर्वेक्षण भी नही हो सका है। मैदानो की कुछ बोलियो का विस्तत भाषा-शास्त्रीय अध्ययन किया गया है, किन्तु इस देश के सीमान्त प्रदेशो की बोलियो की ओर लोगो का ध्यान कम गया है, जबकि भाषा-शास्त्रीय दृष्टि के अलावा सास्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से भी इनके अध्ययन का महत्त्व है।

भाषा-शास्त्रियो ने इस प्रदेश की अनेक बोलियो का उल्लेख किया है, इस प्रदेश मे कुल कितनी बोलियाँ हैं, उनका भौगोलिक प्रसार क्या है, उनकी जातीय सस्कृति की प्रकृति क्या है, आदि से मेरे प्रबन्ध का कोई मतलब नही है। लेकिन विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण इस प्रदेश को बोलियो की दृष्टि मे दो भागो मे बाँट सकते हैं— पहला भाग वह है, जिसमे भारोपीय परिवार की बोलियाँ हैं, और दूसरा भाग वह है जो तिब्बत की सीमा से मिला है और उसमे तिब्बतो-बर्मन परिवार की बोलियाँ हैं।

मण्डियाली[1] भारोपीय परिवार की बोली है जो हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिला मे बोली जाती है, इसलिए इसके अध्ययन मे इसी परिवार की भाषिक-सरचना को ध्यान मे रखा गया है। इस प्रदेश की केन्द्रीय बोली होने के कारण इसमे विभिन्न बोलियो के शब्द तो मिल जाएँगे, लेकिन इसकी मूल-सरचना, हिन्दी की मूल-सरचना से लगभग मिलती-जुलती है। इसके आधार पर आगे चलकर कोई मध्यवर्ती सुरक्षित सस्कृति का अध्ययन कर सकता है।

मण्डी जिला पूर्व मे कुल्लू जिला से तथा दक्षिण-पश्चिम मे शिमला तथा सोलन जिलो से तथा पश्चिम मे बिलासपुर तथा हमीरपुर जिलो से तथा उत्तर मे काँगडा

---

1 G. A Grierson, Linguistic Survey of India, Volume IX, part IV, Page 373.

जिला से घिरा है । इसका क्षेत्र 4 0 (7 2) वर्ग कि० मी० तथा जनसंख्या 5.15, 180 (14 9) व्यक्ति जो कि 1971 की जनगणना-रिपोर्ट के अनुसार है ।'[1]

मण्डी जिला छ. तहसीलो मे बँटा है—

(1) जोगिन्द्र नगर, (2) सरकाघाट, (3) मण्डी सदर, (4) सुन्दर नगर, (5) चिच्योट तथा (6) करसोग । तहसील मण्डी सदर जहाँ से प्रस्तुत अयध्यन के लिए सामग्री सकलित की गई है, मण्डी जिला की केन्द्रीय तहसील है ।

मण्डियाली का मूल रूप हमे केन्द्रीय तहसील मण्डी सदर मे ही मिलता है । वैसे निम्नांकित पक्तियाँ यहाँ भी सही उतरती हैं—

'चार कोस पर बदले पाणी ।
आठ कोस पर बदले बाणी ।'

अभी तक हिमाचल प्रदेश की दो ही बोलियो का अध्ययन प्रस्तुत किया जा सका है—'कांगडी' तथा 'कुल्लुई का । दोनो ही भारोपीय-परिवार की बोलियाँ हैं। कांगडी पर डॉ० श्यामलाल शर्मा का कार्य भाषा-शास्त्रीय दृष्टि से पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है । 'कुल्लुई' पर भालु राम ठाकुर के कार्य का भी अपना महत्त्व है । जहाँ तक तिब्बतो-बर्मन परिवार का सवाल है, इस परिवार को लेकर लोक-साहित्य पर एक-मात्र कार्य डॉ० बशीराम शर्मा का शोध-प्रबन्ध 'किन्नर लोक-साहित्य' हमारे सामने आता है । 'मण्डियाली' के लोक गीतो पर डॉ० काशीराम ने एक शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है, लेकिन 'मण्डियाली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन' इतने विस्तार मे पहली बार प्रस्तुत किया जा रहा है ।

इस अध्ययन को प्रस्तुत करने मे मैंने आधुनिक भाषा शास्त्रीय प्रविधियो का प्रयोग किया है । प्रस्तुत अध्ययन के लिए जिन सूचको का चयन किया गया है, वे तह-सील मण्डी सदर के निवासी हैं तथा वे मण्डियाली का ही प्रयोग करते हैं । केवल सम्पर्क रूप मे अन्य लोगो से सामान्य बातचीत मे हिन्दी का प्रयोग भी करते हैं और इनकी भाषा मे बहुत चर्चित अग्रेजी के शब्दो का प्रयोग भी मिलता है ।

मण्डियाली मे लिखित सामग्री नही के बराबर है, लेकिन अब हमे छुटपुट लेख आदि मण्डियाली मे मिल जाते हैं । मण्डियाली को देवनागरी लिपि मे ही लिखा गया है । इसमे लिखित साहित्य एक तरह से बिल्कुल नही है । साहित्य के नाम पर मौखिक साहित्य ही देखने सुनने को मिलता है, जैसे लोक गीत, लोक कथाएँ आदि । मण्डियाली और उसका लोक साहित्य विषय पर हेमकान्त कात्यायन ने कार्य किया है । अत· इसका विवेच्य, लोक-साहित्य ही रहा है । भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का जहाँ तक सवाल है, इस प्रकार का अध्ययन नही हुआ है । इसलिए सरचनात्मक (विवर-

---

2. Census Report of India, 1971, Statistical outline of Himachal Pradesh, Page 11.

णात्मक) अध्ययन के आधार पर इसे पहला भाषा-शास्त्रीय या वैज्ञानिक अध्ययन माना जा सकता है। जो शक्ति और सीमा पहले किसी भाषा के अध्ययन के पहले प्रयास की होती है, वह इसमे भी देखी जा सकती है।

इस अध्ययन को प्रस्तावना, परिशिष्ट और ग्रन्थ-सूची के अतिरिक्त चार प्रमुख अध्यायो मे व्यक्त किया गया है—

(1) स्वन-प्रक्रिया।

(2) रूप-स्वन-प्रक्रिया।

(3) रूप-प्रक्रिया तथा

(4) वाक्य-विन्यास।

बोलियो की अन्य भाषा-विश्लेषण सामग्री मे जिस चीज का अभाव खटकता रहा है, वह है 'वाक्य-विन्यास' का क्षेत्र। पहले तीन का विवेचन तो मिल जाता है, पर वाक्य-विन्यास का क्षेत्र प्राय अछूता ही रहा है। इस अध्ययन मे इसके सम्बन्ध मे भी सक्षेप मे विचार करने का प्रयास रहा है।

शोध-प्रबन्ध की विशेषता दो वस्तुओ मे निहित है। एक तो इसमे कि यह मण्डियाली बोली का पहला भाषा-शास्त्रीय अध्यन है, दूसरी इसमे कि इस अध्ययन मे भाषा-शास्त्रीय प्रविधियो का प्रयोग किया गया है। आजकल प्रत्येक शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावना मे मौलिकता का दावा किया जाता है। मेरा वैसा दावा नही है। पर इतना अवश्य है कि इस बोली की भाषा-वैज्ञानिक सरचना का पहली बार विश्लेषण किया गया है। इस अर्थ मे इसे मौलिक कहा जा सकता है।

—जगतपाल शर्मा

दिषय-सूची

भूमिका 2

दो शब्द 4

सकेत 37

प्रस्तावना 11

मानचित्र

स्वन-प्रक्रिया(फोनोलोजी) 17—106

स्वर-ध्वनियाँ, व्यजन-ध्वनियाँ, स्वनिमिक-गणना, खण्डात्मक स्वनिम, स्वर-स्वनिम, मूल स्वर, सध्यक्षर स्वर, व्यजन-स्वनिम, अधिखण्डात्मक स्वनिम, दीर्घता (लैथ), आघात, सगम, प्राणत्व तथा तान, अनुनासिकता, स्वनिम तथा उनके उपस्वनो का वितरण, स्वर स्वनिम तथा उनके उपस्वन, व्यजन स्वनिम तथा उनके उपस्वन, व्यतिरेक-युग्म, आदि स्थिति मे स्वर-व्यतिरेक, मध्य स्थिति मे स्वर-व्यतिरेक, अन्त्य स्थिति मे व्यतिरेक-युग्म, व्यतिरेक युग्म-व्यजन, अधिखण्डात्मक-स्वनिम, मात्रात्मक-अधिखण्डात्मक स्वनिम, स्वर-दीर्घता, व्यजन-दीर्घता, गुणात्मक-अधिखण्डात्मक स्वनिम, आघात, बलात्मक स्वराघात, शब्द बलाघात, वाक्य बलाघात, सगीतात्मक-स्वराघात या सुर, तान, अनुतान(स्वर लहर), सगम, आतरिक सगम, वाक्य सीमातिक विराम, प्राणत्व तथा तान, अनुनासिकता, अक्षर-व्यवस्था, अक्षरो के प्रकार के आधार पर, शब्दो के आदि मे, स्वरात अक्षर, व्यजनात अक्षर, शब्दो के मध्य मे, शब्दो के अन्त मे, अक्षरो की सख्या के आधार, एकाक्षरिक-शब्द, स्वरात अक्षर, व्यजनात अक्षर, द्विआक्षरिक-शब्द, स्वरात अक्षर, व्यजनात अक्षर, त्रिआक्षरिक-शब्द, चतुर्आक्षरिक-शब्द, पचमाक्षरिक-शब्द, स्वरानुक्रम, दो स्वरो का अनुक्रम, आदि स्वरानुक्रम, मध्य स्वरानुक्रम, अन्त्य स्वरानुक्रम, तीन स्वरो का अनुक्रम, आदि स्वरानुक्रम, अन्त्य स्वरानुक्रम, चार स्वरो का अनुक्रम, व्यजन-गुच्छ, (कान्सोनैंट क्लस्टंज) द्विव्यजन-गुच्छ।

पस्वन-प्रक्रिया (मार्फोफोनोलोजी) 107—116

सामान्य-परिचय,

संज्ञा-पद (नाउन्स) 117—260

स्थिति वर्ग, (पोजिसन क्लासिस), सज्ञा-पद, सामान्य सज्ञापद, मूर्त सज्ञा-पद, भाववाचक सज्ञा-पद, सख्यावाचक सज्ञा-पद, राशिवाचक सज्ञा-पद, चेतन सज्ञा-पद, अचेतन सज्ञा-पद, मानव सज्ञा-पद, अमानव संज्ञा-पद, जातिवाचक सज्ञा-पद, व्यक्तिवाचक सज्ञा-पद, बधुतावाचक सज्ञा-पद, अबधुतावाचक सज्ञा-पद, बधुतावाचक सज्ञा-पद, सामान्य बधुतावाचक सज्ञा-पद, अबधुतावाचक सज्ञा-पद, चेतन सज्ञा-पद अचेतन सज्ञा-पद, मानवीय सज्ञा-पद, अमानवीय सज्ञा पद, व्युत्पादी सज्ञापद, मूर्त सज्ञापद, भाववाचक सज्ञापद, पूर्व प्रत्यय, सज्ञा प्रातिपदिको से व्युत्पन्न, पर-प्रत्यय, सज्ञा प्रातिपदिको से व्युत्पन्न, विशेषण प्रातिपदिको से व्युत्पन्न, क्रिया प्रातिपदिको से व्युत्पन्न, लिग-विधान, सामान्य सज्ञापदो के लिग, सामान्य सज्ञापद चेतन-वर्ग, सामान्य सज्ञापद अचेतन-वर्ग, व्युत्पादी सज्ञापदो के लिग, व्युत्पादी सज्ञापद चेतन-वर्ग, व्युत्पादी सज्ञापद अचेतन-वर्ग, 'अकारान्त' स्त्रीलिग सज्ञापद, ईकारान्त पुल्लिग सज्ञापद, वचन-विधान, एकवचन द्योतक सज्ञापद, बहुवचन द्योतक सज्ञापद, पुल्लिग बहुवचन द्योतक सज्ञापद, स्त्रीलिग बहुवचन द्योतक सज्ञापद, पुल्लिग बहुवचन परप्रत्यय, स्त्रीलिग बहुवचन परप्रत्यय, कारक चिह्न, कर्तृवाचक, कर्मकारक, करणकारक, सम्प्रदान कारक, अपादान कारक, अधिकरण कारक, सम्बन्धवाचक, सहवाचक, प्रयोजनवाचक, सर्वनाम पद, पुरुषवाचक सर्वनाम पद, उत्तम पुरुष एकवचन, प्रथम पुरुष बहुवचन, मध्यम पुरुष एकवचन, मध्यम पुरुष बहुवचन, अन्य पुरुष एकवचन स्त्रीलिग, अन्य पुरुष बहुवचन पुल्लिग तथा स्त्रीलिग, निश्चयवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक एकवचन, निश्चयवाचक एकवचन स्त्रीलिग, निश्चयवाचक बहुवचन पुल्लिग तथा स्त्रीलिग, निश्चयवाचक सर्वनाम पद, अनिश्चयवाचक सर्वनाम पद, अनिश्चयवाचक पुल्लिग सर्वनाम पद, अनिश्चयवाचक एकवचन स्त्रीलिग सर्वनाम पद, निजवाचक सर्वनाम पद, सम्बन्धवाचक सर्वनाम, सम्बन्धवाचक एकवचन पुल्लिग-पद, सम्बन्धवाचक एकवचन स्त्रीलिग सर्वनाम-पद, सम्बन्धवाचक बहुवचन पुल्लिग तथा स्त्रीलिग सर्वनाम पद, प्रश्नवाचक सर्वनाम पद, मानववाचक सर्वनाम पद, मानववाचक एकवचन पुल्लिग सर्वनाम पद मानववाचक एकवचन स्त्रीलिग सर्वनाम पद, मानववाचक बहुवचन पुल्लिग तथा स्त्रीलिग सर्वनाम पद, अमानववाचक सर्वनाम पद, विशेष पद, वर्गविकारी विशेष पद, उपवर्ग-1, उपवर्ग-2, उपवर्ग-3, वर्गविकारी विशेषण पद, उपवर्ग-1, वर्ग-1 विकारी विशेषण पद, वर्ग-2 अविकारी विशेषण पद, सख्यावाचक विशेषण

पद, गणनामूलक संख्यावाचक पद, मूल सख्यावाचक पद, व्युत्पन्न संख्यावाचक पद, क्रमसूचक सख्यावाचक पद, समूहवाचक सख्यावाचक पद, गुणात्मक सख्यावाचक पद, अपूर्ण सख्यावाचक पद, योगज तथा घटन सख्यावाचक पद, क्रियापद, मूल क्रिया पद या धातु, अकर्मक धातु, सकर्मक धातु, अकर्मक तथा सकर्मक धातुएँ, योगिक धातु, प्रेरणार्थक धातु, प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक धातुओ मे अन्तर, प्रथम प्रेरणार्थक, द्वितीय प्रेरणार्थक, क्रिया धातु, आक्षरिक व्यवस्था, असमापक पक्ष, अभ्यासित पक्ष, सातत्य पक्ष, समापक पक्ष, सहायक क्रिया, प्रकार मूडज, निश्चयार्थक, वर्तमान निश्चयार्थक, अपूर्ण वर्तमान, अभ्यासित निश्चयार्थक, आदर-सूचक, निषेध अभ्यासित वर्तमान निश्चयार्थक, प्रश्नवाचक अभ्यासित वर्तमान निश्चयार्थक, सातत्य वर्तमान, पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थक, भूत निश्चयार्थक, अपूर्ण भूत निश्चयार्थक, निश्चयार्थक अभ्यासित भूत, निश्चयार्थक सातत्य भूत, पूर्ण भूत निश्चयार्थक, भविष्यत् निश्चयार्थक, अनिश्चयार्थक, आज्ञार्थक, इच्छार्थक, विध्यर्थक, वर्तमान विध्यर्थक, भूत विध्यर्थक, अनुमानित, वर्तमान अनुमानित, अनुमानित सातत्य वर्तमान, सदिग्ध, काल, वर्तमान काल, सामान्य वर्तमान काल, अपूर्ण वर्तमान काल, पूर्ण-वर्तमान, भूतकाल, सामान्य भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, भविष्यत् काल, सामान्य भविष्यत् काल, भावार्थक सज्ञा, भावार्थक-सज्ञा, विशेषण के रूप मे, भावार्थक सज्ञा (प्रत्यय), भावार्थक सज्ञा, भविष्यत् काल द्योतक, कृदन्त विशेषण तथा निरपेक्षिक, कृदत विशेषण, वर्तमान कालिक कृदत विशेषण, वर्तमान कालिक कृदत 'विशेषात्मक' प्रयोग, वर्तमान कालिक कृदत 'विशेषात्मक' प्रयोग, वर्तमान कालिक कृदत 'विधेयक' प्रयोग, वर्तमान कालिक कृदत सज्ञा प्रयोग, भूत कालिक कृदत विशेषण, भूत कालिक कृदत विशेषणात्मक प्रयोग, भूतकालिक कृदत 'क्रिया विशेषणात्मक' प्रयोग, भूतकालिक कृदत 'सज्ञा' प्रयोग, निरपेक्षिक, सयुक्त निरपेक्षिक, परसर्ग 'वाला≈ओला', 'सज्ञा' के रूप मे, विधेयक' के रूप मे, सयुक्त क्रियाएँ, मुख्य क्रिया 'धातु', मुख्य क्रिया, भावार्थक सज्ञा (तिर्यक् रूप), मुख्य क्रिया, (वर्तमान कालिक कृदत), मुख्य क्रिया (भतकालिक कृदत), क्रिया विशेषण, स्थानवाचक क्रिया-विशेषण, कालवाचक क्रिया-विशेषण, रीतिवाचक क्रिया-विशेषण, परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण, युक्त-पद, पूर्वाश्रयी, निश्चयवाचक पूर्वाश्रयी, प्राक्सिमेट निश्चयवाचक पूर्वाश्रयी, प्रश्नवाचक पूर्वाश्रयी, मध्याश्रयी अवधारक, सयोजक (कन्जीक्टिवज), सयोजक (कन्जक्टिवज), नियोजक, पश्चाश्रयी, रीतिवाचक युक्तपद, परिमाणवाचक युक्तपद, दिशावाचक युक्तपद, स्थितिवाचक युक्तपद, विस्मयादिबोधक, हर्षबोधक, शोकबोधक, अनुमोदन-बोधक, तिरस्कारबोधक, स्वीकृतिबोधक, सम्बोधन-बोधक ।

वाक्य-विन्यास 261—303

सामान्य परिचय, सज्ञा पदबध, अनिर्धारित, निर्धारित, समुदायवाचक, परि-बाधक (लीमिटरज), परिमाणक, परिमाणक सख्यावाचक, परिमाणवाचक, परिमाणक-बलात्मक, प्रतिबन्धित, समावेशित, निश्चयवाचक, घटक 'क', कर्त्ता-वर्ग, क्रिया-पदबध, क्रिया-विशेषण, अन्विति नियम ।

निष्कर्ष 304—309

स्वन-प्रक्रिया, स्वनिम, स्वनिम वितरण, द्वित्व व्यजन या व्यजना दीर्घता, स्वरानुक्रम, व्यजन-गुच्छ, अमर व्यवस्था, रूपस्वन प्रक्रिया, रूप-प्रक्रिया, सज्ञा-पद, लिंग-विधान, वचन-विधान, सर्वनाम-पद, विशेषण-पद, सख्यावाचक विशेषण-पद, पक्ष, प्रकार, काल, कृदत-विशेषण तथा निरपेक्षिक, क्रिया-विशेषण, युक्त-पद, वाक्य-विन्यास, अनिर्धारित, निर्धारित, परिमाणक, परि-माणवाचक, परिमाण बलात्मक, क्रिया पदबध ।

परिशिष्ट 310—331

मामग्री, पचतत्रा री कथा, हिन्दी रूपान्तर, (पचतत्र की कहानी) ।

ग्रन्थ-सूची 332—339

*

MAP OF DISTT. MANDI HIMACHAL PRADESH

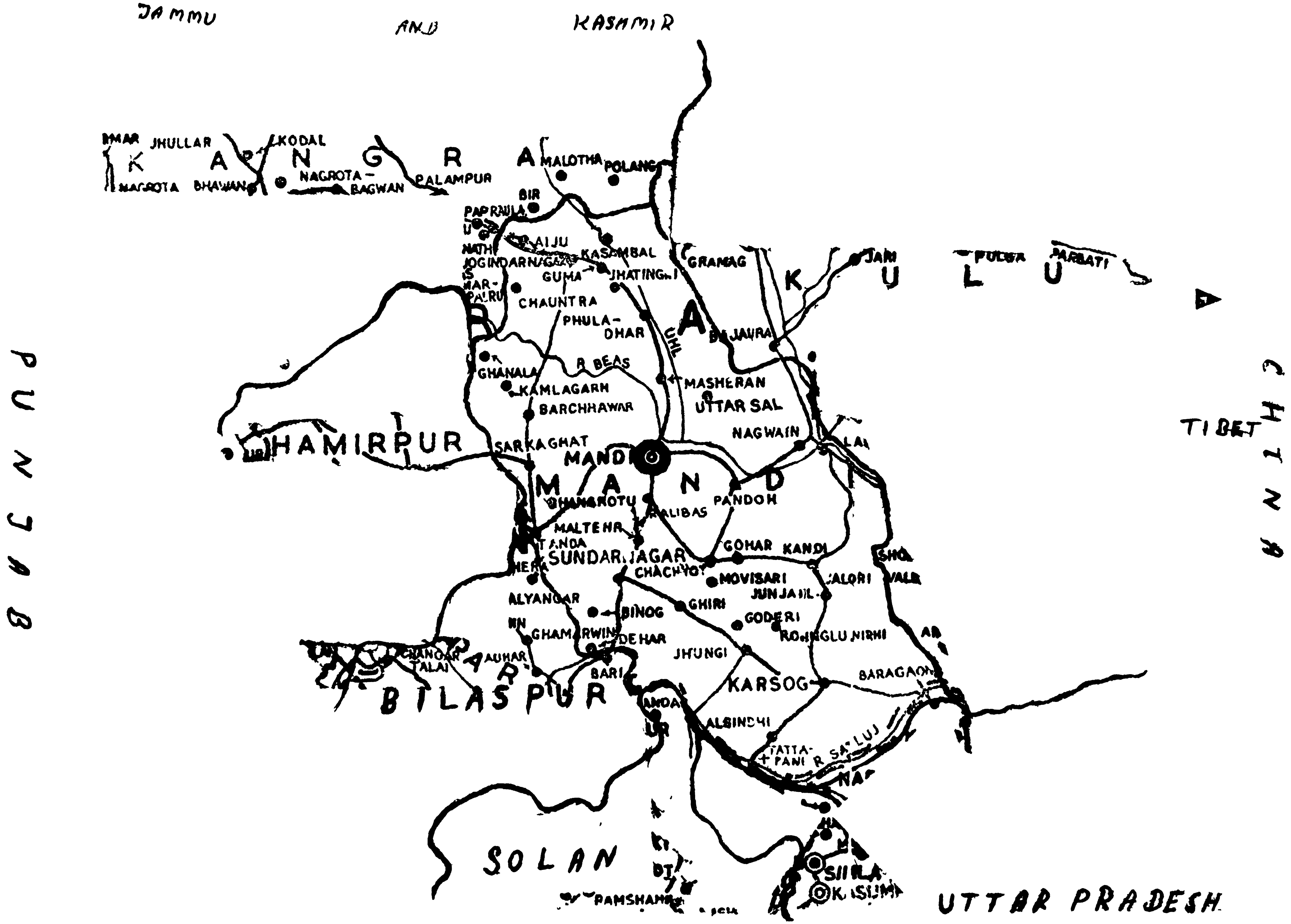

स्वन-प्रक्रिया

मण्डियाली ध्वनियो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाट सकते हैं—

(1) स्वर ध्वनियां तथा

(2) व्यजन-ध्वनियां

1 1. स्वर-ध्वनियां—

मण्डियाली स्वर-ध्वनियो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

उच्चारण

जिह्वा की ऊँचाई	अग्रस्वर	मध्य स्वर	पश्च स्वर	मुँह का आकार
उच्च	ई ई		ऊ ऊ॰	संवृत तथा
निम्नतर उच्च	इ इ		उ उ	अर्द्ध-संवृत
उच्चतर मध्य	ए̂		ओ̂	
मध्य	ए ए:	अ	ओ ओ	
निम्नतर मध्य	ऐ	अ	औ	अर्द्ध-विवृत तथा विवृत
उच्चतर निम्न	ऐ॰		औ.	
निम्न		आ आ		

तालिका नं० 1

1.2. व्यजन ध्वनियां—

मण्डियाली व्यजन-ध्वनियो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

उच्चारण विधि		ओष्ठ्य अ० स०	दन्तवर्त्स्य अ० स०	वर्त्स्य अ०स०	मूर्धन्-तालव्य अ० स०	तालव्य अ०स०	कोमल तालव्य अ० स०	काकल्य अ० स०
					उच्चारण-स्थान			
स्पर्शी	अल्प०	प ब	त द		ट ड		क ग	
	महा०	फ भ	थ ध		ठ ढ		ख घ	
स्पर्श-संघर्षी	अल्प					च ज		
	महा०					छ झ		
नासिक्य	अल्प०	म		न	ण	ञ	ङ	
	महा०	म्ह		न्ह				
पार्श्विक	अल्प०			ल	ल			
	महा०			ल्ह				
लुण्ठित				र				
संघर्षी				स				ह̂ ह
उत्क्षिप्त	अल्प०				ड़			
	महा०				ढ़			
अर्द्ध-स्वर		व				य		

तालिका न 2

1.2. स्वनिमिक गणना (फोनेमिक इनवेंट्री)—

तालिका न 1 तथा 2 मे मण्डियाली मे पाई जाने वाली सभी ध्वनियो को दिखाया गया है। इन दोनो तालिकाओ मे स्वर तथा व्यजन ध्वनियो को दिखाया गया है। उपर्युक्त तालिकाओ मे स्वनिम तथा उनके उपम्वन दोनो को दिखाया गया है। यहाँ पर अब केवल स्वनिमो की ही गणना की जाएगी।

स्वनिमो का अध्ययन मुख्य रूप से उन्हे दो वर्गों मे बाँटकर किया जा सकता है,—

(1) खण्डात्मक-स्वनिम तथा

(2) अधिखण्डात्मक-स्वनिम।

इन स्वनिमो को चित्र मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

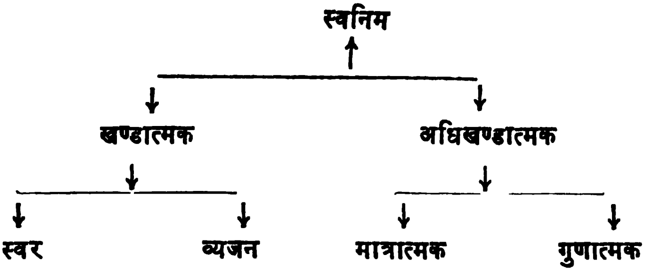

मात्रात्मक तथा गुणात्मक स्वनिमो के अन्य उपभेद अधिखण्डात्मक स्वनिम के अन्तर्गत दिखाए गए हैं। यहाँ पर सर्वप्रथम खण्डात्मक-स्वनिमो को लेकर विचार किया जा रहा है।

1.2.1. खण्डात्मक-स्वनिम (सेग्मेंटल फोनीम)—

खण्डात्मक स्वनिम वे वनिम हैं जो अपने आप मे पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं। अत खण्डात्मक-स्वनिमो का उच्चारण किसी चीज की सहायता लिए बिना किया जा सकता है। वे अपने आप मे स्वतन्त्र तथा पूर्ण होते हैं।

खण्डात्मक-स्वनिमो को अध्ययन की दृष्टि से दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

(1) स्वर-स्वनिम तथा

(2) व्यजन-स्वनिम।

1 2 1 1 स्वर-स्वनिम—

मण्डियाली मे स्वर-स्वनिमो को दो भागो मे बाँट सकते हैं—

(1) मूल-स्वर तथा

(2) सध्यक्षर।

1.2.1 1 1 मूल-स्वर—

मण्डियाली मे दस मूल-स्वर हैं। मूल-स्वर निम्नाकित हैं—

/अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ/

मूल-स्वरो को तालिका मे इस प्रकार दिखाया जा सकता है।

उच्चारण

जिह्वा की ऊँचाई		अग्रस्वर अवृत्ताकार	मध्यस्वर अवृत्ताकार	पश्चस्वर वृत्ताकार	मुँह का आकार
उच्च		ई		ऊ	संवृत
		इ		उ	
मध्य		ए		ओ	अर्द्ध-संवृत
		ऐ	अ	औ	अर्द्ध-विवृत
निम्न			आ		विवृत

तालिका न 3

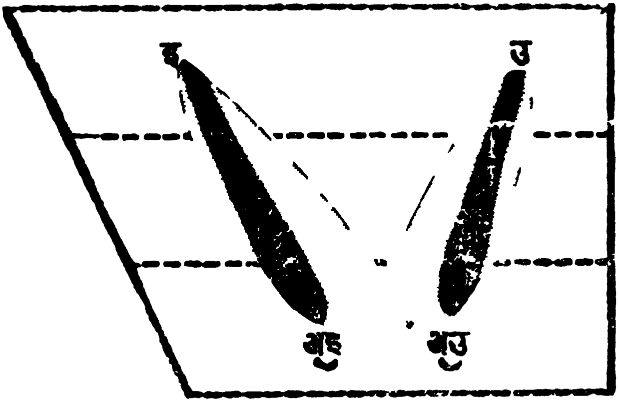

तालिका नं०-4

विशेष . जैसा कि तालिका न० 3 से भी स्पष्ट हो जाता है कि मध्य स्वर /अ/ जिह्वा की स्थिति को लेकर /ए/ तथा /ओ/ से कुछ निम्न है और /ऐ/ तथा /औ/ से उच्च है ।

1.2 1.1 2. संध्यक्षर-स्वर—

सध्यक्षर-स्वरो की सख्या चार है ।

ह्रस्व सध्यक्षर-स्वर—अइ, अउ ।

दीर्घ सध्यक्षर-स्वर—आइ, आउ ।

सध्यक्षर-स्वरो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

तालिका मे ह्रस्व संध्यक्षर-स्वरो को दिखाया गया है इसी प्रकार दीर्घ सध्यक्षर स्वरो को भी तालिका मे दिखाया जा सकता है । यहाँ पर उन्हे अलग से तालिका द्वारा दिखाना विशेष आवश्यक नही है ।

इस बात की स्पष्टता आगे चलकर सध्यक्षर-स्वरो के वितरण तथा स्वरानुक्रम को देखने से स्वय ही हो जाएगी ।

1.2.1.2 व्यजन स्वनिम—

मण्डियाली मे निम्नाकित पैंतीस व्यजन-स्वनिम हैं—

/प, फ, ब, भ, त, थ, द, ध, ट, ठ, ड, ढ, क, ख, ग, घ/

/च, छ, ज, झ/

/म, म्ह, न, न्ह, ण/

/ल, ल्ह, ल/

/र/

/ड, ढ/

/स, ह/

/व, य/

व्यजन स्वनिमो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

विशेष—मण्डियाली मे संध्यक्षर-स्वर तथा स्वरानुक्रम मुक्त-वितरण (फ्री-वेरिएशन) मे हैं । अत· सध्यक्षर, स्वरानुक्रम का तथा स्वरानुक्रम, सध्यक्षर का रूप धारण कर लेते हैं । यही कारण है कि सध्यक्षर तथा स्वरानुक्रम को मुक्त-विवरण मे रखा गया है ।

उच्चारण स्थान

उच्चारण विधि		ओष्ठ्य अ०स०	दंतवर्त्स्य अ० स०	वर्त्स्य अ०स०	मूर्धन्-तालव्य अ० स०	तालव्य अ० स०	कोमलतालव्य अ० स०	काकल्य अ०स०
स्पर्शी	अल्प०	प ब	त द		ट ड		क ग	
	महा०	फ भ	थ ध		ठ ढ		ख घ	
स्पर्श-संघर्षी	अल्प०					च ज		
	महा०					छ झ		
नासिक्य	अल्प०	म		न	ण	ञ	ङ	
	महा०	म्ह		न्ह				
पार्श्विक	अल्प०			ल	ल			
	महा०			ल्ह				
लुण्ठित				र				
संघर्षी				स				ह
उत्क्षिप्त	अल्प०				ड़			
	महा०				ढ़			
अर्द्ध-स्वर		व				य		

तालिका न० 5

1 2 2 अधिखण्डात्मक-स्वनिम (सुपरासिग्मेंटल फोनीम)—

मण्डियाली मे निम्नांकित अधिखण्डात्मक स्वनिम मिलते हैं—

1 2.2 1 (दीर्घता (लेंथ)—

दीर्घता दो प्रकार की मिलती है—

(1) स्वर-दीर्घता तथा

(2) व्यजन दीर्घता

1.2.2.2. आघात (ऑक्संट)—

आघात दो प्रकार का मिलता है—

(1) बलात्मक-स्वराघात तथा

(2) सगीतात्मक-स्वराघात या सुर ।

1 2.2 3. सगम (जंक्चर)—

सगम के दो स्तर मिलते हैं—

(1) आतरिक-सगम तथा

(2) वाक्य-सीमातिक सगम ।

1 2.2 4 प्राणत्व तथा तान (ब्रीदिंग ऐंड टोन)

1 2 2 5. अनुनासिकता (नेजेलाइजेशन)

1.3. स्वनिम तथा उनके उपस्वनो का वितरण

1.3 1 स्वर-स्वनिम तथा उनके उपस्वन—

स्वर-स्वनिमो का उनके उपस्वनो सहित वितरण इस प्रकार है—

/ई/ इस स्वनिम के दो उपस्वन हैं।

[ई] सवृत, अवृत्तमुखी, दीर्घ, अग्र उपस्वन है।

यह [ई] से दीर्घ है। यह शब्दो के मध्य सघोष-महाप्राण व्यंजनो के साथ आता है। यह स्वनिक है।

/भीड/ = भ् + ई + ड/ 'भीड़'

[भ् + ई + ड॒]

[ई] सवृत्त अवृत्तमुखी, दीर्घ, अग्रस्वर है। अन्य सभी स्थितियो मे यह मिलता है।

/ईल/ = /ई + ल् 'चील, गिद्ध'

[ई + ल्]

/बीण/ = /ब् + ई + ण/ 'औरतो के सर की चोटी,

[ब् + ई + ण्] 'वाद्ययन्त्र'

/साली/ = /स् + आ + ल॒ + ई/ 'साली'

[स् + आ + ल॒ + ई]

/इ/ इस स्वनिम के दो उपस्वन है।

[इ] संवृत्त, आवृत्त-मुखी, ह्रस्व, अग्र उपस्वन है।

यह [इ] से दीर्घ है। यह शब्दो के मध्य सघोष-महाप्राण व्यजनो के साथ आता है। यह स्वनिक है।

/घियु/ = /घ् + इ + य् + उ/ 'घी'

[घ + इ + य् + उ]

[इ] सवृत्त, अवृत्तमुखी, ह्रस्व अग्रस्वर है। यह आदि तथा मध्य स्थितियो मे मिलता है।

/इक्की/ = /इ + क् + क् + ई/ 'इक्कीस'

[इ + क् + क् + ई]

/लिख्/ = /ल् + इ + ख्/ 'लिखना' [आज्ञा०]

[ल् + इ + ख्]

/ए/ इस स्वनिम के दो उपस्वन हैं।

[एॅ] अर्ध-संवृत्त, अवृत्तमुखी, उच्चतर मध्य, अग्र उपस्वन है। यह शब्दो के आदि मे अघोष अल्पप्राण व्यजनो से पूर्व आता है। यह स्वनिक है।

/एक्/=/ए+क्/

[एॅ+क्]

[ए] अर्ध-सवृत्त, अवृत्तमुखी, मध्य, अग्र उपस्वन है। यह [ए] से दीर्घ है। यह शब्दो के मध्य सघोष-महाप्राण व्यंजनो के साथ आता है। यह स्वनिक है।

/भेड/=/भ+ए+ड्/ 'भेड'

[भ्+ए.+ड्]

[ए] अर्ध-सवृत्त, अवृत्तमुखी, मध्य, अग्र स्वर है। अन्य सभी स्थितियो मे यह मिलता है।

/एड़ा/=/ए+ड़+आ/ 'ऐसा'

[ए+ड+आ]

/सेर/=/स्+ए+र्/ 'शेर, सेर'

[स्+ए+र्]

/केल़े/=/क्+ए+ल़+ए/ 'केले'

[क्+ए+ल+ए]

/ऐ/ इस स्वनिम के दो उपस्वन हैं।

[ऐः] अर्ध-विवृत्त, अवृत्त-मुखी, उच्चतर निम्न, अग्र उपस्वन है। यह शब्दो के मध्य महाप्राण-व्यजनो के साथ पार्श्विक तथा उत्क्षिप्त /ल़/ तथा /ड़/ के पूर्व आता है। यह स्वनिक है।

/छैल़=/छ+ऐ+ल़/ 'सुन्दर'

[छ+ऐ+ल़]

/खैठ/=/ख्+ऐ+ड़/ 'दुश्मनी'

[ख्+ऐ+ड़]

[ऐ] अर्ध-विवृत्त, अवृत्तमुखी, निम्नतर-मध्य, अग्र स्वर है। अन्य सभी स्थितियो मे यह मिलता है।

/ऐस/ =/ऐ+स/ 'आनन्द'

[ऐ+स्]

/म्हैस/=/म्ह़+ऐ+स/ 'भैंस'

[म्ह़+ऐ+स्]

/लै/ =/ल्+ऐ/ 'लेना' (आज्ञा०)

[ल्+ऐ]

विशेष :—मण्डियाली मे शब्दो की अन्तिम स्थिति मे /इ/ का प्रयोग नहीं होता है। शब्दांत मे /ई/ का ही प्रयोग होता है।

/अ/ इस स्वनिम के दो उपस्वन हैं।

[अ] अर्ध-विवृत्त, अवृत्त मुखी, निम्नतर-मध्य उपस्वन है। यह शब्दो के मध्य सघोष-महाप्राण व्यंजनो मे साथ आता है।

यह स्वनिक है।

/झल्/=/झ्+अ+ल्/ 'आग की आच'

[झ्+अ.+ल्]

[अ] अर्ध-विवृत्त, अवृत्तमुखी, मध्य स्वर है। यह [अ] से ह्रस्व है। अन्य सभी स्थितियो मे यह मिलता है।

/अक्कल्/=/अ+क्+क्+अ+ल्/ 'अकल'

[अ+क्+क्+अ+ल्]

/बत्ती/ = [ब्+अ+त्+त+ई] 'बत्तीस'

[ब+अ+त्+त्+ई]

/आ/ इस स्वनिम के दो उपस्वन हैं।

[आ:] विवृत्त, अवृत्तमुखी, दीर्घ, निम्न, मध्य उपस्वन हैं। यह [आ] की अपेक्षा दीर्घ है। यह शब्दो के मध्य सघोष-महाप्राण व्यंजनो के साथ आता है। यह स्वनिक है।

/भास/=/भ्+आ+स्/ 'राख'

[भ्+आ.+स्]

/झाड/=/झ्+आ+ड/ 'झाडना'(आज्ञा०)

[झ्+आ.+ड्]

[आ] विवृत्त, अवृत्तमुखी, दीर्घ, निम्न, मध्य स्वर है। अन्य सभी स्थितियो मे यह मिलता है।

/आज/=/आ+ज्/ 'आज'

[अ+ज्]

/दाल/=/द्+आ+ल/ 'दाल'

[द्+आ+ल]

/सेला/=/स्+ए+ल्+आ/ 'सर्दी'

[स्+ए+ल्+आ]

/ऊ/ उस स्वनिम के दो उपस्वन हैं।

[ऊ] सवृत्त, वृत्ताकार, दीर्घ, उच्च, पश्च उपस्वन है। यह शब्दो के मध्य सघोष-महाप्राण व्यंजनो के साथ आता है।

विशेष — शब्दो की अन्त्य स्थिति मे /अ/ को स्वीकार नही किया गया है। क्योंकि अन्त्य स्थिति मे उसके होने और न होने से शब्द के अर्थ मे कोई अन्तर नही आता। इसी कारण शब्दो की अन्त्य स्थिति मे /अ/ को स्वीकार नही किया गया है।

/घूड/ = /घ् + ऊ + ड/ 'धूल'

[घ् + ऊ + ड]

[उ] सवृत्त, वृत्ताकार, दीर्घ, उच्च, पश्चस्वर है। यह [ऊ] से ह्रस्व है। अन्य सभी स्थितियो मे यह मिलता है।

/ऊन/ = /ऊ + न्/ 'ऊन'

[न + न्]

/लूण्/ = /ल् + ऊ + ण्/ 'नमक'

[ल् + ऊ + ण्]

/भड्डू/ = /भ् + अ + ड् + ड् + ऊ/ 'कांसे का छोटा-सा बर्तन'

[भ् + अ + ड् + ड् + ऊ]

[उ] इस स्वनिम के दो उपस्वन हैं।

[उ] अर्ध-सवृत्त, वृत्ताकार, निम्नतर-उच्च, ह्रस्व, पश्च उपस्वन है। यह शब्दो के मध्य सघोष-महाप्राण व्यजनो के साथ आता है। यह स्वनिक है।

/भुभल/ = /भ् + उ + भ् + अ + ल/ 'गर्म राख'

[भ् + उ + भ् + अ + ल]

[उ] अर्ध-सवृत्त, वृत्ताकार, निम्नतर उच्च, ह्रस्व, पश्च स्वर है। यह [उ] से ह्रस्व है। अन्य सभी स्थितियो मे यह मिलता है।

/उक्खल/ = /उ + क् + ख् + अ + ल/ 'ओखली'

[उ + क् + ख् + अ + ल]

/कुलार/ — /क् + उ + ल् + आ + र्/ 'दिन का भोजन'

[क् + उ + ल् + आ + र्]

/ग्वाल/ — /ग् + व् + पा + ल + उ/ 'ग्वाला'

[ग् + व् + आ + ल + उ]

/ओ/ इस स्वनिम के तीन उपस्वन हैं।

[ओ अर्ध सवृत्त, वृत्ताकार, उच्चतर मध्य, ह्रस्व, पश्च उपस्वन है। यह शब्दो के आदि मे मिलता है। यह स्वनिक है।

/ओट्टा/ = /ओ + ट् + ट् + आ/ 'बरामदा' [मकान का निचला

[ओ + ट् + ट् + आ] बरामदा]

[ओः] अर्ध सवृत्त, वृत्ताकार, मध्य, पश्च उपस्वन है। यह शब्दो के मध्य सघोष महाप्राण व्यजनो के साथ आता है। यह स्वनिक है।

/झोल/ = /झ + ओ + ल्/ 'सब्जी विशेष का नाम'

[झ + ओ. + ल]

[ओ] अर्ध-सवृत्त, वृत्ताकार, मध्य पश्च स्वर है। अन्य सभी स्थितियो मे मिलता है।

/डोह्.री/= /ड्+ओ+ह्.+र+ई/ 'खेत'
[ड्+ओ+ह्.+र्+ई]

/पढो/ = /प्+अ+ढ्+ओ/ 'पढ़ना' (आज्ञा०)
[प्+अ+ढ्+ओ]

इस स्वनिम के दो उपस्वन हैं ।

[ओ:] अर्ध-विवृत्त, वृत्ताकार, उच्चतर-निम्न, पश्च उपस्वन है । यह शब्दो को /ओ/ मध्य सघोष महाप्राण व्यजनो के साथ जाता है । यह स्वनिक है ।

/भोर/ = /भ्+ओ+र्/ 'मधु मक्खियाँ'
[भ्+ओ+र्]

[ओ] अर्ध विवृत्त, वृत्ताकार निम्नतर मध्य, पश्च स्वर है । यह [ओ] से ह्रस्व है । अन्य सभी स्थितियो मे यह मिलता है ।

/ओत्तर/ =/ओ+त्+त्+अ+र्/ 'सन्तानहीन'
[ओ+त्+त्+अ+र्]

/नोल./ = /न्+ओ+ल./ 'नेवला'
[न्+ओ+ल्.]

/जो/ = /ज्+ओ/ 'अनाज विशेष' 'जो'
[ज्+ओ]

1 3 2 संध्यक्षर-स्वर (डिफ्थोंग्)—

मण्डियाली से ह्रस्व तथा दीर्घ दोनो प्रकार के सध्यक्षर-स्वर मिलते हैं । इस प्रकार सध्यक्षर स्वरो की सख्या चार है । इनका विवरण इस प्रकार है ।

(1) /अइ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[अइ] मध्य अर्ध-विवृत्त से अग्र अर्ध संवृताभिमुखी सध्यक्षर-स्वर है ।

यह ह्रस्व सध्यक्षर स्वर है तथा शब्दो के मध्य ही मिलता है ।

/गइरा/ = /ग्+अइ+र्+आ/ 'गया है'

[ग्+अइ+र्+आ]

विशेष —मण्डियाली में शब्दों की अन्त्य स्थिति मे /ऊ/ तथा /उ/ मुक्त-विचरण [फ्री वेरिएशन] मे हैं । केवल दीर्घ-व्यजन के साथ दीर्घ /ऊ/ आता है । अन्य सभी स्थानो मे /ऊ/ तथा /उ/ शब्दो की अन्त्य स्थिति मे मुक्त-विचरण मे है ।

/पइरा/ =/प् + अइ + र् + आ/ 'पड़ा है'

[प् + अइ + र् + आ]

(2) /आइ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[आइ] निम्न विवृत्त से अग्र अर्ध संवृताभिमुखी संध्यक्षर-स्वर है। यह दीर्घ-संध्यक्षर स्वर है तथा शब्दो के आदि तथा मध्य मे मिलता है।

/आइरा/ =/आइ + र् + आ/ 'आया है'

[आइ + र् + आ]

/ताइया/ =/त् + आइ + य् + आ/ 'ताई' (तिर्यक, एक० व०)

[त् + आइ + य् + आ]

(3) /अउ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[अउ] मध्य अर्ध-विवृत्त से पश्च अर्ध-विवृत्ताभिमुखी संध्यक्षर स्वर है। यह ह्रस्व संध्यक्षर स्वर है तथा शब्दो के मध्य ही मिलता है।

/पउवा/ =/प् + अउ + व् + आ/ 'शराब की बोतल का

[प् + अउ + व् + आ] 1/4 भाग

/चउवा/ =/च् + अउ + व् + आ/ 'खेल विशेष का नाम'

[च् + अउ + व् + आ]

(4) [आउ] इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[आउ] निम्न विवृत्त से पश्च अर्ध-विवृत्ताभिमुखी संध्यक्षर-स्वर है। यह दीर्घ संध्यक्षर स्वर है तथा शब्दो के मध्य मिलता है।

/भाउवा/=/भ् + आउ + व् + आ/ 'लड़का' (आज्ञा०)

[भ् + आउ + व् + आ]
/ताउवा/ = /त् + आउ + व् + आ/ 'ताया' (तिर्यक एक० व०)

[त् + आउ + व् + आ]

मण्डियाली के ह्रस्व तथा दीर्घ दोनो प्रकार के सध्यक्षर-स्वरो को लेकर यह कहा जा सकता है कि ह्रस्व तथा दीर्घ सध्यक्षर स्वरो की यह विशेषता प्राचीन भारोपीय भाषा से मिलती है। अपने इस मत के समर्थन मे डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या की निम्नाकित पक्तिया पर्याप्त होगी''

'1900 के आस पास हम यह कह सकते हैं कि भाषा-विशेषज्ञो के परिणामस्वरूप प्राचीन भारोपीय भाषा का पुर्नस्थापन हुआ, तथा यह विश्वास किया जाता है कि इसकी निम्नाकित विशेषताएँ थी—

सध्यक्षर-स्वर, ह्रस्व तथा दीर्घ, उपर्युक्त ह्रस्व तथा दीर्घ अ (अ) ए (ए) ओ (ओ) स्वरो के साथ इ तथा उ आते हैं, (जो कि य तथा व है) · अइ, एइ, ओई, अउ, एउ, ओउ, तथा आई, एइ, ओइ, आउ, एउ औउ।'

विशेष —मण्डियाली मे सध्यक्षर-स्वर लुठित /र/ तथा अर्ध-स्वर /य्, व्'/ के पूर्व ही आते हैं। वास्तव मे मण्डियाली मे /अइ/ तथा /आइ/ सध्यक्षर-स्वरो की प्रधानता है। अत इन दोनो सध्यक्षर-स्वरो का प्रयोग अधिक मिलता है।

अनेक बार सध्क्षयर-स्वर, स्वरानुक्रम का रूप धारण कर लेते हैं। तथा स्वरानुक्रम सध्यक्षर का स्वर रूप धारण कर लेता है। इसी कारण सध्यक्षर स्वर तथा स्वरानुक्रम को मुक्त-विवरण (फ्री वेरिएशन) मे रखा गया है। या दूसरे शब्दो मे सध्यक्षर स्वर तथा स्वरानुक्रम को मुक्त वितरण मे स्वीकार किया गया है।

1 By 1900 we may say that the Primitive Indo-European Language became established through the labours of specialists, and it was believed to have possessed the following charactristics.
Diphthogs, short and long, with the above short ond long a (ā), e(ē), o (ō) vowels followed dy i and u (i e. y and w) . ai, ei, oi, au, eu, ou and āi ēi, āu, ēu ōu
S. K. Chatterji, Indo-Aryan and Hindi, p. 270.

1. 3. 3. **व्यंजन स्वनिम तथा उनके उपस्वन—**

व्यंजन-स्वनिमो का उनके उपस्वनो सहित वितरण इस प्रकार है।

/प/ इस स्वनिक का एक ही उपस्वन है।

[प्] अल्पप्राण, अघोष, द्विओष्ठ्य, स्पर्श-व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/पाणी/ =/प्+आ+ण्+ई/ 'पानी'
[प्+आ+ण्+ई]

/कपड़ा/ =/क्+अ+प्+अ+ड+आ/ 'कपडा'
[क्+अ+प्+अ+ड़+आ]

/ताप/ =/त्+आ+प्/ 'ज्वर-बुखार'
[त्+आ+प्]

[प्] का दीर्घ रूप भी मिलता है।

/आप्पू/=/आ+प्+प्+ऊ/ 'स्वय'
[आ+प्+प्+ऊ]

/फ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

/फ्/ महाप्राण, अघोष, द्विओष्ठ्य, स्पर्श-व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/फाग्गण्/=/फ्+आ+ग्+ग्+अ+ण्/ 'फाल्गुण'
[फ्+आ+ग्+ग्+अ+ण्]

/साफा/ =/स्+आ+फ्+आ/ 'पगडी'
[स्+आ+फ्+आ]

/साफ/ =/स्+आ+फ्/ 'साफ'
[स्+आ+फ्]

/ब/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[ब] अल्पप्राण, सघोष, द्विओष्ठ्य, स्पर्श-व्यंजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियों में मिलता है।

/बागर/ =/ब्+आ+ग्+अ+र्/ 'हवा'
[ब्+आ+ग्+अ+र्]

/सबेर/ =/स्+अ+ब्+ए+र्/ 'सुबह'
[स्+अ+ब्+ए+र्]

/सराब/ =/स्+अ+र्+आ+ब्/ 'शराब'
[स्+अ+र्+आ+ब्]

[ब] का दीर्घ रूप भी मिलता है।

/छब्बी/ =/छ्+अ+ब्+ब्+ई/ 'छब्बीस'
[छ्+अ+ब्+ब्+ई]

/भ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[भ्] महाप्राण, सघोष द्विओष्ठ्य, स्पर्श-व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/भास/ =/भ्+आ+स्/ 'राख'
[भ्+आ+स्]

/केब्भे/ =/क्+ए+ब+भ्+ए/ 'कब'
[क्+ए+ब+भ्+ए]

/जीभ/ = /ज्+ई+भ्/ 'जिह्वा'
[ज्+ई+भ्]

/त/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[त] अल्पप्राण अघोष दन्तवर्त्स्य, स्पर्श-व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/तारू/ = /त्+आ+र्+ऊ/ 'तैराक'
[त्+आ+र्+ऊ]

/सताई/=/स्+त्+आ+ई/ 'सत्ताइस'
[स्+त्+आ+ई]

/रात/ =/र्+आ+त्/ 'रात'
[र्+आ+त्]

[त] का दीर्घ (द्वित्व) रूप भी मिलता है।

तात्ता = /त्+आ+त्+त्+आ/ 'गर्म'
[त्+आ+त्+त्+आ]

/थ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[थ] महाप्राण, अघोष, दन्तवर्त्स्य, स्पर्श व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/थोब्ड़ा/=/थ्+ओ+ब्+ड़्+आ/ 'मुंह, मुखड़ा'
/थ्+ओ+ब्+ड़्+आ]

/केत्थी/ = /क्+ए+त्+थ्+ई/ 'कहाँ'
[थ्+ए+त्+थ्+ई]

/ल्होथ/ =/ल्ह्+ओ+थ्/ 'निर्जीव शरीर'
[ल्ह्+ओ+थ्] 'लाश'

/द/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[द] अल्पप्राण, सघोष दन्तवर्त्स्य, स्पर्श-व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/दाँवाँ/ = /द्+आँ+व्+आँ/ 'पशु बाँधने का रस्सा'
[द्+आँ+व्+आँ]

/सादणा/ =/स् + आ + द् + अ + ण् + आ/ 'बुलाना'
[स् + आ + द् + अ + ग् + आ]

/बाद/ = /ब् + आ + द्/ 'खराब, व्यर्थ'
[ब् + आ + द्]

[द] का दीर्घ रूप भी मिलता है ।

/बेद्दण/ = /ब् + ए + द् + द् + अ + ण्/ 'दर्द'
[ब् + ए + द् + द् + अ + ण्]

/ध/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[ध] महाप्राण, सघोष, दन्तवर्त्स्य, स्पर्श-व्यंजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/धाग्गे/ = /ध् + आ + ग् + ग् + ए/ 'धागे'
[ध् + आ + ग् + ग् + ए]

/साधु/ = /स् + आ + ध् + ऊ/ 'साधु'
[स् + आ + ध् + ऊ]

/स्राध्/ = /स् + र् + आ + ध्/ 'श्राद्ध'
[स् + र् + आ + ध्]

/ट/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[ट] अल्पप्राण, अघोष, मूर्धन्-तालव्य स्पर्श-व्यंजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/टौणा/ = /ट् + औ + ण् + आ/ 'बहरा'
/ट् + औ + ण् + आ]

/बैट्कू/ = /ब् + ऐ + ट् + क् + ऊ/ 'बैठने के लिए विशेष
[ब् + ऐ + ट् + क् + ऊ] 'बिछौना'

/बाट/ = /ब् + आ + ट्/ 'रास्ता, बाटना'
[ब् + आ + ट्]

[ट] का दीर्घ रूप भी मिलता है ।

/लोट्टा/ = /ल् + ओ + ट् + ट् + आ/ 'लौटा'
[ल् + ओ + ट् + ट् + आ]

/ठ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[ठ] महाप्राण, अघोष, मूर्धन्-तालव्य, स्पर्श-व्यंजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/ठग/ = /ठ् + अ + ग्/ 'ठग, धोखेबाज'
[ठ् + अ + ग्]

/म्हठा/ = /म्ह् + अ + ठ् + आ/ 'लडका'
[म्ह् + अ + ठ् + आ]

/पाठ्/ = /प् + आ + ठ्/ 'पाठ'

[प् + आ + ठ्]

/ड/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[ड्] अल्पप्राण, सघोष, मूर्धन्-तालव्य, स्पर्श-व्यजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/डाल/ = /ड् + आ + ल/ 'पेड'

[ड् + आ + ल]

/छाड्णा/ = /छ् + आ + ड् + ण् + आ/ 'छोडना'

[छ्र् + आ + ड् + ण् + आ]

/खाड्/ = /ख् + आ + ड्/ 'छोटी नदी'

[ख् + आ + ड्]

[ड्] का दीर्घ रूप भी मिलता है ।

/बड्डा/ = ब् + अ + ड् + ड् + आ/ 'बडा'

[ब् + अ + ड् + ड् + आ]

/ढ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[ढ] महा प्राण, सघोष, मूर्धन्-तालव्य स्पर्श-व्यजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/ढिल्ला/ = /ढ् + इ + ल् + ल् + आ/ 'ढीला'

[ढ् + ई + ल् + ल् + आ]

/काढणा/ = /क् + आ + ढ् + अ + ण् + आ/ 'निकालना'

[क् + आ + ढ् + अ + ण् + आ]

/बाढ्/ = /ब् + आ + ढ्/ 'काटना' (आज्ञा०)

[ब् + आ + ढ्]

/च/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[च्] अल्प प्राण, अघोष, तालव्य, स्पर्श-सघर्षी व्यजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/चार/ = च् + आ + र्/ 'आचार, चार'

[च् + आ + र्]

/बचा/ = /ब् + अ + च् + आ/ 'बचाना' (आज्ञा०)

[ब् + अ + च् + आ]

/नाच्/ = /न् + आ + च्/ 'नृत्य' (आज्ञा०)

[न् + आ + च्]

[च्] का दीर्घ रूप भी मिलता है ।

/चाच्चा/ = /च् + आ + च् + च् + आ/ 'चाचा'

[च् + आ + च् + च् + आ]

/छ/ = इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[छ] महाप्राण, अघोष, तालव्य, स्पर्श-सघर्षी व्यजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/छेल्लू /छ्+ए+ल्+ल्+उ/ 'बकरी का बच्चा' (पु०)
[छ्+ए+ल्+ल्+उ]

/मच्छी =/म्+अ+च्+छ्+ई/ 'मछली'
[म्+अ+च्+छ्+ई]

/मूछ्/ =/म्+ऊ+छ्/ 'मूँछ'
[म्+ऊ+छ्]

/ज/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[ज्] अल्पप्राण अघोष, तालव्य, स्पर्श-सघर्षी व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

जुट्टे/ – /ज्+उ+ट्+ट्+ए/ 'जूते'
[ज्+उ+ट्+ट्+ए]

/साजरा=/स्+आ+ज्+अ+र्+आ/ 'ताजा'
[स्+आ+ज्+अ+र्+आ]

/बाज्/=/व्+आ+ज्/ 'पक्षी विशेष, बजाना'
[ब्+आ+ज्]

[ज्] का दीर्घ रूप भी मिलता है ।

/राजा/ =/र्+आ+ज्+ज्+आ/ 'राजा'
[र्+आ+ज्+ज्+आ+]

/झ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन मिलता है ।

[झ्] महाप्राण, सघोष, तालव्य, स्पर्श-सघर्षी व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/झोला/=/झ्+ओ+ल्+आ/ 'थैला'
[झ+ओ+ल्+आ]

/बुझा/=/ब्+उ+झ्+आ/ 'बुझाना' (आज्ञा०)
[ब्+उ+झ्+आ]

/साँझ/=/स्+आँ+झ्/ 'सन्ध्या'
[स्+आँ+झ्]

/क/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[क्] अल्पप्राण, अघोष, कोमल तालव्य, स्पर्श-व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/कुर्ता/=/क्+उ+र्+त्+आ/ 'कमीज'
[क्+उ+र्+त्+आ]

/प्योका/=/प्+य्+ओ+क्+आ/ 'माईका'
[प्+य्+ओ+क्+आ]

/नाक/ = /न् + आ + क्/ 'नाक'

[न् + आ + क्]

[क्] का दीर्घ रूप भी मिलता है।

/पुक्का/ = /प् + उ + क् + क् + आ/ 'चुम्बन'

[प् + उ + क् + क् + आ]

/ख/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[ख्] महाप्राण, अघोष, कोमल तालव्य स्पर्श-व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/खसम्/ = /ख् + अ + स् + अ + म्/ 'पति, स्वामी'

[ख् + अ + स् + अ + म्]

/लेखणा/ /ल + ए + ख् + अ + ण् + आ/ 'सहवास करना'

[ल् + ए + ख् + अ + ण् + आ]

/मलेख/ /म् + अ + ल + ए + ख्/ 'गिला, शिकवा'

[म् + अ + ल + ए + ख्]

/ग/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[ग्] अल्पप्राण, सघोष, कोमल तालव्य, स्पर्श-व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/गज्जर्/ /ग् + अ + ज् + ज् + अ + र्/ 'साँझ'

[ग् + अ + ज् + ज् + अ + र्]

/बागर्/ = /ब् + आ + ग् + अ + र्/ 'हवा'

[ब् + आ + ग् + अ + र्]

/बाग्/ /ब + आ + ग्/ 'बाग'

[ब् + आ + ग्]

[ग्] का दीर्घ रूप भी मिलता है।

/रोगी/ = /र् + ओ + ग् + ग् + ग् + ई/ 'रोगी'

[र् + ओ + ग् + ग् + ई]

/घ/ - इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[घ] महाप्राण, सघोष, कोमल तालव्य, स्पर्श-व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/घोड़ा/ = /घ + ओ + ड़् + आ/ 'घोड़ा'

[घ् + ओ + ड़् + आ]

/जौंग्घा/ = /ज् + औं + ग् + घ् + आ/ 'टाँगे'

[ज् + औं + ग् + घ् + आ]

/बाघ/ = /ब् + आ + घ्/ 'जगली जानवर' (बाघ)

[ब् + आ + घ्]

/म/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[म्] अल्पप्राण सघोष, द्विओष्ठ्य, नासिक्य व्यजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/माँज्जा/ = /म् + आँ + ज् + ज् + आ/ 'चारपाई, माँजना' (आज्ञा०)
[म् + आँ + ज् + ज् + आ]

/चमार/ = /च् + अ + म् + आ + र्/ 'चमार'
[च् + अ + म् + आ + र्]

/नाम/ = /न् + आ + म्/ 'ईनाम'
[न् + आ + म्]

[म] का दीर्घ रूप भी मिलता है ।

/माम्मा/ = /म् + आ + म् + म् + आ] 'मामा'
[म् + आ + म् + म् + आ]

/म्ह/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[म्ह्] महाप्राण, सघोष, द्विओष्ठ्य, नासिक्य व्यजन है । यह शब्दो के आदि तथा मध्य मे ही मिलता है ।

/म्हात्मा/ = /म्ह् + आ + त् + म् + आ/ 'महात्मा'
[म्ह् + आ + त् + म् + आ]

/कम्हार्/ = /क् + अ + म्ह् + आ + र्/ 'कुम्हार'
[क् + अ + म्ह् + आ + र्]

/न/ इस स्वनिम के तीन उपस्वन है ।

[ञ] अल्पप्राण, सघोष, तालव्य, नासिक्य, उपस्वन है । यह केवल शब्दो के मध्य अपने ही वर्ग (चवर्ग) व्यजनो से पूर्व आता है ।

/पञ्जक्/ = प् + अ + न् + ज् + अ + क्/ 'पाँच दिनो का समूह'
[प् + अ + ञ् + ज् + अ + क्]

/पन्च/ /प् + अ + न् + च्/ 'पच'
[प् + अ + न् + च्]

[ङ] अल्पप्राण, सघोष, कोमल तालव्य, नासिक्य उपस्वन है । यह शब्दो के मध्य अपने ही वर्ग (कवर्ग) व्यजनो से पूर्व आता है ।

/खान्ग्/ = /ख् + आ + न् + ग्/ 'खाँसी'
[ख् + आ + ङ् + ग्]

/सन्ख/ = /स् + अ + न + ख्/ 'शख'
[स + अ + ङ + ख्]

[न्] अल्पप्राण, सघोष, वर्त्स्य, नासिक्य व्यजन है । अन्य सभी स्थानो पर यह मिलता है ।

/नाम्/ = /न् + आ + म्/ 'ईनाम'
[न् + आ + म्]

/कनारा/ = /क् + अ + न् + आ + र् + आ/ 'किनारा'
[क् + अ + न् + आ + र् + आ]

/आन्/ = /आ + न्/ 'अनाज'
[आ + न्]

[न्] का दीर्घ रूप भी मिलता है ।

/नान्ना/ = /न् + आ + न् + न् + आ/ 'नाना'
[न् + आ + न् + न् + आ]

/न्ह/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[न्ह्] महाप्राण, सघोष, वर्त्स्य, नासिक्य व्यंजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/न्हूस/ = /न्ह् + ऊ + स/ 'बहू'
[न्ह् + ऊ + स्]

/तिन्हाँ/ = त् + इ + न्ह् + आँ/ 'उन्होने'
[त् + इ + न्ह् + आँ]

/बुन्ह = /ब् + उ + न्ह्/ 'नीचे'
[ब् + उ + न्ह्]

/ण/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[ण्] अल्पप्राण, सघोष, मूर्धन्-तालव्य नासिक्य व्यंजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/णुँज्जा/ /ण् + उँ + ज् + ज् + आ/ 'उनचास'
[ण् + उँ + ज् + ज् + आ]

/पाणी/ /प् + आ + प् + ई/ 'पानी'
[प् + आ + ण् + ई]

/बण्/ /ब् + अ + ण्/ 'वन, जंगल'
[ब् + अ + ण्]

/ल/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[ल्] अल्पप्राण, सघोष, वर्त्स्य, पार्श्विक व्यंजन है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/लाडी/ /ल् + आ + ड् + ई/ 'दुल्हन, पत्नि'
[ल् + आ + ड् + ई]

/बास्ला/ = /ब् + आ + स् + ल् + आ/ 'हीग'
[ब् + आ + स् + ल् + आ]

विशेष . मण्डियाली मे /ण/ स्वनिम शब्दो की आदि स्थिति मे केवल सख्यावाचक-विशेषणो मे ही मिलता है । सख्यावाचक-विशेषणो के अतिरिक्त यह अन्य शब्दो मे आदि स्थिति मे नही मिलता है । मण्डियाली तथा हिमाचल-प्रदेश की अन्य बोलियो की यह निजी विशेषता है कि इनमे /ण/ शब्दो की आदि-स्थिति मे भी मिलता है ।

/साल्/ =/स्+आ+ल्/ 'वर्ष'
[स्+आ+ल्]

[ल] का दीर्घ रूप भी मिलता है।

/हिल्लण्/=/ह्+इ+ल्+ल्+अ+ण्/ 'भूकम्प'
[ह्+इ+ल्+ल्+अ+ण्]

/ल्ह/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[ल्ह्] महाप्राण, सघोष, वर्त्स्य व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/ल्हास्/=/ल्ह्+आ+स्/ 'लाश'
[ल्ह्+आ+स्]

/चुल्हा/=/च्+उ+ल्ह्+आ/ 'चुल्हा'
[च्+उ+ल्ह्+आ]

/बाल्ह्/=/ब्+आ+ल्ह्/ 'स्थान विशेष'
[ब्+आ+ल्ह्]

/ल़/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[ल़] अल्पप्राण, सघोष मूर्धन-नालव्य, पार्श्विक व्यजन है। यह शब्दो के मध्य तथा अत मे मिलता है।

/साला/ =/स्+आ+ल़+आ/ 'साला'
[स्+आ+ल़+आ]

/बाल्/ =/ब्+आ+ल़/ 'बाल, आग जलाना' (आज्ञा०)
[ब्+आ+ल़्]

/र/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[र्] अल्पप्राण सघोष, वर्त्स्य, लुंठित व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/रात्/=/र्+आ+त्/ 'रात'
[र्+आ+त्]

/प्राल्/=/प्+र्+आ+ल्/ 'धान का पवाल'
[प्+र्+आ+ल्]

/चार्/=/च्+आ+र्/ 'आचार, चार'
[च्+आ+र्]

/स/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[स्] अल्पप्राण, अघोष, वर्त्स्य सघर्षी व्यजन है। यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है।

/सात्थी/=/स्+आ+त्+थ्+ई/ 'साथी'
[स्+आ+त्+थ्+ई]

/बास्ला/=/ब् + आ + स् + ल् + आ/ 'हीग'

[ब् + आ + स + ल् + आ]

/मास/=/म् + आ + स/ 'माँस'

[म् + आ + स्]

[स्] की दीर्घ रूप भी मिलता है।

/कास्सी/ /क् + आ + स् + स् + ई/ 'इक्यासी'

[क् + आ + स् + स् + ई]

/ह/ इस स्वनिम के दो उपस्वन हैं।

[ह̂] महाप्राण, अघोष, काकल्य, सघर्षी व्यजन है। यह शब्दो के मध्य तथा अन्त्य स्थितियो मे मिलता है।

/पाह्ड/ /प् + आ + ह् + ड्/ 'पहाड'

[प् + आ + ह्̂ + ड्]

/साह्/=/स् + आ + ह्/ 'साँस'

[स् + आ + ह्̂]

[ह्] महाप्राण, सघोष, काकल्य सघर्षी व्यजन है। यह शब्दो की आदि स्थिति मे मिलता है।

/हेस्सी/ =/ह् + ए + स् + स् + ई/ 'शहनाई वादक'

[ह् + ए + स् + स् + ई]

/हाख्/ =/ह + आ + ख्/ 'आँख'

[ह् + आ + ख्]

/ड/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[ड्] अल्पप्राण, सघोष, मूर्धन-तालव्य-उत्क्षिप्त व्यजन है। यह शब्दो की मध्य तथा अन्त्य स्थितियो मे ही मिलता है।

/कडा/=/क् + अ + ड् + आ/ 'हाथ का गहना'

[क् + अ + ड् + आ]

/छेड्/=/छ् + ए + ड्/ 'आवाज, शरारत'

[छ् + ए + ड्]

/ढ/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है।

[ढ़] महाप्राण, सघोष, मूर्धन्-तालव्य, उत्क्षिप्त व्यजन है। यह शब्दो की मध्य तथा अन्त्य स्थितियो मे मिलता है।

/चढो/ /च् + अ + ढ् + ओ/ 'चढना' [आज्ञा०]

[च् + अ + ढ़् + ओ]

/बाढ/ = /ब् + आ + ढ्/ 'बाढ़'

[ब् + आ + ढ्]

/व/ इस स्वनिम का एक ही उपस्वन है ।

[व्] अल्पप्राण, सघोष, द्विओष्ठ्य, वृत्ताकार अर्ध स्वर है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/वार्/ = /व् + आ + र्/ 'इधर, इस ओर'

[व् + आ + र्] [नदी के आर या पार]

/ग्वालु/ = /ग् + व् + आ + ल् + उ/ 'ग्वाला'

[ग् + व् + आ + ल् + उ]

/चाव्/ = /च् + आ + व्/ 'चाव, शौक, इच्छा'

[च् + आ + व्] [मन को भाना]

शब्दो के आदि मे /व/ अर्ध-स्वर, /ब/ व्यजन मे बदल जाता है। इस बात को हिन्दी के कुछ उदाहरण लेकर स्पष्ट किया जा सकता है ।

उदाहरणार्थ—

हिन्दी	**मण्डियाली**	
/वार/	/बार/	'दिन'
/वेद्/	/बेद्/	'वेद'
/वचन/	/बचन/	'वचन'
/वाह्/	/बाह्/	'वाह' आदि ।

शब्दो के अन्त मे अर्ध-स्वर /व्/ का स्वरीकरण होता जा रहा हे । अत /व्/ का /ओ/ की ओर झुकाव है । इसी कारण /व/ से अन्त होने वाले शब्दो को /ओ/ के साथ इस प्रकार लिपिबद्ध कर सकते हैं ।

उदाहरणार्थ —

/चाव/	/चाओ/	'शौक, मन को भाना'
/घाव्/	/घाओ/	'जख्म'
/भाव्/	/भाओ/	'भाव, कीमत'
/पाव्/	/पाओ/	'पाव [1/4]' आदि ।

/य/ इस स्वनिम का ही एक उपस्वन है ।

[य्] अल्पप्राण, सघोष, तालव्य अर्ध-स्वर है । यह शब्दो की सभी स्थितियो मे मिलता है ।

/याद्/ = /य् + आ + द्/ 'याद'

[य् + आ + द्]

विशेष : अर्ध-स्वर /व/ शब्दो के आरम्भ मे सकलित सामग्री मे गिने चुने शब्दो मे ही मिलता है ।

उदाहरणार्थ—/वान्/ 'खुला बरामदा' /वाज/ 'आवाज' तथा /वार/ 'इस ओर' ।

/ध्याडा/ = /घ् + य् + आ + ड् + आ/ 'दिन'
[ध् + य् + आ + ड् + आ]
/राय्/ = /र् + आ + य्/ 'राय'
[र् + आ + य्]

1.4. **व्यतिरेक-युग्म [कांट्रास्टिव पेयरज]**

1.4 1. **स्वर—**

स्वर स्वनिमो के मात्रात्मक तथा गुणात्मक व्यतिरेक को लेकर न्यूनतम तथा अल्पतम व्यतिरेक-युग्म इस प्रकार दिए जा सकते हैं।

1 4.1.1 **आदि स्थिति मे स्वर-व्यतिरेक—**

शब्दो की आदि स्थिति मे स्वर स्वनिमो के व्यतिरेक-युग्म इस प्रकार है

/ई, इ/	=	/ईट/	'ईंट'
		/इक्की/	'इक्कीस'
/ऐ, ए/	=	/ऐस/	'आनन्द'
		/एस्स/	'इस'
/आ, अ/	=	/आल/	'नदी मे जहाँ गहरा पानी हो'
		/अल/	'झडना' [गिरना]
/औ, ओ/	=	/औड/	'किसी चीज को समाने की शक्ति [स्थान]
		/ओढ/	'ओढना' [आज्ञा०]
/ऊ, उ/	=	/ऊन/	'ऊन'
		/उन्नी/	'उन्नीस'
/ई, ऊ/	=	/ईट/	'ईंट'
		/ऊट/	'ऊँट'
/इ, उ/	=	/इट्टा/	'ईंटें'
		/उट्टा/	'ऊँट' [तिर्यक्]
/ऐ, ओ/	=	/एस्स/	'इस'
		/ओस/	'ओस'
/ऐ, औ/	=	/ऐड/	'समूह'
		/औड/	'किसी चीज को समाने की शक्ति'
/ए, इ/	=	/एक्का/	'एकता'
		/इट्टा/	'ईंटें'

विशेष · मण्डियाली मे अल्पप्राण-व्यजनो के ही दीर्घ [दित्व] रूप मिलते हैं। अल्पप्राण व्यजनो मे भी /प, ल, ड, र/ के दीर्घ रूप नही मिलते हैं।

/उ, ओ/	=	/उट्ठा/	'उठना' [आज्ञा०]
		/ओट्टा/	'बरामदा'
/ऊ, औ/	=	/ऊट/	'ऊँट'
		/औट/	'आउट'

1 4 1 2 **मध्य स्थिति मे स्वर व्यतिरेक —**

शब्दो की मध्य स्थिति मे स्वर स्वनिमो के व्यतिरेक-युग्म इस प्रकार हैं—

/ई, इ/	=	/भीड/	'भीड'
		/भिड/	'पशुओ का लडना'[आज्ञा०]
/ऐ, ए/	=	/सैर/	'सैर'
		/सेर/	'शेर, सेर'
/आ, अ/	=	/माल्/	'सामान'
		/मल/	'पहलवान'
/औ, ओ/	=	/बौल्/	'बालिबॉल'
		/बोल/	'बोलना' [आज्ञा०]
/ऊ, उ/	=	/जून/	'महीने का नाम'
		/जुग/	'युग'
/इ, उ/	=	/मित्तर/	'मित्र'
		/मुत्तर्/	'पेशाब'
/ए, ओ/	=	/खेल/	'खेल, खेलना' [आज्ञा०]
		/खोल्/	'खोलना' [आज्ञा०]
/ऐ, औ/	=	/पैड/	'दीवार आदि बनाने के लिए सहारा'
		/पौडा/	'कमरा विशेष'
/इ, ए/		/सिर/	'सिर'
		/सेर/	'शेर, सेर'
/इ, ऐ/		/मील/	'मील [कि० मी०]'
		/मैल/	'मैल'
/उ, ओ/		/सुख/	'सुख'
		/सोख्/	'प्यास'
/ऐ, आ/		/सैल्/	'सैर'
		/साल्/	'साल, वर्ष'
/ऊ, औ/		/चूथ्/	'चूथना' [पीटना] [आज्ञा०]
		/चौथ्/	'चौथा दिन'

1.2.1.3 अन्त्य-स्थिति में व्यतिरेक-युग्म—

शब्दो की अन्त्य-स्थिति मे स्वर स्वनिमो के व्यतिरेक-युग्म इस प्रकार हैं—

/ई, इ/	/गाली/	'गाली'
	... ...	
/ऐ, ए/	/जै/	'जय'
	/जे/	'यदि'
/आ, अ/	/माल˙/	'माला'
	•	
/औ, ओ/	/जौ/	'जौ'
	/जो/	'कर्मकारक परसर्ग'
/ऊ, उ/	/बाल्लू/	'रेत'
	/बाल ु/	'नाक का गहना'
/ई, ऊ/	/कट्टी/	'भैंस का बच्चा' [स्त्री०]
	/कट्टू/	'भैंस का बच्चा' [पु०]
/ए, ओ/	/जे/	'यदि'
	/जो/	'कर्मकारक परसर्ग'
/ऐ, औ/	/जै/	'जय'
	/जौ/	'जौ'
/ई, ऐ/	/पी/	'पीना'
	/पै/	'गिरना'
/ऐं, आ/	/जैं/	'जय'
	/जा/	'जाना' [आज्ञार्थक]
/उ, ओ/	/बाल ु/	'नाक का गहना'
	/बालो/	'जला' [आज्ञार्थक]
/ऊ, ओ/	/लू/	'लू' [गर्म हवा]
	/लो/	'लेना' [आज्ञा०]

1.4 2. व्यतिरेक-युग्म-व्यंजन—

व्यजन स्वनिमो के न्यूनतम तथा अल्पतम व्यतिरेक-युग्म इस प्रकार हैं—

अल्पप्राण-अघोष

	आदि	मध्य	अन्त्य
/प/	/पाल/	/काप्पी/	/काप्/

विशेष शब्दो की अन्त्य स्थिति मे, /अ/ तथा /इ/ स्वर को छोडकर अन्य सभी स्वर मिलते है। जहाँ तक /ऊ/ तथा /उ/ का सवाल है, दीर्घ व्यजन के साथ अन्त्य स्थिति मे /ऊ/ आता है तथा अन्य स्थानो या स्थितियो मे /उ/ आता है।

	'व्यक्ति का नाम'	'कापी'	'कपड़े के टुकड़े'
/त/	/ताल/ 'सुर से सम्बन्धित'	/कात्ती/ 'कातना' [पू० प०]	/कात्/ 'कातना' [आज्ञा०]
/च/	/चाल/ 'चलने का ढग'	/काच्ची/ 'कच्ची'	/नाच्/ 'नृत्य' [आज्ञा०]
/ट/	/टाला/ 'टालना'	/पट्टी/ 'पट्टी'	/चाट्/ 'चाटना' [आज्ञा०]
/क/	/काला/ 'काला'	/पक्की/ 'पकी हुई, मजबूत'	/चाक्/ 'सिर का गहना'

अल्पप्राण-सघोष

/ब/	/बाली/ 'कान का गहना जलाना' [पू० प०]	/साह्ब्ने/ 'साहब ने'	/बाब्/ 'पिता'
/द/	/दाली/ 'दाल' [तिर्यक्]	/साद्दे/ 'बुलाए'	/बाद्/ 'खराब, पश्चात्'
/ड/	/डाली/ 'पौधा'	/मॉड्डी/ 'खराब करना'	/बांड्/ 'बाटना' [आज्ञा०]
/ज/	/जाली/ जाली, झूठा आदमी	/माज्जी/ 'माजना' [पू० प०]	/बाज्/ 'पक्षी विशेष'
/ग/	/गाली/ 'गालियां'	/माग्गी/ 'मांगना'	/बाग्/ 'बगीचा'

महाप्राण-अघोष

/फ/	/फण/ 'साप का फन'	/नफा/ 'लाभ'	/हाफ्/ 'हाफना'
/थ/	/थण/ 'थन'	/कथा/ 'कहानी'	/हाथ/ 'हाथ'
/ठ/	/ठण/ 'आवाज विशेष'	/कट्ठा/ 'इकट्ठा'	/पाठ्/ 'पाठ'
/छ/	/छण/ 'घुघरू की आवाज'	/लच्छा/ 'गुच्छा'	/पाछ्/ 'घाव विशेष'
/ख/	/खण/ 'खोदना' [आज्ञा०]	/लक्खी/ 'लाखो'	/पख्/ 'पक्ष'

महाप्राण-सघोष

/भ/	/भार/ 'भार'	/सभ्भी/ 'सभी'	/लाभ्/ 'लाभ'
/ध/	/धार/ 'धार'	/कद्धी/ 'कब'	/बांध/ 'बांध'
/ढ/	/ढाल/ 'गिराना' [आज्ञा०]	/काड्ढी/ 'निकाली' [पू० प]	/बाढ्/ 'काटना' [आज्ञा०]
/झ/	/झोल/ 'सब्जी का नाम'	/बाज्झी/ 'पागल होना' [स्त्री०], बिना'	/बाझ्/ 'पागल होना, खेतो की मिट्टी'
/घ/	/घोल/ 'घोलना, झगडा' [आज्ञा०]	/बग्घी/ 'छोटा-सा पहिया'	/बाघ्/ 'बाघ'

अल्पप्राण = अनुनासिक

	आदि	मध्य	अन्त्य
/म/	/मल/ 'मालिश करना' [आज्ञा०] 'कीडे का नाम'	/अम्माँ/ 'मां'	/काम/ 'काम'
/न/	/नल/ 'पौधा विशेष'	/आन्ना/ /'रू० का 1/16 भाग'	/कान्/ 'कान'
/ग/	/गुंज्जा'/ 'उनचास'	/आउणा/ 'आना'	/काण्/ 'विघ्न, उरेब'

महाप्राण = अनुनासिक

/म्ह/	/म्हारा/ 'हमारा'	/कम्हार/ 'कुम्हार'	/ ....
/न्ह/	/न्ह्यारा' 'अन्धेरा'	/पन्ह्यार/ 'पनिहार'	/बुन्ह्/ 'नीचे'

लुंठित, पार्श्विक-अल्पप्राण

/ल/	/लात/ 'लात'	/भला/ 'भला'	/काल्/ 'कल'
/र/	/रात/	/भरा/	/कार्/

	आदि	मध्य	अन्त्य
	'रात'	'भरना'	'कार'
/ल/	/लोट/	/काला/	/घोल/
	'ढग'	'काला'	'घोलना,झगडा'[आज्ञा०]
		पार्श्विक अल्पप्राण-महाप्राण	
/ल/	/लृवाकणा/	/कली/	/बाल्/
	'झूठा विलासा'	'फूल की कली'	'सहारा'
/ल्ह/	/ल्ह्‌वाखणा/	/कल्ही/	/बाल्ह्‌/
	'लगातार देखना'	'अकेली'	'स्थान का नाम'
		उत्क्षिप्त	
/ड/	....	/कडी/	/बाड/
		'हथकडी, छत को जोडने वाली कडी'	'बचाव के लिए लगाई गई बाड'
/ढ़/	. ...	/कढी/	/बाढ/
		'कढी [सब्जी] 'कढना'	'नदी की बाढ़'
		अर्धस्वर	
/व/	/वाज/	/क्वारी/	/ग्रांव/
	'आवाज'	'अविवाहिता'	'गाँव'
/य/	/याद/	/क्यारी/	/गाय्/
	'याद'	'क्यारी'	'गाय'

1 2 2 अधिखण्डात्मक स्वनिम [सुपरा-सेग्मेन्टल फोनीम्ज]

मण्डियाली मे प्राप्त अधिखण्डात्मक-स्वनिमो को आरेख द्वारा इस प्रकार दिखा सकते हैं ।

अधिखण्डात्मक स्वनिम

- मात्रात्मक [क्वांटिटेटिव]
  - दीर्घता [लैंथ]
- गुणात्मक [क्वांटिटेटिव]
  - आघात [एक्सैंट]
    - बलात्मक स्वराघात [बलाघात]
    - सगीतात्मक स्वराघात सुर [पिच]
  - सगम [जक्चर]

उपर्युक्त आरेख से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अधिखण्डात्मक स्वनिम के मुख्य रूप से दो भेद सम्भव हैं—

[1] मात्रात्मक-अधिखण्डात्मक स्वनिम तथा

[2] गुणात्मक-अधिखण्डात्मक स्वनिम ।

अधिखण्डात्मक-स्वनिमो पर विचार करने से पूर्व खण्डात्मक तथा अधिखण्डात्मक-स्वनिमो के अन्तर को सक्षेप मे स्पष्ट किया जा रहा है ।

[1] खण्डात्मक-स्वनिम अपने आप मे स्वतन्त्र तथा पूर्ण होते हे, मगर अधिखण्डात्मक स्वनिम अपने आप मे स्वतत्र तथा पूर्ण नही होते हैं ।

[2] खण्डात्मक-स्वनिमो का विश्लेषण पृथक् इकाई के रूप मे किया जा सकना है, मगर अधिखण्डात्मक-स्वनिमो का नही ।

[3] खण्डात्मक-स्वनिम के दो ही वर्ग स्वर तथा व्यजन हैं, मगर अधिखण्डात्मक स्वनिमो के अनेक वर्ग तथा उपवर्ग है ।

[4] खण्डात्मक-स्वनिमो का महत्त्व स्थाई है जबकि अधिखण्डात्मक स्वनिम अस्थाई है ।

[5] अधिखण्डात्मक स्वनिम, खण्डात्मक-स्वनिमो के ऊपर बैठे रहते हैं या छाए रहते है । इनका महत्त्व खण्डात्मक स्वनिमो के साथ ही है ।

1 2 2 1. मात्रात्मक-अधिखण्डात्मक स्वनिम—

मात्रात्मक-अधिखण्डात्मक-स्वनिम का एक ही भेद—'दीर्घता' है । दीर्घता के दो भेद किए जा सकते हैं—

[1] स्वर-दीर्घता तथा

[2] व्यजन-दीर्घता ।

1 2 2 1 1 स्वर-दीर्घता [वावल लेंथ]

स्वर-दीर्घता मण्डियाली मे शब्दो की तीनो स्थितियो मे मिलती है । मगर जहाँ तक व्यतिरेक-युग्मो का प्रश्न है शब्दो की आदि स्थिति मे व्यतिरेक-युग्मो का अभाव है । मध्य तथा अन्त्य स्थितियो मे व्यतिरेक-युग्म मिल जाते है ।

1 आदि स्थिति में—

शब्दो की आदि-स्थिति मे अल्पतम व्यतिरेक-युग्म इस प्रकार है—

/आड्डा/	'अड्डा, ठहरने का स्थान'
/अण्डा/	'अण्डा'
/ईख/	'ईख'
/इक्की/	'इक्कीस'
/ऊट/	'ऊँट'
/उट्ठ/	'उठना' [आज्ञा०]

/ऐस/	'आनन्द'
/एस्स/	'इस'
/ओबरा/	'कमरा'
/औत्तर/	'सन्तानहीन'

2. मध्य स्थिति में—

/कर/	'करना'[आज्ञा०]
/कार/	'कार [वाहन]
/भिड/	'पशुओ का लडना' [आज्ञा०]
/भीड/	'भीड'
/गुण/	'गुण'
/गूण/	'खच्चर का बोझा'
/बेर/	'देर'
/बैर/	'बैर, द्वेष'
/बोल/	'बोलना' [आज्ञा०]
/बौल/	'बॉलिबाल'

3. अन्त्य-स्थिति में—

/बाल/	'नाक का गहना'
/बाट्टू/	'बर्तन विशेष'
/जे/	'यदि'
/जै/	'जय'
/जो/	'कर्मकारक [परसर्ग]
/जौ/	'जौ'

1.2.2 2. व्यंजन-दीर्घता [कोंसोनेंट लेंथ]

व्यजन-दीर्घता से तात्पर्य एक ही व्यंजन-ध्वनि का साथ-साथ आने से है। कुछ लोग व्यजन-दीर्घता को द्वित्व या द्वित्व व्यजन कहते हैं। मगर इसे व्यजन-दीर्घता के रूप मे स्वीकार करना तर्क-सगत है। दीर्घ-व्यजन के उच्चारण मे सामान्य-व्यजन की अपेक्षा अधिक समय लगता है तथा जिह्वा भी उच्चारण-स्थान से जोर से टकराती है। अत उच्चारण मे समय की अधिकता के कारण इसे व्यजन दीर्घता नाम देना ही तर्क-संगत है।

विशेष : /अ, आ, इ, ई, उ, ऊ/ मे मात्रात्मक-भिन्नता या व्यतिरेक है, मगर /ए, ऐ, ओ, औ/मे गुणात्मक-भिन्नता या व्यतिरेक है। स्वनिक स्तर पर इनमे भी मात्रात्मक-भिन्नता या व्यतिरेक है, मगर स्वनिम स्तर पर इनमे गुणात्मक व्यतिरेक ही है।

व्यंजन-दीर्घता के लिए फर्थ की निम्नांकित पंक्तियाँ उद्धरण रूप में दी जा सकती हैं—

'ट् ट् तथा उत्क्षिप्त ड़् जैसी ध्वनियो को एक साथ एक समूह के अन्तर्गत ट्ट् तथा ट् से क्यो अंकित किया गया है, इस अंकन के अनेक कारण हैं—

सर्वप्रथम उच्चारण की समानता के कारण, पार्श्विक तथा नासिक्य ध्वनियों को युग्मो मे दीर्घता के अन्तर द्वारा स्पष्ट रूप से अलगाया है।

दूसरे, क्योंकि दृढ़ अघोष स्पर्श ट् ट् समान संदर्भ मे प्रयुक्त ट् की अपेक्षा हमेशा दीर्घ होता है।'[1]

व्यंजन-दीर्घता के उदाहरण इस प्रकार हैं—

उदाहरणार्थ—

/पका/	'पकाना' [आज्ञा०]
/पक्का/	'मजबूत, पका हुआ'
/बचा/	'बचाना' [आज्ञा०]
/बच्चा/	'बच्चा'
/सजा/	'सजाना' [आज्ञा०]
/सज्जा/	'दाहिना'
/भला/	'अच्छा'
/भल्ला/	'पकवान विशेष'
/कासी/	'पुरुष का नाम'
/कास्सी/	'इक्यासी' आदि।

मण्डियाली मे अल्पप्राण-व्यंजन /र, ड़, ण, ल/ के दीर्घ रूप नही मिलते हैं। अन्य सभी अल्पप्राण-व्यंजनो के दीर्घ रूप मिलते हैं।

विशेष. /अ/ तथा /ड़/ शब्दो की अन्त्य-स्थिति मे नही आते हैं, इसी कारण यहाँ पर उनके व्यतिरेक-युग्म नही दिए गए हैं।

1. 'Here is the reason why tt and what sounds like a slapped a are grouped together by the notation ṭṭ and ṭ. There are several reasons for this notation

First of all because of similarity of articulation the leterals and nasals being obviously differentiated in pairs by the length difference

Secondly, because the tense voiceless stop ṭṭ is always longer than the ṭ in similar context.'

J R. Firth, papers in Linguistics, 1934-1951, P. 49

2.2 2 गुणात्मक-अधिखण्डात्मक स्वनिम—

गुणात्मक-अधिखण्डात्मक स्वनिम के दो भेद किए जा सकते हैं—

[1] आघात तथा

[2] संगम ।

2 2.2.1. आघात [एक्सेंट]—

वाक्य मे प्रयुक्त सभी शब्दो का उच्चारण समान सुर या बल से नही होता। किसी शब्द मे सुर या बल की मात्रा अधिक होती है तो किसी शब्द मे कम । वाक्य मे प्रयुक्त किसी शब्द पर सुर या बल का अधिक प्रयोग ही 'आघात' कहलाता है । मण्डियाली मे आघात का स्वनिमिक महत्त्व है ।

आघात के मुख्य रूप से दो भेद किए जा सकते हैं—

[1] बलात्मक स्वराघात या बलाघात [बल]

[2] सगीतात्मक-स्वराघात ।

1 2.2 2 1 1 बलात्मक-स्वराघात—

बलात्मक-स्वराघात या बलाघात के दो भेद किए जा सकते हैं—

[1] शब्द-बलाघात तथा

[2] वाक्य बलाघात ।

1 2 2 2 1 1 1 शब्द-बलाघात—

शब्द बलाघात से तात्पर्य है एक ही शब्द मे विभिन्न स्थानो पर 'आघात' होने से आर्थी-भिन्नता/अर्थात् एक ही शब्द मे एक स्थान पर 'आघात' होने से एक अर्थ होना तथा आघात का स्थान बदल जाने पर दूसरा अर्थ प्राप्त होना । मण्डियाली मे शब्द-बलाघात इस रूप मे नही मिलता है । अत मण्डियाली मे शब्द बलाघात का स्वनिमिक महत्त्व नही है ।

1.2 2 2.1 1.2. वाक्य-बलाघात—

वाक्य-बलाघात से तात्पर्य है वाक्य मे प्रयुक्त विभिन्न शब्दो मे 'आघात' या 'बल' का प्रयोग । वाक्य मे प्रयुक्त विभिन्न शब्दो मे कभी आघात का प्रयोग एक शब्द पर किया जाता है तो कभी दूसरे पर तो कभी तीसरे पर किया जाता है । इसी आघात या बल के कारण वाक्य के अर्थ मे किंचित् अन्तर आ जाता है । वाक्य मे प्रयुक्त विभिन्न शब्दो मे 'आघात' या 'बल' का प्रयोग ही 'वाक्य-बलाघात' कहलाता है ।

मण्डियाली मे वाक्य-बलाघात का सार्थक-प्रयोग मिलता है । वाक्य बलाघात के लिए एक वाक्य को लिया जा सकता है जो कि सामान्य अर्थ का द्योतक है, जिसमें सभी शब्दो पर लगभग समान 'बल' है । सभी शब्दो पर लगभग समान बल होने के कारण ही यह सामान्य अर्थ का द्योतक है ।

उदाहरणार्थ—

राम्मे, स्याम **डण्डे** कने मार्‌या ।

'राम ने स्याम को डण्डे से मारा ।'

उपर्युक्त वाक्य मे सभी शब्दो पर लगभग समान बल होने से यह वाक्य सामान्य अर्थ का द्योतक है। मगर इसी वाक्य के किसी शब्द पर बल देने का तात्पर्य है किसी बात विशेष पर बल देना। वाक्य के अर्थ मे जो अन्तर आता है वह बलाघात के कारण ही आता है।

बलाघात के कारण अर्थ मे जो अन्तर आता है उसे यहाँ पर स्पष्ट किया जा रहा है। आघात या बल-युक्त शब्द को काला दिखाया गया है।

उदाहरणार्थ—

[1] राम्मे, स्याम **डण्डे कने** मार्‌या । 'राम ने श्याम को **डण्डे से** मारा ।' [न कि किसी और चीज से]

[2] राम्मे, **स्याम** डण्डे कने मार्‌या । 'राम ने **श्याम को** डण्डे से मारा ।' [न कि मोहन को ।]

[3] राम्मे, स्याम डण्डे कने **मार्‌या** । 'राम ने श्याम को डण्डे से **मारा** ।' [न कि भगाया या डराया]

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वाक्य के विभिन्न शब्दो मे आघात या बल का स्थान बदल देने से अर्थ बदल जाता है। अत. मण्डियाली मे वाक्य-बलाघात का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

1 2.2 2 1 2 **संगीतात्मक स्वराघात या सुर—**

मण्डियाली मे सगीतात्मक स्वराघात या सुर का स्वनिमिक महत्त्व है। सगीतात्मक-स्वराघात या सुर को समझने के लिए फ्रेंचिज की निम्नांकित पक्तियाँ उचित हैं—

'सुर, स्वरतन्त्रियो के खिचाव और उसमे उत्पन्न घोष या कम्पन के आरोह-अवरोह के क्रम पर निर्भर करता है। 'सुर' की भिन्नताएं आकस्मिक नही होती, वे बोली के गठन के अग के रूप मे होती हैं।'[1]

मण्डियाली मे सगीतात्मक-स्वराघात या सुर का शब्द तथा वाक्य दोनो स्तरो पर स्वनिमिक महत्त्व है। इन दोनो स्तरो पर सगीतात्मक-स्वराघात या सुर होने के कारण ही इसके दो भेद किए जा सकते हैं—

[1] तान [टोन] तथा

[2] अनुतान [इन्टोनेशन]

1 W Nelson Francis, the structure of American English P. P. 113-114

2 1. तान [टोन]—

जब संगीतात्मक स्वराघात 'शब्द-स्तर' पर हो तो उसे 'तान' [टोन] कहा जाता है। एक ही शब्द मे तान बदल देने से अर्थ भी बदल जाता है। इसी कारण मण्डियाली मे तान अपना अस्तित्व स्थापित करने जा रही है। मण्डियाली मे तान के दो ही रूप मिलते हैं, जिन्हे निम्नांकित चिह्नो द्वारा चिह्नित किया जा सकता है—

मध्य—/ ‾ /

उच्च—/ / /

निम्न तान /\\/ मण्डियाली मे नही मिलती है। मध्य तथा उच्च तान के व्यतिरेक-युग्म इस प्रकार हैं—

[1]	— /बार/	'दिन'
	/ /बार/	'बाहर'
[2]	— /मैल/	'मैल'
	/ /मैल/	'महल'
[3]	/ /बीण/	'सर की चोटी' वाद्ययन्त्र
	/ /बीण/	'धनियाँ'
[4]	— /मूल/	'मूल'
	/ /मूल/	'ओखली मे धान आदि कूटने का डण्डा'
[5]	— /कोरा/	'पाला, कोरा'
	/ /कोरा/	'इकहरा' आदि।

उपर्युक्त व्यतिरेक-युग्मो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि 'तान' की भिन्नता

विशेष—मण्डियाली मे शब्द स्तर पर 'तान' तथा 'प्राणत्व' [ब्रीदिंग] मुक्त-वितरक मे होने के कारण प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध मे उपर्युक्त तान-व्यतिरेक-युग्मो को प्राणत्व के साथ इस प्रकार लिपि-चिह्नित किया गया है।

प्रस्तुत-शोध प्रबन्ध मे तान [टोन] को लेकर विस्तार से विचार नहीं किया गया है, क्योकि 'तान' तथा 'प्राणत्व' [ब्रीदिंग] मुक्त-वितरक [फ्री-वेरीऐशन] मे है। यहाँ पर 'तान' को 'प्राणत्व' [ब्रीदिंग] के रूप मे स्वीकार किया गया है।

के कारण ही एक शब्द दो अर्थों का वाचक है। इस प्रकार के उदाहरण और भी अनेक हैं, मगर समया-भाव के कारण तान पर यहाँ पर विस्तार से विचार करना सम्भव नही है। इसका मुख्य कारण है कि मण्डियाली मे 'तान' तथा 'प्राणत्व' दोनो मुक्त-वितरक [फ्री-वेरीऐशन] मे हैं। इसीलिए इस शोध-प्रबन्ध मे 'तान' [टोन] की ओर सकेत मात्र किया जा रहा है।

[1]	/बार/	'दिन'
	/बाह्‌र/	बाहर'
[2]	/मैल/	'मैल'
	/मैह्‌ल/	'महल'
[3]	/बीण/	'सर की चोटी'
	/बीह्‌ण/	'धनियाँ'
[4]	/मूल/	'मूल'
	/मूह्‌ल/	'ओखली मे धान आदि कूटने का डण्डा'
[5]	/कोरा/	'पाला, कोरा कागज'
	/कोह्‌रा/	'इकहरा' आदि

[प्राणत्व] तथा 'तान' को लेकर आगे चलकर अलग से विचार किया गया है।

2.2 अनुतान [स्वरलहर] [इन्टोनेशन]—

जब सगीतात्मक-स्वराघात या सुर, वाक्य-स्तर पर हो तो उसे 'अनुतान' या 'स्वरलहर' कहा जाता है। वाक्य स्तर पर मण्डियाली मे अनुतान 'स्वरलहर' का विशेष महत्त्व है। एक ही वाक्य, उसमे प्रयुक्त विभिन्न शब्दो मे प्रयुक्त अनुतान के कारण उसमे विभिन्न अर्थ या मनोभाव व्यक्त होते हैं।

'अनुतान मे आघात, सुर आदि सबका महत्त्व है। ब्लॉक तथा ट्रेगर के शब्दो मे—'आघात का ऐसा अभिलक्षण जो कि अकेले शब्दो की अपेक्षा वाक्य से सम्बन्धित हो 'अनुतान' कहलाता है।'[1]

अनुतान या स्वर लहर के विभिन्न धरातलो को विभिन्न प्रकार से अकित किया जाता है, जैसे—

अको द्वारा, रेखाओ द्वारा तथा बिन्दुओ द्वारा।

आधुनिक भाषा विज्ञान-वेत्ता अनुतान या स्वर-लहर के विभिन्न धरातलो को /1/ से /3/ अको द्वारा व्यक्त करते हैं। इन अको मे स्तर /1/ निम्नतम, स्तर /2/ मध्यम तथा स्तर /3/ उच्चतम धरातलो को व्यक्त करते हैं।

'अनुतान' के इन धरातलो को अको द्वारा इस प्रकार अकित किया जा सकता है—

1 'Feature of accent pertaining to the sentence rather than to Individual words are called 'Intonation''
Block and trager, outlines of Linguistics analysis, P. 42

उदाहरणार्थ—

2 3 1
[1] काल ठण्ड जादा थी।— 'कल सर्दी अधिक थी।'
[सामान्य भाव]

2 3 1
[2] राम एस्सरा म्हूठा आ।— 'राम इसका लड़का है।'
[सामान्य भाव]

अन्य मनोभावो को व्यक्त करने के लिए अनुतान के धरातल बदलते रहते हैं—

1. प्रश्न वाचक वाक्यो मे अनुतान के धरालत इस प्रकार हो सकते हैं—

[क] प्रश्नवाचक-शब्द के साथ अनुतान धरातल—

2 3 1
[1] तुस्से सिमले ते केब्बे आए ?—'आप शिमला से कब आए ?'

[ख] प्रश्नवाचक शब्द के वाक्य के अन्त मे होने से अनुतान-धरातल—

2 3 2
[1] राम चली गया क्या ?— 'राम चला गया क्या ?'

]ग[वाक्य के अन्त मे [ना] के साथ प्रश्नवाचक के अनुतान धरातल—

2 3 1 2
[1] तुस्से आया कराएं ना ?— 'आप आ रहे हो न ?'

[घ] प्रश्नवाचक शब्द के बिना प्रश्नवाचक वाक्य के अनुतान धरातल—

2 3 3
[1] से घरा चली गया ?— 'वह घर चला गया ?'

[ङ] प्रश्नवाचक शब्द 'की क्यो' के वाक्य के अन्त मे आने से अनुतान धरातल—

2 3 2
[1] तू तेत्थी गया की ?— 'तू वहां गया क्यों ?'

[च] वाक्य के अन्त मे 'नी-' 'नही' के साथ प्रश्नवाचक वाक्य के धरातल—

3 2 3
[1] हुण आणा या नी ?— 'अब आओगे या नहीं ?'

[छ] प्रश्न पर प्रश्न वाक्य के अनुतान धरातल—

3 3 1
[1] रोट्टी या चौल् ?— 'रोटी या चावल ?'

[2] आज्ञार्थक-वाक्यो मे अनुतान के विभिन्न धरातल इस प्रकार होगे—

2 3 2 2
[1] तू चल हाऊँ आया। — 'तू चल मैं आया।'

2 2 1
[2] तू जा पढ़।— 'तू जा पढ़'

2 3 2 2
[3] चल हट, मंज्जो काम — 'चल हट मुझे काम करने दे।'
करने दे।

[3] आश्चर्य-जनक वाक्यो मे अनुतान के विभिन्न धरातल इस प्रकार होगे—

2 1 # 2 3

[1] हे राम ! बोहत बुरी— 'हे राम ! बहुत बुरी हालत है ।'

हालत ई ।

2 # 3 2 1

[2] ओह ! राम रूढ़ी गया ।— 'ओह ! राम गिर गया ।'

4 नकारात्मक वाक्यो मे, अनुतान धरातल इस प्रकार होगे—

2 3 1

[1] राम मज्जो नी मिल्या ।— 'राम मुझे नहीं मिला ।'

[क] नकारात्मक शब्द के बिना नकारात्मक वाक्य के अनुतान धरातल—

1 2 3 1

[1] आस्साओ बोल्या ही किन्ने ? 'हमे कहा ही किसने ?'

2 2 2 2 2

[2] माँ तुस्सारा बुरा की करना ? 'मैं तुम्हारा बुरा क्यो करूँगा'

[ख] नकारात्मक शब्द के साथ प्रश्नवाचक वाक्यो के अनुतान धरातल

2 3 1 2

[1] तुस्से, तेज्जो बोल्या की नी ? 'आपने, उसे कहा क्यों नहीं ?'

2 3 1

[2] तै सुण्या की नी ? 'तूने सुना क्यो नहीं ?'

[ख] नकारात्मक आज्ञार्थक वाक्यो के अनुतान धरातल—

[1] 2 3 1

अच्छा ठीक आ, नी बोल । 'अच्छा ठीक है, मत बोल ।'

2 3 1

[2] जाणे दे खराब नी कर । 'जाने दे खराब मत कर ।'

[2] नकारात्मक शब्दो के बिना नकारात्मक-वाक्यो के अनुतान धरातल—

1 2 3 1

[1] मैं सच थोड़े किता । 'मैं सच्च थोड़े ही किया ।'

1 2 3 1

[ग] तिन्ने झूठ थोड़े बोल्या 'उसने झूठ थोड़े ही कहा ?'

1.2.2.2.2. संगम [जंक्चर]—

'संगम' से तात्पर्य शब्दो की कुछ ध्वनियो के उच्चारण तथा वाक्य के कुछ शब्दो के उच्चारण के पश्चात् जो विराम या ठहराव की स्थिति होती है, वही विराम या

ठहराव 'संगम' कहलाता है। इस विराम या ठहराव से अभीप्सित अर्थ मे अन्तर आ जाता है।

ब्लाक तथा ट्रेगर ने सगम को इस प्रकार स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है—

'फिनोमिना जो कि इस बात से सम्बन्धित हो, जिसके द्वारा ध्वनियाँ आपस मे इकट्ठी होती हो, को सगम शब्द के अन्तर्गत सग्रहित किया है।'[1]

मण्डियाली मे 'सगम' का स्वनिमिक महत्त्व है। यहाँ पर 'संगम' को दो स्तरो पर देखा जा सकता है—

[1] आन्तरिक सगम तथा

[2] वाक्य-सीमान्तिक विराम।

2.1. आन्तरिक सगम [इंटरनल जक्चर]—

'आन्तरिक-सगम' को निम्नाकित उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

[1]	बरफील्ले	'बर्फ वाले'
	बर्फी+ले	'बर्फी ले'
[2]	सुज्जीरा	'सोजस आना'
	सुज्जी+रा	'सूजी से सम्बन्धित'
[3]	बर्चील्ले	'खर्च से सम्बन्धित'
	बर्ची+ले	'खर्च करना'

उपर्युक्त तीनो उदाहरणो मे अर्थ-भेद की स्थिति का मुख्य कारण सगम का होना तथा न होना है। इस सगम को 'धन-संगम' [प्लस जक्चर] का नाम भी दिया गया है। इसे ही 'शब्द-सगम' या वाक्याश-सगम की सज्ञा भी दी गई है। 'धन-सगम' के कारण ही इसे धन-चिन्ह [+] द्वारा चिह्नित किया गया है।

2.2. वाक्य-सीमान्तिक विराम—

वाक्य-सीमान्तिक विराम का मण्डियाली मे स्वनिमिक महत्त्व है। इसे कॉमा ['] द्वारा चिह्नित किया गया है।

उदाहरणार्थ—

[1] रोट्टी पकावा, खावा नी—'रोटी पकाओ, खाओ मत।'
रोट्टी, पकावा-खावा नी – 'रोटी, पकाओ खाओ मत।'

[2] एज्जो रोक्को नी, जाणे देवा 'इसे रोको मत, जाने दो।'
एज्जो रोक्को, नी जाणे देवा—'इसे रोको, मत जाने दो।'

1. 'Phenomena relating to the way in which sounds are Joined togather are summerized undar the term 'juncture'. block and trager, Outlines of Linguistic analysis, P. 35

[3] तुस्से आवा, जावा नी—'आप आइए, जाइए मत।'
तुस्से आवा-जावा, नी—'आप आइए-जाइए, मत।'

उपर्युक्त उदाहरणो मे ठहराव या कॉमा को आगे-पीछे कर देने से अर्थ मे अन्तर आ जाता है। इसी कारण इसका स्वनिमिक महत्त्व है। डॉ० भोलानाथ तिवारी इस विराम को 'अल्प विराम-सगम' या 'कॉमा-सगम'[1] कहते हैं।

2 3. प्राणत्व तथा तान [ब्रीदिंग एण्ड टोन]—

मण्डियाली भाषियो की बोली को सुनने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह बोली किसी हद तक 'पजाबी' से प्रभावित है या प्रभावित होती जा रही है। इसका एकमात्र कारण पजाबी भाषियो का इस क्षेत्र मे लगातार आना-जाना ही प्रतीत होता है। वैसे भी हर भाषा या बोली का गुण है कि वह अपनी पडोसी भाषाओ या बोलियो से किसी-न-किसी रूप मे प्रभावित होती है। अतः कारणो को लेकर अधिक विस्तार मे जाना यहाँ सम्भव नही है।

'मण्डियाली' पर 'पजाबी' के प्रभाव को लेकर अपनी इस बात के समर्थन मे यह तर्क प्रस्तुत किया जा सकता है कि शब्द-स्तर पर मण्डियाली मे 'प्राणत्व' तथा 'तान' मुक्त-वितरक [फ्री-वेरीएशन] मे प्राप्त होते हैं।

उदाहरणार्थ—

प्राणत्व		तान	
/बाह्र/	=	/बा́र/	'बाहर'
/मैह्ल/	=	/मे́ल/	'महल'
/सैह्र/	=	/सै́र/	'शहर'
/बीह्ण/	=	/बी́ण/	'धनियाँ'
/कोह्रा/	=	/को́रा/	'इकहरा' आदि

उपर्युक्त उदाहरणो मे हम 'ह्' तथा 'तान' को मुक्त-वितरक मे पाते हैं। अतः उपर्युक्त सभी शब्दो को दोनो तरह-/बाह्र या बा́र/ से लिपिसगत किया जा सकता है, लेकिन प्रस्तुत अध्ययन मे ऐसे शब्दो को लिपिसगत करने के लिए 'प्राणत्व' अर्थात् 'ह्' लिपि-चिह्न को ही अपनाया गया है, 'तान' को नही। क्योकि 'तान' अधिक शोध

1. डॉ० भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान कोश।

का विषय है। इसमे शोध के लिए और अधिक कार्य अपेक्षित है। इसी कारण 'तान' पर प्रस्तुत अध्ययन मे अधिक विस्तार से विचार करना सम्भव नही हो सका है।

अतः 'प्राणत्व' को यहाँ पर अधिखण्डात्मक स्वनिम के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। प्राणत्व तथा अप्राणत्व के व्यतिरेकी युग्म इस प्रकार हैं—

उदाहरणार्थ—

/बाह्र/	'बाहर'
/बार/	'दिन'
/बोह्ण/	'धनियाँ'
/बीण/	'सर की चोटी, वाद्य यन्त्र'
/बेह्डा/	'राजा का महल, किले आदि'
/बेडा/	'पानी मे लकडी का बेडा'
/सैह्र/	'शहर'
/सैर/	'सैर'
/कोह्रा/	'इकहरा'
/कोरा/	'पाला, कोरा कागज'
/मूह्ल/	'ओखली मे धान आदि कूटने का डण्डा'
/मूल/	'मूल' आदि।

1.2.4. अनुनासिकता [नेजेलाइजेशन] —

मण्डियाली मे अनुनासिकता का विशेष महत्त्व है। किसी भी स्वर को अनुनासिक तथा निरनुनासिक दोनो ही रूपो मे उच्चरित किया जा सकता है। इस प्रकार अनुनासिक तथा निरनुनासिक स्वर के कारण अर्थ-भेद की स्थिति पैदा हो जाती है। इसी कारण मण्डियाली मे अनुनासिकता का स्वनिमिक महत्त्व है।

इससे पूर्व कि अनुनासिकता को लेकर विचार किया जाए अनुनासिक तथा अनुस्वार के अन्तर को लेकर सक्षेप मे विचार करना तर्क सगत प्रतीत होता है। इन दोनो के अन्तर को डॉ० आर्येन्द्र शर्मा का हवाला देते हुए स्पष्ट किया जा सकता है—

'स्वर के ऊपर [अँ, आँ, आदि] 'ँ' [चन्द्र बिन्दु] चिन्ह इस बात का सकेत है कि स्वर अनुनासिक (अनुनासिका) है, या नाक के रास्ते भी बोला जाता है।

स्वर के ऊपर ' ' (अनुस्वार) चिन्ह किसी भी व्यजन—ङ, ण, न, तथा म—को व्यक्त कर सकता है जिनका उच्चारण स्वर के पश्चात होता है।[1]

ऐसा ही कुछ डॉ० भोलानाथ तिवारी भी कहते हैं—'अनुस्वार ( ) नासिक्य व्यंजनो (ङ, ण, ण, ञ, म) के स्थान पर आने वाली वह ध्वनि-इकाई है, जिसका

1. डॉ० भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा की सरचना, पृ० 62

उच्चारण स्थिति या परिवेश पर आधारित होता है ।'[1]

उपर्युक्त परिभाषाओ से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आज अनुनासिक-व्यंजन (ङ, ञ, ण, न, म) और अनुस्वार '' (बिन्दु) का अन्तर समाप्त सा हो गया है तथा होता जा रहा है । अब अनुनासिक-व्यजन (ङ, ञ, ण, न, म), अनुस्वार '' अर्थात् बिन्दु का रूप धारण करते जा रहे हैं । अनुनासिक-व्यजन 'ङ' तथा 'ञ' का तो अनुस्वार (बिन्दु) मे लगभग पूर्ण रूप से विलय हो ही चुका है तथा आने वाले समय मे स्थिति या परिवेश विशेष मे ण, न, म का भी अनुस्वार ( ) मे विलय हो जाएगा । लेकिन इन तीनो का अनुस्वार (बिन्दु) मे विलय उस रूप मे नही हो पाएगा, जिस रूप मे 'ङ' तथा 'ञ' का हुआ है । इसका मुख्य कारण यह है कि 'ङ' तथा 'ञ' शब्दो की आदि-स्थिति मे नही आते हैं, जबकि —ण, न तथा म शब्दो की आदि-स्थिति मे आते हैं । हिन्दी मे 'ण' भी शब्दो की आदि-स्थिति मे नही आता है ।

अनुनासिक और अनुस्वार के चिन्हो का जहाँ तक प्रश्न है, एक स्थिति ऐसी है जहाँ पर दोनो चिन्हो मे समानता मिलती है ।

अनुनासिक-चिन्ह के अनुस्वार चिन्ह मे बदलने की स्थिति इस प्रकार है—

जब अनुनासिक-चिन्ह 'ँ' (चन्द्र बिन्दु) का प्रयोग किसी मात्रा के साथ होता है तो 'ँ' (चन्द्रबिन्दु) अनुस्वार-चिन्ह '' (बिन्दु) मे बदल जाता है । इस बात को हिन्दी से उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

/भौकना/	'भौंकना'
/ईंट/	'ईंट'
/मे/	'मे'
/हैं/	'हैं' आदि

उपर्युक्त उदाहरणो मे अनुनासिक-चिन्ह (चन्द्रबिन्दु) के लिए अनुस्वार-चिन्ह (बिन्दु) का प्रयोग हुआ है । अत यह कहा जा सकता है कि अनुस्वार के लिए दो लिपि-चिन्ह हैं । अनुस्वार को—ङ, ञ, ण, न तथा म व्यजनो द्वारा भी तथा '' (बिन्दु) द्वारा भी लिपिबद्ध किया जा सकता है । अनुनासिक केवल स्वर ही हुआ करते है, जबकि अनुस्वार व्यजन ही हुआ करते है, स्वर नही । अनुस्वार के लिये दो अलग-अलग लिपि-चिन्ह होने के कारण ही इसे आर्की स्वनिम (आर्की फोनीम, archi phoneme) के रूप मे भी स्वीकार किया जाता है ।

1 'The sign '' (Chandra-bindu) Placed above (अँ, आँ, etc) indicates that the vowel is nasalised (Anunasika), or spoken also through the nose

The sign '' (Anuswara) Placed above a vowel may represent any one of the consonants—ङ, ञ, ण्, न तथा म् (to be pronounced after the vowel)'

A. Sharma, A Basic Grammar of Modern Hindi, P. 2

अनुस्वार तथा अनुनासिक दोनो प्रकार के चिन्हो मे एक समानता यह पाई जाती है कि चिन्ह के रूप मे दोनो का प्रयोग स्वरो के ऊपर होता है। यहाँ पर ध्यान देने वाली बात यह है कि अनुस्वार के लिए जब ' ' (बिन्दु) चिन्ह का प्रयोग न करके व्यंजन का प्रयोग किया जाता है तो नासिक्य-व्यंजन का प्रयोग स्वर के साथ होता है, स्वर के ऊपर नही।

अनुनासिकता के स्वनिमिक महत्त्व को स्पष्ट करने के लिए अनुनासिक तथा निरनुनासिक स्वरो के व्यतिरेकी-युग्म इस प्रकार हैं--

/आ, आँ/	/आग/	'आग'
	/आँग/	'इकाई, एक सख्या'
/इ, इँ/	/गिद/	'फल का अन्दर का भाग'
	/गिँद/	'गेंद'
/ई, ईं/	/पी/	'पीना' (आज्ञा०)
	/पीं/	'वाहन ध्वनि'
/उ, उँ/	/बालु/	'नाक का गहना'
	/बालुँ/	'जलाना' (उ० पु० एक० व०)
/ऊ, ऊँ/	/त्वारू/	'रविवार के दिन पैदा होने वाला'
	/तवारूँ/	'उतारना (उ० पु० एक० व०)
/ए, एँ/	/गए/	'गए'
	/गएँ/	'कदम'
/ऐ, ऐं/	/बैठ/	'बैठना' (आज्ञा०)
	/बैंठ/	'खाना खाने की पंक्ति'
/ओ, ओं/	/रोग्गी/	'रोगी'
	/रोंग्गी/	'रोऊगी'
/औ, औं/	/पौ/	'गिरना' (आज्ञा०)
	/पौं/	'वाहन ध्वनि'

1 5 अक्षर व्यवस्था (सिलेबल सिस्टम)—

भाषा-शास्त्र मे अक्षर व्यवस्था का विशेष महत्त्व है। हर भाषा की अक्षर व्यवस्था अपनी-अपनी होती है। हर भाषा का वक्ता अपनी भाषा मे अक्षरो को अपने ढग से बोलता है, यहाँ तक कि एक ही भाषा के दो वक्ताओ मे भी अक्षर-व्यवस्था मे अन्तर मिलता है। इसी कारण अक्षर-व्यवस्था को लेकर डैनियल जोन्स के ये शब्द उचित प्रतीत होते हैं—

'अक्षर की सीमा का निर्धारण करना आसान कार्य नही है ।'[1]

अतः यहाँ पर सर्वप्रथम अक्षर के स्वरूप को लेकर विचार करना आवश्यक है । अक्षर के स्वरूप को हम निम्नांकित भाषाविदो की परिभाषाओ से आसानी से समझ सकते है—

स्टेटसन महोदय अक्षर को एक गत्यात्मक इकाई मानते हैं ।

इस प्रकार स्टेटसन महोदय के अनुसार—'अक्षर हवा के एक झटके या झोके से उत्पन्न ध्वनिसमूह या ध्वनि इकाई है जो वक्ष की मांसपेशियो के सकोचन से फेफडो के बाहर निकलती है । इसी कारण इसे 'श्वासस्पंद' से उद्भूत कहा जाता है ।'[2]

डेनियल जोन्स के अनुसार—'प्रत्येक ध्वनि जिसकी अवयवी मे शिखर का प्राधान्य हो 'अक्षर' कही जाती है । और शब्द या पदबन्ध मे जितने शिखरो का प्राधान्य होगा उसमे उतने ही अक्षर होगे ।'[3]

पेटर महोदय के अनुसार—'अक्षर प्राय एक इकाई (एकक) के रूप मे माना जाता है, जो कि समझा जा सकता है, मगर उसे परिभाषित नहीं किया जा सकता ।'[4]

हॉकेट महोदय—'अक्षर मे 'शीर्ष' पर बल देते हैं । आक्षरिक ध्वनि ही 'शीर्ष' बना सकती है । शीर्ष से पूर्व और पर गह्वर होते हैं । पूर्व गह्वर को 'आनसेट' तथा पर-गह्वर को 'कोडा' नाम दिया है । उदाहरणार्थ—'रेट' शब्द मे 'र' आनसेट है 'से' शीर्ष तथा 'ट्' कोडा है ।'[5]

डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा—'अक्षर का आवश्यक तत्त्व स्वर मानते हैं, वे 'नारद शिक्षा' से उद्धरण देते हुए कहते है कि - व्यजन किसी भाषा मे मोतियो के तुल्य है, जबकि स्वर उस डोरी के तुल्य है जिसमे सभी मोती पिरोए जाते है । स्वर स्वय शासन करता है । 'नारद-शिक्षा' मे स्वर को ही शक्तिमान सम्राट और व्यजन को निर्बल राजा

1 D Jones. An outline of English Phonetics p, 55

2 'The syllable is one in the sense that it consists essentially of a single chest-pulse usually made audible by a vowel, which may be started or stopped by a chest movement'

R H Stetson, Motor Phonetics, 1951

3. 'Each sound which consist a peak of prominence is said to be syllable and the word or phrase is said to contain as many syllable as there are Peaks of prominence'

D Jones, An outline of English Phonetics, p 55

4 'The syllable is often regarded as a unit which can be apprehended, but is not easy to define'.

P. Ledefpged, syllable and Stress. Phonetics in Linguistics edited by W E, Jones and J Laver, P 205

5. C. F. Hockett, A Manual of Phonology, 1956, p. 56

के तुल्य कहा है ...।'[1]

डॉ० उदयनारायण तिवारी के अनुसार—'अक्षर शब्द के अन्तर्गत उन ध्वनि समूहो की छोटी-से-छोटी इकाई को कहते हैं, जिनका उच्चारण एक साथ हो, तथा जिन्हें विभक्त करके बोलने पर उसका कोई अर्थ न निकले।'[2]

डॉ० भोलानाथ तिवारी के अनुसार—'एक या अधिक ध्वनियो या (वर्णों) की उच्चारण की दृष्टि से ऐसी अव्यवह्लित इकाई जिसका उच्चारण एक झटके मे किया जा सके, 'अक्षर' है।'[3]

उपर्युक्त परिभाषाओ को ध्यान मे रखते हुए अक्षर की परिभाषा कुछ इस प्रकार की जा सकती है—'अक्षर भाषा-विशेष मे स्वनिमो का ऐसा क्रम या समूह है, जिसकी स्वर-ध्वनि मुखर (शीर्ष) होती है, तथा जिसके उच्चारण मे हृत्सपदन (चेस्ट पल्स) होता है।'

उपर्युक्त परिभाषा को ध्यान मे रखतेहुए ही मण्डियाली अक्षर व्यवस्था का अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है। मण्डियाली अक्षर व्यवस्था का अध्ययन मुख्य रूप से दो प्रकार से किया जा सकता है—

(1) अक्षरो के प्रकार के आधार पर तथा

(2) अक्षरो की सख्या के आधार पर।

1 5 1 अक्षरों के प्रकार के आधार पर—

अक्षरो के प्रकार के आधार पर मण्डियाली शब्दो मे अक्षर तीन विभिन्न स्थानों पर मिलते हैं—

(1) शब्दो के आदि मे।

(2) शब्दो के मध्य मे।

(3) शब्दो के अन्त मे।

1.5 1 1 शब्दों के आदि मे—

शब्दों की आदि स्थिति मे अक्षर से तात्पर्य, शब्द के आरम्भ मे होने वाले अक्षर से है। मण्डियाली मे शब्दो के आरम्भ मे निम्नाकित दो प्रकार के अक्षर मिलते हैं—

1. 'As the Narda Siksa points out, consonants are like pearls in a necklace, but the thread which supports them is the vowels Narda Siksa compares the vowels to a powerful monarch and the consonant to a weak king ?'
S Verma, Critical Studies in the Phonetics Observataion of Indian Grammarian, pp. 55-56
2. उदयनारायण तिवारी, भाषा शास्त्र की रूपरेखा, पृ० 126
3. भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान, पृ० 354.

(1) स्वरात-अक्षर।
(2) व्यजनात-अक्षर।

अक्षर सकेत—

(1)	स=स्वर
(2)	व=व्यजन
(3)	स =दीर्घ स्वर
(4)	स=अनुनासिक (ह्रस्वस्वर)
(5)	स =अनुनासिक (दीर्घ स्वर)

1 5.1 1.1 **स्वरांत-अक्षर (ओपन सिलेबल)—**

जिन अक्षरो के अन्त मे स्वर आए स्वरात-अक्षर कहलाते हैं। उदाहरणार्थ—आ, पी, खा, कमा, धो, रखा तथा लँ आदि।

यहा पर मण्डियाली मे शब्दो की आदि स्थिति मे पाए जाने वाले अक्षरो के साचो को दिया जा रहा है। मण्डियाली मे शब्दो की आदि स्थिति मे अक्षरो के निम्नांकित साचे पाए जाते हैं—

स	उ-(मेद्)	'आशा'
स	आ	'आना' (आशा०)
स	आँ-(उदा)	'आता'
वस	कु-(णा)	'कोना'
वस	का-(ला)	'काला'
व सं	माँ	'मा'
व व सः	क्या	'क्या'
व व स॰	ख्वां	'खिलवाना' (उ० पु०)

1.5 1.1.2. **व्यजनांत-अक्षर (क्लोज-सिलेबल)**

जिन अक्षरो के अन्त मे व्यजन आए, व्यजनात अक्षर कहलाते हैं। उदाहरणार्थ—काल्, चार्, आज्, पाल्, राम् आदि।

विशेष— मण्डियाली मे स्वरात-अक्षर का आदि स्थिति मे एक और ढाचा स्वीकार किया जा सकता है। /व व व स/ यह ढाचा वास्तव मे बहुत कम मिलता है, तथा उसी समय मिलता है जबकि कोई वक्ता बहुत शीघ्रता मे बोल रहा हो। इसी कारण इसे साँचे के रूप मे स्वीकार करना कठिन है। उदाहरणार्थ—/क्र्वा/ मगर इसका उच्चारण इस रूप मे /कर्वा/ अधिक मिलता है।

सव	उक्-(खल्)	'ओखली'
स॰व	आन्	'अनाज'
वसव	णु	'उनचास'
वस व	कांध्	'दीवार'
व सव	कुण्	'कौन'
व स व	राम्	'व्यक्ति विशेष का नाम' (पु०)
व व स व	त्रिक् (का)	'तरीका, विधि'
व व सः व	घ्योर्.	'पकवान विशेष'
व व स.व	स्यांद (दी)	'सिर की मांग' (तिर्यक् रूप)
व व स व व	क्रिस्न्	'कृष्ण' (नाम विशेष)
व व स व व	प्राप्त्	'प्राप्त'

शब्दो की आदि स्थिति मे स्वरात-अक्षर वितरण आठ प्रकार का तथा व्यजनांत अक्षर वितरण ग्यारह् प्रकार का मिलता है। इस प्रकार शब्दो की आदि स्थिति मे अक्षर वितरण कुल मिलाकर उन्नीस प्रकार का मिलता है।

1.5.1.2. शब्दों के मध्य में—

शब्दो की मध्य स्थिति से तात्पर्य, अक्षर का शब्दो के मध्य मे होने से है। शब्दो के मध्य मे निम्नाकित दोनो प्रकार के अक्षर मिलते हैं—

(1) स्वरात अक्षर।

(2) व्यजनात अक्षर।

1.5.1.2 1. स्वरांत-अक्षर (ओपन-सिलेबल)—

शब्दो की मध्य स्थिति मे स्वरात अक्षरो के निम्नाकित साचे मिलते हैं—

स	[जा]-इ-[ए]	'जाए' बहु० क०
स	[आँ]उँ-[दा]	'आता'
सः	[बु]-आ-[ई]	'फूफा'
सं:	[जुँ]-आँ-[इं]	'लड़की का पति'
वसः	[बु]-ला-[ओ]	'बुलाओ' (आज्ञा०)
वस	[सा]-द-[णा]	'बुलाना'
व व स	[अत्]-तया-[चार]	'अत्याचार'

1.5.1.2.2. व्यंजनांत अक्षर [क्लोज्ड सिलेबल]—

शब्दो की मध्य स्थिति मे व्यजनात अक्षरो के निम्नांकित साँचे मिलते हैं—

वसव	[मुत्]-तर्-[ना]	'पेशाब करना'

वस:व	[प]-टाक्-[णा]	'मारना'
……	[न]-काल्-[ना]	'निकलना'
व स व व	[चन्] दर्म्-[माँ]	'चन्द्रमा'
व व स व	[टव्] ल्याख् [णा]	'हैरान होना'

इस प्रकार स्वरांत अक्षर वितरण शब्दो की मध्य स्थिति मे आठ प्रकार का तथा व्यंजनात अक्षर वितरण चार प्रकार का मिलता है। अत. मध्य स्थिति मे अक्षर वितरण कुल मिलाकर बारह प्रकार का मिलता है।

1.5 1 3 शब्दों के अन्त मे—

शब्दो की अन्त्य स्थिति से तात्पर्य अक्षर का शब्दो के अन्त मे होने से है। शब्दो के अन्त मे निम्नाकित दोनो प्रकार के अक्षर मिलते हैं—

[1] स्वरात-अक्षर।
[2] व्यंजनात अक्षर।

1.5 1 3 1. स्वरांत-अक्षर [ओपन-सिलेबल]—

शब्दो की अन्त्य स्थिति मे स्वरांत-अक्षरो के निम्नांकित साँचे मिलते हैं—

स:	[त् रे] ई	'तेईस'
स:	[नमूँ]-एँ	'गलगल'
वस:	[न्ह् या] रा	'अन्धेरा'
वस.	[धी] याँ	'लडकियाँ'
वस	[बा]-ल॰	'नाक का गहना'
व वस:	[मन्]-त्री	'मन्त्री'

1.5.1.3 2. व्यंजनांत-अक्षर [क्लोज्ड सिलेबल]—

शब्दो की अन्त्य स्थिति मे व्यंजनांत अक्षरो के निम्नाकित साँचे मिलते हैं—

वसव	[उक्] खल्	'ओखली'
···	[भित्] तर्	'अन्दर'
वस·व	[बु] सार्	'हल्दी'
··· .	[क] बेल्	'बेमौका'

विशेष —उपर्युक्त साचो मे /स·/ तथा /स/ साँचो का उच्चारण कम मिलता है। इन साँचो मे /व/ श्रुति रहती है अर्थात् /व/ श्रुति के साथ इनका उच्चारण अधिक मिलता है—उदाहरणार्थ—/बुवाई/, 'फूफा' तथा /ज्वाई/ जमाई/ लेकिन कई बार /व/ श्रुति के बिना भी इनका उच्चारण मिला है। इसी कारण इन साँचो को स्वीकार कर लिया है।

बस: व ब	[चम्] मारड़्	'जहा चमड़े का सामान पड़ा हो' [जहाँ सामान असस्त-व्यस्त हो]

इस प्रकार शब्दो की अन्त्य स्थिति मे स्वरांत अक्षर वितरण छ. प्रकार का तथा व्यंजनात अक्षर वितरण तीन प्रकार का मिलता है। अतः कुल मिलाकर अन्त्य स्थिति मे अक्षर वितरण नौ प्रकार का मिलता है।

अक्षर वितरण को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि मण्डियाली मे स्वरात अक्षरो का आधिक्य है तथा व्यजनात अक्षरो की न्यूनता है। क्योकि व्यजनांत अक्षरो के सांचे, स्वरात अक्षरो के सांचो की अपेक्षा कम मिलते हैं।

1.5.2 अक्षरों की संख्या के आधार पर—

किसी भाषा या बोली मे पाए जाने वाले शब्दो की अक्षर व्यवस्था का अध्ययन अक्षरो की सख्या के आधार पर भी किया जा सकता है। अक्षरो की सख्या के आधार पर मण्डियाली शब्दो का अध्ययन निम्नांकित सख्या के अक्षरो के अन्तर्गत किया जा सकता है।

1 5.2 1 एकाक्षरिक-शब्द [मोनोसिलेबिक वर्ड्स]—

कौन सी भाषा या बोली कितनी सरल है इस बात का अनुमान उस भाषा या बोली मे पाए जाने वाले एकाक्षरिक शब्दो की सख्या से लगाया जा सकता है। डॉ० भाटिया के शब्दो मे—'किसी भी भाषा की सरलता उस भाषा मे प्राप्त एकाक्षरिक शब्दो मे ही आकी जाती है, कौन-सी भाषा कितनी समृद्ध है इसका मूल्याकन भी उस भाषा मे प्राप्त एकाक्षरिक शब्दो से ही सम्भव है।'[1]

मण्डियाली मे एकाक्षरिक शब्दो की न्यूनता नही है। मण्डियाली मे एकाक्षरिक शब्द निम्नांकित दोनो प्रकार के मिलते हैं—

[1] स्वरात-अक्षर तथा
[2] व्यजनात-अक्षर।

1.5.2.1 1. स्वरांत-अक्षर [ओपन सिलेबल]—

स:	आ	'आना' (आज्ञा०)
स:	ऊँ	'ऊवना' (आवाज विशेष)
व सं	चिं	'चिड़ियो की आवाज'

1. डॉ० कैलास चन्द्र भाटिया, हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा, पृ० 83

व स	आ	'आना' (आज्ञा०)
व स.	हाँ	'हाँ'
व व स	क्या	'क्या'
व व सः	म्याँ	'बकरी का मिमियाना'
व व व सं.	भ्र्यूँ	'भवें'

1.5 2.1 2 व्यजनांत-अक्षर [क्लोज्ड सिलेबल]—

स॰ व	आन्	'आनाज'
स व	औंद्	'आने की आशा'
व स व	तुह्	'अन्दर बाडना या धकेलना'
व स व	रंग्	'रग'
व स व	बाग्	'बाग्'
व सं व	बाँड	'बाँट' (आज्ञा०)
स व व	अस्त्	'अस्त'
व स व व	मस्त्	'मस्त'
व सः व व	मूर्त्	'मूर्त'
व व स व	ग्वार्	'गुफा'
......	ब्वाल्	'गर्मी, उबालना' (आज्ञा०)
व व स व	म्यान	'म्यान'
व व व स व	म् ल् यू ड्	'जहाँ गोबर-मूत्र आदि इकट्ठा किया जाता है'

उपर्युक्त एकाक्षरी शब्दो के यहाँ पर केवल साँचे मात्र दिए जा रहे हैं। एकाक्षरी शब्दो मे स्वरात अक्षर वितरण आठ प्रकार का तथा व्यजनात-अक्षर वितरण बारह प्रकार का मिलता है। इस प्रकार एकाक्षरी शब्दो के साचे बीस प्रकार के मिलते हैं।

1 5 2 2 द्विआक्षरिक-शब्द [डाईसिलेबिक वर्डज्]—

द्विआक्षरिक शब्द मण्डियाली मे पर्याप्त मात्रा मे मिलते है। द्विआक्षरिक शब्द वितरण भी निम्नाकित दोनो प्रकार का मिलता है—

[1] स्वरात अक्षर तथा
[2] व्यजनांत अक्षर।

विशेष—स्वरात अक्षर-वितरण मे 'चि' का उच्चारण दीर्घ भी सुनाई पडता है। अत इसे दीर्घ स्वीकार करना ही उचित है। क्योकि ह्रस्व 'इ' का उच्चारण कभी-कभी मिलता है, हमेशा नही।

1 5.2 2 1. स्वरांत अक्षर [ओपन सिलेबल]—

स-वस:	इ-से	'इसने'
स -व स	आ-ड़	'विशेष फल' (आड़ू)
स·-व स:	ऊ-ल	'उल्लू'
··	आ-रा	'लकड़ी काटने का आरा'
स·-स:	आ-ओ	'आओ'
सव-वस	उट्-ठा	'उठना' (आज्ञा०)
स·व-वसं:	आम्-माँ	'माँ'
स व-वस	आत्-मा	'आत्मा'
स·व-व व स	आग्-ग्या	'आज्ञा'
वस-स	क-ई	'अनेक'
······	मु-ई	'एक प्रकार की गाली'
सव-वस:	इह्-याँ	'ऐसे'
व स-स·	धु-ई	'धुन्ध'
व स·-स	रो-ई	'रोना' (स्त्री०)
······	को-ई	'कोई'
वस -स	बाँ-एँ	'बायाँ, बाउडी'
······	दाँ-एँ	'अच्छी तरह, सोच विचार कर, दायाँ'
वस-वस	भ-ला	'अच्छा'
······	च-ला	'चलना' (बहु० व०) (आज्ञा०)
वस -वस	मी-याँ	'जाति विशेष'
······	धी-याँ	'बेटियाँ'
वस -वस	रा-हु	'ग्रह का नाम'
······	बाल	'नाक का गहना'
वस -वस	गा-णा	'गाना'
··· ·	का-ला	'काला'
वसं:-वस	दाँ-वाँ	'पशु बाँधने का रस्सा'

विशेष—व्यजनांत अक्षर साँचो में अन्तिम साँचा—व व व स:व संकलित सामग्री मे अपने आप मे एकमात्र उदाहरण है।

अक्षर-व्यवस्था के अन्तर्गत यहाँ पर अक्षर वितरण के सभी प्रकार के उपलब्ध साँचो को प्रस्तुत किया जा रहा है। एक ही साँचे के सभी शब्दो को देना न तो सम्भव ही है तथा न ही तर्क संगत है। मगर फिर भी कहीं-कहीं पर एक ही साँचे के दो-दो उदाहरण किसी भी प्रकार के सन्देह को दूर करने के लिए दे दिए गए हैं।

व व स-वस	प्र-भु	'प्रभु'
व स:व-व स:	छाड्-डा	'छोडो' (आज्ञा०)
व स:व-वस:	फांस्-सी	'फांसी'
व व-वस:	समर्-थी	'इच्छा'
व स व-वस:	किह्-यां	'कैसे'
व स व-व व स:	जन्-त्री	'वार्षिक जन्त्रिका'
• • •	मन्-त्री	'मन्त्री'
व व स:-वस:	क्या-री	'क्यारी'
• •••	न्ह्या-रा	'अन्धेरा'
व व सं.-सं.	म्यां-ऊं	'बिल्ली की आवाज'
व व स:-स:	प्या-ऊ	'प्याऊ'
व व स -व व स	न्यूं-द्रा	'निमन्त्रण'
व व स. व -वस:	छ्यास्-सी	'छियासी'
••	ब्याल्-ली	'रात का भोजन'
••••••	प्योक्-का	'माईका'
व व व स: व -वस	त्र्यास्-सी	'तिरास्सी'
व व स व-व वस:	ब्रम्-म्हा	'ब्रह्मा'

1.5.2 2.2 **व्यंजनांत-अक्षर [क्लोज्ड सिलेबल]—**

स.-सव	आ-उंद्	'आने की आशा'
स-व स व	अ-मर्	'अमर'
स:-वसव	औ-खत्	'दवा' औषिधि'
स-वस व	अ-सार्	'आसार'
स-वसवव	अ-गस्त्	'अगस्त'
वस-वस:व	म-रूद्	'अमरूद'
••••••	र-माल्	'रूमाल'
वस-वसव	न-जर्	'नजर'
••• •	ख-बर्	'समाचार'
सव-वस:व	अगं-मूर्	'अंगूर'
स व-वसव	औत्-तर्	'सन्तानहीन'
स: व-वस.व	ऐह्-सान	'अहसान'
वस:-वसव	पागल्	'पागल'
वसव-वस:व	सम्-भाल्	'सम्भालना'
••••••	बर्-सात्	'बरसात्'
वसव-वसव	चप्-पण्	'शरारती लड़की, बातूनी'

......	चप्-पल्	'चप्पल'
वस'व-वसव	दा-कड्	'मैल की परत'
वम व-वस	राज्-पूत्	'जाति'
......	खान्-दान्	'खानदान'
वसव-वसवव	सम्-बन्ध्	'सम्बन्ध'
वसव-वस व	बच्-छ्याण्	'बिस्तर'
......	पन्-ज्याह्	'पचास'
वसवव-वस:व	सन्स्-कार्	'सस्कार'
व व स व-वसव	ब्रा्ह्-मण्	'ब्राह्मण'
ववस-वसव	त्र्यो-दस्	'तरयोदस'

इस प्रकार मण्डियाली मे उपर्युक्त द्विआक्षरिक वितरण मे स्वरांत अक्षर वितरण बीस प्रकार का मिलता है। इस प्रकार द्विआक्षरिक वितरण के सांचे कुल मिलाकर इक्यावन प्रकार के मिलते हैं।

1.5 2 3. त्रिआक्षरिक शब्द [ट्रीसिलेबिक वर्डज़]—

मण्डियाली मे त्रिआक्षरिक शब्द निम्नांकित दोनो प्रकार के मिलते हैं—

[1] स्वरात अक्षर तथा

[2] व्यजनात अक्षर।

1 5.2 3 1. स्वरांत-अक्षर [ओपन सिलेबल]—

स-वस -वस·	उ-म-ला	'उल्टा'
स-वस -वस	अ-सा-रा	'इशारा'
स.-वस-वस·	आ-धि-या	'शराब की आधी बोतल'
स:-स-स	आ-इ-ए	'आएँ'
सव-वस-वस·	उत्-त-णा	'उतना'
सव-वस -वस:	उण्-ता-ली	'उनतालीस'
सव-वस-वस:	अस्-क-ल	'चावल के आटे का पकवान'
स.व-वस-वस	ऐंह्-क-ल	'चावल के आटे का पकवान'
सव-वस -स	उप्-रा-ओ	'ऊपर की ओर' (तिर्यक्)
सव-वम व-वस·	अग्-रेज्-जी	'अंग्रेजी'
वस -स-स	भा-इ-ए	'भाई ने' (तिर्यक्)
....	-ता-इ-ए	'ताई ने' (तिर्यक्)
वस -वस-वस:	हाकि्-ख-यीं	'आँखें'
वस-वस।-वस·	क-ती-री	'कैंची'
वस-वस -स:	क-मा-ई	'कमाई'

... .	च-ढ़ा-ई	'चढ़ाई'
वस॰-वस-वस॰	बा-न्ह-णे	"बाधने'
वस-वस-स:	च-लि-ए	'चलें'
.. ..	क-रि-ए	'करे'
वस-वस -व-वस:	ज-नीत्-रू	'वरयात्री'
.. .. ..	द-दोह्-रा	'पति का दादा'
वस-वस -वस-वस	क-डोह्ल्-लू	'कगन, बाजुबद'
वसव-वस॰-स:	कठ्-या-ई	'चावल मापने का बर्तन'
वस:व-वस-वस	छेक्-क-णा	फाडना'
. . ...	मेक्-क-णा	'टेढा करना'
वसं व-वस-वस	बाँड्-ड-णा	'बाटना'
वस.व-वस-वस.	छाड्-ड-णा	'छोडना'
वसव-वस-वस	छिल्-ल-णा	'छिलना'
.. ..	मिल्-ल-णा	'मिलना'
वसव-वस -वस	सर्-का-री	'सरकारी'
वसव-वस व-वस:	बर्-बाद्-दी	'बरबादी'
वसव-वस॰-वस	मग्-वा-णा	'मगवाना'
वसव-वस व-वस.	घच्-चीम्-णा	'जोर से आलिंगन करना'
वसव-वसवव-वस॰	चन्-दर्म्-मा	'चन्द्रमा'
ववसवव-वस -वस:	ब्रह्म्-चा-री	'ब्रह्मचारी'

1 5 2 3 2 (व्यजनांत अक्षर क्लोज्ड-सिलेबल)—

स व-वस -वस व	आफ्-री-बाद्	'शाबाश'
स॰व-ववस:-वस व	अत्-त्या-चार्	'अत्याचार'
'वस-वस-वस:व	प-रि-वार्	'परिवार'
'वस-वस -वस व	जि-मी-दार्	'जमीदार'
वस -वस -वस व	का-रो-बार्	'कामकाज'
वस -वस-वस व	हा-नु-मान्	'हनुमान'
....	का-लि-दास्	'कालिदास'
वस-वस॰-वस:व	ल-गा-तार्	'लगातार'
वस -वस -वसव	का-री-गर्	'कारीगर'
वस-वसव-वसव	ज-ठुत्-तर्	'जेठ का लडका'
....	न-ड्त्-तर्	'ननद का लडका'

विशेष : व्यंजनांत अक्षरो मे 'हानुमान' का उच्चारण 'हनुमान' भी मिलता है।

वस-वसव-वसव	ज-गिन्-दर्	'जोगिन्द्र' [नाम पु०]
वस-वस.-वसव.	च-मा-रड्	'चमड़े का काम करने का स्थान, जहाँ सामान अस्त-व्यस्त पड़ा हो'
वसव-वस.व-वसव	पच्-छोह्-लण्	'चावल की मांड से तैयार की गई सब्जी'
वसव-वस.-वसव	सत्-तो-कड्	'अधिक सोने वाला'

उपर्युक्त त्रिआक्षरिक शब्दो के साचो मे स्वरात अक्षरो के साचे तो पर्याप्त मिल जाते हैं, मगर व्यजनात अक्षरो के सांचे, स्वरात अक्षरो के साचो की अपेक्षा कम मिलते हैं। उपर्युक्त साचो मे स्वरांत अक्षर वितरण उनतीस प्रकार का तथा व्यजनात अक्षर वितरण तेरह प्रकार का मिलता है। इस प्रकार त्रिआक्षरिक वितरण कुल मिलाकर ब्यालीस [42] प्रकार का मिलता है।

1 5.2.4 (चतुर्आक्षरिक शब्द टैटरासिलेबिक-वर्डज)

मण्डियाली मे चतुर्आक्षरिक शब्द निम्नांकित दोनो प्रकार के मिलते हैं—

[1] स्वरात-अक्षर तथा

[2] व्यजनांत अक्षर।

1 5 2 4 1 स्वरात अक्षर [ओपन-सिलेबल]—

स-वस -वस-वस	अ-लो-क-णा	'सिर पर पैसे घुमाकर ग्रह उतारने की क्रिया'
वस -वस -वस -वस.	चौ-की-दा-री	'चौकीदारी'
वस-वस -वस -वस	जि-मे-बा-री	'जिम्मेवारी'
वस -वस -वस व-वस	चौ-की-दार्-नी	'चौकीदार' [स्त्री०]
वस-वस-वस व-वस	भ-ल-माण्-सी	'भला मानुषपन' [भलाईपन]
वसव-वस -वस -वस.	जिम्-मे-वा-री'	'जिमेवारी'
वस व-वस -वस व-वस	पैह्-रे-दार्-नी	'पह्रेदार' [स्त्री०]
वसव-वस-वस -वस	पच्-छ-ता-वा	'पश्चाताप्'
वस व-वस -वस-वसः	सेप्-पू-ब-डी	'मांस की बड़ियाँ'
वसव-वसव-वस -वस	बक्-कड-वा-दी	'बातूनी'
वसव-वस -वस-स	पट्-वा-रि-ए	'पटवारी' [तिर्यक्]
वसव-वसः स-स	बण्-वा-इ-ए	'बनवाएँ'
वसव वस -स-वस·	पन्-चा-इ ती	'पचायती' [तिर्यक्]

विशेष चतुर्आक्षरिक-सांचो मे 'जिम्मेवारी' का उच्चारण 'जिमेवारी के रूप मे होने के कारण दो सांचे स्वीकार कर लिए गए हैं। उपर्युक्त दोनो उच्चारण मिलते हैं।

ववस-वस'-वस व-वस.	सर् का-घाट्-टा	'सरकाघाट [तिर्यक्] [स्थान विशेष का नाम]
वस-वस व-वस.-वस	दु-कान्-दा-री	'दुकानदारी'
वस.व-वस -वस-वस	सौद्-दा-गि-री	'सौदा करना'
वस व-वस.-वस व-वस	सौद्-दा-बाज्-जी	'सौदे से सम्बन्धित'
वसव-वस.-वस-वसा	कल्-थी-च-डा	'कोलथ सहित पके चावल'
वसव-वसव वस व-वस	खज्-जर्-खोप्-पा	'भूमि मे पाए जाने वाले फल विशेष का नाम
वस व-वसवव-वस ब-वस	पाक्-किस्त्-तान्-नी	'पाकिस्तानी'

1 5.2 4 2 **व्यजनांत अक्षर [क्लोजड-सिलेबल]—**

वस व-वस-वसव-वसव डौड्-क-बुत्-तर् 'बुद्धिहीन'

उपर्युक्त चतुर्आक्षरिक सांचो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मण्डियाली में चतुर्आक्षरिक सांचो मे मुख्य रूप से स्वरांत सांचे अधिक मिलते हैं। व्यजनात सांचो का जहाँ तक सवाल है, सकलित सामग्री मे एकमात्र उदाहरण ही प्राप्त होता है। अत कहा जा सकता है कि मण्डियाली मे चतुर्आक्षरिक सांचो मे स्वरात सांचो का बाहुल्य तथा व्यजनात सांचो की न्यूनता है। स्वरात सांचे बीस [20] प्रकार के तथा व्यंजनात सांचा एक [1] ही प्रकार का मिलता है। इस प्रकार कुल मिलाकर चतुर्आक्षरिक सांचे इक्कीस [21] प्रकार के मिलते हैं।

1 5 2 5. **पचमाक्षरिक-शब्द [पेन्टासिलेबिक वर्डज]—**

पचमाक्षरिक सांचे मण्डियाली मे सामासिक तथा मिश्र ही मिलते हैं, तथा उनमे भी/औला/तथा इसके विभिन्न रूप [औली तथा औले] प्रत्यय के योग से पर्याप्त मिल जाते है। सामासिक तथा मिश्र शब्दो को सांचो के रूप मे स्वीकार नही किया गया है।

सामासिक शब्द का उदाहरण लिया जा सकता है।

वस -वस -वस -वस-स	चौ-की-दा-रि-ए	'चौकीदारी'	[तिर्यक्]
वस-वस -वस-वस-स	जि-मे-वा-रि-ए	'जम्मेवारी'	[तिर्यक्] आदि।

इस प्रकार सामासिक शब्दो को उदाहरण के रूप मे लेकर आक्षरिक सांचे, पचमाक्षरिक सांचो से लेकर सप्ताक्षरिक सांचो तक बढ़ जाते हैं। यहाँ पर जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि सामासिक शब्दो को सांचो के रूप मे स्वीकार नही किया गया है।

विशेष : उपर्युक्त चतुर्आक्षरिक सांचो मे 'सौद्दाबाज्जी' का उच्चारण 'सौद्दाबाजी' भी मिलता है।

1 6 स्वरानुक्रम [वावल-सिकुएन्सीज]—

स्वरानुक्रम से तात्पर्य दो या अधिक स्वरो के अनुक्रम या पास-पास आने से है। जैसा कि 'स्वरानुक्रम' शब्द से स्वय ही स्पष्ट है कि इसमे स्वरो का अनुक्रम होता है। स्वरो का अनुक्रम ही स्वरानुक्रम कहलाता है।

मण्डियाली मे स्वरानुक्रम तथा स्वर-सयोग या सयुक्त-स्वर दोनो मिलते हैं तथा दोनो मे अन्तर है। कुछ लोग स्वरानुक्रम तथा स्वर-सयोग को एकही मानते हैं, जबकि इन दोनो मे अन्तर है। स्वरानुक्रम तथा स्वर-सयोग या सयुक्त-स्वर मे निम्नांकित अन्तर है—

[1] स्वरानुक्रम मे दो स्वर अलग-अलग तथा स्वतन्त्र इकाइयाँ होती हैं, जबकि स्वर-सयोग या सयुक्त-स्वर मे दोनो मिलकर एक इकाई बन जाती है।

[2] स्वरानुक्रम की तुलना मे स्वर-सयोग के लिए सयुक्त-स्वर या सध्यक्षर-स्वर [डिफ्थाँग] नाम दिए जा सकते हैं।

[3] स्वरानुक्रम मे दूसरा स्वर ह्रस्व या दीर्घ कोई भी हो सकता है, मगर स्वर-संयोग या सयुक्त-स्वर मे दूसरा स्वर ह्रस्व ही होता है। स्वर-सयोग मे प्रथम स्वर ह्रस्व या दीर्घ कोई भी हो सकता है।

[4] उच्चारण की दृष्टि से स्वरानुक्रम मे स्वर-सयोग या सयुक्त-स्वर की अपेक्षा अधिक समय लगता है।

स्वरानुक्रम के उदाहरण इस प्रकार हैं—आई, आए तथा गए आदि।

स्वर-सयोग या सयुक्त-स्वर के उदाहरण इस प्रकार हैं—अइ तथा अउ आदि।

स्वर-सयोग को लेकर सयुक्त-स्वर या सध्यक्षर-स्वर के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है।

मण्डियाली मे स्वरानुक्रम मुख्य रूप मे निम्नांकित प्रकार का मिलता है—

[1] दो स्वरो का अनुक्रम।
[2] तीन स्वरो का अनुक्रम तथा
[3] चार स्वरो का अनुक्रम।

1 6 1. दो स्वरों का अनुक्रम —

दो स्वरो के अनुक्रम से तात्पर्य दो स्वरो के अनुक्रम या पास-पास आने से है। दो स्वरो का अनुक्रम निम्नांकित स्थितियो मे मिलता है।

विशेष स्वरानुक्रम तथा स्वर-सयोग या सयुक्त-स्वर मे अन्तर है, मगर स्वरानुक्रम के अन्तर्गत इस अन्तर को स्वीकार नही किया गया है। इसीलिए सयुक्त-स्वरो को स्वरानुक्रम के रूप मे स्वीकार किया गया है। अतः स्वरानुक्रम तथा स्वर-सयोग या सयुक्त-स्वरो को मुक्त-वितरण [फ्री-वेरिएशन] मे स्वीकार किया गया है।

[1] आदि स्वरानुक्रम ।
[2] मध्य स्वरानुक्रम तथा
[3] अन्त्य स्वरानुक्रम ।

1 6 1 1 आदि स्वरानुक्रम—

आदि स्वरानुक्रम निम्नांकित स्वरो के साथ मिलता है ।

/आ/ के साथ	/आई/	'आना' [स्त्री०]
	/आए/	'आना' [बहु० व०]
	/आओ/	'आना' [आज्ञा०]
	/आऊँ/	[स्वय आना]
/ओ/के साथ	/ओए/	'सम्बोधन द्योतक' [विशेष रूप से अपने से छोटे के लिए]

दो स्वरो के आदि स्वरानुक्रम को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

द्वितीय स्वर

प्रथम स्वर	अ	आ	ऐ	ई	उ	ऊ	ए	इ	ओ	औ
अ										
आ				×		×	×		×	
इ										
ई										
उ										
ऊ										
ए										
ऐ										
ओ							×			
औ										

H6638

1 6 1.2 मध्य स्वरानुक्रम—

मध्य स्वरानुक्रम निम्नांकित स्वरों के साथ मिलता है।

/अ/के साथ	/अइ/	गइरा/	'गया है'
/आ/के साथ	/आइ/	पाइरा/	'पाया है'
	/आउ/	/पाउडर/	'पाउडर'
/इ/के साथ	/इअ/	/तबिअत/	'तबीयत'
	[/तबिअत/मे/य्/की श्रुति भी रहती है।]		
/उ/के साथ	/उइ/	/हुइरा/	'हुआ है'
	/उइ/	/मुइरा/	'मरा हुआ है'
/ए/के साथ	/एअ/	/बेअक्कल/	'अक्कलहीन'
	/एई/	/बेईमान्नी/	'बेईमानी'
	/एइ/	/तेइया/	'बीमारी का नाम'
/ओ/के साथ	/ओइ	/धोइरा/	'धोया है'

दो स्वरो के मध्य स्वरानुक्रम को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

द्वितीय स्वर

प्रथम स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
अ			×							
आ			×		×					
इ	×									
ई										
उ			×							
ऊ										
ए	×		×	×						
ऐ										
ओ			×							
औ										

1 6 1 3. **अन्त्य स्वरानुक्रम—**

अन्त्य स्वरानुक्रम निम्नांकित स्वरो के साथ मिलता है ।—

/अ/के साथ	/अई/	/कई/	'कई'
	/अए/	/गए/	'गए'
	/अऊ/	/लऊँ/	'स्वय लेना'
/आ/के साथ	/आई/	/भाई/	'भाई'
	/आए/	/गाए/	'गाय'
		/पाए/	'पाना'
	/उअ/	/ताउ/	'ताया'
	/आओ/	/गाओ/	'गाना' (आज्ञा०)
		/जाओ/	'जाना' (,,)
/इ/के साथ	/इऊ/	/धिऊ/	'घी'
	/इओ/	/म्हृठिओ/	'लडकिओ' (सम्बोधन)

[/धि ऊ/ तथा /पि ओ/ मे /य/ की श्रुति भी रहती है ।]

/ई/के साथ	/ईआ/	/धीआँ/	'लडकियाँ'
	/ईए/	/धीए/	'लडकी' (तिर्यक् रूप)
	/ईओ/	/पीओ/	'पीना' (आज्ञा०)

[उपर्युक्त तीनो उदाहरणो मे /ई/ के साथ [य] की श्रुति रहती है ।]

/उ/के साथ	/उआ/	/हुआ/	'हुआ'
	/उई/	/मुई/	'एक प्रकार की 'गाली'
	/उए/	/मुए/	'एक प्रकार की गाली' (बहु० व०)
	/उओ/	/बुओ/	'बुआ' (सम्बोधन) (बहु० व०)
/ऊ/के साथ	/ऊआ/	/मूआ/	'एक प्रकार की गाली'
	/सूआ/	/सूआ/	'बडी सूई'
	/ऊए/	/सूए/	'सूई' (बहु० व० पु०)
/ए/के साथ	/एई/	/तेरेई/	'तेईस'
	/एआ/	/लिआ/	'लेना,लो' (आज्ञा०)

	/एऊ/	/सेऊ/	'सेब'
	/एओ/	/लेओ/	'लेना, लो'(आज्ञा०)
/ओ/के साथ	/ओआ/	/खोआ/	'खोआ' (दूध से बना)
	/ओआ/	/धोआ/	'धोना' (आज्ञा०)
	/ओई/	/कोई/	'कोई'
	/ओए/	/लोए/	'रोशनी'
		/धोए/	'धोना'

दो स्वरो के अन्त्य स्वरानुक्रम को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

द्वितीय स्वर

प्रथम स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
अ				×		⊠	×			
आ				+		×	×		×	
इ						×			×	
ई	×						×		×	
उ	×			×			×		×	
ऊ	×						×			
ए	×			×		×			×	
ऐ										
ओ	×			×			×			
औ										

1 6 2 **तीन स्वरों का अनुक्रम—**

तीन स्वरो के अनुक्रम से अभिप्राय: तीन स्वरो के अनुक्रम या पास-पास आने से है अर्थात् तीन स्वरो का क्रम मे आना। तीन स्वरो के अनुक्रम मे तीसरे स्वर मे /य्/ अथवा /व्/ की श्रुति भी मिलती है, मगर यहाँ पर उन्हे स्वर के रूप मे ही स्वीकार किया गया है।

तीन स्वरो का अनुक्रम केवल दो ही स्थितियो मे मिलता है—

[1] आदि स्वरानुक्रम तथा
[2] अन्त्य स्वरानुक्रम।

1 6 2 1 **आदि स्वरानुक्रम—**

आदि स्थिति मे तीन स्वरो का अनुक्रम निम्नाकित स्वरो का मिलता है—

/आ/ के साथ	/आइआ/	'आना' [अपूर्ण पक्ष] स्त्री.
	/आइए/	'आएँ' [आज्ञा हेतु] पु.

1 6.2 2. **अन्त्य स्वरानुक्रम—**

अन्त्य स्थिति मे तीन स्वरो का अनुक्रम निम्नाकित स्वरो के साथ मिलता है—

/अ/ के साथ	/अइआ/	/लइआ/	'लेना' (बहु० व०)
		/सइआ/	'सोना' (पूर्ण पक्ष) (स्त्री०)
	/अउआ/	/चउआ/	'खेल विशेष का नाम'
		/पउआ/	'शराब की बोतल का 1/4' भाग]
	/अइए/	/सइए/	'सोएँ आज्ञा' हेतु]
		/कइए/	'कई'(तिर्यक् बहु० व०)
/आ/ के साथ	/आइआ/	/ताइआ/	'ताई' (तिर्यक्)
	/आइए/	/जाइए/	'जाएँ' (तिर्यक्)
	/आइओ/	/भाइओ/	'भाई'(तिर्यक् बहु० व०)
	/आउओ/	/भाउओ/	'लडका' (तिर्यक् बहु० व०)
	/आउए/	/ताउए/	'ताया' (तिर्यक्)
		/भाउए/	'लडका' (तिर्यक्)
/उ/ के साथ	/उइआ/	/सुइआ/	'सुइयाँ' (गाय तथा भैस का बच्चा होना' (बहु० व०)
	/उइए/	/मुइए/	'प्यार रूपी सम्बोधन'
	/उइओ/	/मुइओ/	'प्यार रूपी सम्बोधन' (बहु० व०)
	/उआई/	/बुआई/	'फूफा'

विशेष—मण्डियाली मे आदि तथा मध्य स्वरानुक्रम के उदाहरण अन्त्य स्वरानुक्रम की अपेक्षा कम मिलते हैं। शब्दो की अन्त्य स्थिति मे ही स्वरानुक्रम अधिक मिलता है।

/ओ/ के साथ	/ओइआ/	/धोइआ/	'धोना'[पूर्ण पक्ष, बहु० व०]
		/रोइआ/	'रोना' [बहु० व० स्त्री०]
	/ओइए/	/धोइए/	'धोना' [बहु० व०]
		/रोइए/	'रोना' [बहु० व०]

तीन स्वरो के अन्त्य स्वरानुक्रम को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

प्रथम स्वर	द्वितीय स्वर	तृतीय स्वर			
		आ	ई	ए	ओ
अ	इ	×			
	उ	×			
	इ			×	
आ	इ	×			
	इ			×	
	इ				×
	उ				×
	उ			×	
उ	इ	×			
	इ			×	
	इ				×
	आ		×		
ओ	इ	×			
	इ			×	

विशेष—उपर्युक्त दिखाए गए स्वरानुक्रम के उदाहरणो मे /आ/ स्वर के स्थान पर
/य/ अथवा /व/ की श्रुति भी रहती है।

1 6 3. **चार स्वरों का अनुक्रम**—

चार स्वरो के अनुक्रम से अभिप्राय चार स्वरो के अनुक्रम या पास-पास आने से है। चार स्वरो का अनुक्रम केवल अन्त्य स्थिति मे ही मिलता है।

1 6.3 1. **अन्त्य स्वरानुक्रम**—

चार स्वरो के अन्त्य स्वरानुक्रम का उदाहरण इक्का-दुक्का ही मिलता है।

/उ/ के साथ	/उ आ इ आ/	/बु आ इ आ/	'फूफा'
	/उ आ इ ए/	/बु आ इ ए/	'फूफा' [तिर्यक्]

उपर्युक्त दोनो उदाहरणो मे दूसरे स्वर मे /व/ तथा अन्तिम स्वर मे /य/ की श्रुति रहती है।

विशेष—[1] स्वरानुक्रम मे /ऐ/ तथा /औ/ अनुक्रम के रूप मे नही आते हैं।
[2] स्वरानुक्रम मे /अ, इ, उ/ अन्तिम स्वर के रूप मे नही आते हैं।
[3] समान स्वर मण्डियाली मे अनुक्रम मे नही आते हैं।
उदाहरणार्थ—/अ अ/ तथा /ई ई/ आदि।
[4] समान स्वरो के ह्रस्व तथा दीर्घ रूप या दीर्घ ह्रस्व रूप भी अनुक्रम रूप मे नही आते हैं।

उदाहरणार्थ—/अ आ/ तथा /ई इ/ आदि।

आक्षरिक सांचो के लिए स्वतन्त्र शब्दो को ही स्वीकार किया गया है, सामासिक शब्दो को नही।

अत· मण्डियाली की अक्षर व्यवस्था को देखते हुए निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि मण्डियाली मे स्वतन्त्र शब्दो के आक्षरिक सांचे चतुर्आक्षरिक सांचो तक ही मिलते हैं। चतुर्आक्षरिक सांचो के पश्चात् सप्ताक्षरिक-सांचो तक सामासिक तथा मिश्र शब्दो के सांचे मिलते हैं, जिन्हे कि सांचो के रूप मे स्वीकार नही किया गया है।

अत मण्डियाली मे अक्षरो के सांचे स्वतन्त्र शब्दो को ध्यान मे रखते हुए चतुर्आक्षरिक सांचे ही मिलते हैं।

1 7. **व्यंजन-गुच्छ [कान्सोनेंट-क्लस्टर्ज]**—

व्यजन-गुच्छ से तात्पर्य दो या अधिक व्यजनो के साथ-साथ या पास-पास आने से है। इस बात को और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। यदि दो व्यजनो का गुच्छ हो तो दोनो व्यजन निर्बल या स्वरहीन होगे। यदि तीन व्यंजनो का गुच्छ हो तो तीनो व्यजन निर्बल या स्वरहीन होगे। व्यजनो मे स्वर का लोप होना व्यजन-गुच्छ को जन्म देता है। जैसा कि 'व्यजन-गुच्छ' शब्द से स्वय ही स्पष्ट है कि इसमें व्यजनो का क्रमिक समूह होता है।

अत कहा जा सकता है कि व्यजनो का ऐसा क्रमिक समूह जिसमे स्वर लुप्त हो गये हो, व्यजन-गुच्छ कहलाता है ।

व्यजन-गुच्छ के लिए कुछ लोग व्यजन-अनुक्रम भी कहते हैं । हॉकिट महोदय व्यजन-गुच्छ को व्यजन-अनुक्रम भी कहते हैं—'दो व्यजनो के अनुक्रमो या गुच्छो मे साधारणतय /र, ल, व, ज/ पूर्व गह्वर के दूसरे सदस्य के रूप मे आते हैं ।'[1]

यह एक विवाद का विषय बन चुका है कि व्यजन-गुच्छ को व्यजन-गुच्छ कहा जाए या[व्यंजन-अनुक्रम] । वास्तव मे दोनो ही नाम उपयुक्त हैं, मगर आज इन दोनो को अलग-अलग माना जाता है । व्यजन-अनुक्रम की स्थिति को स्वीकार करने के लिए लोग यह कहते हैं कि व्यजन-अनुक्रम दीर्घ व्यजन के कारण मिलता है । अत यह कहा जाता है कि अक्षर विभाजन पर दीर्घ व्यजन का एक व्यजन, एक स्वर के साथ मिलता है तथा दूसरा व्यजन, दूसरे स्वर के साथ मिलता है ।

ऐसी स्थिति मे शब्दो के मध्य मे दीर्घ-व्यजन, व्यजन-गुच्छ न रह कर व्यजन-अनुक्रम का रूप धारण कर लेता है । अर्थात् व्यजन-गुच्छ भग हो जाता है । इस खडित दीर्घ-व्यजन के व्यंजन-गुच्छ को कुछ विद्वान व्यजन-अनुक्रम की सज्ञा देते हैं ।

यहाँ पर व्यजन-गुच्छ पर विचार करने के लिए इस विवाद की जड को ही समाप्त कर दिया गया है । अत विद्वानो ने जिस स्थिति मे व्यजन-अनुक्रम स्वीकार किया है, उस स्थिति को व्यजन-गुच्छ के अन्तर्गत स्वीकार ही नही किया गया है ।

अर्थात् दीर्घ-व्यजन का मध्य स्थिति मे अक्षर विभाजन पर व्यजन-गुच्छ भग हो जाता है । यहाँ पर दीर्घ-व्यजन को व्यजन-गुच्छ के रूप मे स्वीकार ही नही किया गया है । क्योकि दीर्घ-व्यजन दीर्घ है तथा दीर्घता को यहाँ पर अधिखण्डात्मक स्वनिम के रूप मे स्वीकार किया गया है । अत दीर्घ व्यजन को व्यजन-गुच्छ के रूप मे स्वीकार करने का अर्थ होगा 'दीर्घता को अधिखण्डात्मक स्वनिम के रूप मे नकारना ।' इसीलिए दीर्घ व्यजन को व्यजन-गुच्छ के रूप मे स्वीकार नही किया गया है ।

व्यजन-गुच्छो को उनके आगमन और स्थान के आधार पर तीन भागो मे बांटा जा सकता है—

[1] शब्दो के आदि मे
[2] शब्दो के मध्य मे तथा
[3] शब्दो के अन्त मे ।

उपर्युक्त स्थितियो मे व्यजनो की सख्या के आधार पर दो ही प्रकार के व्यजन-गुच्छ मिलते हैं—

---

1 'Sequences, or clusters of two consonants occurring as on-sets often have /r, l, w, j/ as the second'
C. F. Hockett, A Course in Modern Linguistics, P 86

[1] द्विव्यंजन-गुच्छ तथा

[2] त्रिव्यंजन-गुच्छ ।

शब्दो की उपर्युक्त स्थितियो मे द्विव्यजन-गुच्छ तथा त्रिव्यंजन-गुच्छ ही मिलते हैं । व्यजन-गुच्छ मे दिए जा रहे कुछ व्यजन-गुच्छ ऐसे हैं जो कि हमे उसी समय मिलते हैं, जबकि कोई वक्ता शीघ्रता मे बोलता जा रहा हो ।

शब्दो के आदि, मध्य तथा अन्त्य स्थितियो मे व्यजन-गुच्छो के उदाहरण इस प्रकार हैं—

1.7.1. द्विव्यजन-गुच्छ—

	आदि	मध्य	अन्त्य
/प/ + /फ/	......	/जप्फी/ 'प्यार से मिलना'	......
/त्/	......	/गुप्ता/ 'गुप्ता'	/तप्त/ 'गर्मी'
/द्/	......	/नप्दा/ 'झुकता'	......
/ट्/	......	/चप्टा/ 'समतल पत्थर'	/कप्ट/ 'कष्ट'
/क/	......	/चुप्के/ 'चुपचाप'	/टप्का/ 'बूद-बूद गिराना'
/ग्/	......	/नप्गा/ 'झुकेगा'	......
/स्/	......	/वाप्सी/ 'वापसी'	....
/र्/	/प्राल/ 'पुआल'	/खप्रा/ 'बूढा'	....
/ल्/	/प्लाव/ 'चावल पुलाव'	/चप्लीं/ 'चपलें'	
/ण्/	......	/नाप्णा/ 'नापना'	......
/ल/	प्लस्सा 'घेरा'	/चप्ला/ 'चपला'	......
/य/	/प्याज/ 'प्याज'	/नाप्या/ 'मापा' (पू० प०)	......

	आदि	मध्य	अन्त्य
/व्/	/प्वार/ 'अचेत अवस्था'	……	……
/फ/+/त/	……	/हफ्ता/ 'सप्ताह'	……
/द/	……	/हाफ्दा/ 'हाँपता'	.. .
/ज्/	…	……	/लफ्ज/ 'शब्द'
/ग/	……	/ल्हफ्गा/ 'झुकेगा' [पेड़]	…. .
/र्/	/फ्राक/ 'बच्चो की कमीज'	/मुसाफ्री/ 'मुसाफिरी'	…..
/ड/	……	/रफ्डा/ 'झझट'	……
/ल/	…..	/चिफ्ला/ 'फिसलने वाला'	/चिफल्/ 'फिसल'
/ल्/	……	/निफ्ला/ 'स्वादहीन'	.
/ण्/	……	/हाफ्णा/ 'हाँपना'	
/व/	/फ्वाण/ 'उफान'		…..
/ब/+/त/		/साब्ता/ 'पूरा, ठीक'	.
/द्/	…. .	/सब्दा/ 'शब्द' [तिर्यक्]	/मब्द/ /शब्द/
/ज/	……	/कब्जी/ 'कब्ज'	/नब्ज्/ 'नब्ज'
/क/		/डुब्की/ 'गोता'	/सब्क्/ 'सबक'
/ग/	……	/डूब्गा/ 'डूबेगा'	……
/स/	……	/हब्सी/ 'हब्शी'	.. …

	आदि	मध्य	अन्त्य
/भ/	...	/चिक्कड़-चाब्भ्ड़/ 'कीचड़ आदि'	......
/र/	/ब्रात्/ 'बारात'	/कब्रां/ 'कब्रें'	.....
/ड/	......	/लब्ड़ा/ 'होठ' [तिर्यक्]	......
/ल/	/ब्लेड/ 'ब्लेड'	/तब्ला/ 'तबला'	
/ल/	....	/डिब्ला/ 'गहरा पानी'	......
/ण/	......	/चाब्णा/ 'चबाना'	......
/य/	/ब्याह/ 'बिवाह'	/चाब्या/ 'चबाया'	......
/व/	/ब्वाल/ 'उबाल'	...	......
/भ/ + /र/	/भ्रेल्ना/ 'पागल होना—'	..	......
/य/	/भ्याग/ 'सुबह'	......	......
/व/	/भ्वार/ 'झाड़ु, सफाई'		......
/न/ + /द/	.....	/कात्दा/ 'कातना'	......
/क/	.	/बत्कां/ 'बतकें'	......
/ग/	.....	/कात्गा/ 'कातेगा'	
/स/	......	/जोत्सी/ 'ज्योतषी'	..
/म/	.....	/खात्मा/ 'समाप्ति'	....
/न/	.....	/रत्नी/ 'स्त्री का नाम'	......

	आदि	मध्य	अन्त्य
/र/	/त्रेई/ 'तेईस'	/खत्री/ 'खत्री'	गोत्र् /'गोत्र'/
/ड़/	......	......	......
/ल/	......	/पत्ला/ 'पतला'	/कत्ल्/ 'कत्ल'
/ल़/	/त्ऴौंस्सा/ 'तालू'	/पात्ऴी/ 'पत्ते की पतलें'	......
/ण/	......	/कात्णा/ 'कातना'	......
/थ/		/पात्थर/ 'पत्थर'	......
/य/	/त्यार/ 'तैयार'	/कात्या/ 'काता' (पु० प०)	......
/व/	/त्वार/ 'रविवार'	... ..	......
/थ/+/द/	......	/चुथ्दा/ 'पीसता, पीटता'	......
/ग/	......	/चुथ्गा/ 'पीसूगा, पीटूगा'	... ..
/न/	......	/प्राथ्ना/ 'प्रार्थना'	
/र/	......	/साफ्-सुथ्रा/ 'साफ-सुथरा'	......
/द/+/ब/	......	/पद्बी/ 'पदवी'	......
/ग/	......	/साद्गी/ 'सादगी'	......
/स/	......	/चोद्सी/ 'चोदस'	......
/म/	......	/पद्मा/ 'स्त्री का नाम'	......
/र/	/द्राट्टी/ 'दराँती'	/भद्रा/ 'भद्रा'	

	आदि	मध्य	अन्त्य
/ड/	. .	/गुद्‌डाँ/ 'गूदड' [बहु०]	
/ल/	......	/बद्‌ला/ 'बदला'	/बद्‌ल/ 'बदल'
/ल/	......	/बाद्‌ला/ 'बादल' [तिर्यक्]	......
/य/	/द्‌यार/ 'देवदारू'	/माद्‌या/ 'बुलाया'	.
/व/	/द्‌वार/ 'दरवाजा'	/सद्‌वाई/ 'बुलवाना' [स्त्री०]	.
/ध/+/र/	/ध्रूवतारा/ 'ध्रुवतारा'	/पाध्‌री/ 'मैदानी'	
/य/	/ध्‌याड/ 'दिन'	. .	
/व/	/ध्‌वाणा/ 'तरबूज, घुलवाना'	...	
/ट/+/प/	......	/झट्‌पट/ 'जल्दी'	. ..
/द/	. ..	/पट्‌दा/ 'उखाडता'	...
/ठ/	...	/लट्‌ठा/ 'कपडा' विशेष	/साट्‌ठ/ 'साठ'
/क/	.. ...	/लट्‌का/ 'लटकाना'	.
/ग/	......	/सट्‌गा/ 'फेंकूंगा'	
/न/	...	/पट्‌ना/ 'पटना' [स्थान]	.
/र/	/ट्‌रका/ 'ट्रक' [तिर्यक्]	/टाट्‌री/ 'गजापन'	. .
/ण/	......	/सट्‌णा/ 'फैंकना'	. . .
/ल/	. ...	/बदलू/ 'बर्तन का नाम'	. ...

	आदि	मध्य	अन्त्य
/य/	....	/लट्या/ 'उडेला' (पू० प०)	......
/व/	. ....	/पट्वारी/ 'पटवारी'	......
/ठ/+/द/	... .	/पठ्दा/ 'उखडता'	......
/ग/	......	/उठ्गा/ 'उठेगा'	......
/ण/	.. .	/बैठ्णा/ 'बैठना'	......
/ल/	......	/पाठ्ली/ 'गेहूं, चावल आदि का कीडा'	......
/य/	/ठ्योग/ 'शिमला के पास एक स्थान,' 'ठियोग'	/गाठ्या/ 'गाँठा' (पू० प०)	. ...
/व/	/ठ्वाल/ 'उठाना' [आज्ञा०]	......	....
/ड/+/द/	......	/छाड्दा/ 'छोडता'	..
/क/	......	/हाड्कू/ 'हड्डियाँ'	... .
/ग/	... .	/छाड्ँगा/ 'छोडेगा'	. ....
/र/	/ड्राणा/ 'डराना'	/लीड्रा/ 'लीडर' [तिर्यक्]	......
/ड/	. ...	/बड्डा/ 'बडा'	......
/ण/	......	/छाड्णा/ 'छोडना'	......
/य/	/ड्युंट्ठी/ 'छोटा-सा दीया'	/हाँड्या/ 'चला'	......
/व/	/ड्वार/ 'गुफा'	......	......

	आदि	मध्य	अन्त्य
/ड्/+/व/	/ड्वाण/ 'ओढन'	..	.. ...
/च/+/प/	.. ...	/बच्पणा/ 'बचपना'	......
/ब/	......	......	... ..
/त/	.. . .	/बच्ता/ 'बचत' [तिर्यक्]	... ..
/द/	... ..	/बच्दा/ 'बचता'	......
/छ/	.. ..	/हाच्छा/ 'साफ'	/रिच्छ/ 'रीछ'
/क/	. ...	/सच्का/ 'असली'	.. ...
/ग/	....	/बच्गा/ 'बचेगा'	......
/न/	. ..	/किच्ना/ 'किचन' [तिर्यक्]	.. ..
/र/	... .	/खच्रा/ 'खच्चर' [तिर्यक्]	......
/ड/	.. ...	/खिच्डी/ 'चावल का पकवान'	......
/ण/	...	/पच्णा/ 'पचना'	......
/ळ/	......	/बिच्ला/ 'बीच का'	......
/ल/	.....	/मोच्ला/ 'दाँतहीन'	......
/य/	......	/पच्या/ 'पचा' [पू०प०]	.. ...
/व/	/च्वाड/ 'उचाडना 'उखाडना,'	/नच्वा/ 'नचवाना'	......
/छ/+/त/	......	/पछ्ताणा/ 'पछताना'	...
/ट/	......	... .	......

	आदि	मध्य	अन्त्य
/म/	......	/पछ्मी/ 'पश्चिमी'	...—
/ड/	......	/बिछ्डा/ 'अलग होना' [बहु०]	......
/ण/	... .	/पुछ्णा/ 'पूछना'	......
/ल/	......	/पिछ्ली/ 'पीछे की'	......
/य्/	/छ्याह्ट/ 'छयासठ'	/पुछ्या/ 'पूछा' [पू०प०]	..
/व/	/छ्वाली/ 'बच्चो की उल्टी'	/पछ्वा/ 'पुछाना'	.. ...
/ज/+/प/	......	/भोज्पुरा/ 'भोजपुर' [स्थान] [विशेष तिर्यक्]	......
/त/	......	/बेज्ती/ 'बेइज्जती'	......
/द/	......	/भज्दा/ 'टूटता, भजन करना'	......
/क/	......	/बज्का/ 'टकरा' [आज्ञा०]	......
/ग/	......	/भुज्गा/ 'भूजेगा'	......
/म्/	......	/लाज्मी/ 'जरूरी'	......
/न/	......	/रज्नी/ 'स्त्री का नाम'	....
/र/	. ...	/साज्री/ 'ताजी'	......
/ण/	... .	/भज्णा/ 'टूटना, भजना'	......
/ल/	......	/बिज्लो/ 'बिजली'	

	आदि	मध्य	अन्त्य
/ल/	.. ..	/गाज्ला/ 'शरारती, गाजलेपन की स्वनाभुति'	......
/य/	......	/पज्यास्सी/ 'पिचासी'	......
/व/	/ज्वाई/ 'लड़की का पति'	/भज्वा/ 'भिजवाना'	
/क/+/प/	.. ..	. .	......
/ब/	.....	/रक्बा/ 'जगह'	......
/त/	... .	/मुक्ता/ 'स्त्री का नाम'	/मुक्त/ 'मुक्त'
/द/	......	/चुक्दा/ 'चूकता'	......
/ट/	......	/मुक्टा/ 'मुकुट' [तिर्यक्]	/मुक्ट/ 'मुकट'
/ख/	......	/लिक्खा/ 'लिखो' [आज्ञा०]	......
/ग/	......	/सुक्गा/ 'सूखेगा'	......
/स/	/क्सारा/ 'जादू टोना आदि	/रक्सा/ 'स्त्री का नाम'	......
/म/	.. ...	/रक्मा/ 'धन राशि' [तिर्यक्]	......
/न/	.....	/सक्ना/ 'गाली के रूप मे प्रयुक्त शब्द'	
/र/	/क्रिया/ 'क्रिया'	/बक्रू/ 'छोटा सा बकरा'	......
/ड़/	... ..	/सन्दुक्ड़ी/ 'छोटा सन्दूक'	......
/ण/	......	/चुक्णा/ 'चूकना'	......
/ल/	......	/सक्ला/ 'शक्ल' [तिर्यक्]	......

	आदि	मध्य	अन्त्य
/ल/	......	/चक्ला/ 'चकला'	...
/य/	/क्यारी/ 'क्यारी'	/चक्या/ 'उठाया' [पू० प०]	...
/व/	/क्वारी/ 'अविवाहिता'	/रक्वा/ 'रूकवा'	......
/ख/ + /त/		/सख्ती/ 'कठोरता'	/सख्त्/ 'मजबूत'
/द/	... .	/ल्हुख्दा/ 'छिपता'	...
/ग/	... ..	/ल्हुख्गा/ 'छुपेगा'	... ..
/म/	. ...	/जाख्मा/ 'जख्म' [तिर्यक्]	......
/ड/	... .	/भराख्डी/ 'राखी'	. ....
/ण/	.. ..	/सिख्णोतरू/ 'सीखने वाला'	......
/ल/	......	/पख्ले/ 'अजनबी'	......
/ल/	.. ..	/उख्ला/ 'ओखली' [तिर्यक्]	
/य्/	/ख्याल्ली/ 'पुरुष का नाम'	/लिख्या/ 'लिखा'	......
/व/	/ख्वाब/ 'स्वप्न'	/सख्वाल/ 'सुविधाएँ'	......
/ग/ + /त/	....	/भग्ता/ 'पुरुष का नाम'	/भग्त्/ 'भक्त'
/द/	... ..	/काग्दी-निम्बू/ 'कागजी-नीम्बू'	......
/ज/	......	/काग्जी/ 'कागज से सम्बन्धित'	/मग्ज्/ 'दिमाग'
/स/	... ..	/राग्सी/ 'राक्षसी'	......

	आदि	मध्य	अन्त्य
/म/	····	/बेग्मी/ 'चावल की प्रकार'	······
/न/	·····	/अग्नी-परीक्षा/ 'अग्नि-परीक्षा'	·
/र/	/ग्रीब/ 'गरीब'	/नग्री/ 'नगरी'	·
/ड/	····	/झग्डा/ 'झगडा'	· ·
/ण/	······	/तरियुग्णा/ 'तिगुणा'	·· ···
/ल/	······	/पाग्ला/ 'पागल' [तिर्यंक्]	/मुग्ल/ 'मुगल'
/ल़/	······	/निग्ला/ 'निगलना'	······
/फ/	···	/मुगफ्ली/ 'मूगफ्ली'	····
/य/	/ग्यान/ 'ज्ञान'	/लग्या/ 'लगा' [पू० प०]	· ··
/व/	/ग्वाणा/ 'खोना'	/मग्वा/ 'मगवाना'	·· ···
/घ/ + /र/	/घ्राट/ 'पानी की चक्की'		······
/य/	/घ्योर/ 'पकवान विशेष'		······
/व/	/घ्वाड/ 'खोलना' [आज्ञा०]	···	······
/स/ + /प/	··	/पुस्पा/ 'स्त्री का नाम'	······
/व/	···	/केस्वा/ 'केशव' [तिर्यंक्]	······
/त/	/स्ताई/ 'सताईस, सताना'	/किसतो/ 'किस्ते'	/मस्त्/ 'मस्त'
/थ/	/स्थान/ 'स्थान'	·	·· ···

	आदि	मध्य	अन्त्य
/द/	··· ··	/कस्दा/ 'कसता'	······
/ट/	/स्टूल/ 'स्टूल'	/गोस्टू/ 'उपले'	/कस्ट/ 'कष्ट'
/क/	······	/खिस्का/ 'आगे होना' [बहु०]	/खिस्क/ 'आगे होना [एक०]
/ग/	/स्गोतरू/ 'बैंगन'	/कस्गा/ 'कसेगा'	······
/म/	·····	/खस्मा/ 'पति, मालिक' [तिर्यक्]	······
/न/	/स्नान/ 'स्नान'	/रोस्ना/ 'पुरुष का नाम' [तिर्यक्]	······
/र/	······	/खस्रा/ 'खुर्दरा'	·· ···
/ड/	···	/पस्डी/ 'पसली'	······
/ण/	······	/चास्णी/ 'चीनी की चासनी'	······
/ल्/	······	/बास्ला/ 'हींग'	······
/ल/	······	/पस्ली/ 'पसली'	······
/य/	/स्याणा/ 'बूढ़ा'	/फस्या/ 'फँसा' [पू० प०]	·· ···
/व/	/स्वाल/ 'सवाल'	/बिस्वा/ 'बिसवा'	·· ··
/म/+/प/	······	/चम्पा/ 'चम्पा'	/पम्प/ 'पम्प'
/फ/	······	/लम्फा/ 'लैंप' [तिर्यक्]	/लम्फ/ 'लैंप'
/ब/	······	/चम्बा/ 'चम्बा' [जिला]	······
/भ/	······	/चम्भा/ 'अचम्भा'	······

	आदि	मध्य	अन्त्य
/त्/	······	/हिम्ती/ 'परिश्रमी'	· ···
/द/	····	/चुम्दा/ 'चूमता'	·
/ट्/	·····	/चिम्टा/ 'चिमटा'	·· ···
/झ/	·· ···	/सम्झाया/ 'समझाया'	······
/क/	·· ···	/चम्का/ 'चमकाना'	······
/ग/	· ··	/थम्गा/ 'पकड़ेगा'	···
/घ/	······	/जम्घटा/ 'समूह'	·· · ·
/स/	······	/सम्सान/ 'शम्सान'	·· ···
/न/	· ····	/जम्ना/ 'नदी का नाम'	······
/र/	/म्रोह्लण/ 'पकी हुई सब्जी'	/कैम्रा/ 'कैमरा'	··· ·
/ड/	·· ···	/चाम्ड़ू/ 'पतीला'	·· ···
/ण/	······	/काम्णी/ 'कम्पकम्पी'	······
/ल/	··· ·	/आम्ला/ 'आमला कद्दू'	·····
/ळ/	······	/सुमळा/ 'ठीक, सीधी तरफ'	·· ···
/य/	/म्यान/ 'म्यान'	/जम्या/ 'जमना, पैदा होना' [पू० प०]	······
/व/	/म्वामला/ 'मामला, मुआवजा'	/कम्वा/ 'कमवाना'	··· ··
/न/ + /प/	·····	/अन्पढ़ा/ 'अनपढ़' [तिर्यक]	··· ··

	आदि	मध्य	अन्त्य
/त/	......	/मन्‌तरी/ 'मन्त्री'	/म्हन्‌त/ 'महात्मा'
/थ/	... ..	...	/गरन्‌थ/ 'ग्रन्थ'
/द/	......	/भान्‌दा/ 'तोडता'	/बन्‌द/ 'बन्द'
/च/	....	/पन्‌चा/ 'पच' [तिर्यक्]	/पन्‌च/ 'पच'
/छ/	......	/पन्‌छी/ 'पक्षी'	......
/ज/	......	/भान्‌जा/ 'भानजा'	/खिन्‌ज/ 'खीच'
/झ/	......	/मन्‌झा/ 'बीच मे'	/मन्‌झ/ 'मैंने, बीच मे'
/क/	......	/जान्‌की/ 'स्त्री का नाम'	/जन्‌क/ 'जनक' [राजा]
/ख/	... ..	/पन्‌खा/ 'पखा'	/सन्‌ख/ 'शख'
/ग/	......	/खन्‌गा/ 'खाँसी' [तिर्यक]	/चिन्‌ग्/ 'चीख'
/स/	......	/चान्‌सा/ 'मोका' [तिर्यक्]	/चान्‌स्/ 'मोका'
/म/	......	/जन्‌मा/ 'जन्‌म' [तिर्यक]	/जन्‌म्/ 'जनम'
/र/	/नरेल/ 'नारियल'	.	......
/य/	/न्‌यारा/ 'न्यारा'	/पुन्‌या/ 'पुर्णिमा'	......
/व/	/नुवार/ 'चारपाई बनाने की नवार'	..	......
/र/+/प/	......	/किर्‌पा/ 'पुरुष का नाम'	......
/फ/	......	/बर्‌फा/ 'बर्फ [तिर्यक]	/हार्‌फ्/ 'अक्षर'

	आदि	मध्य	अन्त्य
/ब/	......	/अर्बी/ 'अरबी'	/अर्ब/ 'अरब'
/त/	......	/कुर्ता/ 'कमीज'	/भार्त/ 'भारत'
/थ/	......	/अर्थी/ 'अर्थी'	/नर्थ/ 'अनर्थ, गजब'
/द/	......	/मर्दी/ 'मरती'	/मर्द/ 'मर्द, पुरुष'
/ट/	......	/पार्टी/ 'पार्टी'	/पार्ट/ 'पार्ट'
/ठ/	......	......	/बिर्ठ/ 'पक्षी की टट्टी'
/ड/	......	/कर्डू/ 'बाँस की छोटी-सी टोकरी'	/गार्ड/ 'रक्षक'
/च/	......	/खर्चा/ 'खर्च'	/चरच/ 'चर्च'
/छ/	......	/बर्छा/ 'बर्छा'	......
/ज/	......	/कर्जा/ 'ऋण'	/कर्ज/ 'ऋण'
/क/	......	/गर्का/ 'भारी'	/पार्क/ 'पार्क'
/ख/	......	/चर्खा/ 'चर्खा'	/हिर्ख/ 'ईर्ष्या'
/ग/	......	/तर्गा/ 'तैरेगा'	/सर्ग/ 'आसमान'
/घ/	......	......	/अर्घ/ 'अर्घ्य'
/स/	......	/पर्सा/ 'पुरुष का नाम'	/चर्स/ 'चरस'
/म/	......	/सर्मा/ 'शर्मा'	/धर्म/ 'धर्म'
/न/	......	/तर्ना/ 'तैरना'	/मर्न/ 'मौत'

	आदि	मध्य	अन्त्य
/त/	......	/मन्‌तरी/ 'मन्त्री'	/म्हन्‌त/ 'महात्मा'
/थ/	... ..	. ...	/गरन्‌थ/ 'ग्रन्थ'
/द/	......	/भान्‌दा/ 'तोड़ता'	/बन्‌द/ 'बन्द'
/च/	......	/पन्‌चा/ 'पच' [तिर्यक्]	/पन्‌च/ 'पच'
/छ/	......	/पन्‌छी/ 'पक्षी'	......
/ज/	......	/भान्‌जा/ 'भानजा'	/खिन्‌ज/ 'खीच'
/झ/	......	/मन्‌झा/ 'बीच मे'	/मन्‌झ/ 'मैंने, बीच मे'
/क/	......	/जान्‌की/ 'स्त्री का नाम'	/जन्‌क/ 'जनक' [राजा]
/ख/	... ..	/पन्‌खा/ 'पखा'	/सन्‌ख/ 'शख'
/ग/	......	/खन्‌गा/ 'खाँसी' [तिर्यक]	/चिन्‌ग्/ 'चीख'
/स/	......	/चान्‌सा/ 'मौका' [तिर्यक्]	/चान्‌स्/ 'मौका'
/म/	......	/जन्‌मा/ 'जन्‌म' [तिर्यक]	/जन्‌म्/ 'जनम'
/र/	/नरेल/ 'नारियल'	..	......
/य/	/न्‌यारा/ 'न्यारा'	/पुन्‌या/ 'पुर्णिमा'	......
/व/	/नुवार/ 'चारपाई बनाने की नवार'	...	......
/र/ + /प/	......	/किर्‌पा/ 'पुरुष का नाम'	......
/फ/	......	/बर्‌फा/ 'बर्फ [तिर्यक]	/हार्‌फ्/ 'अक्षर'

	आदि	मध्य	अन्त्य
/ब/	......	/अर्‌बी/ 'अरबी'	/अर्‌ब/ 'अरब्'
/त/	......	/कुर्‌ता/ 'कमीज़'	/भार्‌त्/ 'भारत'
/थ/	......	/अर्‌थी/ 'अर्थी'	/नर्‌थ्/ 'अनर्थ, गजब'
/द/	......	/मर्‌दी/ 'मरती'	/मर्‌द्/ 'मर्द, पुरुष'
/ट/	......	/पार्‌टी/ 'पार्टी'	/पार्‌ट्/ 'पार्ट'
/ठ/	......	......	/बिर्‌ठ्/ 'पक्षी की टट्टी'
/ड/	......	/कर्‌डू/ 'बांस की छोटी-सी टोकरी'	/गार्‌ड्/ 'रक्षक'
/च/	......	/खर्‌चा/ 'खर्च'	/चरच/ 'चर्च'
/छ/	......	/बर्‌छा/ 'बर्छा'	......
/ज/	......	/कर्‌जा/ 'ऋण'	/कर्‌ज्/ 'ऋण'
/क/	......	/गर्‌का/ 'भारी'	/पार्‌क्/ 'पार्क'
/ख/	......	/चर्‌खा/ 'चर्खा'	/हिर्‌ख्/ 'ईर्ष्या'
/ग/	.. ...	/तर्‌गा/ 'तैरेगा'	/सर्‌ग्/ 'आसमान'
/घ/	......	......	/अर्‌घ्/ 'अर्घ्य'
/स/	......	/पर्‌सा/ 'पुरुष का नाम'	/चर्‌स्/ 'चरस'
/म/	......	/सर्‌मा/ 'शर्मा'	/धर्‌म्/ 'धर्म'
/न/	......	/तर्‌ना/ 'तैरना'	/मर्‌न्/ 'मौत'

	आदि	मध्य	अन्त्य
/ड/	......	......	/सर्ड-सर्ड/ 'आवाज विशेष'
/ल/	......	/केर्ला/ 'केरल' [तिर्यक्]	/केर्ल्/ 'केरल'
/य/	......	/मर्या/ 'मरा' [पू० प०]	......
/व/	/र्वालसर/ 'ग्वालसर'	/मरवा/ 'मरवाना'	......
/ड/+/प/	......	/झड्पा/ 'जहरीला साँप'	......
/फ/	......	/तड्फा/ 'तडफना' [बहु०]	/तड्फ्/ 'तडफना' [एक०]
/थ/	......	/भड्था/ 'बैंगन का भरता'	......
/द/	......	/पड्दा/ 'पर्दा'	......
/छ/	......	/कड्छी/ 'कड्छी'	/कड्छ्/ 'बडी कडछी'
/क/	......	/सड्कां/ 'सड़कें'	/खिड्क्/ 'पेड का नाम'
/ग/	...	/सड्गा/ 'सडेगा'	....
/म/	......	/कुड्मणी/ 'रिस्ते का नाम' [स्त्री०]	/कुड्म्/ 'रिस्ते का नाम' [पु०]
/न/	......	/बाड्ना/ 'घुसाना'	......
/य/	......	/पड्यो/ 'पडवा'	......
/व/	......	/घड्वा/ 'बनवाना'	......
/ण/+/प/	......	/खाण्पीण/ 'खाना-पीना'	......
/ब/	......	/अण्बण/ 'अनबन'	......

	आदि	मध्य	अन्त्य
/त/	......	/म्हेण्ती/ 'मेहनती'	/म्हेण्त/ 'मेहनत'
/द/	......	/सुण्दा/ 'सुनता'	......
/च/	......	/घण्चक्कर/ 'मूर्ख'	......
/ज/	......	/भाण्जा/ 'भानजा'	......
/क/	......	/लुण्का/ 'नमकीन'	/कण्क/ 'गेहूँ'
/ग/	......	/सुण्गा/ 'सुनेगा'	......
/न/	......	/खण्ना/ 'खोदना'	......
/य/	......	/चिण्या/ 'चिना' [भूत]	......
/व/	/ण्वास्सी/ 'उनासी'	/सण्वाई/ 'सुनवाई'	......
/ल/+/प/	......	/कल्पना/ 'स्त्री का नाम'	......
/फ/	......	/सुल्फा/ 'सुलफा'	......
/त/	......	/गल्ती/ 'गल्ती'	/गल्त/ 'गल्त'
/द/	......	/चल्दा/ 'चलता'	/जिल्द/ 'जिल्द'
/ट/	......	/पल्टा/ 'बदलना [बहु०]	/पल्ट/ 'बदलना' [एक०]
/च/	......	/हल्चल/ 'हलचल'	......
/क/	......	/काल्का/ 'कालका, स्थान का नाम'	/बाल्क/ 'बालक'
/ख/	......	/मुल्खा/ 'मुल्ख' [तिर्यक्]	/मुल्ख/ 'मुल्ख'

	आदि	मध्य	अन्त्य
/ग/	......	/चल्‌गा/ 'चलूगा'	......
/स/	......	/तुल्‌सी/ 'तुलसी'	...
/म/	......	/कल्‌मा/ 'कलम' [तिर्यक्]	/पल्‌म्/ 'पलम'
/न/	......	/चल्‌नी/ 'चलेगी'	/बदचल्‌न्/ 'चरित्रहीन'
/र/	......	/काल्‌रां/ 'कौलर' [बहु०]	.....
/य/	/ल्‌या/ 'लाना' [आज्ञा०]	/मिल्‌या/ 'मिला, छोड़ा' [पू० प०]	...
/व/	/ल्‌वाही/ 'उतराई'	/बल्‌वा/ 'बुलवाना'	......
/ल/+/फ/	......	/गुल्‌फा/ 'थूका हुआ कफ'	......
/त/	......	/माल्‌ती/ 'फूल का नाम'	.....
/द/	......	बाल्‌दा/ 'जलाता'	/बहल्‌द्/ 'बैल'
/ट/	...	/माल्‌टा/ 'मालटा'	/उल्‌ट्/ 'उल्ट'
/ड/	......	/डाल्‌डा/ 'डाल्‌डा'	......
/च/	......	/दाल्‌चिन्नी/ 'दालचीनी'	....
/ज/	......	/कुल्‌जा/ 'पारिवारिक देवी [तिर्यक्]	/कुल्‌ज्/ 'पारिवारिक देवी'
/क/	......	/नल्‌का/ 'नलका'	......
/ग/	......	/बाल्‌गी/ 'जलाएगी'	......
/स/	......	/अल्‌सी/ 'अलसी'	/कल्‌स्/ 'कलस'

	आदि	मध्य	अन्त्य
/न/	.. ..	/बाल्ˎनी/ 'जलानी'	/बाल्ˎन्/ 'ईंधन'
/य/	. ....	/पाल्ˎया/ 'पालना [पूर्णपक्ष]	......
/व/	... ..	/उल्ˎवाम्हा/ 'शिकायत'	......

महाप्राण ध्वनियाँ /न्ह, ल्ह/ केवल अर्द्ध-स्वरो के साथ ही व्यजन-गुच्छ बनाती हैं। इन ध्वनियो के व्यजन-गुच्छ केवल आदि तथा मध्य स्थितियो मे ही मिलते हैं, अन्त्य स्थिति मे नही। केवल अर्द्ध-स्वरो के साथ व्यजन-गुच्छ बनाने के कारण इनके व्यजनगुच्छो के उदाहरण यहाँ पर अलग से दिए जा रहे हैं।

/न्ह, ल्ह/ के अर्द्ध-स्वरो के साथ व्यजन-गुच्छो के उदाहरण इक्के-दुक्के ही मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं –

	आदि	मध्य	अन्त्य
/न्ह/ + /व/	/न्ह्ˎवारी/ 'अल्प भोजन'	... ..	.. .
/य/	/न्ह्ˎयारा/ 'अन्धेरा'	/पन्ह्ˎयाणा/ 'पहनवाना'	......
/ल्ह/ + /व/	/ल्ह्ˎवार/ 'लुहार'	/खल्ह्ˎवाणा/ 'खुलवाना'	.....
/य/	/ल्ह्ˎयाज/ 'लिहाज, दया'	/खल्ह्ˎयाणा/ 'खिलाना'	......

17.2 तीन व्यजनों के गुच्छ [ट्रीपेरटाईट क्लस्टरज]—

तीन व्यजनों के गुच्छ से तात्पर्य तीन व्यजनो के अनुक्रम मे आने से है अर्थात् प्रथम दो व्यजनो का निर्बल या स्वरहीन होना। वास्तव मे तीन व्यजनो के गुच्छ मडियाली मे कम ही मिलते हैं।

तीन व्यजनो के गुच्छ आदि तथा मध्य स्थितियो मे ही मिलते हैं। आदि स्थिति मे भी इक्का-दुक्का उदाहरण मिलता है। तीन व्यजनो के गुच्छ के उदाहरण इस प्रकार हैं—

	आदि	मध्य	अन्त्य
/क+ट+र/	......	/फैक्ट्री/ 'फैक्ट्री'	......
/क+स+म/	......	/लक्स्मी/ 'लक्ष्मी'	.....

	आदि	मध्य	अन्त्य
/स+त+र/	......	/मिस्त्री/ 'मिस्त्री'	......
/र+ख+य/	......	/हिर्ख्याल्लु/ 'ईर्ष्या करने वाला'	......
/ब+ल्+य/	......	/टब्ल्याबणा/ 'हैरान होना'	......
/न+द+र/	......	/पन्द्रा/ 'पन्द्रह'	......
/न+त+र/	......	/मन्त्री/ 'मन्त्री'	......
/त+र+य/	/त्र्योदस/ 'तरयोदस'	......	.. ...
/म+झ+य/	.. ...	/सम्झ्या/ 'समझा'	......

1.7.3. चार व्यंजनों के गुच्छ—

चार व्यंजनो के गुच्छ का एकमात्र उदाहरण मध्य स्थिति में मिलता है—

उदाहरणार्थ

/स+ट+र+य/ /मस्ट्र्याणी/ 'अध्यापिका, अध्याप की पत्नि'

विशेष—मण्डियाली मे व्यंजन-गुच्छ निर्माण की कुछ अपनी सीमाएँ हैं, जो इस प्रका है—

[1] [क] आदि स्थिति मे / झ, ड़, ल, म्ह, व, य/ व्यजन गुच्छ के प्रथम घट के रूप मे नही आते हैं।

[ख] आदि स्थिति मे/ प, फ, ब, भ, म, द, ध, ठ, ड, ढ, ण, च, छ, ज, झ ड़, ढ़, म, म्ह, ल, न्ह, न्ह / व्यजन-गुच्छ के दूसरे घटक के रूप मे नही आते हैं।

[2] [क] मध्य स्थिति मे/ भ, ढ, झ, च, म्ह, व, य/ व्यजन-गुच्छ के प्रथम घट के रूप में नही आते हैं।

[ख] मध्य स्थिति मे/ भ, ढ, ध, म्ह, ल्ह, न्ह / व्यंजन-गुच्छ के दूसरे घट के रूप मे नहीं आते हैं।

[3] [क] अन्त्य स्थिति मे/भ, थ, ध, ठ, ड, ढ, छ, च, म्ह, ल्ह, न्ह, व, य, व्यजन-गुच्छ के प्रथम घटक के रूप मे नहीं आते हैं।

[ख] अन्त्य स्थिति मे/ब, भ, ध, ढ, ल्, म्ह, ल्ह, न्ह, व, य / व्यंजन-गुच के दूसरे घटक के रूप में नहीं आते हैं।

[4] दो महाप्राण स्पर्श व्यंजन, व्यंजन-गुच्छ नहीं बनाते ।

[5] महाप्राण व्यजन /न्ह, ल्ह/ केवल अर्द्ध-स्वरो /व, य/ के साथ ही व्यजन-गुच्छ बनाते हैं, तथा आदि और मध्य स्थितियो मे ही बनाते हैं।

[6] दीर्घ व्यजनो को व्यंजन-गुच्छ के रूप मे स्वीकार नही किया गया है।

[7] महाप्राण व्यजन /म्ह/ किसी भी स्थिति मे व्यजन-गुच्छ का घटक बनकर नही आता है।

[8] अन्त्य स्थिति मे मिलने वाले कुछ व्यजन-गुच्छ है जो कि वक्ता की एक स्थिति मे व्यजन-गुच्छ हो सकते हैं मगर दूसरी स्थिति मे शायद न हो। अत अन्त्य स्थिति मे मिलने वाले व्यजन-गुच्छ वक्ता की मनः स्थिति पर अधिक निर्भर करते हैं।

आदि, मध्य तथा अन्त्य स्थितियो म मिलन वाले व्यजन-गुच्छो को चार्ट मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

विशेष—वास्तव मे मण्डियाली मे व्यजन गुच्छ कम मिलते हैं, मगर यहाँ पर उन व्यजन-गुच्छो को भी उदाहरण रूप मे स्वीकार किया गया है जो कि स्थिति विशेष तथा व्यक्ति विशेष के उच्चारण मे ही उपलब्ध होते हैं। दूसरे शब्दो मे उपर्युक्त उदाहरणो मे व्यजन-गुच्छ की सम्भावनाओ को भी व्यक्त किया गया है। इसी कारण व्यजन-गुच्छो के उदाहरणो को लेकर आपत्ति की सम्भावना को नकारा नही जा सकता है।

*

	आदि	मध्य	अन्त्य
/स+त+र/	......	/मिस्‌त्‌री/ 'मिस्त्री'	......
/र+ख+य/	......	/हिर्‌ख्‌याल्लू/ 'ईर्ष्या करने वाला'	......
/ब+ल्+य/	......	/टब्‌ल्‌याखणा/ 'हैरान होना'	......
/न+द+र/	......	/पन्‌द्‌रा/ 'पन्दरह'	......
/न+त+र/	......	/मन्‌त्‌री/ 'मन्त्री'	......
/त+र+य/	/त्‌र्‌योदस/ 'तरयोदस'	... ..	.. ...
/म+झ+य/	.. ...	/सम्‌झ्‌या/ 'समझा'	......

1.7.3 चार व्यंजनों के गुच्छ—

चार व्यंजनो के गुच्छ का एकमात्र उदाहरण मध्य स्थिति में मिलता है—

उदाहरणार्थ

/स+ट+र+य/ /मस्‌ट्‌र्‌याणी/ 'अध्यापिका, अध्याप की पत्नि'

विशेष—मण्डियाली मे व्यंजन-गुच्छ निर्माण की कुछ अपनी सीमाएँ हैं, जो इस प्रक हैं—

[1] [क] आदि स्थिति मे / झ, ड, ल, म्ह, व, य/ व्यजन गुच्छ के प्रथम घट के रूप मे नही आते हैं।

[ख] आदि स्थिति मे/ प, फ, ब, भ, म, द, ध, ठ, ड, ढ, ण, च, छ, ज, । ड, ढ़, म, म्ह, ल, ल्ह, न्ह / व्यजन-गुच्छ के दूसरे घटक के रूप मे नही आते हैं।

[2] [क] मध्य स्थिति मे/ भ, ढ, झ, घ, म्ह, व, य/ व्यजन-गुच्छ के प्रथम घट के रूप मे नही आते हैं।

[ख] मध्य स्थिति मे/ भ, ढ, ध, म्ह, ल्ह, न्ह / व्यंजन-गुच्छ के दूसरे घट के रूप मे नहीं आते हैं।

[3] [क] अन्त्य स्थिति मे/भ, घ, ध, ठ, ड, ढ, छ, च, म्ह, ल्ह, न्ह, व, । व्यजन-गुच्छ के प्रथम घटक के रूप मे नही आते हैं।

[ख] अन्त्य स्थिति मे/ब, भ, ध, ढ, ल्, म्ह, ल्ह, न्ह, व, य / व्यंजन-गु के दूसरे घटक के रूप में नही आते हैं।

[4] दो महाप्राण स्पर्श व्यंजन, व्यजन-गुच्छ नही बनाते ।

[5] महाप्राण व्यजन /न्ह, ल्ह/ केवल अर्द्ध-स्वरो /व, य/ के साथ ही व्यजन-गुच्छ बनाते हैं, तथा आदि और मध्य स्थितियो मे ही बनाते हैं ।

[6] दीर्घ व्यजनो को व्यंजन-गुच्छ के रूप मे स्वीकार नही किया गया है ।

[7] महाप्राण व्यजन /म्ह/ किसी भी स्थिति म व्यजन-गुच्छ का घटक बनकर नही आता है ।

[8] अन्त्य स्थिति मे मिलने वाले कुछ व्यजन-गुच्छ है जो कि वक्ता की एक स्थिति मे व्यजन-गुच्छ हो सकते हैं मगर दूसरी स्थिति मे शायद न हो । अत अन्त्य स्थिति मे मिलने वाले व्यजन-गुच्छ वक्ता की मन. स्थिति पर अधिक निर्भर करते हैं ।

आदि, मध्य तथा अन्त्य स्थितियो म मिलन वाले व्यजन-गुच्छो को चार्ट मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

विशेष— वास्तव मे मण्डियाली मे व्यजन गुच्छ कम मिलते हैं, मगर यहाँ पर उन व्यजन-गुच्छो को भी उदाहरण रूप मे स्वीकार किया गया है जो कि स्थिति विशेष तथा व्यक्ति विशेष के उच्चारण मे ही उपलब्ध होते हैं । दूसरे शब्दो मे उपर्युक्त उदाहरणो मे व्यजन-गुच्छ की सम्भावनाओ को भी व्यक्त किया गया है । इसी कारण व्यजन-गुच्छो के उदाहरणो को लेकर आपत्ति की सम्भावना को नकारा नही जा सकता है ।

आदि -न स्थिति में दो व्यंजन-गुच्छों का चार्ट--

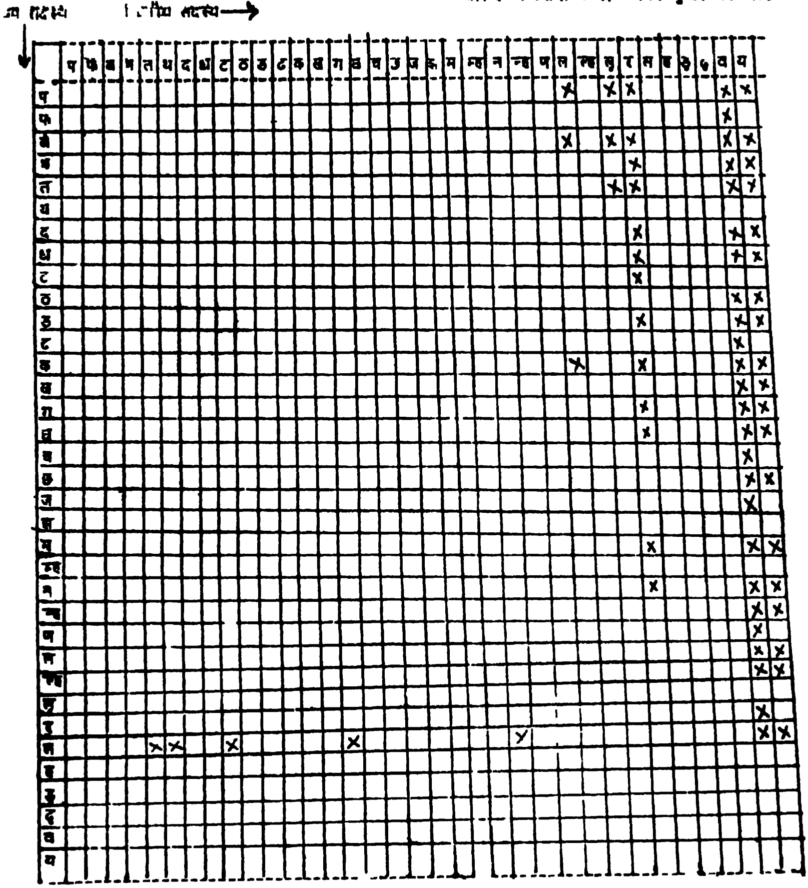

प्रथम सदस्य ↓ द्वितीय सदस्य → मध्य-स्थिति में दो व्यंजन-गुच्छों का चार्ट--

	प	फ	ब	भ	त	थ	द	ध	ट	ठ	ड	ढ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	म	म्ह	न	न्ह	ल	[illegible]	ल्ह	ड़	र	स	[illegible]	[illegible]	ह	व	य
प		x			x		x		x				x		x										x	x		x	x	x					x
फ					x		x								x										x	x		x	x			x			
ब				x	x		x																		x	x		x	x	x		x			
भ																																			
त						x	x						x		x						x		x		x	x		x	x	x					x
थ							x								x								x						x						
द			x												x						x					x		x	x	x					x
ध																													x						
ट	x						x			x			x		x							x			x	x			x					x	x
ठ							x								x																				
ड							x						x		x										x										
ढ																									x				x			x			x
क					x		x								x						x														
ख					x		x								x										x	x		x	x	x		x		x	x
ग		x			x		x								x						x				x	x		x				x		x	x
घ																				x	x		x		x	x		x	x	x		x		x	x
च	x				x								x		x				x				x		x	x		x	x			x		x	x
छ																					x				x	x						x		x	x
ज	x				x								x		x						x		x		x	x		x	x					x	x
झ																																			
म	x	x	x	x	x			x		x				x		x	x				x		x		x	x		x	x	x		x		x	x
म्ह																																			
न	x				x			x						x	x	x		x	x	x	x	x								x					x
न्ह																																			
ल	x		x		x			x						x		x		x		x			x											x	x
[illegible]	x	x			x			x		x				x	x	x			x			x	x						x	x				x	x
ल्ह																																		x	x
[illegible]		x			x			x		x		x		x		x		x		x			x							x				x	x
र	x	x	x		x		x	x		x		x		x	x	x		x	x	x		x	x			x				x				x	x
स	x		x		x			x		x						x									x	x		x	x			x		x	x
ह																																			
हँ	x	x					x	x						x		x			x			x	x											x	x
[illegible]																																			
व																																			
य																																			

प्रथम व्यंजन द्वितीय व्यंजन ——> अन्त्य स्थिति में ही व्यंजन-गुच्छों का चार्ट——

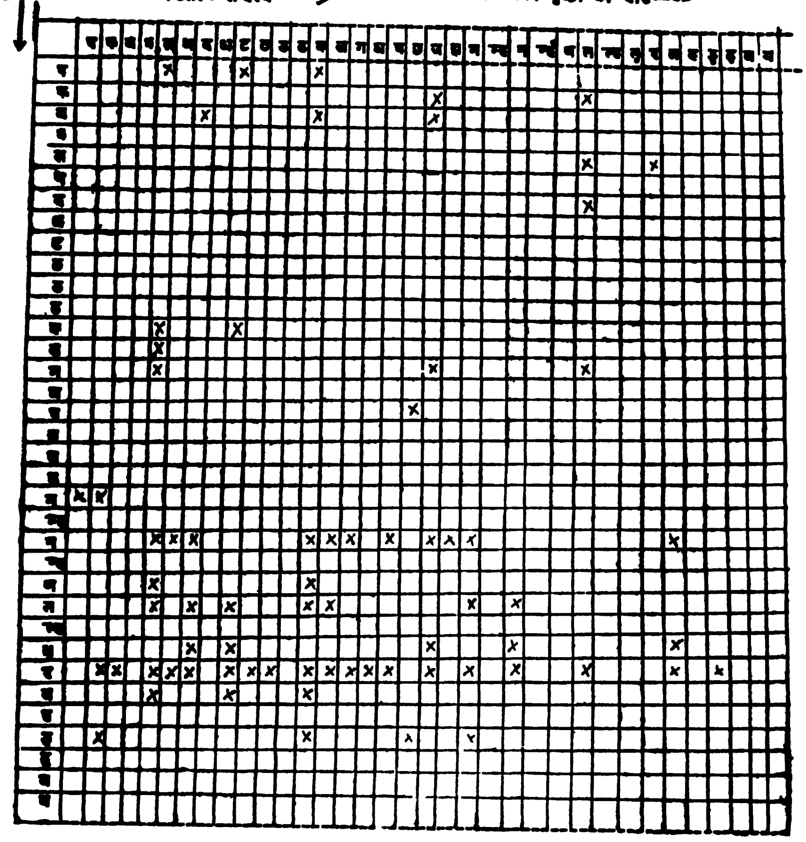

रूपस्वन-प्रकिया (मार्फोफोनोलोजी)

2.0. सामान्य-परिचय—

मण्डियाली रूपस्वन प्रक्रिया पर विचार करने से पूर्व रूपस्वन प्रक्रिया के स्वरूप को लेकर सक्षेप मे विचार करना आवश्यक है। यहाँ पर सर्वप्रथम रूपस्वन प्रक्रिया के स्वरूप को लेकर विचार किया जा रहा है।

रूपस्वन-प्रक्रिया को हम कुछ भाषाविदो की परिभाषाओ द्वारा समझ सकते हैं—

त्रुबेत्जकॉय (1929) के लिए—'रूपस्वन-प्रक्रिया (मार्फोनोलोजी) भाषा शास्त्रीय विश्लेषण की एक विशेष शाखा है, (स्वन-प्रक्रिया से भिन्न जो कि स्वनिमो की व्यवस्था का अध्ययन तथा रूप-प्रक्रिया स भिन्न जो कि रूपिमो की व्यवस्था का अध्ययन करती है।) जिसका सम्बन्ध रूप रचना प्रायोगिकता की ध्वन्यात्मक भिन्नताओ से है।'[1]

'मार्फोनोलोजी (रूपस्वन-प्रक्रिया, रूप प्रक्रिया तथा स्वन-प्रक्रिया की एकान्विति को सामने लाती है।'[2]

(त्रुबेत्जकॉय, 1929, पृ० 87)

---

1 For Trubetzkoy (1929)—'Morphonology is a particular section of Linguistic description (distinct from phonology which 'studies of the system of phonemes' and from Morphology which 'studies the system of Morphemes') which deals with the morphological utilization of Phonological differences'.
(P 85)—A Martinet Morphophonemics, (De la Morphophonology, La Linguistique, No 1965) PP 16-31. Ed. by F C Fudge, Phonology, P 92

2. 'Morphonology....... brings about a union of Morphology with Phonology'.
(Trubetzkoy, 1929, P 87), Ibid, PP. 16-31

कोरियन रूपस्वनिमिकी' (मार्फोफोनेमिक्स) मे मार्तीन कहते हैं कि 'उच्चार घटको के रूपो अथवा रूपवर्गों की व्यवस्था अथवा उस व्यवस्था-क्षेत्र को रूप स्वनिमिकी के रूप मे व्याख्यायित करते हैं ।'[1]

रूपस्वनिमिकी (मार्फोफोनोलोजी) मे रूपिमो की ध्वन्यात्मक-सरचना के अध्ययन के अतिरिक्त स्वनिमो के परस्पर परिवर्तन का रूप प्रक्रियात्मक अध्ययन किया जाता है ।'[2]

'मार्फोफोनेमिक्स (रूपस्वनिमिकी) मे रूपग्रामो के अन्तर्गत होने वाले सभी स्वनिमिक परिवर्तन आते हैं, चाहे ये परिवर्तन स्वाश्रित हो या नही और चाहे वे अर्थ-पूर्ण हो या नही ।'[3]

'हम उन स्वनिमिक रूपो पर स्थिर होने के लिए तत्पर हैं, जो रूपिमो को अभिव्यक्त करते हैं । कुछ रूपिमो को सभी परिवेशो मे एक ही स्वनिमिक रूप द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है,"

एक ही रूपिम की बहुविध अभिव्यक्ति निश्चित रूप से मार्फोफोनेमिक्स (रूप-स्वनिमिकी) के एक पक्ष को उभारती है, जिसके प्रयोग के दो पार्श्व है

(1) जिस प्रक्रिया द्वारा अन्वेषक यह निर्णय करने का प्रयत्न करे कि कौन से अभिव्यक्त आकार किन रूपिमो को अभिव्यक्त करते है ।

(2) अभिव्यक्त आकारो के विविध प्रकार के पारस्परिक सम्बन्ध ।

---

1. 'Dealing with Korean Morphophonemics Martin explains that Morphophonemics is the system or the study of the system of the shapes and classes of shapes of utterances constituents' N. L N L S Martinet, 1954 Korean Morpho-phonemics, L S A Baltimore, PP 1-69

2. 'Morpho-phonology includes, in addition of the study of phonemic structure of morphems, th study of interchange between phonemes, as a morphological process' M. Swadesh, the Phonemic Principle, 'Phonology', P. 45, Ed by Fudge.

3. 'Morphophonemics includes all alternations of Phonems within morphems, whether these alternations are predictable (automatic) or not, and whether they are meaningful or not'. Robert A. Hall, J R Introductory Linguistics, P. 138

इससे भी परे रूपस्वनिमिकी के दो और पक्ष पर्यालोचन योग्य हैं—

(3) प्ररूपी-रूपो की अभिव्यक्ति (किसी एक भाषा मे) तथा प्राप्य स्वनिमिक विन्यास के सगठन का उपयोगीकरण।

(4) स्वनिमिक-रूपो का प्रत्यक्ष शब्दार्थ-विषयक प्रभाव।[1]

'रूपध्वनिग्राम विज्ञान के अन्तर्गत रूप ग्रामो के उन ध्वनि सम्बन्धी परिवर्तनो का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है, जो दो या दो से अधिक रूपग्रामो का योग होने पर किसी शब्द, रूप, वाक्य या वाक्याश मे हुआ करते हैं।'[2]

'मार्फोफोनेमिक्स या रूप ध्वनिग्राम विज्ञान मे उन ध्वन्यात्मक या ध्वनिग्रामीय परिवर्तनो (फोनेमिक चेंजिज) का अध्ययन किया जाता है, जो दो या दो से अधिक रूपो या रूपग्रामो के मिलने से दृष्टिगत होते हैं। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं, जिस शाखा के अन्तर्गत रूपग्राम के उन ध्वन्यात्मक रूपान्तरो का अध्ययन किया जाता है, जो विभिन्न वैयाकरणिक रूपो के निर्माण से बन जाते हैं।'[3]

---

1 'We are ready to concentrate on the Phonemic shapes which are represented in all occurences by a single phonemic shape. . The fact of multiple representation of single morphemes gives rise to one aspect of morpho-phonemics, which in turn has two sides,

(1) The methods by which an investigator attempts to decide which shapes are to be taken as representations of which morphemes, (2) The different types of relationships between representations

Beyond this, there are other aspects of morpho-phonemics deserving discussion, (3) The typical shapes of representation (in any one language) and the economy of utilization of the available phonemic arrangements, (4) The direct semantic effects of phonemic shapes'

C F Hockett, A course in Modern Linguistics, PP 271-272

2 डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना, भाषा विज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी भाषा, पृष्ठ 218

3 भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान कोश।

उपर्युक्त परिभाषाओ को ध्यान मे रखते हुए रूपस्वनप्रक्रिया की वास्तविक स्थिति को चित्र मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

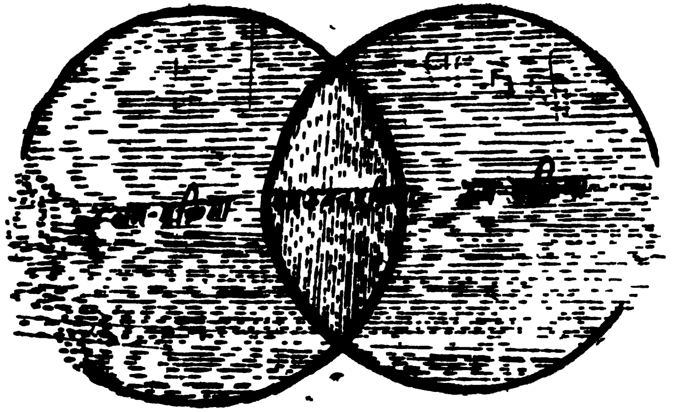

उपर्युक्त परिभाषाओ को ध्यान मे रखने के उपरात जो तथ्य सामने आते हैं, वे निम्नांकित है—

[1] रूपस्वनप्रक्रिया स्वनिम प्रक्रिया और रूप प्रक्रिया के अनुबन्ध का क्षेत्र है।

[2] (क) इस अध्ययन क्षेत्र मे रूपिम और उसके उपरूपो के स्वनिम सम्बन्धो का अध्ययन किया जाता है।

(ख) रूप-प्रक्रिया के सदर्भ मे होने वाले स्वनिमो के परस्पर परिवर्तनो का अध्ययन क्षेत्र है।

(ग) यह स्वनिमिक भिन्नताओ के रूप स्वनिमिक योजनो एव सिद्धियो का अध्ययन क्षेत्र है।

(घ) इस क्षेत्र के अन्तर्गत रूप स्वनिम एव उसकी व्यवस्था का अध्ययन किया जाता है।

मण्डियाली मे रूप स्वनिमिक परिवर्तन निम्नाकित स्थितियो मे मिलते हैं—

संकेत—

व	=	व्यजन
स	=	स्वर
व	=	एच्छिक-व्यजन
स॰	=	'स' व्यजन

2 1 ई→[(इ)] / [व (व)—तथा-याँ — बहुवचन प्रत्यय ; व —तथा-ता — भूत (पूर्ण-पक्ष) प्रत्यय]

उदाहरणार्थ—

(क) म्हठी-याँ ···म्हठियाँ 'लड़कियाँ' (3 3 2 1)
घोडी-याँ ···घोडियाँ 'घोड़ियाँ' (3 3 2 1)
चाच्ची-याँ···चाचियाँ 'चाचियाँ' (3 3 2 1)
(ख) पी-ता ··· पित्ता 'पिया' (3 9 2 3 2)
सी-ता ·· सित्ता 'सिला' (3 9 2 3 2)

2 2 ई→[(ϕ)] / [व-तथा-या] (प्रेरणार्थक प्रत्यय)

उदाहरणार्थ—

पी-या—प्या 'पिला' (3 7 2.1 1)
सी-या—स्या 'सिला' (3.7 2 1 1)

2 3 [आ / उ / ए / ओ / औ] → (ϕ) / [य-तथा-वा] (प्रेरणार्थक प्रत्यय)

उदाहरणार्थ—

खा-वा—ख्वा 'खिलवा' (3 7 2.1 2)
छू-वा—छ्वा छुलवाना' (3 7 2 1 2)
धो-वा—ध्वा 'धुलवाना' (3 7 2 1 2)
दे-वा—द्वा 'दिलवाना' (3 7 2 1 2)
सो-वा—स्वा 'सुलवाना' (3 7.2 1 2)

2 4 [आ / इ / ए] →[(अ)] / व-व तथा-आ (प्रेरणार्थक प्रत्यय)

उदाहरणार्थ—

जाग्-आ—जग्-आ 'जगाना' (3 7.2.1.1.)
मिल्-आ मल्-आ 'मिलाना' (3.7.2.1.1)
चिण्-आ चण्-आ 'चिनाना' (3 7 2.1 1.)
छेक्-आ छक्-आ 'फड़ाना' (3.7.2 1 1.)

2.5. [ए] → (आ) / { व-व तथा —उत्तर (परप्रत्यय)
—आणी } (बन्धुतावाचक)

उदाहरणार्थ—

जेठ्-उत्तर—जठ्-उत्तर	'जेठ का लडका'	(3.2.2.1)
जेठ्आणी—जठ्-आणी	'जेठानी'	(3 2.2.1.1)

2.6 [आ] → [(ए)] / -तथा [वाला—औला, वाली—औली, वाले—औले, जो, थे~ते, पर, र—, मझा] (परसर्ग)

उदाहरणार्थ—

म्हुठा-वाला	म्हुठे-वाला	'लडके वाला'
म्हुठा-वाली	म्हुठे-वाली	'लडके वाली'
म्हुठा-वाले	म्हुठे-वाले	'लडके वाले'
म्हुठा-जो	म्हुठे-जो	'लडके को'
म्हुठा-थे	म्हुठे-थे	'लडके से'
म्हुठा-पर	म्हुठे-पर	'लडके पर'
म्हुठा-र-	म्हुठे-र	'लडके क-'
म्हुठा-मझा	म्हुठे-मझा	'लडके मे'

2.7. [ई] → [(आ)] / (व०) व-तथा-अण {परप्रत्यय (स्त्री)}
व-तथा-आ {परप्रत्यय (प्रे०)}

उदाहरणार्थ—

(क) धोब्बी-अण	धोब्ब्-अण	'धोबिन'	(3 2 2 1)
जोगी-अण	जोग्-अण	'योगिन'	(3 2 2 1)
(ख) जीत्-आ	जता	'जिताना'	(3 7 2.1 1)
चीर्-आ	चरा	'चिराना'	(3.7.2 1.1)

2 8. (1) [ई] → [(ϕ)] / {व व तथा-सु} {परप्रत्यय}
{वव-तथा- एर} {बन्धुतावाचक}

उदाहरणार्थ—

माम्मी-सु	माम्-सु	'पति की मामी	(3.1.2.1.1.)
		या पत्नि की मामी'	

नान्नी-सु	नान-सु	'पति की नानी या पत्नि की नानी' (3.1.2.1 1)

मास्सी-एर	मस्-एर	'मौसी का लडका' (3 1.2 1.1.)

(2) म्म → (ल) / स-तथा-सु परप्रत्यय
न्न → (न) / स-तथा-सु बन्धुतावाचक

उदाहरणार्थ—

माम्मी-सु	मालसु	'पति/पत्नि की मामी' (3 1.2 1.1.)

नान्नी-सु	नान-सु	'पति/पत्नि की नानी' (3.1.2.1 1)

(3) [आ] → [(अ)] / [व-व व स तथा-एर] परप्रत्यय बन्धुतावाचक

उदाहरणार्थ—

मास्सी-एर	मस-एर	'मौसी का लडका' (3 1.2.1.1)

(4) [स्स] → [(स)] / [व स-स तथा-एर] परप्रत्यय बन्धुतावाचक

उदाहरणार्थ—

मास्सी-एर	मस्-एर	'मौसी का लडका' (3.1.2.1.1)

2 9. [ऐ] → [(अ)] / व-व व तथा-ओई परप्रत्यय बन्धुतावाचक
/ व-व तथा-याल परप्रत्यय (प्रे०)

उदाहरणार्थ—

बैह्‌ण-ओई	बह्‌ण-ओई	'बहनोई' (3 1 2 1 1)

बैठ-याल	बठ्-याल	'बिठाना' (3 7 2 1 1.)

2.10. [ल] → [(ल्ह)] / [स-व तथा-आ] [प्रत्यय (प्रे०)]

उदाहरणार्थ—

खेल-आ	खल्ह्‌-आ	'खिलाना' (3 7 2.1.1.)

2.11. [ऊ] [ओ] ← [(ऊ)] / व-व तथा-आ / व-व तथा-आ [प्रत्यय (प्र०)]

उदाहरणार्थ—

(क) घूम-आ	घुम्-आ	'घुमाना' (3.7.2.1.1)
कूद-आ	कुद्-आ	'कूदाना' (3.7.2.1 1)

(ख) तोड़-आ तुड़-आ 'तुड़ाना' (3.7.2 1 1)
खोल्ह्-आ खुल्ह् -आ 'खुलाना' (3.7.2 1.1.)

2.12. [यो] → [(ɸ)] / [व - व तथा-आणी] [प्रत्प्रत्यय (स्त्री०)]

उदाहरणार्थ—

द्योर्-आणी द्‌र-आणी 'देवरानी' (3 2 2 1.)
सन्धि नियम → आ + आ = या/आ

2.13 (1) [ई] → [(अ)] / [व - व व स तथा-आस] परप्रत्यय
भा०वा० स०

उदाहरणार्थ—

मिट्ठा-आस मठ्यास 'मिठास' (3 1 2 2.2 2.)
मिट्ठा-आस मट्ठास 'मिठास' (3 1.2.2.2 2)

(2) [आ] → [(ɸ)] / [व-तथा-आल्ली] परप्रत्यय
भा० वा० स०)

उदाहरणार्थ—

हरा-आल्ली हर्याल्ली 'हरियाली' (3.1.2.2 2 2.)

2.14. [इ] → [(अ)] / [व-व तथा-आई] परप्रत्यय
भा० वा० स०

उदाहरणार्थ—

लिख्-आई लख्-आई 'लिखाई' (3 1.2.2 2 3)
सिख-आई सख-आई 'सिखलाई' (3 1.2.2 2 3.)

2 15 [ज] → [(ग)] / [-स तथा-या] परप्रत्यय
भूतकाल

उदाहरणार्थ—

जा-या गया 'गया' (3 9 1 2 2.)

2.16. [उ] → [(ɸ)] / -व तथा-वाल [प्रत्प्रत्यय] (प्रे०)
-व स व तथा-वाल
-व स व तथा-वार

उदाहरणार्थ—

उठ-वाल् ठ्वाल 'उठाना' (3.7 2.1.1)
उबल-वाल ब्वाल 'उबालना' (3 7 2.1.1)
उतर-वार त्वार 'उतारना' (3.7.2.1.1.)

2.17. [ल] → [(ɸ)] / [स-तथा-वाल्] [परप्रत्यय] (प्रे०)
उबल्-वाल् बवाल 'उबालना' (3.7.2.1.1.)

2.18. [अ] → [(ϕ)] / व-व तथा-वाल [परप्रत्यय] (प्रे०)
व-व तथा-वार

उबल्-वाल्	ब्वाल	'उबालना'	(3 7 2 1 1)
उतर-वार	त्वार	'उतारना'	(3.7 2 1 1.)

2.19 [र] → [(ϕ)] / [स-तथा-वार] [परप्रत्यय (प्रे०)]

उदाहरणार्थ—

उतर्-वार	त्वार	'उतारना'	(3 7 2 1.1.)

2.20. [ओ] → [(उ)] / व-तथा-ज्जा परप्रत्यय (क्र० सू० वि०)
व-तथा-गणा परप्रत्यय (गु० वि०)

उदाहरणार्थ—

दो-ज्जा	दुज्जा	'दूसरा'	(3 6 3.2)
दो-गणा	दुगणा	'दुगना'	(3.6 5)

2.21 [आर] → [(ओ)] / व-तथा-त्था परप्रत्यय (क्र० सू० वि०)
व-तथा-गणा परप्रत्यय (गु० वि०)
व-तथा-ओह्रा परप्रत्यय (समु० वा० वि०)

उदाहरणार्थ—

चार-त्था	चोत्था	'चौथा'	(3.6 3.2.)
चार-गणा	चोगणा	'चौगुना'	(3 6.5)
चार-ओह्रा	चोह्रा	'चोहरा'	(3 6.4)

2.2.2 [आए] → [(ई)] / व व-तथा-ज्जा परप्रत्यय (क्र० सू० वि०)
/ व व-तथा-गणा परप्रत्यय (गु० वि०)

उदाहरणार्थ—

त्राए-ज्जा	त्रिज्जा	'तीसरा'	(3 6.3 2)
त्राए-गणा	त्रिगणा	'तिगुना'	(3 6 5)

2.23 [न] → [न्ह] / [-स तथा-उवाँ] [परप्रत्यय (सख्यावा०)]

उदाहरणार्थ—

नो उवाँ	न्ह्-उवाँ	'नवाँ'	(3 6.3 2.)

2.24 [ज] → [(स)] / स-तथा-सौ (संख्या वा० वि०)
/ स-तथा-सा

उदाहरणार्थ—

पाँज्-सौ	पाँस्-सौ	'पाँच-सौ'
पाँच-सात	पाँस-सात	'पाँच-सात'

2.25. आ / ई → [(ф)] / [व-तथा-वाँ] [परप्रत्यय (क्र० सू० वि)]

उदाहरणार्थ—

ग्यारा-वाँ	ग्याह्रवाँ	'ग्यारह्वाँ'	(3 6 3 2)
बारा-वाँ	बाह्र्वाँ	'बारह्वाँ'	(3.6.3 2)
पैंती-वाँ	पैंथवाँ	'पैंतीसवाँ'	(3.6.3 2)
चाली-वाँ	चाह्लवाँ	'चालीसवाँ'	(3.6.3.2)

2.26. [त] → [(थ)] / [स (व०) व-स-तथा-वाँ] परप्रत्यय (क्र० सू० वि०)

उदाहरणार्थ—

कत्ती-वाँ	कथवाँ	'कतीसवाँ'	(3.6 3.2.)
बत्ती-वाँ	बथवाँ	'बतीसवाँ'	(3 6.3.2)
तेत्ती-वाँ	तेथवाँ	'तेतीसवाँ'	(3.6.3 2)
छत्ती-वाँ	छथवाँ	'छतीसवाँ'	(3 6 3.2.)

संज्ञापद (नाउन्ज़)

3.1 0. स्थिति-वर्ग [पोजिसन क्लासिस]—

सज्ञापद के अन्तर्गत विचारणीय स्थिति वर्ग इस प्रकार है—

1	2	3	4
प्रतिपादिक	लिग (प्रत्यय)	वचन (प्रत्यय)	कारक चिह्न (परसर्ग)
	1 पुल्लिग 2 स्त्रीलिग	1 एक वचन 2. बहु वचन	1 कर्तृ वाचक 2 कर्म वाचक 3 करण वाचक 4 सम्प्रदान वाचक 5 अपादान वाचक 6 अधिकरण वाचक 7 सम्बन्ध वाचक 8 सहवाचक 9 प्रयोजन वाचक

मण्डियाली सज्ञा पदो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] सामान्य-सज्ञा पद तथा

[2] व्युत्पन्न-सज्ञा पद ।

सामान्य सज्ञापद वे पद हैं, जिन्हे रूप प्रक्रियात्मकता (मार्फोलोजीकली) की दृष्टि से लिग-परसर्गों की आवश्यकता नही पडती । उदाहरणार्थ—राम, गीता, माँज्जा, किताब, चाँद्दी आदि ।

व्युत्पन्न-सज्ञा पद वे पद हैं जिन्हे लिग परसर्गों या अन्य व्युत्पादी (डैरीवेटिव) परसर्गों की आवश्यकता पडती है । उदाहरणार्थ—जठाणी—'जेठानी', द्राणी—'देव-रानी', डाक्टरनी—'डाक्टर' [स्त्री०], दाद्दी, नान्नी आदि ।

मण्डियाली सज्ञा पदो को चित्र मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

- संज्ञा पद
  - सामान्य
    - मूर्त
      - संख्यावाचक
        - चेतन
          - मानवीय
            - जातिवाचक
              - बन्धुतावाचक
                - पुल्लिग
                - स्त्रीलिंग
              - अबन्धुतावाचक
                - पुल्लिग
                - स्त्रीलिंग
            - व्यक्तिवाचक
              - पुल्लिग
              - स्त्रीलिंग
          - अमानवीय
        - अचेतन
      - राशिवाचक
    - भाववाचक
  - व्युत्पन्न
    - भाववाचक
      - नाम प्रातिपादिकों से
      - वि. प्राप्ति से
      - क्रि धा. से
    - मूर्त
      - चेतन
        - मानवीय
          - बन्धुतावाचक
            - पुल्लिग
            - स्त्रीलिंग
          - अबन्धुतावाचक
        - अमानवीय
      - अचेतन

3.1.1. सामान्य-संज्ञापद—

सामान्य सज्ञापदो को अध्ययन की सुविधा के लिए दो उपसर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] मूर्त-संज्ञापद तथा
[2] भाववाचक या गुणवाचक सज्ञापद ।

3 1 1.1. मूर्त सज्ञापद [कान्करीट नाउन्ज]—

मूर्त सज्ञापदो के उदाहरण निम्नवत् हैं—

मॉंज्जा	'चारपाई'
कणक	'गेहूँ'
चौल	'चावल'
कताब	'किताब' आदि ।

मूर्त सज्ञापद, सख्यावाचक विशेषण पदो तथा मापक सज्ञा पदो के योग से बनते हैं—

उदाहरणार्थ—

एक मॉंज्जा	'एक चारपाई'
त्राए तोल चॉंद्दी	'तीन तोले चाँदी'
एक कताब	'एक पुस्तक'
दो किल्लो दुद्ध	'दो किलो दूध'
दो मण चौल	'दो मन चावल' आदि ।

3.1 1 2 भाववाचक संज्ञापद [एब्सट्रैक्ट नाउन्ज] —

भाववाचक सज्ञापद सख्यावाचक विशेषण पदो तथा मापक सज्ञा पदो के योग से नही बनते—

उदाहरणर्थ—

पीड़	'दर्द'
भुक्ख	'भूख'
बेजती	'बेइज्जती' आदि ।

मूर्त-सज्ञा पदो को सुविधा की दृष्टि से फिर दो उपवर्गों मे बाँटा जा सकता है ।

[1] सख्यावाचक सज्ञापद तथा
[2] राशिवाचक सज्ञापद ।

3.1.1 1.1 सख्यावाचक संज्ञापद [काउट नाउन्ज]—

सख्यावाचक—सज्ञापद, सख्यावाचक विशेषण पदो के योग से बनते हैं—

उदाहरणार्थ—

एक कताब्	'एक पुस्तक'

दो मांज्जे	'दो चारपाइयाँ'
त्राए घर	'तीन घर' आदि ।

3 1.1.1 2. राशिवाचक—सज्ञापद [मास नाउन्ज]—

राशिवाचक सज्ञापद, मापक सज्ञा पदो के योग से बनते हैं—उदाहरणार्थ—

फिल्लो दुद्ध	'एक किलो दूध'
मण चौल	'एक मन चावल'
तोला स्युन्ना	'एक तोला सोना' आदि ।

राशिवाचक सज्ञापदो मे मापक सज्ञापद से पूर्व सख्यावाचक विशेषण पद का प्रयोग भी हो सकता है । यह बात मूर्त सज्ञा पदो से स्पष्ट है ।

बहुवचन परसर्ग के आधार पर सख्यावाचक सज्ञापदो को दो भागो मे बांट सकते हैं— (1) संज्ञापद, जिनमे बहुवचन परसर्ग /आँ/ आदि लगता है तथा (2) सज्ञापद, जिनमे बहुवचन परसर्ग /ϕ/ लगता है। राशिवाचक सज्ञापदो मे इस प्रकार का कोई परसर्ग नही लगता है ।

/आँ/ बहुवचन—परसर्ग के साथ उदाहरण इस प्रकार है—

/क/ कताब	'पुस्तक'
कताब्बाँ	'पुस्तकें'
म्हूठी	'लडकी'
म्हूठियाँ	'लडकियाँ' आदि ।

[ख] /ϕ/ बहुवचन परसर्ग के साथ उदाहरण इस प्रकार हैं—

कणक	'गेहूँ'
छोल्ले	'चने'
चौल	'चावल' आदि ।

सख्यावाचक सज्ञा पदो के उदाहरण इस प्रकार हैं—

कताब	'पुस्तक'
बह्ल्द	'बैल'
म्हैस	'भैंस' आदि ।

राशिवाचक सज्ञा पदो के उदाहरण इस प्रकार हैं—

छोल्ले	'चने'
कणक	'गेहूँ'
घियु	'घी' आदि ।

विशेष—सभी प्रकार के अनाज चौल—'चावल', कणक—'गेहूँ', छोल्ले—'चने' आदि सज्ञा पदो का प्रयोग राशिवाचक तथा सख्यावाचक सज्ञापद दोनो रूपो मे सभव है । उदाहरणार्थ—दो दाणे चौल—दो दाने चावल, दो दाणे कणक—'दो

दाने गेहूँ' आदि।

सङ्ख्यावाचक सज्ञा पदो को फिर दो उपवर्गो मे बाँटा जा सकता है—

[1] चेतन संज्ञा पद तथा

[2] अचेतन सज्ञा पद।

3.1 1 1.1 1 चेतन सज्ञापद [एनीमेट नाउन्ज]—

मण्डियाली मे चेतना सज्ञा पदो के अन्तर्गत उन सज्ञा पदो को लिया जा रहा है जो चेतन हैं या जिनमे चेतन शक्ति है।

उदाहरणार्थ—

म्हाणु	'आदमी'
जनान्ना	'औरत'
झोट्टा	'भैंसा' आदि।

3.1 1 1 1.2 अचेतन—सज्ञापद [इन-एनीमेट नाउन्ज]—

अचेतन सज्ञा पदो के अन्तर्गत उन सज्ञा पदो को लिया जा रहा है, जो निर्जीव, बेजान दार या जिनमे चेतन शक्ति नही होती।

उदाहरणार्थ—

कताब	'पुस्तक'
कॉड्डा	'काँटा'
लाप	'चम्मच'

चेतन सज्ञा पदो को फिर दो उपवर्गो मे बाँटा जा सकता है—

[1] मानव सज्ञापद तथा

[2] अमानव-सज्ञापद।

3 1 1.1 1 1 1 मानव-सज्ञापद [ह्यूमन नाउन्ज]—

मानव सज्ञा पदो से केवल मानव जाति का बोध होता है।

उदाहरणार्थ—

म्हाणु	'आदमी'
चमार	'चमार'
जनान्ना	'औरत' आदि।

3.1.1.1 1.1 2 अमानव सज्ञापद [नान-ह्यूमन नाउन्ज]—

अमानव सज्ञा पदो से मानव से परे की चीजो का बोध होता है।

उदाहरणार्थ—

सूर	'सूअर'	[जगली]
सुग्गर	'सूअर'	[पालतु]
गाय	'गाय'	आदि।

मानव सज्ञापदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] जातिवाचक सज्ञापद तथा

[2] व्यक्तिवाचक सज्ञापद।

3.1 1.1 1.1 1.1. जातिवाचक सज्ञापद [कॉमन नाउन्स]—

जातिवाचक सज्ञापदो से केवल जाति विशेष का बोध होता है। इस वर्ग मे केवल मानव जाति द्योतक सज्ञापद आते हैं—

उदाहरणार्थ—

ब्राह्मण	'ब्राह्मण'
छिब्बे	'धोबी'
कोली	'कोली' आदि।

3 1 1.1.1.1 1 2 व्यक्तिवाचक संज्ञापद [परोपर नाउन्स]—

व्यक्तिवाचक सज्ञा पदो के अन्तर्गत व्यक्ति विशेष को व्यक्त करने वाले सज्ञापद ही आते हैं।

उदाहरणार्थ—

नरेस	'नरेश'
पाल	'पाल'
गीता	'गीता' आदि।

जातिवाचक सज्ञा पदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँटा जा सकता है।

[1] बन्धुतावाचक सज्ञापद तथा

[2] अबन्धुतावाचक सज्ञापद।

3 1 1 1.1 1.1.1 1. बन्धुतावाचक सज्ञापद [किनशिप् नाउन्स]—

बन्धुतावाचक सज्ञापद वे पद हैं जो पारिवारिक सम्बन्धों को व्यक्त करते हैं।

उदाहरणार्थ—

आम्मां	'मां'
बाब	'पिता'
बैहूण	'बहन' आदि।

3.1.1.1 1 1 1 1.2 अबन्धुतावाचक संज्ञापद [नान किनशिप् नाउन्स]—

अबन्धुतावाचक सज्ञापदो से पारिवारिक सम्बन्धों का भाव व्यक्त नही होता।

विशेष : अबन्धुतावाचक सज्ञापदो के अन्तर्गत कुछ सज्ञापद ऐसे भी आते हैं जिनमे बन्धुता का भाव भी रहता है। अत ऐसे सज्ञापद दोनो वर्गों के अन्तर्गत आ सकते हैं। उदाहरणार्थ—म्हूठी—'लडकी', बनान्ना—'औरत', म्हूठा—'लडका' आदि ऐसे सज्ञापद हैं जो दोनो वर्गों के अन्तर्गत आ सकते हैं।

मानवीय सज्ञापदो को दो उपवर्गो मे बाँटा जा सकता है।

[1] बन्धुतावाचक तथा

[2] अबन्धुतावाचक।

3 1.2 1.1 **बन्धुतावाचक सज्ञापद (किनशिप् नाउन्स)—**

बन्धुतावाचक तथा अबन्धुतावाचक सज्ञा पदो को लेकर सामान्य सज्ञापद (3 1 1 1 1.1.1.1.) के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है। बन्धुतावाचक सज्ञा पदो के उदाहरण इस प्रकार हैं—

नान्ना	नान्नी	'नानी'
चाच्चा	चाच्ची	'चाची'
दाद्दा	दाद्दी	'दादी' आदि

मण्डियाली के बन्धुतावाचक सज्ञापद पूर्व प्रत्ययो तथा पर-प्रत्ययो से व्युत्पन्न है। मण्डियाली के समस्त बन्धुतावाचक सज्ञा पदो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

सामान्य बन्धुतावाचक संज्ञापद

(लक्कड)	नान्ना	नान्नी		दाद्दा		दाद्दी
(पड)	नान्ना	नान्नी		दाद्दा		दाद्दी
(-ई)	नान्ना	नान्नी		दाद्दा		दाद्दी
(-ई)	माम्मा	माम्मी	ताया	ताई	चाच्चा	चाच्ची
(-अड- -ई-)	मास्सी	मास्सड		बुआ		बुवाई
(-एरा- -एर-)	मामा का लडका (ममेरा)	मोसी का लडका (मसेरा)	ताया चाचा का लडका (चचेरा)			बुआ का लडका (भाई)
		आम्मा				
(पड)					बाब (बाब्बा)	
				पुत्तर (म्हठा)	पुत्तरी (भाई-बैह्ण) (म्हठी) भाणजा-भाण्जी)	
				पोत्तर	पोत्तरी (भाई-बैह्ण)	
(पड़-)				पोत्तर	पोत्तरी	

ससुराल बन्धुतावाचक संज्ञापद—(लड़का)

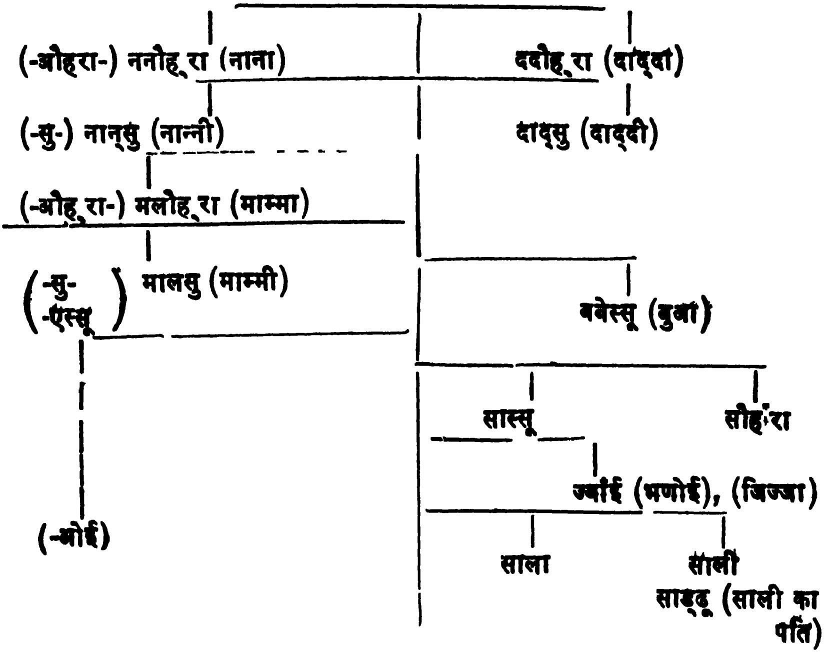

ससुराल बन्धुता वाचक संज्ञापद—(लड़की)

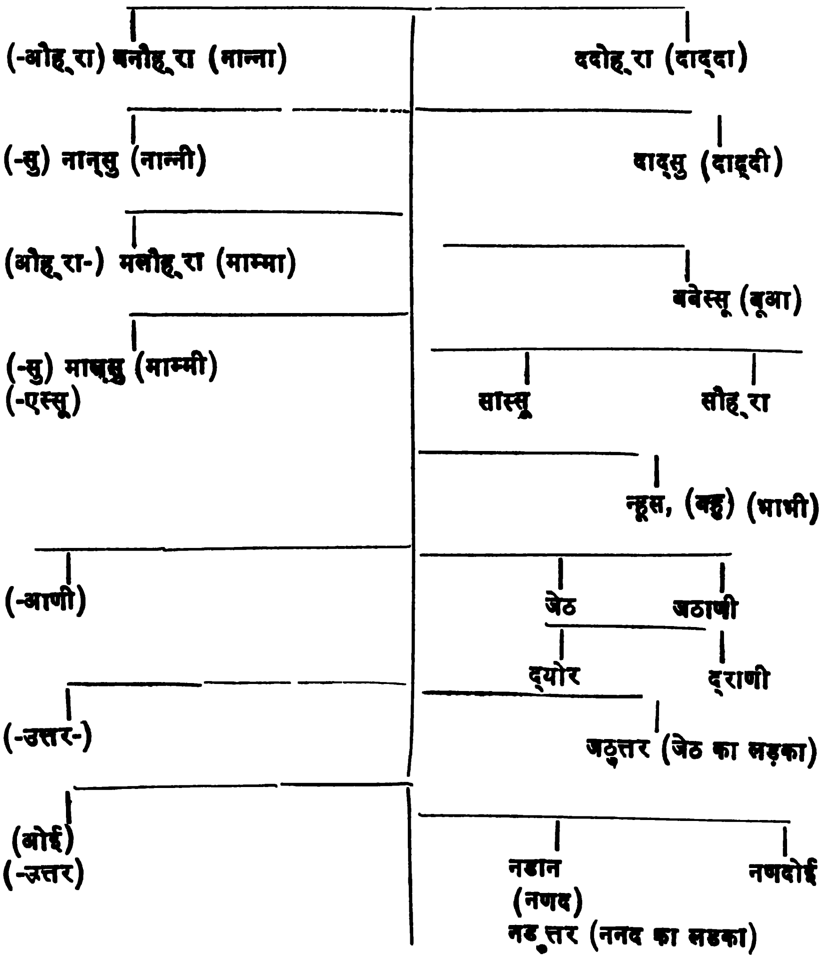

बन्धुतावाचक पूर्व प्रत्ययो के साथ सज्ञा पदो के उदाहरण इस प्रकार हैं—

[1] (लक्कड-)	लक्कड-दाद्दा	'लक्कड दादा'
	लक्कड-दाद्दी	'लक्कड दादी'
	लक्कड-नान्ना	'लक्कड नाना'
	लक्कड-नान्नी	'लक्कड़ नानी'
[2] (पड-)	पड-दाद्दा	'पडदादा'
	पड-दाद्दी	'पडदादी'
	पड-पोत्तर	'पडपोतर'
	पड-पोत्तरी	'पडपोतरी' आदि।

बन्धुतावाचक पर प्रत्ययो के साथ सज्ञा पदो के उदाहरण इस प्रकार हैं—

[1] (-ओह्रा)	दाद्दा-ओह्‌रा	ददोह्रा	'दादा'
	नान्ना-ओह्‌रा	ननोह्रा	'नाना'
	माम्मा-ओह्‌रा	मलोह्‌रा	'मामा'
[2] (-सु)	दाद्दी-सु	दादसु	'दादी'
	नान्नी-सु	नानसु	'नानी'
	माम्मी-सु	मालसु	'मामी'
[3] (-एस्सू)	बुआ-एस्सू	बबेस्सू	'बुआ'
[4] (-ओई)	बैंह्‌ण-ओई	भणोई	'बहनोई'
	नडान-ओई	नणदोई	'ननदोई'
	नणद-ओई	नणदोई	'ननदोई'
[5] (-आणी)	जेठ-आणी	जठाणी	'जेठानी'
	द्योर-आणी	द्राणी	'देवरानी'
[6] (-ई)	माम्मा-ई	माम्मी	'मामी'
	चाच्चा-ई	चाच्ची	'चाची'
[7] (-अड)	मास्सी-अड	मास्सड	'मौसा'
[8] (-एरा)	माम्मा-एरा	ममेरा	'मामा का लडका' [ममेरा]
	चाच्चा-एरा	चचेरा	'चाचा का लडका' [चचेरा]
[9] (-एर)	मास्सी एर	मसेर	'मौसी का लडका' [भाई]
[10] (-उत्तर)	जेठ-उत्तर	जठुत्तर	'जेठ का लडका'
	नडान-उत्तर	नड्‌त्तर	'ननद का लडका'

अत उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि बन्धुतावाचक व्युत्पन्न सज्ञापदो मे परप्रत्यय के योग से रूप-स्वनिमिक परिवर्तन आते हैं। इन सभी परिवर्तनो को लेकर रूप-स्वनिमिकी मे विचार किया गया है। या इन परिवर्तनो को रूप-स्वनिमिकी मे दिखाया गया है।

3 1.2 1 2 अबन्धुतावाचक संज्ञापद [नॉन किनशिप् नाउन्स]—

अबन्धुतावाचक संज्ञा पदो के उदाहरण इस प्रकार हैं—

डाक्टर	'डाक्टर'
डाक्टरनी	'डाक्टर' [स्त्री०]
म्हाणु	'आदमी'
मास्टर	'अध्यापक' आदि ।

व्युत्पन्न संज्ञापदो के अन्तर्गत यहाँ पहले मूर्त संज्ञापदो को लेकर विचार किया जा रहा है।

व्युत्पन्न मूर्त संज्ञापदो को दो उपवर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] चेतन संज्ञापद तथा

[2] अचेतन संज्ञापद ।

3 1.2.1. चेतन संज्ञापद [एनीमेट नाउन्स]—

चेतन संज्ञापदो को लेकर सामान्य संज्ञापद [3 1 1 1 1.1] के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है । व्युत्पन्न संज्ञापदो [मानव] मे स्त्रीलिंग पदो को पुल्लिंग संज्ञापदो से व्युत्पन्न माना है । मगर इसके कुछ अपवाद भी मिलते हैं। अर्थात् सभी स्त्रीलिंग संज्ञापद, पुल्लिंग संज्ञापदो से व्युत्पन्न नही हैं । स्त्रीलिंग व्युत्पन्न संज्ञापदो के उदाहरण इस प्रकार हैं—

दाद्दा	→	दाद्दा	'दादी'
माम्मा	→	माम्मी	'मामी'
ताया	→	ताई	'ताई'
जेठ		जठाणी	'जेठानी' आदि ।

अपवाद, अर्थात् स्त्रीलिंग संज्ञापदो से व्युत्पन्न पुल्लिंग-संज्ञापदो के उदाहरण इस प्रकार हैं—

मास्सी	→	मास्सड	'मौसा'
बुआ	→	बुवाई	'फूफा' आदि'

3 1 2.2 अचेतन संज्ञापद [इनएनीमेट नाउन्स]—

अचेतन संज्ञापदो को लेकर सामान्य संज्ञापद [3 1.1 1 1 2]के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है । अचेतन संज्ञापदो को लेकर यह कहना कठिन है कि व्युत्पन्न रूप किसे माना जाए । मगर सुविधा के लिए यहाँ पर भी यदि स्त्रीलिंग संज्ञा पदो को पुल्लिंग संज्ञा पदो से व्युत्पन्न स्वीकार कर लें, तो कोई आपत्ति की बात नही है। मगर वैज्ञानिकता का जहाँ तक प्रश्न है तो अचेतन संज्ञा पदो को स्त्रीलिंग या पुल्लिंग किसी को भी किसी से व्युत्पन्न स्वीकार कर सकते हैं ।

उदाहरणार्थ—

रस्सा	→	रस्सी	'रस्सी'
झोला	→	झोली	'थैली'
बोरा	→	बोरी	'पटसन का थैला' आदि ।

चेतन संज्ञा पदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] मानवीय तथा

[2] अमानवीय ।

3.1.2 1.1. मानवीय संज्ञापद [ह्यूमन नाउन्ज़]—

मानवीय संज्ञापदो को लेकर सामान्य संज्ञापद[3.1 1 1 1 1 1] के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है । जहाँ तक व्युत्पन्न मानवीय संज्ञा पदो का प्रश्न है स्त्रीलिंग संज्ञा पदों को पुल्लिंग संज्ञापदो से व्युत्पन्न स्वीकार किया गया है । वास्तव मे इन व्युत्पन्न संज्ञापदो को लेकर बन्धुतावाचक संज्ञा पदो के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है । यहाँ पर व्युत्पन्न संज्ञापदो के उदाहरण दिए जा रहे हैं—

उदाहरणार्थ—

नान्ना	→	नान्नी	'नानी'
माम्मा	→	माम्मी	'मामी'
चाच्चा	→	चाच्ची	'चाची' आदि

3.1.2.1.2. अमानवीय संज्ञापद [नान ह्यूमन नाउन्ज़]—

अमानवीय संज्ञा पदो को लेकर सामान्य संज्ञापद [3 1.1.1.1 1.2] के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है । अमानवीय संज्ञा पदो मे यह बात स्पष्ट नही है कि पुल्लिंग संज्ञापद स्त्रीलिंग संज्ञापद से व्युत्पन्न हैं या स्त्रीलिंग संज्ञापद, पुल्लिंग संज्ञापद से व्युत्पन्न हैं अतः यहाँ पर अमानवीय संज्ञा पदो के केवल उदाहरण मात्र दिए जा रहे हैं—

उदाहरणार्थ—

झोट्टा	'भैसा'
म्हैस	'भैंस'
गाय	'गाय'
बह्ल्द	'बैल' आदि

3.1.2. व्युत्पादी-संज्ञापद [डॅरीवेटिव नाउन्ज]—

संज्ञापदों मे कुछ संज्ञापद ऐसे हैं। जिनके दो या दो से अधिक रूपिम [मार्फीम्ज़] होते हैं । ऐसे रूपिमो मे एक घटक मूल-रूपिम होता है तथा दूसरा घटक नामिकी [नौमिनेलाईजिंग] परप्रत्यय होता है । नामिकी परप्रत्ययो को मूल रूपिम मे जोड़ने से मूल रूपिम, संज्ञा-पद का रूप धारण करता है ।

व्युत्पादी संज्ञा पदो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] मूर्त संज्ञापद तथा

[2] भाववाचक संज्ञापद ।

3 1 2 1 मूर्त-सज्ञापद [कान्क्रीट नाउन्ज]—

ऐसे सज्ञा पद जो पुल्लिग परप्रत्ययो तथा स्त्रीलिंग परप्रत्ययो के योग से व्युत्पन्न है, मूर्त सज्ञापद के अन्तर्गत आते हैं। इन पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग परप्रत्ययो के योग से व्युत्पादी नामपदो की उत्पत्ति होती है।

सभी पुल्लिग परप्रत्ययो तथा स्त्रीलिंग पर-प्रत्ययो को लेकर आगे चलकर 'लिंग विधान' के अन्तर्गत विचार किया गया है। यहाँ पर केवल उन्ही परप्रत्ययो तथा संज्ञापदो को लेकर विचार किया जा रहा है, जिन पर 'लिंग विधान' के अन्तर्गत विचार नही किया गया है।

इसी कारण व्युत्पन्न मूर्त सज्ञापदो के अन्तर्गत केवल मानवीय सज्ञापदो को ही स्वीकार किया गया है।

उदाहरणार्थ—

मूल		व्युत्पन्न	
दाद्दा	→	दाद्दी	'दादी'
नान्ना	→	नान्नी	'नानी'
चाच्चा	→	चाच्ची	'चाची'
माम्मा	→	माम्मी	'मामी' आदि।

3 1 2.2 भाववाचक सज्ञापद [एबस्ट्रैक्ट नाउन्ज]—

मण्डियाली मे भाववाचक सज्ञापद विभिन्न प्रकार के प्रातिपदिको मे पूर्व-प्रत्यय तथा परप्रत्यय जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। भाववाचक सज्ञापद निम्नाकित विभिन्न प्रकार के प्रातिपादिको से व्युत्पन्न होते हैं—

[1] सज्ञा प्रातिपदिको से व्युत्पन्न।

[2] विशेषण प्रातिपदिको से व्युत्पन्न।

[3] क्रिया प्रातिपदिको से व्युत्पन्न।

3 1 2 2 1 पूर्व-प्रत्यय [परफिक्सिज]—

सज्ञा प्रातिपदिको मे पूर्व प्रत्यय जोडने से भाववाचक सज्ञापद व्युत्पन्न होते हैं।

3 1 2 2 1 1 संज्ञा प्रातिपदिको से व्युत्पन्न—

सज्ञा प्रातिपदिको मे निम्नाकित पूर्व-प्रत्यय जोडने से भाववाचक सज्ञापद व्युत्पन्न होते हैं—

पू०प्र०		स०प्राति०	भा०स०	
[अभि—]	अभि—	मान	अभिमान	'अभिमान'
[अधि—]	अधि—	कार	अधिकार	'अधिकार'
[त—]	त—	बार	तबार	'विश्वास'
[बद—]	बद—	मास	बदमास	'बदमाश'

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि पूर्वप्रत्यय से भाववाचक संज्ञापद केवल संज्ञा प्रातिपदिक मे जोडने से ही व्युत्पन्न होते हैं।

3 1.2 2 2 पर-प्रत्यय [सफीक्सिज]—

मण्डियाली मे अधिकतर भाववाचक सज्ञापद पर-प्रत्ययो के योग से व्युत्पन्न होते हैं। निम्नाकित प्रातिपदिको मे पर-प्रत्यय जोड़ने से भाववाचक सज्ञा पद व्युत्पन्न होते हैं—

3.1.2.2 2.1 सज्ञा प्रतिपादको से व्युत्पन्न .—

सज्ञा प्रतिपादको मे निम्नाकित पर-प्रत्यय जोडने से भाववाचक संज्ञापद व्युत्पन्न होते हैं—

	पर० प्र०	स० प्राति०	भा० स०	
[-पन]	-पन	अपना	अपनापन	'अपनापन'
	...	ग्वार	ग्वारपन	'असभ्यता'
[-पण]	-पण	खराब	खराबपण	'बुराई'
[-चारा]	-चारा	मित्तर	मित्तरचारा	'दोस्ती'
	...	भाई	भाईचारा	'रिश्तेदार'
[-गिरी]	-गिरी	सौद्दा	सौद्दागिरी	'क्रय-विक्रय'
	...	चम्चा	चम्च्चागिरी	'चमच्चागिरी'
[-दारी]	-दारी	जिमी	जिमीदारी	'कृषिकार्य'
	...	मान	मानदारी	'ईमानदारी'
[-बाजी]	-बाजी	चाल	चालबाजी	'धोखा'
	..	धोखा	धोखेबाजी	'धोखा'
[-मदी]	-मद्दी	अक्कल	अक्कलमद्दी	'बुद्धिमता'
[-प्पा]	-प्पा	बुढा	बुढाप्पा	'बुढापा'
[-ई]	-ई	दुस्मण	दुस्मणी	'दुश्मनी'
...		दोस्त	दोस्ती	'दोस्ती'
		चोर	चोरी	'चोरी'

3.1.2 2 2 2 विशेषण प्रातिपदिकों से व्युत्पन्न—

विशेषण प्रातिपदिको मे निम्नाकित परप्रत्यय जोडने से भाववाचक संज्ञाप व्युत्पन्न होते हैं—

	पर प्र०	वि० प्राति०	भा० स०	
[-पन]	-पन	गोरा	गोरापन	'गोरापन'
	...	बालक	बालकपन	'बालक'

	पर प्र०	क्रि० प्राति०	भा० स०	
[-आस]	-आस	मिटठा	मट्ठास	'मिठास'
	...	खट्टा	खट्टास	'खट्टापन'
[-यास]	-यास	मिट्ठा	मठ्यास	'मिठास'
	...	खट्टा	खट्यास	'खट्टापन'
[-याल्ली]	-याल्ली	हरा	हरयाल्ली	'हरियाली'
[-ऐस]	-ऐस	गर्‌म	गरमैस	'गर्मी'
[-आई]	-आई	गर्‌म	गरमाई	'गर्मी
	...	चतर	चतराई	'चतुराई'
[-पण]	-पण	खराब	खराब्‌पण	'खराब'
	...	अणजाण	अणजाणपण	'अनजानपन'
[-गी]	-गी	लाल	लालगी	'लालिमा'
[-ई]	-ई	चलाक	चलाकी	'चलाकी'
	...	लाल	लाल्ली	'लालिमा'
	...	सपेद	सपेदी	'सफेदी'
[-आ]	-आ	खराब	खराब्बा	'खराबी'
[-क]	-क	पाँच	पांजक	'पाँच दिनो का विशेष समूह'

3 1.2.2 2.3 **क्रिया प्रातिपदिकों से व्युत्पन्न—**

क्रिया प्रातिपदिको मे निम्नांकित पर-प्रत्यय जोडने से भाववाचक सज्ञापद व्युत्पन्न होते हैं—

	पर प्र०	क्रि० प्राति०	भा० स०	
[-आई]	-आई	सिख	सखाई	'सिखलाई'
	...	लिख	लखाई	'लेख'
[-कारी]	-कारी	समझ	समझकारी	'बुद्धिमता'
	...	जाण	जाणकारी	'ज्ञान'
[-दारी]	-दारी	समझ	समझदारी	'समझदारी'
[-कारा]	-कारा	छुट	छुटकारा	'छुटकारा'
[-आंद]	-आंद	जा	जांद	'जाने का समय'
[-आंद्]	-आंद	आ	आंद	'आने का समय'
[-आंदक]	-आंदक	जा	जांदक	'जाना'
[-आंदक]	-आंदक	आ	आंदक	'आना'
[-अन]	-अन	लग	लगन	'लग्न'
	...	सग	सगन	'शुभ अवसर पर दिया गया उपहार'

	पर प्र०	क्रि० प्राति०	भा० स०	
[-अण]	-अण	हिल	हिल्लण	'भूकम्प'
[-आप]	-आप	मिल	मलाप	'मिलाप'
[-अक]	-अक	चट	चटक	'चाटने की आवाज'
	..	खट	खटक	'आवाज विशेष'
	...	पट	पटक	'आवाज विशेष'
[-णा]	-णा	गा	गाणा	'गाना'
		सी	सीणा	'मिलना'
[-ना]	-ना	पढ	पढ़ना	'पढ़ना'
		चढ	चढ़ना	'चढना'
[-नी]	-नी	मिल	मिलनी	'मिलन'
	.	चल	चलनी	'पहुँच'
[-स]	-स	मल	मालस	'मालिश'
[-णी]	-णी	मिल	मिलणी	'मिलन'
[-ण]	-ण	लै	लैण≈लेण	'लेना'
	...	दे	देण	'देना'
[-ज]	-ज	मर	मर्ज	'बीमारी' आदि
	..	कर	करज	'ऋण'
[-प]	-प	न्ह्याल	न्ह्याल्प	'इतजार'
[-न]	-न	मर	मरन	'मौत'
[-क]	-क	बैठ	बैठक	'बैठने का 'कमरा'

प्रातिपादको मे परप्रत्ययो को जोडने से जो रूप-स्वनिमिक परिवर्तन आते हैं, उन्हे रूप स्वन-प्रक्रिया मे दिखाया गया है।

3.2 लिंग-विधान (जेन्डर सिस्टम) –

3 2 1 सामान्य सज्ञापदो के लिंग (जेन्डर सिस्टम ऑफ सिम्पल नाउन्ज)—

मण्डियाली मे लिंग दो प्रकार के होते हैं—(1) पुल्लिग तथा (2) स्त्रीलिंग। सभी सज्ञापदो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँटा गया है—(1) सामान्य-सज्ञापद तथा (2) व्युत्पन्न सज्ञापद। सामान्य सज्ञापदो मे अलग से लिंग परप्रत्यय नही जोडा जाना। सामान्य सज्ञापदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँटा गया है– (1) चेतन सज्ञापद तथा (2) अचेतन सज्ञापद।

चेतन तथा अचेतन सज्ञापदो के निर्णय के लिए हमे वाक्य की सहायता लेनी पडती है। अत: चेतन तथा अचेतन सज्ञापद को वाक्य मे प्रयोग करके उसके लिंग का

निर्णय स्वय हो जाता है । मण्डियाली मे सहायक क्रिया, कर्त्ता के अनुसार अपना रूप बदलती है। इस बात की स्पष्टता के लिए उदाहरण दिए जा सकते है।

उदाहरणार्थ—

(1)	राम जाँह् आँ ।	'राम जाता है ।'
(2)	गीता जाँह् ई ।	'गीता जाती है ।'
(3)	राम गीत गाँह, आँ ।	'राम गाना गाता है ।'
(4)	गीता गीत गाँह ई ।	'गीता गाना गाती है ।'
(5)	राम खरा म्हूठा आ ।	'राम अच्छा लड़का है ।'
(6)	गीता खरी म्हूठी ई ।	'गीता अच्छी लड़की है ।'

उपर्युक्त वाक्यो(1 2 3 4)मे सहायक क्रियाएँ—आँ 'है,' आ—'है', ई—'है' कर्त्ताके लिग के अनुसार बदली हैं, तथा वाक्य (5,6) मे सहायक क्रियाएँ आ—'है', ई—'है' वाक्य के विशेषण तथा कर्त्ता दोनो के अनुमार बदलती हैं । अत उपर्युक्त उदाहरणो के आधार पर कहा जा सकता है कि सहायक क्रियाएँ—आँ, आ—'है' पुल्लिग द्योतक तथा ई, ई—'है' स्त्रीलिग द्योतक हैं । इसी आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि मण्डियाली मे व्यक्तिवाचक सज्ञा पदो को छोडकर 'आकारात' सज्ञापद पुल्लिग तथा 'ईकारात' सज्ञापद स्त्रीलिग होते हैं ।

वास्तव मे मण्डियाली लिग विधान को लेकर इस प्रकार नियम बनाना आसान या तर्क सगत तो नही है, क्योकि इस नियम के अपवाद भी मिलते हैं । अपवादो को लेकर आगे चलकर विचार किया गया है, लेकिन यह नियम अध्ययन सुविधा के लिए स्वीकार किया जा सकता है ।

3 2 1 1 सामान्य सज्ञापद-चेतन वर्ग—

चेतन वर्ग के अन्तर्गत स्वरात तथा व्यजनात दोनो प्रकार के सज्ञापद आते है । इन सज्ञापदो के लिगो का निर्णय वाक्य स्तर पर ही सम्भव है, अन्यथा इनका लिग निर्णय करना कठिन कार्य है—

उदाहरणार्थ—

(1)	अम्माँ आई ।	'माँ आई ।'
(2)	बाब आया ।	'पिता आया ।'
(3)	राम गया ।	'राम गया ।'
(4)	सीता गई ।	'सीता गई ।'
(5)	चमार आया ।	'चमार आया ।'
(6)	चमारी गई ।	'चमारी गई ।'

उपर्युक्त उदाहरणो से स्पष्ट है कि 'आम्माँ' तथा 'सीता' स्त्रीलिग है तथा अन्य सभी—बाब, राम, तथा चमार पुल्लिग हैं । इस बात को उदाहरणो द्वारा अवचेतन वर्ग के अन्तर्गत स्पष्ट किया जायगा---

3 2.1 2. सामान्य संज्ञापद-अचेतन-वर्ग—

अचेतन वर्ग के अन्तर्गत भी स्वरात तथा व्यजनांत दोनो प्रकार के संज्ञापद मिलते हैं। इन सज्ञापदो के लिंगो का निर्णय भी वाक्य स्तर पर ही सम्भव है—

उदाहरणार्थ—

(1)	चमार आ।	'वह चमार है।'
(2)	तेस्सरी जात चमार ई।	'उसकी जाति चमार है।'
(3)	हुवा आई।	'हवा आई।'
(4)	खरा घर आ।	'अच्छा घर है।'
(5)	खरी दुकान ई।	'अच्छी दुकान है।'
(6)	बड्डापाह्ड आ।	'बड़ा पहाड़ है।'
(7)	बड्डी धार ई।	'बड़ी पहाड़ी है।'

उपर्युक्त उदाहरणो मे 'घर' तथा 'पहाड' पुल्लिग है, तथा 'हुवा', (दुकानो तथा 'धार' स्त्रीलिंग सज्ञापद हैं। 'चमार' का प्रयोग पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनो रूप) मे हुआ है।

सामान्य संज्ञापदो का निर्णय वाक्य स्तर पर इसलिए किया जाता है, क्योंकि इन सज्ञापदो मे लिंग द्योतक परप्रत्ययो का प्रयोग नही होता है। दूसरे शब्दो मे ये सज्ञा-पद लिंग पर-प्रत्ययो से व्युत्पन्न नही होते हैं। व्युत्पन्न-सज्ञापद परप्रत्ययो से व्युत्पन्न होते हैं। अत इन सज्ञापदो के लिंगो का निर्णय उनके परप्रत्ययो के आधार पर किया जा सकता है।

3.2 2 व्युत्पादी सज्ञापदो के लिंग (जेण्डर ऑफ डेरीवेटिव नाउन्ज़)—

व्युत्पादी सज्ञापद स्वरात तथा व्यजनांत दोनो प्रकार के मिलते हैं। इन्हें चेतन तथा अचेतन दोनो वर्गों मे बाँटा जा सकता है—

3 2 2 1 व्युत्पादी सज्ञापद-चेतन-वर्ग—

व्युत्पादी-सज्ञापदो मे निम्नाकित प्रकार के लिंग परप्रत्यय जोड़े जाते हैं, जिन्हें तालिकाओ मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

(1) ⎡ पु. -आ ⎤
⎣ स्त्री. -ई ⎦

विशेष—यदि जातियो का प्रयोग संज्ञापद के रूप मे हो, तो ये पुल्लिग हैं, यदि इनका प्रयोग जाति के रूप मे हो, तो ये स्त्रीलिंग हैं। इस बात का निर्णय वाक्य से स्वय हो जाता है।

उदाहरणार्थ—

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
म्हठ्-आ	'लडका'	म्हठ्-ई	'लडकी'
खप्पर-आ	'बूढा'	खप्पर-ई	'बुढिया'
बकर्-आ	'बकरा'	बकर्-ई	'बकरी' आदि।

ईकारात सज्ञापदो के साथ—

$$(2.1)\quad \begin{bmatrix} \text{पु०} & -\phi \\ \text{स्त्री०} & -\text{अण} \end{bmatrix}$$

उदाहरणार्थ—

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
धोब्बी-ϕ	'धोबी'	धोब्बण्	'धोबिन'
जोगीϕ	'योगी'	जोगण्	'योगिन'
तेल्ली-ϕ	'तेली'	तेल्लण्	'तेलिन' आदि।

$$(2\,2)\quad \begin{bmatrix} \text{पु०} & -\phi \\ \text{स्त्री०} & -\text{अन} \end{bmatrix}$$

उदाहरणार्थ—

पुल्लिग		स्तीलिग	
कोढ़ी-ϕ	'कुष्टग्रस्त'	कोढन्	'कुष्टग्रस्त'
कोली-ϕ	'कौली'	कोलन	'कोलिन' आदि।

बन्धुतावाचक व्यंजनांत सज्ञा पदो के साथ—

$$(3)\quad \begin{bmatrix} \text{पु०} & -\phi \\ \text{स्त्री०} & -\text{आणी} \end{bmatrix}$$

उदाहरणार्थ—

पुल्लिग		स्त्रीलिग	
जेठ-ϕ	'जेठ'	जठाणी	'जेठानी'
द्योर्-ϕ	'देवर'	द्राणी	'देवरानी' आदि।

अमानवीय 'र' व्यजनांत सज्ञा पदो के साथ—

$$(4)\quad \begin{bmatrix} \text{पु०} & -\phi \\ \text{स्त्री०} & -\text{नी} \end{bmatrix}$$

उदाहरणार्थ-—

पुंल्लिग		स्त्रीलिंग	
मोर-ϕ	'मोर'	मोरनी	'मोरनी'
सेर्-ϕ	'शेर'	सेर-नी	'शेरनी'
चकोर-ϕ	'चकोर'	चकोर-नी	'चकोर' आदि।

(5) ⌈ पु० -ϕ ⌉
⌊ स्त्री० -ई ⌋

उदाहरणार्थ—

पुंल्लिग		स्त्रीलिंग	
चमार-ϕ	'चमार'	चमार-ई	'चमारी'
ब्राह्मण-ϕ	'ब्राह्मण'	ब्राह्मण-ई	'ब्राह्मण'
झीर-ϕ	'मच्छुआ'	झीर-ई	'मच्छुआ' आदि।

(6) ⌈ पु० -उ/आ ⌉
⌊ स्त्री० -अन ⌋

उदाहरणार्थ—

पुंल्लिग		स्त्रीलिंग	
ग्वाल्-उ	'गवाला'	ग्वाल्न	'गवालिन'
ग्वाल-आ	'गवाला'	'गवाल्न	'गवालिन' आदि।

3.2.2.2 व्युत्पादी-सज्ञापद-अचेतन-वर्ग—

व्युत्पादी अचेनन सज्ञापदो मे निम्नाकित प्रकार के लिंग-परप्रत्यय जोडे जाते हैं, जिन्हे तालिकाओ मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

(1) ⌈ पु० -ϕ ⌉
⌊ स्त्री० -ई ⌋

उदाहरणार्थ—

पुंल्लिग		स्त्रीलिंग	
ढोलक-ϕ	'ढोलक'	ढोलक-ई	'छोटा ढोलक'
बागर-ϕ	'हवा'	बागर-ई	'हवा'
कडछ-ϕ	'बडी कडछी'	कडछ-ई	'छोटी कडछी' आदि।

(2) ⌈ पु० -ϕ ⌉
⌊ स्त्री० -ड़ी ⌋

उदाहरणार्थ

पुल्लिग		स्त्रीलिग	
सन्दूक-ϕ	'सन्दूक'	सन्दूक-डी	'छोटा सन्दूक'
बमूक-ϕ	'बन्दूक'	बमुक-डी	'छोटी बन्दूक' आदि।

स्वरात अचेतन सज्ञापदो के साथ—

(3) ⌈पु॰ -आ⌉
⌊स्त्री॰ -ई⌋

उदाहरणार्थ—

पुल्लिग		स्त्रीलिग	
रस्स-आ	'रस्सा'	रस्स-ई	'रस्सी
झोल-आ	'थैला	झोल्-ई	'थैली'
पत्तील्ल-आ	'पतीला'	पतील्लई	'छोटा पतीला' आदि।

(4) ⌈पु॰ -ऊ/आ⌉
⌊स्त्री॰ -ई⌋

उदाहरणार्थ—

पुल्लिग				स्त्रीलिग	
डब्बर-आ	"	"	"	डब्बर-ई	'बर्तन विशेष'
कटोर-आ	"	"	"	कटोर्-ई	'बर्तन विशेष'
बाट्ट-ऊ	"	"	"	बाट्ट-ई	'बर्तन विशेष' आदि।

(5) ⌈पु॰ -ϕ⌉
⌊स्त्री॰ -णी⌋

उदाहरणार्थ—

पुल्लिग		स्त्रीलिग	
ऊट-ϕ	'ऊँट'	ऊट्-णी	'ऊँटनी'
जट-ϕ	'जाट'	जट्-णी	'जाटनी' आदि।

यहाँ पर 'आकारात' पुल्लिग तथा 'ईकारात' स्त्रीलिग नियम के अपवादो के उदाहरण दिए जा रहे हैं—

(1) 'आकारात' स्त्रीलिग सज्ञापद—

उदाहरणार्थ —

हवा	'हवा'
माला	'माला'
धारां	'पहाड़ियाँ' आदि।

उपर्युक्त उदाहरण इस नियम के अपवाद हैं कि सभी 'आकारांत' संज्ञापद पुल्लिग होते हैं।

(2) ईकारांत पुल्लिग सज्ञापद—

माल्ली	'माली'
तेल्ली	'तेली'
धोब्बी	'धोबी'
पाणी	'पानी'
जोगी	'योगी'
रोग्गी	'रोगी' आदि।

उपर्युक्त उदाहरण इस नियम के अपवाद है कि सभी 'ईकारांत' सज्ञापद स्त्रीलिंग होते हैं।

3 3 वचन-विधान (नम्बर सिस्टम)—

मण्डियाली सज्ञापदो को वचन के आधार पर दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] एक वचन द्योतक संज्ञापद तथा

[2] बहुवचन द्योतक सज्ञापद।

3 3 1 एकवचन द्योतक सज्ञापद—

मण्डियाली मे एकवचन अचिन्हित हैं। अत. एकवचन संज्ञापदो मे परप्रत्यय का प्रयोग नही होता है। इसी कारण एकवचन द्योतक-सज्ञापदो पर विस्तार से विचार नही किया जा रहा है।

3 3 2 बहुवचन द्योतक सज्ञापद—

मण्डियाली बहुवचन द्योतक परप्रत्ययो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] पुल्लिग बहुवचन द्योतक परप्रत्यय तथा

[2] स्त्रीलिंग बहुवचन द्योतक परप्रत्यय।

3 3 2 1 पुल्लिग बहुवचन द्योतक सज्ञापद—

पुल्लिग बहुवचन द्योतक संज्ञा पदो से पुल्लिग बहुवचन परप्रत्ययो को अलग किया जा सकता है। अत पुल्लिग बहुवचन द्योतक सज्ञापद परप्रत्ययो के योग से बनते है। पुल्लिग बहुवचन द्योतक सज्ञापदो को निम्नांकित उपवर्गों मे बाँट सकते हैं—

यदि सज्ञा प्रातिपदिक का अन्त इस प्रकार हो—

1.	-आ
2	-ई
3	-ऊ/उ
4	-ए
5.	-व्यंजनांत

उपर्युक्त तालिका मे दिखाए गए स्वरो तथा व्यजनो से अन्त होने वाले सज्ञा पदो के बहुवचन बनाने वाले परप्रत्ययो पर अलग-अलग से विचार किया जा रहा है—

यदि सज्ञापद 'आकारात' हो—

		एक०	बहु०
[1]	प्रत्यक्ष	-आ	-ए
	तिर्यक्	-ए	-याँ

उदाहरणार्थ—

घोड-आ	घोडा	'घोडा'
म्हठ्-आ	म्हठा	'लडका' आदि ।

		एक०	बहु०
[1 1]	प्रत्यक्ष	-ϕ/आ	-ए
	तिर्यक्	-आ	

उदाहरणार्थ—

बाब-ϕ	बाब	'पिता'
बाब्ब्-आ	बाब्बा	'पिता'

उपर्युक्त उदाहरण इस नियम के अपवाद हैं कि सभी 'आकारांत' संज्ञापद पुल्लिग होते हैं।

(2) ईकारांत पुल्लिग संज्ञापद—

माल्ली	'माली'
तेल्ली	'तेली'
धोब्बी	'धोबी'
पाणी	'पानी'
जोगी	'योगी'
रोग्गी	'रोगी' आदि।

उपर्युक्त उदाहरण इस नियम के अपवाद हैं कि सभी 'ईकारात' संज्ञापद स्त्रीलिग होते हैं।

3 3 वचन-विधान (नम्बर सिस्टम)—

मण्डियाली संज्ञापदो को वचन के आधार पर दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] एक वचन द्योतक संज्ञापद तथा

[2] बहुवचन द्योतक संज्ञापद।

3 3 1 एकवचन द्योतक संज्ञापद—

मण्डियाली मे एकवचन अचिन्हित है। अत. एकवचन संज्ञापदो मे परप्रत्यय का प्रयोग नही होता है। इसी कारण एकवचन द्योतक-संज्ञापदो पर विस्तार से विचार नही किया जा रहा है।

3 3 2 बहुवचन द्योतक संज्ञापद—

मण्डियाली बहुवचन द्योतक परप्रत्ययो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] पुल्लिग बहुवचन द्योतक परप्रत्यय तथा

[2] स्त्रीलिग बहुवचन द्योतक परप्रत्यय।

3 3 2 1 पुल्लिग बहुवचन द्योतक संज्ञापद—

पुल्लिग बहुवचन द्योतक संज्ञा पदो से पुल्लिग बहुवचन परप्रत्ययो को अलग किया जा सकता है। अत पुल्लिग बहुवचन द्योतक संज्ञापद परप्रत्ययो के योग से बनते है। पुल्लिग बहुवचन द्योतक संज्ञापदो को निम्नाकित उपवर्गों मे बाँट सकते हैं—

यदि संज्ञा प्रातिपदिक का अन्त इस प्रकार हो—

1	-आ
2	-ई
3	-ऊ/उ
4	-ए
5.	-व्यंजनांत

उपर्युक्त तालिका मे दिखाए गए स्वरो तथा व्यंजनो से अन्त होने वाले संज्ञा पदो के बहुवचन बनाने वाले परप्रत्ययो पर अलग-अलग से विचार किया जा रहा है—

यदि संज्ञापद 'आकारांत' हो—

		एक०	बहु०
[1]	प्रत्यक्ष	⌈ -आ	-ए ⌉
	तिर्यक्	⌊ -ए	-याँ ⌋

उदाहरणार्थ—

घोड-आ	घोडा	'घोडा'
म्हठ्-आ	म्हठा	'लडका' आदि।

		एक०	बहु०
[1 1]	प्रत्यक्ष	⌈ -ϕ/आ	⌉ -ए
	तिर्यक्	⌊ -आ	⌋

उदाहरणार्थ—

बाब-ϕ	बाब	'पिता
बाब्ब-आ	बाब्बा	'पिता'

तालिका न० [1 1] के लिए यही एकमात्र उदाहरण है। यदि संज्ञा प्राति-पदिक 'ईकारांत' हो—

		एक०	बहु०
[2]	प्रत्यक्ष	-ई	-याँ
	तिर्यक्	-ए	

उदाहरणार्थ—

धोब्ब्-ई	धोब्बी	'धोबी'
तेल्ल-ई	तेल्ली	'तेली' आदि।

यदि संज्ञा प्रातिपदिक 'उ या ऊकारांत' हो—

		एक०	बहु०
[3]	प्रत्यक्ष	-φ	-आँ
	तिर्यक्		

उदाहरणार्थ—

बाट्टू-φ	बाट्टू	'बर्तन विशेष'
सेऊ-φ	सेऊ	'सेब' आदि।

यदि संज्ञा-प्रातिपदिक 'एकारांत' हो—

		एक०	बहु०
[4]	प्रत्यक्ष	-φ	-ए
	तिर्यक्	-ए	-याँ

उदाहरणार्थ—

जुट्टे-φ	जुट्टे	'जूते'

यदि संज्ञा प्रातिपदिक 'व्यंजनांत' हो—

	एक०	बहु०
प्रत्यक्ष	-φ	-आँ
तिर्यंक	-आ	

उदाहरणार्थ—

पैर-φ	पैर	'पाँव'
नाक्-φ	नाक	'नाक' आदि।

3 3.2.2.स्त्रीलिंग बहुवचन द्योतक संज्ञापद—

स्त्रीलिंग बहुवचन द्योतक संज्ञापदो से स्त्रीलिंग बहुवचन परप्रत्ययो को अलग किया जा सकता है। अतः स्त्रीलिंग बहुवचन द्योतक संज्ञापद परप्रत्ययो के योग से बनते हैं।

पुंल्लिग बहुवचन द्योतक संज्ञापदो को निम्नांकित उपवर्गों मे बांट सकते हैं—
यदि संज्ञा प्रातिपदिक का अन्त इस प्रकार हो—

1.	-ई
2.	-आ
3.	-व्यंजनांत [क]
4	-व्यंजनात [ख]
4.1.	-व्यंजनात
4 2	व्यंजनात

उपर्युक्त तालिका मे दिखाए गए स्वरो तथा व्यंजनो से अन्त होने वाले संज्ञा पदो के एकवचन तथा बहुवचन परप्रत्ययो को तालिकाओ मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

यदि संज्ञा प्रातिपदिक 'ईकारांत' हो—

		एक०	बहु०
[1]	प्रत्यक्ष	-ई	-यां
	तिर्यक्	-या	

उदाहरणार्थ—

घोड्-ई	घोडी	'घोडी'	
म्हठ्-ई	म्हठी	'लड़की'	आदि।

यदि संज्ञा प्रातिपदिक 'आकारांत' हो—

		एक०	बहु०
[2.]	प्रत्यक्ष	-आ	-आं
	तिर्यक्		

उदाहरणार्थ—

माल्-आ	मालां	'माला'

यदि संज्ञा प्रातिपदिक व्यंजनात [क] हो [चेतन संज्ञा पद]—

		एक०	बहु०
[3]	प्रत्यक्ष	-ϕ	-इयाँ
	तिर्यक	-ई	

उदाहरणार्थ—

म्हैस-ϕ	म्हैस	'भैंस'
गाय-ϕ	गाएं	'गाय' आदि।

यदि संज्ञा प्रातिपदिक व्यंजनात [ख] हो [अचेतन संज्ञापद]—

		एक०	बहु०
[4.]	प्रत्यक्ष	-ϕ	-आँ
	तिर्यक्	-ई	

उदाहरणार्थ—

बोतल-ϕ	बोतल	'बोतल'
चाद्दर-ϕ	चाद्दर	'चादर' आदि।

		एक०	बहु०
[4.1.]	प्रत्यक्ष	-ϕ	-याँ
	तिर्यक्	-ई	

उदाहरणार्थ—

बेल-ϕ	बेल	'लता'

		एक०	बहु०
[4.2]	प्रत्यक्ष	-ϕ	-आँ
	तिर्यक्	-आ	

उदाहरणार्थ—

जीभ्-ϕ	जीभ	'जीभ'
खाल-ϕ	खाल्	'चमड़े की खाल'
झील-ϕ	झील	'झील' आदि।

विशेष : व्यंजनात [क] वर्ग के अन्तर्गत केवल चेतन संज्ञापदों को लिया गया है व्यंजनांत [ख] वर्ग के अन्तर्गत अचेतन संज्ञापदों को लिया गया है।

3 3 2.1.1. पुल्लिंग बहुवचन परप्रत्यय—

संज्ञापदो मे लगने वाले बहुवचन परप्रत्ययों या विभक्ति-रूपो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

	प्रत्यक्ष एक०	तिर्यक् एक०	प्रत्यक्ष बहु०	तिर्यक् बहु०
1	-आ	-ए	-ए	-यों
1 1	-ϕ/आ	-आ	-ए	-ए
2	-ई	-ए	-यॉं	-यों
3	ϕ	-ϕ	-ऑं	-ओं
4	ϕ	-ए	-ए	-यों
5.	ϕ	-आ	-ऑं	-ओं

3 3 2.2.1. स्त्रीलिंग बहुवचन परप्रत्यय—

सज्ञा पदो मे लगने वाले बहुवचन परप्रत्ययो या विभक्ति रूपो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

	प्रत्यक्ष एक०	तिर्यक् एक०	प्रत्यक्ष बहु०	तिर्यक् बहु०
1	-ई	-या	-यॉं	-यों
2.	-आ	-आ	-ऑं	-ओं
3	ϕ	-ई	-इयॉं	-इयों
4	ϕ	-ई	-ऑं	-ओं
4 1	ϕ	-ई	-इयॉं	-इयों
4.2.	ϕ	-आ	-ऑं	-ओं

मण्डियाली मे वास्तव मे लिंग तथा वचन को लेकर कोई नियम बनाना असभव तो नही है, मगर विवादास्पद अवश्य है। मण्डियाली लिंग विधान तथा वचन विधान को लेकर सुविधा के लिए जे० आर० फर्थ की निम्नांकित पक्तियो को नियम रूप मे स्वीकार करना तर्क-सगत प्रतीत होता है—

'सामान्य वाक् मे 'आ' अन्त्य स्थिति मे पुल्लिंग, 'ई' स्त्रीलिंग तथा 'ए' बहु-वचन का चिन्ह है।'[1]

1. 'In normal speech a in final position is the sign of nasculine. i the feminine and e the plural'

J. R. Firth papers in Linguistics 1934-1951 P. 50

अत मण्डियाली लिंग तथा वचन विधान को लेकर यदि कोई नियम बनाना ही हो तो जे० आर० फर्थ का उपर्युक्त नियम ही स्वीकार किया जा सकता है।

3.4 कारक चिह्न [परसर्ग] [पोस्ट पोजीसन्ज]—

मण्डियाली के कारक चिह्न—'ने, जो, थे, मझ≈अन्दर' पर तथा रा [रा, रे]—वाक्य मे प्रयुक्त पदो के व्याकरणिक सम्बन्धो को व्यक्त करते हैं। कारक-चिह्नो का प्रयोग हमेशा सज्ञा या सर्वनाम-पद के पश्चात् होता है। कारक के चिन्हो के सज्ञा या सर्वनाम के पश्चात् आने से उनके [सज्ञा या सर्वनाम के] तिर्यक् रूप बनते हैं। मण्डियाली के कारक-चिह्न या परसर्ग निम्नाकित हैं—

3 4.1 कर्तृवाचक [अजेन्टिव]—

कर्तृवाचक कारक चिह्न या परसर्ग [-ने] है। इसके उपरूप इस प्रकार हैं, जिनका प्रयोग निम्नाकित स्थितियो मे होता है—

[-ने]

०० -एँ, ०० -ϕ, ०० -हे, ०० -ए, ०० -ने।

[1] ०० -एँ, उत्तम तथा मध्यम पुरुष, एकवचन सर्वनाम के साथ पूर्णपक्ष मे आता है—

उदाहरणार्थ—

म्-एँ गीत सुण्या	'मैंने गाना सुना।'
त्-एँ पाणी पित्ता	'तूने पानी पिया।'

[2] ०० -ϕ, उत्तम तथा मध्यम पुरुष, बहुवचन सर्वनाम तथा निश्चयवाचक एकवचन स्त्रीलिंग सर्वनाम के साथ आता है।

उदाहरणार्थ—

आस्से-ϕ काम कित्ता	'हमने काम किया।'
एस्से ϕ गीत गाया	'इसने गाना गाया।' [स्त्री०]
तेस्से-ϕ दाल दली	'उसने दाल दली।' [स्त्री०]

[3] ०० -हें, अन्य बहुवचन सर्वनामो के साथ आता है।

उदाहरणार्थ—

इन्-हे फूल तोड़े	'इन्होने फूल तोड़े।'
तिन-हे गीत गाया	'उन्होने गाना गाया।'
केले किन्-हे खाद्दे	'केले किन्होने खाए?'

[4] ०० -ए, अन्य सभी चेतन-मानव तथा अमानव सज्ञा पदो के साथ आता है।

उदाहरणार्थ—

म्हैसि-ए घाह् खाद्दा	'भैंस ने घास खाई।'
नरेस्-ए कताब पढ़ी	'नरेश ने पुस्तक पढ़ी।'
गीत्-ए रोट्टी पकाई	'गीता ने रोटी पकाई।'

[5] ००-ने, अन्य सभी एकवचन सर्वनामो के साथ आता है।

उदाहरणार्थ—

इन्-ने डाल काट्या	'इसने पेड काटा।'
तिन्-ने कताब मांग्गी	'उसने पुस्तक मांगी।'
किन्-ने साद्या	'किसने बुलाया ?'

3 4 2 कर्मकारक [एक्यूजेटिव]—

क्रिया का प्रभाव या फल जिस पर पड़े, इस प्रभाव या फल को व्यक्त करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के पश्चात् जो कारक-चिह्न प्रयुक्त होता है, कर्मकारक कहलाता है। कर्मकारक-चिह्न या परसर्ग (-जो) है। इसके उपरूप इस प्रकार हैं, जिनका प्रयोग निम्नांकित-स्थितियो मे होता है—

(-जो)

००-ϕ, ००-जो≈ओ।

[1] ००-ϕ, अचेतन संज्ञा पदो के पश्चात् आता है।

उदाहरणार्थ—

मैं रोट्टी-ϕ खाद्दी	'मैंने रोटी खाई।'
तिन्हे पात्थर-ϕ सट्टे	'उन्होने पत्थर फैंके।'
तेस्से रोट्टी ϕ पकाई	'उसने रोटी पकाई।' [स्त्री०]

[2] ००-जो≈ओ, अन्य सभी, स्थितियो मे यह आता है।

उदाहरणार्थ—

सीता-जोसोख लग्या	'सीता को प्यास लगी।'
बहल्दा-जो घाह् द्यो	'बैल को घास दो।'
मां स्वारा-जो आउणा	'मै सोमवार को आऊँगा।'

3 4 3 करणकारक [इन्सट्रूमेंटल]

क्रिया के साधन के साथ आने वाला कारक चिह्न करणकारक कहलाता है। मण्डियाली मे करणकारक चिह्न (-कने≈ने) है, जिसका प्रयोग निम्नांकित स्थितियो मे होता है—

(-कने≈ने)

००-ϕ, ००-कने≈ने।

[1] ०-ϕ, यह पूर्ण-पक्ष मे आता है।

कान्ना-ϕ सुणिरी गल थी	'कानो [से] सुनी बात थी।'

विशेष—कर्तृवाचक कारक चिह्न या परसर्ग (-ने) के साथ वह दीर्घ-व्यंजन अर्थात् (न्ने) बन भी सकता है तथा नही भी।

ह्रात्थे-ϕ कितिरा काम	'ह्राथो [से] किया काम ।'
से भुक्खा-ϕ मर्‍या	'वह भूखा [भूख से] मरा ।'

[2] ००-ने≈कने, अन्य सभी स्थितियो मे आता है ।

उदाहरणार्थ—

आम्ब चाक्कू-कने काट्टा	'आम को चाकू से काटो ।'
कल्मा-कने लिख्या	'कलम से लिखा ।'
पच्छी पात्थरा-कने मार्‍या	'पक्षी पत्थर से मारा ।'

3 4 4 सम्प्रदानकारक [डैटिव]—

वह कारक चिह्न जिमसे यह स्पष्ट हो कि क्रिया किसके लिए की जा रही है, सम्प्रदानकारक चिह्न या परसर्ग कहलाता है । कर्मकारक तथा सम्प्रदानकारक चिह्न या परसर्ग समान हैं । दोनो ही कारको का परसर्ग (-जो≈ओ) है । सम्प्रदान के लिए (-कठे) 'के लिए, के वास्ते,' का प्रयोग भी होता है । इनका प्रयोग निम्नांकित स्थितियो मे होता है ।

(-जो)

००-जो≈ओ, ००-कठे ।

[1] ००-जो≈ओ का प्रयोग सभी स्थितियो मे होता है ।

उदाहरणार्थ—

मैं राम्मा-जो दान दित्ता	'मैंने राम को दान दिया ।'
मैं गीता-जो मरूद भेज्जे	'मैने गीता को अमरूद भेजे ।'

[2] ००-कठे, का प्रयोग सभी स्थितियो मे होता है ।

उदाहरणार्थ—

मदरा-कठे दान द्यो	'मन्दिर के लिए दान दो ।'
स्याम्मा-कठे कताब दित्ती	'श्याम के लिए किताब भेजी ।'
सीता-कठे कपडे भेज्जे ।	'सीता के लिए कपडे भेजे ।'

3 4 5 अपादानकारक [आब्लेटिव]—

वह कारक चिह्न या परसर्ग जो यह स्पष्ट करे कि क्रिया किस वस्तु या व्यक्ति से दूर या अलग हो रही है, अपादानकारक चिह्न या परसर्ग कहलाता है । मण्डियाली मे अपादानकारक चिह्न या परसर्ग (-थे) है । इस परसर्ग के लिए (-ते) का प्रयोग भी मिलता है । अपादानकारक परसर्ग का प्रयोग निम्नांकित स्थितियो मे होता है—

(-थे)

००-थे≈ते

[1] ००-थे, का प्रयोग सभी स्थितियो मे मिलता है ।

उदाहरणार्थ—

डाला-थे पात्तर पए	'पेड़ से पत्ते गिरे।'
राम घोड़े-थे पया	'राम घोड़े से गिरा।'
से घरा-थे चली गया	'वह घर से चला गया।'

3 4.6 **अधिकरणकारक [लोकेटिव]**—

वह कारक चिह्न या परसर्ग जो क्रिया का आधार सूचित करे, अधिकरणकारक कहलाता है। अधिकरणकारक चिह्न या परसर्ग (-अन्दर) तथा (-पर) हैं। इनका प्रयोग निम्नांकित स्थितियो मे होता है—

(-अन्दर)

००-अन्दर, ००-मझा, ००-पर, ००-ϕ

[1] ००-अन्दर, का प्रयोग मुख्य रूप से घर तथा कमरे के लिए होता है।

उदाहरणार्थ—

हाऊँ घरा-अन्दर बैठिरा	'मैं घर के अन्दर बैठा हूँ।'
कुर्सी कमरे-अन्दर ई	'कुर्सी कमरे के अन्दर है।'
घरा-अन्दर कीडा आ	'घर के अन्दर सांप है।'

[2] ००-मझा, अन्य सभी स्थानो पर प्रयुक्त होता है।

उदाहरणार्थ—

कपड़े ट्रक्का-मझा ए	'कपड़े ट्रक मे हैं।'
घर एक्की साल्ला-मझा बण्या	'घर एक वर्ष मे बना।'
मेरा घर ग्रावाँ-मझा आ	'मेरा घर गांव मे है।'

[3] ००-पर, सभी स्थितियो मे प्रयुक्त होता है।

उदाहरणार्थ—

कताब मेज्जा पर ई	'पुस्तक मेज पर है।'
राम मांज्जे-पर बैठिरा	'राम चारपाई पर बैठा है।'
हाऊँ मेज्जा पर बैठ्या	'मैं मेज पर बैठा।'

[4] ००-ϕ यदि कारक की संज्ञा का प्रयोग दो बार हो तो—

उदाहरणार्थ—

हाऊँ घरा-घराϕघुम्या	'मैं घर-घर घूमा।'
से बणाϕबणा-फिर्या	'वह वन-वन फिरा।'

विशेष—अन्य सभी स्थानो पर (-'अन्दर$\approx$मझा') मुक्त-वितरण [फ्री-वेरीऐशन] मे हैं।

3 4.7 सम्बन्धवाचक [जैन्टिव]—

वह कारक चिह्न या परसर्ग जो क्रिया से भिन्न शब्द के साथ सम्बन्ध सूचित करे, सम्बन्धकारक कहलाता है। सम्बन्धकारक चिह्न या परसर्ग (-र-) है, जिसमे विभिन्न स्थितियो मे लिंग, वचन द्योतक पर-प्रत्यय जोडे जाते हैं।
[वास्तव मे यह कारक नही माना जाता है।]

(-र-) मे निम्नांकित स्थितियो मे लिंग, वचन द्योतक परप्रत्यय जोडे जाते हैं—

(-र-)
००-र-

[1] ००-र-, यदि सज्ञा, पुल्लिग एकवचन हो तो (-र-) मे (-आ) पर-प्रत्यय जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

मोह्‌णा र-आ भाई	'मोहन का भाई।'
दास्सा र-आ दोस्त	'दास का दोस्त।'
राम्मा र-आ म्हठा	'राम का लडका।'

[2] यदि सज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन या बहुवचन हो तो (-र) मे (-ई-) पर-प्रत्यय जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

राम्मा र-ई बैंह्‌ण	'राम की बहिन।'
राम्मा-र-ई बैंह्‌णां	'राम की बहिनें।'
राज्जे र्‌-ई म्हठियां।	'राजा की लडकियां।'

[3] यदि सज्ञा, पुल्लिग बहुवचन हो तो (-र-) मे (-ए) पर-प्रत्यय जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

सोह्‌णा र्‌-ए कपडे	'सोहन के कपडे।'
मीरा र्‌-ए घोडे	'मीरा के घोडे।'
घरा र्‌-ए द्‌वार	'घर के दरवाजे।'

3 4 8 सहवाचक [सोसिएटिव]—

सहवाचक परसर्ग मे सहयोग या साथ की भावना रहती है। यह कारक नही मगर परसर्ग है। सहवाचक के लिए मण्डियाली मे दो अलग-अलग परसर्ग है—(-साउगी) तथा (-कने)। इनका प्रयोग सभी स्थितियो मे होता है।

[1] (-साउगी)	'के साथ'
हाऊँ मोह्‌णा-साउगी आया	'मैं मोहन के साथ आया।'
कुत्ता, मांह्‌-साउगी था	'कुत्ता मेरे साथ था।'
मीरा, नरेस्सा साउगी गई	'मीरा नरेश के साथ गई।' आदि।

[2] ००-कने का प्रयोग निम्नांकित स्थितियो मे होता है—

दाल-कने भात — 'दाल के साथ चावल ।'

पात्थरा-कने रेत — 'पत्थर के साथ रेत ।'

3 4 9 **प्रयोजनवाचक [परपोजिव] –**

प्रयोजनवाचक परसर्ग मे प्रयोजन या उद्देश्य का भाव रहना है अर्थात् किस-लिए या किसके लिए का भाव विद्यमान रहना है। मण्डियाली मे प्रयोजनवाचक परसर्ग (-कठे) लिए है । इसका प्रयोग निम्नांकित स्थितियो मे होता है ।

(-कठे) — 'के लिए'

००-कठे

[1] ००-कठे, सम्बन्धवाचक परप्रत्यय के साथ बहुवचन परप्रत्यय (-ए) के पश्चात् आता है ।

उदाहरणार्थ—

मेर-ए कठे — 'मरे लिए ।'

तेस्सर-ए कठे — 'उसके लिए ।' आदि ।

अनेक बार (-कठे परसर्ग का प्रयोग सज्ञा तथा सर्वनाम पद के पश्चात् भी होता है ।

उदाहरणार्थ —

राम्मा-कठे — 'राम के लिए ।'

गीता-कठे — 'गीता के लिए ।'

आस्सा-कठे — 'हम्हारे लिए ।'

तुस्सा-कठे — 'तुमारे लिए ।'

किन्हां-कठे — 'किनके लिए ?' आदि ।

3 5 **सर्वनाम-पद [प्रोनाउन्ज]—**

मण्डियाली सर्वनाम पदो को मुख्य रूप से निम्नांकित वर्गों मे बांट सकते है—

[1] पुरुषवाचक-सर्वनान-पद

[2] निश्चयवाचक सर्वनाम-पद

[3] अनिश्चयवाचक सर्वनाम-पद

[4] निजवाचक सर्वनाम-पद

[5] सम्बन्धवाचक सर्वनाम-पद

[6] प्रश्नवाचक सर्वनाम-पद

विशेष – सहवाचक परसर्ग (-साउगी) तथा (-कने≈कन्ने) मण्डियाली मे मुक्त-वितरण [फ्री वेरीऐशन] मे है । अत परसर्ग (साउगी) का प्रयोग सजीव के साथ होता है तथा (-कने≈कन्ने) का प्रयोग निर्जीव के साथ होता है ।

3.5 1. पुरुषवाचक सर्वनाम-पद [परसनल प्रोनाउन्ज]—

मण्डियाली मे पुरुषवाचक सर्वनाम पद निम्नांकित वर्गों मे बाँटे जा सकते हैं—

[1] उत्तम पुरुष

[2] मध्यम पुरुष तथा

[3] अन्य पुरुष।

पुरुषवाचक सर्वनामपदो के सभी रूपो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग

पुरुष	एकवचन	परवर्ती परप्रत्यय	बहुवचन सिद्धरूप
उ० पुरुष	हाऊँ/माँ	-सा	आस्सा
म० पुरुष	तू~तूँ	-सा	तुस्सा
अ० पुरुष	से	-यो	स्यो

3 5 1 1 उत्तम पुरुष एकवचन—

(हाऊँ/माँ)

००म—, ००मज्—, ००माह्—, ००मे—, ००हाऊँ/माँ ।

[1] ००म—कर्तृवाचक, पूर्ण पक्ष मे प्रयुक्त होता है तथा कर्तृवाचक परप्रत्यय (-ऐं) से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

म्-ऐं काम कित्ता — मैंने काम किया।'

म्-ऐं कीड़ा मार्‌या — 'मैंने साँप मारा।' आदि।

[2] ००मज्—कर्मकारक तथा सम्प्रदानकारक मे प्रयोग होता है, तथा (-जो) परसर्ग से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

मज्-जो रोट्टी बणाओ — 'मुझे रोटी बनाओ।'

मज्-जो साद्दा — 'मुझे बुलाओ।' आदि।

विशेष—परवर्ती पर-प्रत्यय '-सा' का प्रयोग जब स्वर के पश्चात् होता है तो 'स' दीर्घ अर्थात् 'स्स' हो जाता है। जैसा कि उत्तम तथा मध्यम पुरुषो के बहुवचन रूपो मे है।

[3] ००म ह्—सभी परसर्गों से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

माह्-थे नी हुंद्दा	'मुझसे नही होता।'
माह्-कने चल	'मेरे साथ चल।'
माह्-साउगी आओ	'मेरे साथ आओ।' आदि।

[4] ००मे – सम्बन्धकारक परसर्ग (-र) से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ —

मे-र्-आ म्हठा	'मेरा लडका।'
मे-र्-ई म्हठी	'मरी लडकी।'
मे-र्-ए म्हठे	'मेरे लडके।' आदि।

[5] ००हाऊँ— का प्रयोग पूर्ण पक्ष मे होता है।

उदाहरणार्थ —

हाऊँ गया	'मैं गया।'
हाऊँ बैठ्या	'मै बैठा।'
हाऊँ आया	'मै आया।'

[5 1] ००माँ—का प्रयोग अपूर्ण-पक्ष मे होता है।

उदाहरणार्थ—

माँ काम करना	'मुझे काम करना।'
माँ घरा जाणा	'मै घर जाऊँगा।'
माँ एत्थी बैठणा	'मै यहाँ बैठूंगा।' आदि।

3 5 1 1 1 **प्रथम पुरुष बहुवचन—**

(आस्मा)

००आस्से, ००आस्सा।

[1] ००आस्से-कर्तृवाचक बहुवचन के साथ सज्ञापद से पूर्व पूर्ण-पक्ष मे आता है।

उदाहरणार्थ—

आस्से-ϕ रोट्टी खाद्दी	'हमने रोटी खाई।'
आस्से-ϕ काम कित्ता	'हमने काम किया।'
आस्से-ϕ पाणी पित्ता	'हमने पानी पिया।' आदि।

[2] ००आस्सा—अन्य सभी स्थानो पर इसका प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ—

आस्सा जाणा	'हमे जाना है।'

विशेष—००माह्—का प्रयोग कर्मकारक, सम्प्रदानकारक तथा सम्बन्ध-वाचक से पूर्व नही होता है।

आस्सा-रा घर	'हमारा घर ।'
आस्सा-पर	'हम पर ।' आदि

3.5.1 2. **मध्यम पुरुष एकवचन—**

(तू≈तूं)

००त-, ००तुज-, ००तुह्-, ००ते-, ००तुद्ध-, ००तू≈तूं ।

[1] ००त—कर्तृवाचक परप्रत्यय (-एँ) से पूर्व पूर्ण-पक्ष मे आता है ।

उदाहरणार्थ—

त्-एँ काम कित्ता	'तूने काम किया ।'
त्-ऐ बोल्या था	'तूने कहा था ।' आदि ।

[2] ००तुज्—कर्मकारक तथा सम्प्रदानकारक परसर्ग(-जो) से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

तुज्-जो काम चाहिए	'तुझे काम चाहिए ।'
तुज्-जो क्या चाहिए	'तुझे क्या चाहिए ।'
तुज्-जो बोल्या	'तुझे कहा ।' आदि ।

[3] ००तुह् —करणकारक, अपादानकारक (-थे) तथा सहवाचक परसर्ग (साउगी) से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

तुह्-थे नी हूणाँ	'तुझ से नही होगा ।'
तुह्-साउगी जाणा	'तेरे साथ जाना है ।'
तुह्-कने आउंणा	'तेरे साथ आना है ।' आदि ।

[4] ००ते—सम्बन्धवाचक परसर्ग (-र-) से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

ते-र्आ घर था	'तेरा घर था ।'
ते-र्ई कताब मिली	'तेरी पुस्तक मिली ।'
ते-र्-ए भाई आए	'तेरे भाई आए ।' आदि ।

[5] ००तुद्ध—पूर्ण-पक्ष मे प्रयुक्त होता है ।

उदाहरणार्थ—

तुद्ध नी आउणा	'तू नही आएगा ।'
तुद्ध घरा जाणा	'तू घर जाएगा ।'
तुद्ध बैठणा	'तुझे बैठना है ।' आदि ।

[6] ००तू≈तूं का प्रयोग अन्य स्थानो पर होता है ।

उदाहरणार्थ—

तू काम कर	'तू काम कर ।'
तू रोट्टी खा	'तू रोटी खा ।'
तू एत्थी बैठ	'तू यहाँ बैठ ।' आदि ।

3 5 1 2 1. **मध्यम पुरुष बहुवचन—**

(—तुस्सा)

००तुस्से, ००तुस्सा ।

[1] ००तुस्से —कर्तृवाचक मे प्रयुक्त होता है, तथा पूर्ण-पक्ष मे ।

उदाहरणार्थ —

तुस्से-काम कित्ता	'तुमने काम किया ।'
तुस्से पाणी पित्ता	'तुमने पानी पिया ।'
तुस्से घरा गए	'तुम घर गए । आदि ।

[2] ००तुस्सा—अन्य सभी स्थितियो मे यह प्रयुक्त होता है ।

उदाहरणार्थ—

तुस्सा-थे हुंग्गा	'तुमसे होगा ।'
तुस्सा-जा बोल्या	'तुम्हे कहा ।'
तुस्सा-रा भाई	'तुम्हारा भाई ।'
तुस्सा-मझा बी कसर ई	'तुम मे भी कमी है ।' आदि ।

3 5 1 3 **अन्य पुरुष एकवचन पुंल्लिग—**

(से)

००तिन्, ००तेस्स-, ००से ।

[1] ००तिन् —कर्तृकारक परसर्ग (-ने) से पूर्व तथा पूर्ण पक्ष मे आता है ।

उदाहरणार्थ —

तिन्-ने काम किता	'उसने काम किया ।'
तिन्-ने गाणा गाया	'उसने गाना गाया ।' आदि ।

[2] ००तेस्स—कर्तृवाचक को छोडकर अन्य सभी कारक परसर्गों के साथ आता है ।

उदाहरणार्थ—

तेस्स-जो जाणे देया	'उसको जाने दो ।'
तेस्स-थे बुलावा	'उससे बुलाओ ।'
तेस्स-रा काम करना	'उसका काम करना है ।'
तेस्स-मझा पाया	'उसमे डाला ।'
तेस्स-साउगी जाणा	'उसके साथ जाना है ।' आदि ।

[3] ००से—अन्य स्थितियो मे प्रयुक्त होता है ।

उदाहरणार्थ—

से बैठ्या	'वह बैठा ।'
से आया	'वह आया ।'
से आउंगा	'वह आएगा ।' आदि ।

3 5 1 3 1 अन्य पुरुष एकवचन स्त्रीलिंग—

(से)

००तेस्स-, ००तेस्सा-, ००से-

[1] ००तेस्स—कर्तृवाचक परसर्ग (-ए) से पूर्व आता है, तथा पूर्ण पक्ष मे आता है। उदाहरणार्थ—

तेस्मे बोल्या	'उसने कहा ' (स्त्री०)
तेस्से सुण्या	'उसने सुना ।' (स्त्री०) आदि ।

[2] ००तेस्सा—अन्य सभी कारक परसर्गों से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

तेस्से-जो साद्दा	'उसको बुलाओ ।' (स्त्री०)
तेस्सा-थे सुण्या	'उससे सुना ।' (स्त्री०)
तेस्सा-साउगी जाणा	'उसके साथ जाना है ।' (स्त्री०) आदि ।

[3] ००से—अन्य सभी स्थितियो मे प्रयुक्त होता है ।

उदाहरणार्थ —

से बैट्ठी	'वह बैठी ।' (स्त्री०)
से गई	'वह गई ।' (स्त्री०)
से चली	'वह चली ।' (स्त्री०) आदि ।

3 5 1 3 2 अन्य पुरुष बहुवचन पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग—

(स्यो)

००तिन-, ००स्यो ।

[1] ००तिन्—अन्य पुरुष बहुवचन द्योतक पर प्रत्यय (-हे) तथा (-हाँ) से पूर्व आता है । इस प्रकार बहुवचन सर्वनाम पद का प्रयोग कारक परसर्गों से पूर्व होता है ।

उदाहरणार्थ—

तिन्-हे-कित्ता	'उन्होने किया ।'	[पु०/स्त्री०]
तिन्-हाँ-ते हुँग्गा	'उनसे होगा ।'	[पु०/स्त्री०]
तिन्-हाँ रा घर	'उनका घर ।'	[पु०/स्त्री०] आदि।

[2] ००स्यो—अन्य सभी स्थितियो मे प्रयुक्त होता है ।

उदाहरणार्थ—

स्यो आइरे	'वे आए हैं ।'	[पु०]
स्यो आइरी	'वे आई हैं ।'	[स्त्री०]
स्यो बैट्ठे	'वे बैठे ।'	[पु०] आदि ।

3 5 2 **निश्चयवाचक सर्वनाम [डैमोन्स्ट्रेटिव प्रोनाउन्ज]—**

मण्डिआली मे निश्चयवाचक सर्वनाम-पदो को अन्य पुरुष सर्वनाम-पदो की तरह ही पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनो वर्गों मे बाँटा जा सकता है । इसी प्रकार उन्हे वचन के आधार पर एकवचन तथा बहुवचन दोनो वचनो मे बाँटा जा सकता है ।

3 5 2 1 **निश्चयवाचक एकवचन पुल्लिग [निकटवर्ती]—**

(ए)

००इन्-, ००एस्स-, ००ए-

[1] ००इन—कर्तृवाचक परसर्ग (-ने) से पूर्व पूर्ण-पक्ष तथा भविष्यत् काल मे आता है ।

उदाहरणार्थ—

इन्-ने बोल्या	'इसने कहा ।'
इन-ने किता हुँगा	'इसने किया होगा ।'
इन् ने बोल्या हूणाँ	'इसने कहा होगा ।' आदि ।

[2] ००एस्स—अन्य सभी कारक परसर्गों से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

एस्स-जो करने देयो	'इसको करने दो ।'
एस्स-थे माँगगा	'इससे माँगो ।'
एस्स-मझा भर्या	'इसमे भरा ।' आदि ।

[3] ००ए— अन्य सभी स्थितियो मे आता है ।

उदाहरणार्थ —

ए गया था	'यह गया था ।'
ए बैठ्या	'यह बैठा ।'
ए चलगा	'यह चलेगा ।' आदि ।

3 5 2 2 **निश्चयवाचक एकवचन स्त्रीलिंग [निकटवर्ती]—**

(ए)

००एस्से-, ००एस्सा-, ००ए-

[1] ००एस्से —कर्तृवाचक परसर्ग (-ने) से पूर्व, पूर्ण पक्ष तथा भविष्यत् काल मे आता है ।

उदाहरणार्थ—

एस्से काम किता	'इसने काम किया ।'
एस्से खाद्दा हुँगा	'इसने खाया होगा ।'
एस्से बोल्या	'इसने कहा ।' आदि ।

[2] ००एस्सा—अन्य कारक परसर्गों से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

एस्सा-जां सादृदा	'इसको बुलाओ ।' स्त्री०

एस्सा-रा म्हृठा 'इसका लडका ।'

एस्मा-मझा कसर ई 'इसमे कमी है ।' आदि ।

[3] ००ए—अन्य सभी स्थितियो मे आता है ।

उदाहरणार्थ—

ए म्हृठी आई थी 'यह लडकी आई थी ।'

ए बैट्ठी हुंगी 'यह बैठी होगी ।'

ए चली पई 'यह चल पडी ।' आदि ।

3 5 2 3 निश्चयवाचक बहुवचन पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग—

(यो)

००इन-, ००यो

[1] ०.इन—कर्तृकारक के साथ बहुवचन परप्रत्यय(-हे) तथा अन्य कारक परसर्गों से पूर्व बहुवचन पर प्रत्यय (-हाँ) से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

इन्-हे रोट्टी खाद्दी 'इन्होने रोटी खाई ।' [पु०/स्त्री०]

इन्-हे पाणी पित्ता 'इन्होने पानी पिया ।' [पु०/स्त्री०]

इन्-हाँ-जो जाणं देवा 'इनको जाने दो ।' [पु०/स्त्री०]

इन्-हाँ-रे भाण्डे 'इनके बर्तन ।' [पु०/स्त्री०] आदि ।

[2] ००यो —अन्य सभी स्थितियो मे प्रयुक्त होता है ।

उदाहरणार्थ—

यो बैट्टे थे 'ये बैठे थे ।' [पु०]

यो बैट्ठी थी । 'ये बैठी थी ।' [स्त्री०] आदि ।

3 5 2 1 1 निश्चयवाचक सर्वनाम पद [दूरवर्ती]—

(से)

००स्यो

निश्चयवाचक सर्वनाम पद [दूरवर्ती] (-से) 'वह', (स्यो) 'वे' अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम पद के समान ही होते हैं । अत इन्हे लेकर अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम पद के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है । यहाँ पर इन्हे लेकर विचार नही किया जा रहा है ।

3 5 3 अनिश्चयवाचक सर्वनाम पद [इन्डेफिनिट प्रोनाउन्ज]—

अनिश्चयवाचक सर्वनाम पदो को लिंग के आधार पर दो वर्गों मे बाँटा जा सकता

विशेष—निश्चयवाचक एकवचन पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग के सर्वनाम पद (ए)के लिए (ये) भी उच्चरित होता है । इसी के तिर्यक् रूप 'एस्से' के लिए 'इस्से' भी उच्चरित होता है ।

है—[1] अनिश्चयवाचक पुल्लिग सर्वनाम पद तथा [2] अनिश्चयवाचक स्त्रीलिंग सर्वनाम पद। अनिश्चयवाचक सर्वनाम पदो मे वचन को लेकर कोई भेद नही है। बहु-वचन के लिए भी यही रूप प्रयुक्त होते हैं।

3 5 3 1 **अनिश्चयवाचक पुल्लिग सर्वनाम पद—**

(कोई)

००किन्-००केस्सी-, ००कोई।

[1] ००किन्—कर्तृवाचक परसर्ग (-ने) से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

किन्-ने बोल्या	'कसने कहा ?'
किन्-ने दित्ता	'किसने दिया ?'
किन्-ने बोल्या हुंग्गा	'किसने बोला होगा।' आदि।

[2] ००केस्सी—अन्य सभी कारक-परसर्गों से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

केस्सी-जो साद्दा	'किसी को बुलाओ।'
केस्सी-थे सदाओ	'किसी से बुलाओ।'
केस्सी-मन्नाता हुंग्गा	'किसी मे तो होगा।' आदि।

[3] ००कोई—अन्य स्थितियो मे प्रयुक्त होता है।

उदाहरणार्थ—

कोई बैठ्या था	'कोई बैठा था ?'
कोई गया	'कोई गया।'
कोई पया	'कोई गिरा।' आदि।

3 5 3 2 **अनिश्चयवाचक एकवचन स्त्रीलिंग सर्वनाम पद—**

[1] (कोई)

००केस्से-, ००केस्सा-, ००कोई।

[1] ००केस्से—कर्तृवाचक परसर्ग (-ने) से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

केस्से कित्ता	'किसने किया ?'
केस्से दित्ता हुंग्गा	'किसने दिया होगा।'
केस्से बोल्या	'किसने कहा ?' आदि।

[2] ००केस्सी—अन्य सभी कारक परसर्गों तथा अन्य परसर्गों के साथ आता है।

उदाहरणार्थ—

केस्सी-जो बोल्लूं	'किसी को कहूं।'
केस्सी थे पुच्छूं	'किसी से पूछूं।'
केस्सी-रा म्हठा आया	'किसी का लडका आया।' आदि।

[3] ००कोई—अन्य स्थितियो मे इसका प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ—

कोई बैट्ठी थी	'कोई बैठी थी।'
कोई आउँदा लगिरा था	'कोई आ रहा था।' आदि।

[2] (किच्छ)

मण्डियाली मे अनिश्चयवाचक सर्वनाम पद दो हैं।

[1] (कोई) जिस पर विचार किया जा चुका है तथा

[2] (किच्छ) 'कुछ'। इन दोनो के प्रयोग मे अन्तर को कामता प्रसाद गुरु के शब्दो द्वारा अधिक स्पष्ट किया जा सकता है—

'कोई' और 'कुछ' मे साधारण अन्तर यह है कि 'कोई' पुरुष के लिए और कुछ' पदार्थ वा धर्म के लिए आता है।'[1]

यही बात डॉ० आर्येन्द्र शर्मा कहते हैं—'कोई' पुरुष के लिए तथा 'कुछ' चीज के लिए आता है।'[2]

मण्डियाली मे 'कोई' पुरुष के लिए आता है तथा 'किच्छ'—'कुछ' अमानव तथा पदार्थ व चीजो के लिए आता है।

मण्डियाली मे 'किच्छ' अपना रूप नही बदलता यह एकवचन तथा बहुवचन और पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के लिए समान रूप से प्रयुक्त होता है।

उदाहरणार्थ—

किच्छ आया	'कुछ आया।' [अमानवीय]
किच्छ हुआ	'कुछ हुआ।'
किच्छ पया	'कुछ गिरा।' [अमानवीय]

ऐसा नही है कि 'किच्छ'—'कुछ' का प्रयोग केवल अमानवीय चीजो व पदार्थों के लिए ही होता है। इसका प्रयोग पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग बहुवचन के लिए इस प्रकार होता है—

किच्छ आदमी आए	'कुछ आदमी आए।'
किच्छ म्हूठियाँ गई	'कुछ लडकियाँ गई।'
किच्छ म्हूठे गए	'कुछ लडके गए।' आदि।

उपर्युक्त उदाहरणो मे 'किच्छ'—'कुछ' का प्रयोग परिमाणवाचक क्रियाविशेषण के रूप मे हुआ है।

---

1 कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, पृ० 61

2. 'कोई' 'Someone', somebody refers to a person and 'कुछ' 'Something' to a thing'

A. Sharma, A Basic Grammer of Modern Hindi, P. 49

3 5 4 **निजवाचक सर्वनामपद [रिफलैक्सिव प्रोनाउन्ज]—**

मण्डियाली मे निजवाचक सर्वनाम-पद (आप्पू) 'आप, स्वय' है। इसका प्रयोग इस प्रकार होता है—

(आप्पू)

००आप-, ००आप्पू ।

[1] ०० आप—परप्रत्यय (-ण) मे जब वचन तथा लिंग द्योतक परप्रत्यय (-आ), (-ई) तथा (-ए) जोडा जाता है तो इसका प्रयोग होता है ।

उदाहरणार्थ —

आप-णा म्हूठा	'अपना लडका ।'
आप णी म्हूठी	'अपनी लडकी ।'
आप-णेम्हूठे	'अपने लडके ।' आदि ।

[2] ०० आप्पू—अन्य सभी स्थितियो मे आता है—

उदाहरणार्थ —

आप्पू जो लै	'अपने आप को ले ।'
आप्पू थे नी हूणा	'अपने आप से नही होगा ।'
आप्पू पर रख्या	'अपने पर रखा ।' आदि

3 5 5 **सम्बन्धवाचक सर्वनाम [रिलेटिव प्रोनाउन्ज]**

मण्डियाली मे सम्बन्धवाचक सर्वनाम पद (जे) 'जो' है । सम्बन्धवाचक सर्वनाम पद के लिंग के आधार पर दो भेद किए जा सकते हैं [1] सम्बन्धवाचक एकवचन पुल्लिग सर्वनाम पद तथा [2] सम्बन्धवाचक एकवचन स्त्रीलिंग सर्वनाम पद । वचन के आधार पर पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग का बहुवचन रूप समान ही मिलता है ।

3 5 5.1 **सबधवाचक एक वचन पुल्लिग पद —**

(जे)

०० जिन-, ०० जेस्स-, ००जे

[1] ०० जिन—कर्तृवाचक परसर्ग (-ने) से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

जिन्-ने काम कित्ता	'जिसने काम किया ।'
जिन्-ने दुद्ध डोल्‌या	'जिसने दूध उडेला ।' आदि ।

[2] ०० जेस्स—अन्य सभी परसर्गो से पूर्व आता है ।

विशेष—अनिश्चयवाचक सर्वनाम-पद—(किच्छ) के लिए हिन्दी के प्रभाव के कारण—(कुछ) का प्रयोग भी मिलता है ।

उदाहरणार्थ—

जेस्स-जो बोल्लूं से आओ	'जिसको कहूँ वह आए ।
जेस्स-थे पुच्छूं से बोल्लो	'जिससे पूछूं वह बोले ।'
जेस्स—साउगी जाणा, जा	'जिसके साथ जाना, जा ।' आदि।

[3] ००जे—अन्य स्थितियो मे आता है ।

उदाहरणार्थ—

जे-म्हठा आया था से गया	'जो लडका आया था वह गया ।'
जे-काम करना मे कर	'जो काम करना है वह कर ।'

3.5 5.2 **सबधवाचक एकवचन स्त्रीलिंग सर्वनाम पद—**

(जे)

००जेस्से-, ००जेस्सा, ०० जे ।

[1] ०० जेस्से—कर्तृवाचक परसर्ग (-ने) से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

जेस्से काम किता	'जिसने काम किया ।'
जेस्से मार्या	'जिसने मारा ।'
जेस्से जे बोल्या से हूणी	'जिसने कहा वह होगी ।' आदि ।

[2] ०० जेस्सा—अन्य सभी कारक-परसर्गों तथा परसर्गों से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

जेस्सा-जो बोल्लूं से उट्ठो	'जिसको कहूँ वह उठे ।'
जेस्सा-री घड़ी से आओ	'जिसकी घडी है वह आए ।'
जेस्सा-साउगी जाणा जा	'जिसके साथ जाना जा ।' आदि ।

[3] ०० जे—अन्य सभी स्थितियो मे आता है ।

उदाहरणार्थ—

जे म्हठी आई थी से ·	'जो लडकी आई थी वह ।'
जे गल करनी करो	'जो बात करनी करो ।' आदि ।

5 5 3 **सबधवाचक बहुवचन पुल्लिग तथा स्त्रीलिग सर्वनाम पद—**

(ज्यो)

००-जिन-, ००ज्यो ।

[1] ००-जिन—कर्तृवाचक बहुवचन परप्रत्यय (-हे) तथा सर्वनाम बहुवचन पर प्रत्यय (-हाँ) से पूर्व आता है ।

उदाहरणार्थ—

जिन्-हे बोल्या स्यो आओ	'जिन्होने बोला वे आएँ ।	[पु०/स्त्री०]
जिन्-हाँ जो बोल्या स्यो जाओ	'जिनको कहा वे जाएँ ।'	[पु०/स्त्री०]
जिन्-हाँ रे म्हठे स्यो जाओ	'जिनके लडके हैं वे जाएँ ।'	[पु०/स्त्री०]

[2] ०० -ज्यो—अन्य स्थितियो मे आता है ।
उदाहरणार्थ—

ज्यो आदमी आए थे स्यो गए	'जो आदमी आए थे वे गए' [पु०]
ज्यो जनान्नी आई थी स्यो गई	'जो औरतें आई थी वे गईं' [स्त्री०]

3 5 6 **प्रश्नवाचक सर्वनाम पद [इन्टैरोगेटिव प्रोनाउन्ज]—**

मण्डियाली मे प्रश्नवाचक सर्वनाम पद दो प्रकार के मिलते है—[1] मानव वाचक तथा [2] अमानववाचक। मानववाचक सर्वनाम पद के एकवचन तथा बहुवचन और पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनो रूप मिलते है ।

3 5 6 1 **मानववाचक सर्वनाम-पद—**

(कुण) मानववाचक सर्वनाम पद है इसके वचन तथा लिंग के आधार पर तिर्यक् रूप इस प्रकार बनते है ।

3 5 6 1 1 **मानववाचक एकवचन पुंल्लिग सर्वनाम पद—**

(कुण)
००-किन्-, ००केस्स-, ००कुण

[1] ०० किन्—कर्तृवाचक परसर्ग (-ने) से पूर्व आता है ।
उदाहरणार्थ—

किन्-ने किता	'किसने किया ?'
किन्-ने दस्या	'किसने दिखाया ?'
किन्-ने बोल्या हुंग्गा	'किसने कहा होगा ?' आदि ।

[2] ०० केस्स—अन्य सभी पर सर्गो से पूर्व आता है।
उदाहरणार्थ—

केस्स-जो देणा	'किसे देना है ?'
केस्स-थे लैणा	'किससे लेना है ?'
केस्स-साउगी गया	'किसके साथ गया ?' आदि।

[3] ०० कुण—अन्य सभी स्थितियो मे आता है ।
उदाहरणार्थ—

कुण गया था	'कौन गया था ?'
कुण आइरा	'कौन आया है ?' आदि ।

3 5 6 1 2 **मानववाचक एक वचन स्त्रीलिंग सर्वनाम पद [प्रश्नवाचक]—**

(कुण)
०० केस्से-, ०० केस्सा-, ०० कुण।

[1] ०० केस्से—कर्तृवाचक परसर्ग (-ने) से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

केस्से चाट्या	'किसने चाटा ?'
केस्ये बोल्या	'किसने कहा ?' आदि।

[2] ०० केस्सा—अन्य सभी परसर्गों से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

केस्सा-जो बोल्या	'किसे कहा ?'
केस्सा-रा म्हृठा था	'किसका लड़का था ?'
केस्सा साउगी गया	'किसके साथ गया ?' आदि।

[3] ०० कुण—अन्य स्थितियो मे आता है।

उदाहरणार्थ—

कुण आई	'कौन आई ?'
कुण गई	'कौन गई ?' आदि।

3 5 6 1 3 मानववाचक बहुवचन पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग सर्वनाम पद [प्रश्नवाचक]—

(कुण)

०० किन्-०० कुण।

[1] ००किन्—कर्तृवाचक बहुवचन परप्रत्यय (-हे) तथा बहुवचन परप्रत्यय (-हाँ) से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

किन्-हे किता	'किन्होने किया ?'	[पु०/स्त्री०]
किन्-हाँ थे माँग्या	'किन से माँगा ?'	[पु०/स्त्री०]
किन-हाँ साउगी	'किनके साथ गया ?'	[पु०/स्त्री०]

[2] ०० कुण—अन्य सभी स्थितियों मे आता है।

उदाहरणार्थ—

कुण आए	'कौन आए ?'	[पु०]
कुण आई	'कौन आई ?'	[स्त्री०]
कुण-कुण भेज्जी	'कौन-कौन भेजी ?'	[स्त्री०]
कुण कुण साद्दे	'कौन-कौन बुलाए ?'	[पु०] आदि।

3 5 6 2 अमानववाचक सर्वनाम पद [प्रश्नवाचक]—

मण्डियाली मे अमानववाचक सर्वनाम पद 'क्या' क्या है (क्या) 'क्या' अमानवीय चीजो तथा अन्य पदार्थों के लिए आता है। वास्तव मे (क्या)—'क्या का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यो मे होता है, मगर यह कई तरह से प्रयोग किया जा सकता है।

विशेष—मण्डियाली प्रश्नवाचक सर्वनाम पद पुल्लिग-स्त्रीलिंग तथा बहुवचन के लिए मूल रूप मे समान अर्थात् (कुण) 'कौन' ही रहता है।

उदाहरणार्थ—

(क्या)

००किद्धी ≈०कज्झी-, ०० क्या।

[1] ००किद्धी ≈कज्झी—सभी कारक परसर्गों से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

किद्धी-ने खाद्दे चौल्	'चावल किस चीज से खाए ?'
किद्धी-जो जाणा	'किस लिए जाना ?'
किद्धी-रा चार पाया	'किस चीज का आचार डाला ?' आदि।

[2] ००क्या—अन्य स्थितियो मे आता है।

उदाहरणार्थ—

क्या आइरा था	'क्या आया हुआ था ?' [अमानव]
क्या मिल्या था	'क्या मिला था ?' [अमानव]
क्या गया	'क्या गया ?' [अमानव] आदि।

'क्या' का क्रिया-विशेषण के रूप मे प्रयोग—

उदाहरणार्थ—

आदमी क्या से डाँगर आ	'आदमी क्या वह पशु है।'

विशेष—तिर्यक् रूप (कज्झी) का प्रयोग कर्मकारक परसर्ग (-जो) 'को' से पूर्व नही होता है। अन्य सभी स्थितियो मे—'कद्धी तथा -कज्झी' मुक्त-वितरण अर्थात् [फ्री वेरीऐशन] मे हैं।

चलाँ क्या से उड्डाँ आँ	'चलता क्या वह उडता है।'

'क्या' का आश्चर्य व्यक्त करने के रूप मे भी प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ—

क्या आदमी था	'क्या आदमी था।'
क्या प्यारा फूल आ	'क्या प्यारा फूल है।' आदि।

विशेष—

मण्डियाली मे आदर सूचक के लिए (तुस्सा) तथा (तुस्से) 'आप' का प्रयोग होता है। अत आदर सूचक के ये रूप मध्यम पुरुष बहुवचन पुल्लिग के समान हैं।

उदाहरणार्थ—

तुस्सा जाणा	'आप जाएँगे ?'
तुस्से जाओ≈जावा	'आप जाइए।'
तुस्से खाओ≈खावा	'आप खाइए।' आदि।

विशेष—

1. मण्डियाली मे सभी जातियाँ स्त्रीलिंग हैं। जातियाँ इस प्रकार हैं—ब्राह्मण,

राजपूत, खतरी, बोहरे, सन्यार, चमार, चुढे, डुमणे, चनाल, ल्हवार, टठ्यार, छिब्बे तथा कोली आदि ।

2 पशु तथा जानवर सज्ञापद दोनो वर्गों के अन्तर्गत आते हैं—

[1] पुल्लिग सज्ञापद—बहल्द 'बैल', कुत्ता—'कुत्ता', सैह्डू— 'खरगोश', गिद्दड,—'गीदड', हरन—'हिरन', काक्कड - 'विशेष जगली जानवर', सूर—'सूअर' [जगली], सुग्गर—'सूअर' [पालतू] भेड्डू—भेड का बच्चा', कट्टू—'भैस का बच्चा', छेलू – 'बकरी का बच्चा', घोडा 'घोडा', घोडू—'घोडे का बच्चा', गाब्भू 'भेड का बच्चा', कुत्तू—'कुत्ते का बच्चा', सेर - 'सेर', सेग्नु – 'सेर का बच्चा', मिरग—'बाघ', रीछ—'रीछ', भालू— 'भालू', आदि ।

[2] स्त्रीलिग सज्ञापद—गाए—'गाय', म्हैस—'भैस', बकरी— बकरी', घोरड—'विशेष जगली जानवर', स्हाएल—'जगली जानवर', छेल्ली— 'बकरी का बच्चा', घोडी—'घोडी', कट्टी 'भैस का बच्चा', खच्चर—'खच्चर', कुत्ती—'कुत्तिया', 'सेग्नी— सेरनी', हात्थड— 'हाथी', हिरनी— 'हिरन', आदि ।

[3] मण्डियाली मे फसल वाचक सज्ञापदो को दोनो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] पुल्लिग सज्ञापद —धान—'धान', चौल—'चावल', कोदरा—[मढल] 'कोदरा', सरयारा, भरेस्मा — विशेष अनाजो के नाम', छोलने—'चने', तिल्—'तिलहन', ममर—'मसूर', माह्—'माम', राजमाह्—'राजमाह', मट्टर —'मटर', रौग—'सफेद राजमाह', कोह्ल, कोलथ, तथा भरठ—'विशेष अनाजो के नाम' आदि ।

[4] [1] अमानवीय सज्ञापदो अर्थात् पशु जानवरो आदि सज्ञापदो का देख कर यह लगता है कि आकार या आयु के आधार पर सज्ञापदो मे छोटेपन तथा बडे पन का भाव भी होता है ।

उदाहरणार्थ -

'कुत्ता मे 'कुत्तू'—कुत्ते का बच्चा', 'बकरी' से 'छेल्लू'—'बकरी का बच्चा', 'भैस' मे 'कट्टू या कट्टी' -भैस का बच्चा आदि सज्ञापद छोटेपन तथा बडेपन के अन्तर को स्पष्ट करते हैं ।

[2] छोटेपन तथा बडेपन का यह अन्तर मानव जाति मे भी पाया जाता है । छोटे बच्चे के लिए इस प्रकार पुकारा जाता है ।—'राम' से 'राम्मू', 'पाल' से 'पाल्लू', 'स्याम' से 'स्याम्मू' आदि सज्ञापद, पुल्लिग छोटेपन तथा बडेपन के अन्तर को स्पष्ट करते है । 'कमला' से 'कमली', 'सीता' से सीतु' तथा गीता' से 'गीतु' आदि सज्ञापद स्त्रीलिग छोटेपन तथा बडेपन के अन्तर को स्पष्ट करते है ।

[4] मण्डियाली मे पुरुषवाचक सर्वनाम-पद सरचना की दृष्टि से बहुत

भिन्नता धारण किए हुए है। उत्तम पुरुष सर्वनाम पद (हाऊँ) तथा (माँ)—'मै' है। (हाऊँ) 'मै' पूर्ण पक्ष द्योतक हे तथा (माँ)—'मै' अपूर्ण पक्ष द्योतक है।

उदाहरणार्थ—

[1] मै काम कित्ता
मैंने काम किया।

[2] माँ काम करना।
'मुझे काम करना है।'

[3] हाऊँ गया।
'मै गया।'

[4] माँ जाणा।
'मै जाऊंगा।'

उपर्युक्त उदाहरणो मे उदाहरण (1) तथा (2) कर्तृकारक है तथा उदाहरण (3) तथा (4) कर्त्ताकारक है। यही बात मध्यम पुरुष-सर्वनाम पदो मे है।

उदाहरणार्थ—

(1) तै काम कित्ता।
'तूने काम किया।'

(2) तू काम करना। या
तुद्ध काम करना।
'तुझे काम करना है।'

(3) तू गया।
'तू गया।'

(4) तू जाणा। या
तुद्ध जाणा।'
'तू जाएगा।'

उपर्युक्त उदाहरणो मे कर्तृकारक परसर्ग (-न) उत्तम तथा मध्यम पुरुष सर्वनामो मे इस प्रकार मिल गये है कि उसे पहचान पाना आसान कार्य नही है। उसकी पहचान केवल वाक्य स्तर पर ही सम्भव है, जैसा कि ऊपर के उदाहरणो से स्पष्ट है।

मध्यम पुरुष सर्वनाम पूर्ण पक्ष मे कर्तृकारक—तै—तून' का प्रयोग होता है, तथा अपूर्ण पक्ष मे (तू≈तुद्ध—) तू' का प्रयोग होता है। लेकिन कई बार तू—'तू' का प्रयोग पूर्ण पक्ष मे भी किया जाता है।

उदाहरणार्थ

(1) तू बैठ्या तव्बे आया। **'तू बैठा तब आया।'**

(2) तू आया। **'तू आया।'** आदि।

अत उत्तम तथा मध्यम पुरुष, एकवचन सर्वनाम पदो मे कर्तृकारक-परसर्ग (-ने) यहाँ पर सश्लिष्ट परसर्ग बन गया है, जबकि अन्य सभी सर्वनाम पदो मे यह विश्लिष्ट परसर्ग के रूप मे आता है। सश्लिष्ट तथा विश्लिष्ट तथा विश्लिष्ट के अन्तर को उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ -

1 मै काम कित्ता — 'मैने काम किया।'
2 तै काम कित्ता — 'तूने काम किया।'
3 तिन्ने काम कित्ता — 'उसने काम किया।'
4 इन्ने काम कित्ता — 'इसने काम किया।' आदि।

अर्थात् उदाहरण (1) तथा (2) मे (-ने) परसर्ग का प्रयोग संश्लिष्ट है, जबकि उदाहरण (3) तथा (4) मे विश्लिष्ट प्रयोग हुआ है।

यही बात उत्तम तथा मध्यम पुरुष बहुवचन सर्वनाम पदो मे है। हाऊँ≈मां—'मैं' का बहुवचन—आस्सा—'हम' है तथा मध्यम-पुरुष मे—तू≈तूं—'तू' का बहुवचन—तुस्सा—'तुम' है। इन बहुवचन सर्वनाम-सर्वनाम पदो मे कर्तृकारक परसर्ग--(-ने) का प्रयोग सश्लिष्ट है, जब कि अन्य सभी सर्वनाम पदो मे विश्लिष्ट प्रयोग है। कर्तृ-कारक रूप इस प्रकार है—आस्से 'हमने' तुस्से—'तुमने' हैं।

उदाहरणार्थ—

1. आस्से काम कित्ता	'हमने काम किया।'
2. तुस्से काम कित्ता	'तुमने काम किया।'
3 तिन्हे काम कित्ता	'उन्होने काम किया।'
4 इन्हे काम कित्ता	'इन्होने काम किया।' आदि।

उपर्युक्त उदाहरण (1) तथा (2) सश्लिष्ट प्रयोग के उदाहरण हैं तथा (3) और (4) विश्लिष्ट प्रयोग के उदाहरण हैं। मण्डियाली मे बहुवचन मे (-ने) कर्तृकारक परसर्ग (-हे) मे बदल जाता है। मगर उत्तम तथा मध्यम पुरुष इसके अपवाद हैं।

मण्डियाली मे उत्तम तथा मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम पदो को छोडकर अन्य सभी सर्वनाम पदो मे कर्मकारक तथा सम्प्रदानकारक के दो-दो परसर्ग—(-जो) तथा (-ओ) मिले हैं। इस प्रकार इन दोनो कारको के तिर्यक् रूप सर्वनाम पदो मे इस प्रकार मिल सकते हैं—तेस्स-जो≈तेज्जो या तेस्सां—'उसको', तिन्हां-जो≈तिन्हांओ—'उनको', एस्स-जो— एज्जो या एस्सो—'इसको इन्हा-जो≈इन्हा-ओ—'इनको' आदि।

अधिकरणकारक मे परसर्ग (मझा) या (अन्दर≈अन्दरा) है। कई बार परसर्ग (-च) 'मे' का प्रयोग भी मिलता है। अर्थात् वक्ता अधिकरण परसर्गों के प्रयोग मे अनेक बार चेतन तथा अचेतन के भेद को भूल जाता है। अत वह किसी भी अधिकरण परसर्ग का प्रयोग कही भी कर सकता है।

3 6. विशेषण-पद [अड्जैक्टिवज्]—

सज्ञा या सर्वनाम पदो की विशेषता को व्यक्त करने वाले पद विशेषण-पद कहलाते हैं। मण्डियाली मे कुछ विशेषण-पद ऐसे हैं जो कि सज्ञापद (कर्त्ता) के अनुसार अपना रूप बदलते हैं, तथा कुछ विशेषण-पद ऐसे हैं जो कि अपना रूप नही बदलते। इसी कारण विशेषण-पदो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बांट सकते हैं—

[1] ऐसे विशेषण-पद जो अपने (कर्त्ता) सज्ञा-पद के अनुसार अपना रूप बदलते हैं। अर्थात् अविकारी विशेषण-पद।

[2] ऐसे विशेषण-पद जो (कर्त्ता) सज्ञापद के अनुसार अपना रूप नही बदलते। अर्थात् अविकारी विशेषण-पद।

उपर्युक्त दोनो वर्गों विकारी तथा अविकारी मे आने वाले विशेषण-पदो को

उपवर्गों मे इस प्रकार दिखा सकते हैं जिन्हें तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

- विशेषण-पद
  - (वर्ग 1) विकारी
    - पुल्लिग
      - एकवचन
      - बहुवचन
    - स्त्रीलिंग
      - एकवचन तथा बहुवचन
  - (वर्ग 2) अविकारी
    - पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग
      - एकवचन तथा बहुवचन

3 6 1 वर्ग [1] विकारी विशेषण-पद—

वर्ग [1] विकारी विशेषण पद के अन्तर्गत उन विशेषण पदो को लिया गया है, जो सज्ञापद (कर्त्ता) के लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलते हैं। इसी कारण इन्हे विकारी नाम दिया गया है।

विकारी विशेषण-पद जिनमे लिंग वचन के कारण विकार आता है, उन्हें तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

	एक०	बहु०	
प्रत्यक्ष	खरा		खरा 'अच्छा'
	काला		काला 'काला'
तिर्यक्		खरे	खरे 'अच्छे'
		काले	काले 'काले'

विकारी विशेषण-पदो को अध्ययन सुविधा की दृष्टि से निम्नांकित उपवर्गों मे बाँट सकते हैं।

3 6 1 1 (उपवर्ग 1)—

इस उपवर्ग के अन्तर्गत पुल्लिग-एकवचन विशेषण पदो को लिया गया है जिनमे पुल्लिग पर प्रत्यय (-आ) जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

खर्-आ	खरा	'अच्छा'
नव्-आँ	नवाँ	'नया'

पर्वाण्-आ	परवाणा	'पुराना'
प्युल्-आ	प्युला	'पीला'
काल्-आ	काला	'काला'
आद्ध-आ	आद्धा	'आधा'
पतल्-आ	पतला	'पतला'
बड्ड्-आ	बड्डा	'बड़ा'
छोट्ट्-आ	छोट्टा	'छोटा'
झुट्ठ-आ	झुट्ठा	'झूठा'
खट्ट्-आ	खट्टा	'खट्टा'
मिट्ठ-आ	मिट्ठा	'मीठा'
लुणक्-आ	लुण्का	'नमकीन'
निल्ल्-आ	निल्ला	'नीला'
चिट्ट्-आ	चिट्टा	'सफेद' आदि।

3.6.1 2 (उपवर्ग 2)—

(उपवर्ग 2) के अन्तर्गत पुल्लिग-बहुवचन विशेषण पदो को लिया गया है, जिनमे पुल्लिग बहुवचन परप्रत्यय (-ए) जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

खर्-ए	खरे	'अच्छे'
नव्-ए	नवे	'नऐ'
पर्वाण्-ए	परवाणे	'पुराने'
प्युल-ए	प्युले	'पीले'
काल्-ए	काले	'काले'
आद्ध-ए	आद्धे	'आधे'
पतल्-ए	पतले	'पतले'
बड्ड्-ए	बड्डे	'बडे'
छोट्ट्-ए	छोट्टे	'छोटे'
झुट्ठ्-ए	झुट्ठे	'झूठे'
खट्ट्-ए	खट्टे	'खट्टे'
मिट्ठ्-ए	मिट्ठे	'मीठे'
लुणक्-ए	लुणके	'नमक वाले'
निल्ल्-ए	निल्ले	'नीले'
चिट्ट्-ए	चिट्टे	'सफेद'
मोटट्-ए	मोट्टे	'मोटे' आदि।

3 6 1 3 (उपवर्ग 3)—

(उपवर्ग 3) के अन्तर्गत स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन विशेषण-पदो को लिया गया है, जिनमे बहुवचन परप्रत्यय (-ई) जोडा जाता है। स्त्रीलिंग विशेषण-पदो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते है—

	एक०	बहु०	
प्रत्यक्ष	खरी		खरी 'अच्छी'
तिर्यक्	काली		काली 'काली'

उदाहरणार्थ—

खर्-ई	खरी	'अच्छी'	(एक०/बहु०)
नव्-ई	नवी	'नयी'	,,
पर्वाण्-ई	पर्वाणी	'पुरानी'	,,
प्युल्-ई	प्युली	'पीली'	,,
काल-ई	काली	'काली'	,,
आद्ध-ई	आद्धी	'आधी'	,,
पतल-ई	पतली	'पतली'	,,
छोट्ट-ई	छोट्टी	'छोटी'	,,
झुट्ठ्-ई	झुट्ठी	'झूठी'	,,
खट्ट-ई	खट्टी	'खट्टी'	,,
मिट्ठ्-ई	मिट्ठी	'मीठी'	,,
लुणक्-ई	लुणकी	'नमकीन'	,,
निल्ल्-ई	निल्ली	'नीली'	,,
चिट्ट्-ई	चिट्टी	'सफेद'	,,

3 6 2 वर्ग (2) अविकारी विशेषण-पद—

(वर्ग 2) अविकारी विशेषण पद के अन्तर्गत उन विशेषण-पदो को लिया गया है, जिनमे सज्ञापद (कर्त्ता) के लिंग, वचन के कारण कोई विकार नही आता। अत इन विशेषण-पदो मे किसी भी कारण विकार नही आता है।

अविकारी विशेषण-पदो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते है—

	एक०	बहु०	पु०/स्त्री०
प्रत्यक्ष	छैल		
तिर्यक्	लाल		छैल 'सुन्दर'
			लाल 'लाल'

वर्ग 2 अविकारी विशेषण पदो को एक ही उपवर्ग के अन्तर्गत रखा गया है—

6 2 1 उपवर्ग (1)—

(उपवर्ग 1)के अन्तर्गत उन विशेषण-पदो को लिया गया है, जिनमे लिंग था वचन द्योतक परप्रत्यय (-ϕ) शून्य जोडा जाता है।

दाहरणार्थ—

छैल ϕ	छैल	'सुन्दर'
खराब-ϕ	खराब	'खराब'
लाल-ϕ	लाल	'लाल'
सपेद-ϕ	सपेद	'सफेद'
नरम ϕ	नरम	'नरम'
सखत-ϕ	सख्त	'सख्त'
गरम ϕ	गरम	'गर्म'
बमार-ϕ	बमार	'बीमार'
चलाक-ϕ	चलाक	'चालाक'
अमीर-ϕ	अमीर	'अमीर'
गरीब-ϕ	गरीब	'गरीब'
कुण-ϕ	कुण	'कौन'
बरीक-ϕ	बरीक	'बारीक'
खाल्ली-ϕ	खाल्ली	'खाली'
भारी-ϕ	भारी	'भारी'
उन्नी-ϕ	उन्नी	'ऊनी'
सुत्ती-ϕ	सुत्ती	'सूती' आदि।

विकारी तथा अविकारी विशेषण पदो के इस अन्तर को वाक्य स्तर पर आसानी मे समझा तथा स्पष्ट किया जा सकता है।

3 6 1 0. (वर्ग 1. विकारी विशेषण पद)—

उदाहरणार्थ—

राम खरा म्हठा था।	'राम अच्छा लडका था।'
गीता खरी म्हठी थी।	'गीता अच्छी लडकी थी।
दुहें खरे म्हठ थे।	'दोनो अच्छे लडके थे।'
हरा चादरू था।	'हरा दुपट्टा था।'
हरी कमीज थी।	'हरी कमीज थी।'
हरे कपडे थे।	'हरे कपडे थे।' आदि।

3 6 2 0. (वर्ग 2 अविकारी विशेषण-पद)—

उदाहरणार्थ—

राम छैल म्हठा था।	'राम सुन्दर लड़का था।'

गीता छैल म्हूठी थी ।	'गीता सुन्दर लडकी थी ।'
दुहे छैल म्हूठे थे ।	'दोनो सुन्दर लडके थे ।'
लाल चादरू था ।	'लाल दुपट्टा था ।'
लाल कुर्ती थी ।	'लाल कमीज थी ।'
लाल कपडे थे ।	'लाल कपडे थे ।' आदि ।

3.6 3 सख्यावाचक विशेषण-पद (न्यूमरल्ज)—

सख्यावाचक पद उन विशेषण-पदो को कहते है जिनसे किसी सख्या का बोध होता है । डॉ० आर्येन्द्र शर्मा के शब्दो मे—'सख्यावाचक पद, विशेषण हैं जो कि सख्या को व्यक्त करते हैं ।'[1]

मण्डियाली मे सख्यावाचक विशेषण-पदो को निम्नाकित वर्गों मे बांट सकते हैं—

1 गणनामूलक-सख्यावाचक-पद ।
2 क्रम सूचक-सख्यावाचक-पद ।
3 समूहवाचक सख्यावाचक-पद ।
4 गुणात्मक-सख्यावाचक-पद ।
5 अपूर्ण-सख्यावाचक-पद ।
6 योग्य तथा घटनवाचक-सख्यावाचक-पद ।

3.6 3 1 गणनामूलक सख्यावाचक-पद [कॉर्डीनलज]—

गणनामूलक सख्यावाचक विशेषण-पदो को रूपिमो के आधार पर दो वर्गों मे बांट सकते हैं । [1] ऐसा रूप (आकार) जिसमे एक ही रूपिम हो तथा [2] ऐसा रूप (आकार) जिसमे दो या अधिक रूपिम हो । दूसरे शब्दो मे [1] मूल सख्यावाचक पद तथा [2] व्युत्पन्न सख्यावाचक-पद ।

3 6 3 1 1 [वर्ग—1] मूल सख्यावाचक-पद—

वर्ग [1] मूल सख्यावाचक पद के अन्तर्गत आने वाले सख्यावाचक पदो मे एक ही रूपिम तथा मूल रूपिम होता है । इसी कारण इस वर्ग के लिए 'मूल सख्या वाचक-पद' नाम दिया गया है । मण्डियाली मे मूल सख्यावाचक विशेषण-पद निम्नांकित हैं—

[1]	(एक)	'एक'
[2]	(दो≈दुई)	'दो'
[3]	(त्राए≈तिन्)	'तीन'

1 'Numerals are Aajectiv.s Indicating numbe'

A. Shar a, A Basic Grammar of M dern Hindi, P. 63.

[4]	(चार्)	'चार'
[5]	(पांज्)	'पांच'
[5]	(छे)	'छ'
[7]	(सात्)	'सात'
[8]	(आट्ठ)	'आठ'
[9]	(नौ)	'नौ'
[10]	(दस)	'दस'
[100]	(सौ)	'सौ'
[1000]	(हृजार≈जाह्र)	'हृजार'
[1000,000]	(लक्ख)	'लाख'
[10,000,000]	(करोड)	'करोड'
[1,000,000,000]	(अर्ब)	'अरब'
[100,000,000,000]	(खर्ब)	'खरब'

3 6 3 1 2 [वर्ग] [2] व्युत्पन्न सख्यावाचक-पद]—

[वर्ग] [2] व्युत्पन्न सख्यावाचक पदो के अन्तर्गत आने वाले सख्यावाचक पद दो या दो से अधिक रूपिमो से बने होते है। अर्थात् इस वर्ग मे आने वाले सख्यावाचक पद मूल सख्यावाचक-पदो से व्युत्पन्न होते हैं, इसी कारण इन्हे व्युत्पन्न सख्यावाचक पद नाम दिया गया है।

मण्डियाली के सभी सख्यावाचक पद विभिन्न वर्ग गणनामूलक आदि [वर्ग] [2] व्युत्पन्न सख्यावाचक पद के अन्तर्गत आते हैं। लेकिन कुछ सख्या पद [वर्ग] [1] मूल सख्यावाचक पद के अन्तर्गत भी आते है। व्युत्पन्न सख्यावाचक पदो के अन्तर्गत सभी व्युत्पन्न सख्यावाचक पद, मूल रूपिमो से व्युत्पन्न हैं।

व्युत्पन्न गणनामूलक सख्यावाचक पदो के भी तीन उपवर्ग किए जा सकते हैं—

[1] वर्ग [प्रथम] के अन्तर्गत व्युत्पन्न सख्यावाचक-पद 11 से 18, 21 से 28, 31 मे 38, 41 से 48, 51 से 58, 61 से 68, 71 से 78, 81 से 88 तथा 91 से 99 तक की रचना आती है।

[2] वर्ग [द्वितीय] के अन्तर्गत—20, 30, 40, 50, 60, 70, 80 तथा 90 की रचना आती है।

[3] वर्ग [तृतीय] के अन्तर्गत—19, 29, 39, 49, 59, 69, 79, तथा 89 की रचना आती है।

3 6 3 1 2 1 वर्ग [प्रथम]—

[1] 11 से 18 तक के सख्यावाचक पद, 1 से 8 मूल सख्यावाचक पदो के

उपरूपो मे (-10) रूपिम जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

एक्		ग्या-		
दो		बा-		
त्राए		तेह्-		
पाँज्		पँद-		(-रा)
सात्	→	सता-	/—	
आट्ठ		ठा-		
{चार्, छे}		{चौ-, सो-}		{-दा, -ला}

उदाहरणार्थ—

ग्या-रा	'ग्यारह्'	सता-रा	'सतरह्'
बा-रा	'बारह्'	ठा-रा	'अठारह्'
तेह्-रा	'तेरह्'	चौ-दा	'चौदह्'
पँद्-रा	'पन्दरह्'	सो-ला	'सोलह्'

[2] 21 से 28 तक के सख्यावाचक पद, 1 से 8 मूल सख्यावाचक पदो के उपरूपो मे (-20) रूपिम जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

एक		इक्क-		
दो		बा-		
त्राए		त्रे≈ते-		
चार		चोब-		
पाँज		पँज्ज-	/—	(-ई)
छे	→	छब्ब-		
सात		सत्ता-		
आट्ठ		ठा-		

उदाहरणार्थ—

इक्क-ई	'इक्कीस'	पज्ज-ई	'पच्चीस'
बा-ई	'बाईस'	छब्ब्-ई	'छब्बीस'
त्रे-ई≈ते-ई	'तेईस'	सत्ता≈ई	'सताईस'
चोब्-ई	'चौबीस'	ठा-ई	'अठाईस'

[3] 31 से 38 तक के सख्यावाचक-पद, 1 से 8 मूल सख्यावाचक पदो के

उपरूपो मे (-30) रूपिम जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

एक्		क-		
दो		ब-		
त्राए		ते-		
चार्		चौ-		
पांज्	→	पैं-	/ —	(-त्ती)
छे		छ-		
सात्		सत्त-		
आट्ठ		ठ-		

उदाहरणार्थ—

क-त्ती	'इकतीस'	पैं-त्ती	'पैंतीस'
ब-त्ती	'बत्तीस'	छ-त्ती	'छत्तीस'
ते-त्ती	'तेत्तीस'	सत्त-त्ती	'सैंतीस'
चौ-त्ती	'चौतीस'	ठ-त्ती	'अडतीस'

[4] 41 से 48 तक के सख्यावाचक पद, 1 से 8 मूल सख्यावाचक पदो के उपरूपो मे (-40) रूपिम जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

एक्		कता-		
दो		बता ब्या-		
त्राए		तरता-		
चार्	→	चत्वा-	/ —	
पांज्		पंजता-		(-ली)
छे		छता-		
सात्		सता-		
आट्ठ		अठ्ता-		

उदाहरणार्थ—

कता-ली	'इकतालीस'	पजता-ली	'पैंतालीस'
बता-ली	'ब्यालीस'	छता-ली	'छयालीस'
तर्ता-ली	'तैंतालीस'	सता-ली	'सैंतालीस'
चत्वा-ली	'चवालीस'	अठता-ली	'अडतालीस'

[5] 51 से 58 तक के सख्यावाचक पद 1 से 8 मूल सख्यावाचक पदो के

उपरूपो मे (-50) रूपिम जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखाया जा सकता है—

एक्		क-		
दो		ब-		
तृराए		तृर-		
चार्		चर-		
पाँज्	→	पञ्चँ	/ —	(-उञ्जा)
छे		छप-		
सात्		सत्त-		
आट्ठ्		ठ-		

उदाहरणार्थ—

क्-उँञ्जा	'इक्यावन'	पञ्च्-उँञ्जा	'पञ्चपन'
ब्-उँञ्जा	'बावन'	छप्-उँञ्जा	'छप्पन'
तृर्-उँञ्जा	'तरेपन'	सत्-उँञ्जा	'सतावन'
चर्-उँञ्जा	'चौवन'	ठ्-उँञ्जा	'अट्ठावन'

[6] 61 से 68 तक के सख्यावाचक-पद, 1 से 8 मूल सख्यावाचक पदो के उपरूपो मे (-60) रूपिम जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

एक्		क-		
दो		ब-		
तृराए		तर्य-		
चार्		चरव्-		
पाँज्	→	पज्य्-	/—	(-आह्ट)
छे		छ्य-		
सात्		सत्त-		
आट्ठ्		ठ-		

उदाहरणार्थ—

क्-आह्ठ	'इकसठ'	पजय-आह्ट्	'पैंसठ'
ब्-आह्ट	'बासठ'	छय्-आह्ट	'छियासठ'
तर्य्-आह्ट	'तरेसठ'	सत्त-आह्ट	'सडसठ'
चर्व-आह्ट	'चौंसठ'	ठ-आह्ट	'अडसठ'

[7] 71 से 78 तक के सख्यावाचक पद, 1 से 8 मूल सख्यावाचक पदो के उपरूपो मे (-70) रूपिम जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

एक्		क-		
दो		ब-		
तराए		त्य्-		
चार्		च्व-		
पांज्	→	पज्य-	/—	(-हत्तर)
छे		छ्य-		
सात्		सत्त-		
आट्ठ्		ठ-		

उदाहरणार्थ—

क्-हत्तर	'इहकत्तर'	पज्य-हत्तर	'पचहत्तर'
ब-ह्त्तर	'बह्त्तर'	छय ह्त्तर	'छिह्त्तर'
त्य-ह्त्तर	'तिह्त्तर'	सत्त-ह्त्तर	'सत्तहत्तर'
चव्-ह्त्तर	'चौह्त्तर'	ठ-ह्त्तर	'अठहत्तर'

[8] 81 से 88 तक के सख्यावाचक पद 1 से 8 मूल सख्यावाचक पदो के उपरूपो मे (-80) रूपिम जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

एक्		का-		
दो		बा-		
त्राए		त्र्या-		
चार्		चर्वा-		
पांज्	→	पज्या-	/—	(-स्सी)
छे		छ्या-		
सात्		सत्ता-		
आट्ठ		ठा-		

उदाहरणार्थ—

का-स्सी	'इक्यासी'	पज्या-स्सी	'पचासी'
बा-स्सी	'ब्यासी'	छ्या-स्सी	'छियासी'
त्र्या-स्सी	'तिरासी'	सत्ता-स्सी	'सतासी'
चर्वा-स्सी	'चौरासी'	ठा-स्सी	'अठासी'

[9] 91 से 99 तक के सख्यावाचक-पद, 1 से 8 तक मूल सख्यावाचक पदो के उपरूपो मे (-90) रूपिम जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

⌜ एक् ⌝	⌜ का- ⌝		⌜ ⌝
दो	बा-		
त्राए	त्र्या-		
चार	चर्वा		
पाँज्	पज्या-	/—	(-नवें)
छे	छया-		
सात्	सत्ता-		
आट्ठ	ठा-		
⌞ नौ ⌟	⌞ नङि- ⌟		⌞ ⌟

उदाहरणार्थ—

का-नवे	'इक्यानवें'	'पज्या-नवें	'पिचानवें'
बा-नवें	'बानवें'	छ्या-नवे	'छियानवें'
तर्या-नवें	'तिरानवे'	सत्ता-नवे	'सत्तानवे'
चर्वा-नवें	'चौरानवे'	ठा-नवे	'अठानवें'
		नङि-नवें	'निन्यानवे'

3 6 3.1 2 2 वर्ग [द्वितीय]—

[वर्ग-द्वितीय] के अन्तर्गत—20, 30, 40, 50, 60, 70, 80 तथा 90 सख्यावाचक पदो की रचना को लेकर विचार किया जा रहा है। इन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

⌜ बिह् ⌝		⌜ {ब- ⌝		⌜ { -इह् } ⌝
त्रिह्≈तिह्		त्र≈त्- }		
चाली		चा-		(-ली)
पज्याह्		पज-		(-याह्)
सट्ठ	→	स-	/—	(-ट्ठ)
सह्त्तर		सह्त्		(त्तर)
अस्सी		अ-		(-स्सी)
⌞ नब्बे ⌟		⌞ न- ⌟		⌞ (-ब्बे) ⌟

उदाहरणार्थ—

ब-इह्	बिह्	''बीस'
त्र्-इह्	त्रिह्	'तीस'
त्-इह्	तिह	'तीस'
चा-ली	चाली	'चालीस'
पज्-याह्	पज्याह्	'पचास'

सा-ट्ठ	साट्ठ	'साठ'
सह्त्तर	सह्-त्तर	'सत्तर'
अस्-सी	अस्सी	'अस्सी'
नब्-बे	नब्बे	'नब्बे'

20 से 90 तक के सख्यावाचक पद, 1 से 9 मूल सख्यावाचक पदो के उपरूपो मे (20) से (90) तक के रूपिम जोड़ने से व्युत्पन्न होते हैं।

3.6 3 1.2.3 वर्ग [तृतीय]—

वर्ग [तृतीय] के अन्तर्गत सख्यावाचक पद (-19) आदि की रचना को लेकर विचार किया जा रहा है। (-उन्नी) मे 'उन' का अर्थ कुछ कम या घट माना जाता है। अर्थात् (बिह्-उन=उन्नी)।

अत 20-उन=19 या

बिह्-उन=उन्नी।

यहाँ पर—19, 29, 39, 49, 59, 69, 79, 89 की रचना को लेकर विचार किया जा रहा है। इन सख्यावाचक पदो की रचना को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

⌈ बिह्		⌈ उन्न- ⌉		⌈ -ई ⌉
त्रिह्≈तिह्		ण-		-त्ती
चाली		उण्-		-ताली
पज्याह्		ण-		-उज्जा
सट्ठ	→	ण्व्-	/—	-आह्ट
सह्त्तर		ण्व्-		-आहत्तर
अस्सी		ण्व्-		-आस्सी
⌊ नब्बे ⌋		⌊ नउ- ⌋		⌊ -वे ⌋

उदाहरणार्थ—

(बिह्-उन्न)	= उन्न-ई	(उन्नी)	'उन्नीस'
(त्रिह्-ण)	= ण-त्ती	(णत्ती)	'उनतीस'
(चाली-उण)	= उण-ताली	(उणताली)	'उन्तालीस'
(पज्याह्-ण्)	= ण-उँज्जा	(णुँज्जा)	'उनचास'
(सट्ठ-ण्व)	= ण्व्-आहट्	(ण्वाहट)	'उनसठ'
(सह्त्तर-ण्व)	= ण्व्-आहत्तर	(ण्वाह्त्तर)	'उनहत्तर'
(अस्सी-ण्व)	= ण्व्-आस्सी	(ण्वास्सी)	'उन्नासी'
(नब्बे-नउ)	= नउ-वे	(नउवे)	'नवासी'

3.6.3.2. क्रमसूचक संख्यावाचक पद (औडीनलज)—

मण्डियाली मे क्रमसूचक सख्यावाचक पद, गणनामूलक संख्यावाचक पदो से व्युत्पन्न हैं। विभिन्न गणनामूलक संख्यावाचक पदो से क्रम-सूचक सख्यावाचक पदो की व्युत्पत्ति के लिए निम्नांकित पर-प्रत्यय जोडे जाते हैं—

1 से 4 तक के क्रम सूचक सख्यावाचक विशेषण पद इस प्रकार है—

(पैह्ला)	'पहला'
(दु-ज्जा)	'दूसरा'
(तृरि-ज्जा)	'तीसरा'
(चौत्था)	'चौथा'

उपर्युक्त क्रम सूचक संख्यावाचक पदो मे—दो तथा तीन मे (-ज्जा) पर-प्रत्यय जोडा जाता है तथा चार मे (-त्था) पर-प्रत्यय जोडा जाता है।

(-वाँ) तथा (-उवाँ) पर-प्रत्यय के साथ क्रम सूचक सख्यावाचक पद इस प्रकार हैं—

उदाहरणार्थ—

पाँज-वाँ	'पाँचवाँ'	बाह्र-वाँ	'बारह्वाँ'
छे-उवाँ	'छठा'	बाह्-उवाँ	'बाईसवाँ'
सात्-वाँ	'सातवाँ'	सह्तर-वाँ	'सत्तरवाँ'
आट्ठ-वाँ	'आठवाँ'	ठहत्तर-वाँ	'अठतरवाँ'
न्ह्-उवाँ	'नवाँ'	चाह्ल-वाँ	'चालीसवाँ' आदि।
दस-वाँ	'दसवाँ'		

(-ह्वाँ) पर-प्रत्यय के साथ क्रम सूचक सख्यावाचकपद इस प्रकार है—

उदाहरणार्थ—

सत्ता-ह्वाँ	'सताइसवाँ'	इक्-ह्वाँ	'इक्कीसवाँ'
ठा-ह्वाँ	'उठाइसवाँ'	इख्-वाँ	'इक्कीसवाँ'
कत-ह्वाँ	'इकत्तीसवाँ'	तृरे-ह्वाँ	'तेईसवाँ'
बत्-ह्वाँ	'बत्तीसवाँ'		आदि।

विशेष—

संख्यावाचक विशेषणो से क्रम सूचक सख्यावाचक विशेषण बनाने के लिए (-वाँ, -उवाँ, -ह्वाँ) पर-प्रत्ययो का प्रयोग किया जाता है। क्रम सूचक सख्यावाचक पर-प्रत्ययो के योग से सख्यावाचक-विशेषण पदो मे प्राणत्व अर्थात्, 'ह्' आ जाता है, जैसा कि पीछे उदाहरणो से स्पष्ट है। अधिक स्पष्टता के लिए और उदाहरण लिए जा सकते हैं—

विशेष—सभी क्रम सूचक परप्रत्यय, लिंग तथा वचन के कारण अपना रूप बदलते हैं। उपर्युक्त उदाहरणो मे (इक्की) का क्रम सूचक सख्यापद (-हँवा) तथा (-वाँ) दोनो परप्रत्ययो से बनता है।

ग्यारा—ग्याह्‌रवाँ	'ग्यारह्‌वाँ'	
बारा—बाह्‌रवाँ	'बारह्‌वाँ'	
चौदा—चौह्‌दवाँ	'चौदह्‌वाँ'	आदि ।

31 के 38 तक के सख्यावाचक विशेषणो मे रूप स्वनिमिक परिवर्तन आते हैं अर्थात्‌ /त→थ / ।

उदाहरणार्थ—

कत्ती	—	कथवाँ	'इकत्तीसवाँ'
बत्ती	—	बथवाँ	'बत्तीसवाँ'
चौत्ती	—	चौथवाँ	'चौतीसवाँ' आदि ।

कई बार यह परिवर्तन अर्थात्‌ /त→थ / होता है, तथा कई बार नही भी होता है ।

क्रम सूचक के अन्तर्गत ही महीने के प्रथम पन्द्रह दिन इस प्रकार गिने जाते हैं—

(पैंह्‌ल/पड्‌या/पड्‌यो)	'पड़वा/परवा'
(दूज)	'दूज'
(त्‌रीज)	'तीज'
(चौथ)	'चौथ'
(पँज्या)	'पाँचे'
(छठ्‌या)	'छठ'
(सत्‌या)	'सातें'
(अठ्‌या)	'आठे'
(नौवमी)	'नवमी'
(दसमी)	'दशमी'
(काद-स/सी)	'एकादस'
(द्वाद-स/सी)	'द्वादसी'
(त्‌रदेस)	'तरयोदस'
(चौदस)	'चौदस'
(पुन्या/पूर्णिमा)	'पूरनमासी'

पूर्ण चाँद वाला दिन पुन्या/पूर्णिमा 'पूरनमासी' कहलाता है, तो पूर्ण अन्धकार वाला दिन वाँम 'अमावस' कहलाता है/महीने के प्रथम मध्यान का अन्तिम दिन 'पुन्या'/पूर्णिमा, तो महीने के दूसरे मध्यान का अन्तिम दिन 'वाँस'—'अमावस' कहलाता है ।

3 6 4 समहूवाचक सख्यावाचक पद (ऐग्रीगेटिव्ज़)—

समूहवाचक संख्यावाचक पद वे हैं जिनसे हमे समूह का ज्ञान होता है । समूह-

वाचक संख्यावाचक पद बनाने के लिए गणनामूलक संख्यावाचक पदो मे (-ओह्‌रा) तथा (-हृरा) पर-प्रत्यय जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

(-ओह्‌रा)	(एक-ओह्‌रा)	(कोह्‌रा)	'इकहृरा'
(हृरा)	(दो-हृरा)	(दोह्‌रा)	'दुहृरा'
(-हृरा)	(तरे-हृरा)	(तरेह्‌रा)	'तिहृरा'
(-ओह्‌रा)	(चार-ओह्‌रा)	(चोह्‌रा)	'चोहृरा'
( )	(चार-ओह्‌रा)	(चरोह्‌रा)	'चोहृरा'
(-ओह्‌रा)	(पाँज-ओह्‌रा)	(पजोह्‌रा)	'पचोहृरा'

(छे॑) से ऊपर के गणनामूलक संख्यावाचक पदो मे समूहवाचक पद बनाने के लिए (-बार) परप्रत्यय जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

(छे-बार)	'छबार'
(सात्‌बार)	'सातबार'
(आट्‌ठबार)	'आठबार' आदि।

(-बार) परप्रत्यय के स्थान पर (-दफा) परप्रत्यय का प्रयोग भी किया जाता है।

मण्डियाली मे समूहवाचक के रूप मे निम्नांकित संज्ञा-पदो का प्रयोग भी होता है।

उदाहरणार्थ—

(जोडा/जोडी/जोडे)	'दो का समूह'
(चौका)	'चार'
(चौकडी)	'चार का समूह'
(छक्का/छिक्का)	'छे का समूह'
(छिक्कडी)	'छे का समूह'
(पजक)	'पाँच दिनो का समूह'
(हृफ्ता)	'सात दिनो का समूह'
(कोडी)	'बीस का समूह'
(सैंकडा)	'सौ का समूह'

(-ओहृरा) तथा (-हृरा) समूहवाचक परप्रत्यय लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलते हैं।

समूहवाचक संख्यावाचक पदो का दूसरा रूप इस प्रकार है—

'एक' से (कह्‌ल्ला), 'अकेला' अर्थात्‌ 'एक' मे (-हृल्ला) परप्रत्यय जोडकर 'कह्‌ल्ला'—अकेला रूप बनता है।

सख्यावाचक पद 'दो' से अधिक से समूहवाचक पद बनाने के लिए (-हैं) तथा (-हे) परप्रत्यय जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

(दो-हे)	(दुहे)	'दोनो'
(त्राए-हे)	(त्राहे)	'तीनो'
(चार्-हे)	(चार्हे)	'चारो'
(पांज्-हे)	(पांज्हे)	'पाँचो'
(छे-हे)	(छेहे)	'छेहो'
(सात्-हे)	(सात्हे)	'सातो'
(आट्ठ-हे)	(आट्ठहे)	'आठो'
(नौ हे)	(नौहे)	'नवो'
(दस्-हे)	(दस्हे)	'दसो'
(दस-हे)	(दसहे)	'दसो'

सख्यावाचक पद ग्यारा 'ग्यारह्' से अधिक से समूहवाचक पद बनाने के लिए सख्यावाचक पदो मे (-रे-) मध्य प्रत्यय के रूप मे आता है, लेकिन यह मध्य प्रत्यय सख्यावाचक पदो से अलग रहता है, उनमे मिल नही जाता है।

उदाहरणार्थ—

(ग्यारा-रे-ग्यारा)	'सभी ग्याराह्' (ग्यारह्-के-ग्यारह्)
(बिह्-रे-बिह्)	'सभी बीस' (बीस-के-बीस)
(चाली-रे-चाली)	'सभी चालस' (चालीस-के-चालीस)
(पज्याह्-रे-पज्याह्)	'सभी पचास' (पचास-के-पचास) आदि।

विशेष—

मण्डियाली पर हिन्दी का प्रभाव बढता जा रहा है। हिन्दी के प्रभाव के कारण ही अब सख्यावाचक पदो से समूहवाचक पद बनाने के लिए निम्नांकित पर-प्रत्ययो का प्रयोग भी मिलता है—

'2' तथा '3' मे (-न्हो) पर-प्रत्यय जोडा जाता है।

(दो-न्हो)	(दोन्हो)	'दोनो'
(त्राए-न्हो)	(तिन्हो)	'तीनो

'4' से '10' तक (-न्हो) पर-प्रत्यय जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

(चार-हो)	(चार्हो)	'चारो'
(सात्-हो)	(सातहो)	'सातो'
(दस-हो)	(दस्हो)	'दसो' आदि।

विशेष—सख्यावाचक पद दस से समूहवाचक पद बनाने के लिए दोनो परप्रत्यय (हैं~हे) मुक्त-परिवर्तन (फ्री वेरीऐशन) मे हैं।

3.6 5. गुणात्मक संख्यावाचक पद (मल्टिप्लीकेटिव)—

गुणात्मक सख्यावाचक पद बनाने के लिए गणनामूलक सख्यावाचक पदो मे (-गणा) परप्रत्यय '2' मे '4' तक जोडा जाता है तथा '5' से ऊपर गणनामूलक सख्यावाचक पदो मे(-गुणा) परप्रत्यय जोडा जाता है। परप्रत्यय (-गणा) तथा (-गुणा) लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलते है।

'2' से '4' तक (-गणा) परप्रत्यय के साथ गुणात्मक सख्यावाचक पद इस प्रकार हैं—

(दो-गणा)	(दुगणा)	'दुगना'
(त्राए-गणा)	(त्रि-गणा)	'तिगुना'
(चार-गणा)	(चोगणा)	'चोगुना'

'5' से ऊपर सभी गणनामूलक सख्यावाचक पदो के साथ (-गुणा) परप्रत्यय जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

(पांज-गुणा)	'पांच गुना'
(छे-गुणा)	'छ गुना'
(दस-गुणा)	'दस गुना'
(सो-गुणा)	'सो गुना' आदि।

सामान्य गुणन-प्रक्रिया मे प्रयुक्त होने वाले अन्य रूपिम इस प्रकार हैं या दूसरे शब्दो मे गुणन-प्रक्रिया का एक और ढंग है—

उदाहरणार्थ—

[1]	(एकम)	दो एकम दो।
[2]	(दूणी)	दो दूणी चार।
[3]	(तीएँ)	दो तीएँ छे।
[4]	(चोके)	दो चोके आट्ठ।
[5]	(पांज्जे)	दो पांज्जे दस।
[6]	(छिक्के)	दो छिक्के बारा।
[7]	(सात्ते)	दो सात्ते चोदा।
[8]	(आट्ठे)	दो आट्ठे सोला।
[9]	(न्वाएँ)	दो न्वाएँ ठारा।
[10]	(दाह्)	दो दाह् विह्। या
	(दस्से)	दो दस्से विह्।

विशेष—गणनामूलक विशेषण पदो '2' तथा '4' मे (-णा) परप्रत्यय जोडकर भी गुणात्मक सख्यावाचक पद बनता है। उदाहरणार्थ—(दो-णा)-(दूणा) 'दुगना', (चार्-णा)-(चोणा) 'चोगुना'।

3 6 6. अपूर्ण सख्यावाचक पद (फ्रैक्सन्स)—

अपूर्ण सख्यावाचक पद से गणनामूलक पूर्ण सख्यावाचक पद के किसी भाग का बोध होता है। मण्डियाली मे अपूर्ण सख्यावाचक विशेषण पद निम्नांकित हैं—

(पाव≈पाईया)	=	1-1/4
(आद्धा)	=	1/2
(पोणा)	=	3/4
(सवाया≈सवाए)	=	1-1/4
(डेढ—ड्योढ)	=	1-1/2
(ढाई)	=	2-1/2
(साड्ढे चार)	=	4-1/2 आदि।

एक से अधिक सख्याओ के साथ (पोणा) तथा (सवा≈सवाए) सूचित करने के लिए पूर्ण-गणनामूलक सख्यावाचक पदो से पूर्व (पोणा) तथा (स्वाया≈स्वाए) रूपिमो का प्रयोग किया जाता है—

उदाहरणार्थ—

(पौणे दो)	=	1-3/4
(पौणे चार)	=	3-3/4
(सवा दो)	=	2-1/4
(सवा दस)	=	10-1/4 आदि।

3 6 7 योगज तथा घटन सख्यावाचक पद [एडीसन ऐंड सबट्रेक्सन] —

मण्डियाली मे एक सख्या मे दूसरी सख्या का योग करने के लिए (जमा) तथा घटाने के लिए (घट) रूपिम का प्रयोग किया जाता है।

[1] योगज प्रक्रिया के उदाहरण इस प्रकार हैं—

(जमा) रूपिम के साथ—

(दो जमा दो)	=	(चार)	'चार'
(दो जमा चार)	=	(छे)	'छ.'
(दस जमा बिह्)	=	(तिह्)	'तीस'
(सौ जमा सौ)	=	(दो सौ)	'दो सौ'
(दो सौ जमा सौ)	=	(त्राए सौ)	'तीन सौ' आदि'।

विशेष—(पौणे) तथा (साड्ढे) रूपिमो का प्रयोग अकेले नही होता। ये हमेशा गणनामूलक पूर्ण सख्यावाचक पदो से पूर्व आते हैं। (सवा≈स्वाए) का प्रयोग अकेले भी होता है।

[2] घटन-प्रक्रिया के उदाहरण इस प्रकार हैं—

(चार घट दो)	=	(दो)	'दो'
(दस घट चार)	=	(छे)	'छ'
(सौ घट एक)	=	(नडिनवे)	'निन्यानवे'
(जाह्र घट दस)	=	(नौ सौ नब्बे)	'नौ सौ नब्बे'
(जाह्र घट सौ)	=	(नौ सौ)	'नौ सौ' आदि ।

सभी सख्यावाचक परप्रत्ययो या रूपिमो के योग से आए रूपस्वनिमिक परिवर्तनो को 'रूप-स्वन-प्रक्रिया' मे दिखाया गया है ।

3 7 क्रियापद [वर्बज]—

'क्रिया, वह शब्द है जिससे किसी कार्य का करना या होना समय तथा प्रकार की ओर सकेत करके पाया जाता है तथा विधेय के रूप मे प्रयुक्त होता है ।'[1]

क्रिया-विधेय से क्रिया के पक्ष [एस्पैक्ट] प्रकार [मूड] काल [टैन्स], पुरुष, लिंग तथा वचन आदि बातो का पता चलता है । यहाँ पर इन सभी बातो को लेकर विचार किया जा रहा है ।

मण्डियाली के समस्त क्रियापदो या धातुओ को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] मूल-क्रिया पद या धातु तथा

[2] योगिक क्रियापद या धातु ।

3.7.1 मूल-क्रियापद या धातु—

क्रिया का मूल या मुख्य रूप ही मूल क्रिया कहलाती है । क्रिया-धातु उस अश को कहते हैं जो कि एक ही क्रियापद के विभिन्न रूपो मे विद्यमान रहता है । उदाहरणार्थ —'चल' धातु को लिया जा सकता है । 'चल'-'चलना' धातु के विभिन्न रूप इस प्रकार होगे —चला, चलो, चलना, चल्या, चलगा, चलेगे तथा चल्गी आदि । इन सभी रूपो मे 'चल' धातु विद्यमान है । अर्थात् क्रिया धातु मे—'आ,-ओ,-ई,-ना, -णा,-या तथा-ग—आदि परप्रत्यय जोडने से क्रिया धातु के विभिन्न रूप बनाए जाते हैं ।

मूल क्रिया या धातु के दो भेद किए जा सकते हैं ।—

[1] अकर्मक-धातु तथा

[2] सकर्मक-धातु ।

3 7 1 1 अकर्मक धातु—

जिस धातु से सूचित होने वाले व्यापार का फल केवल कर्त्ता पर ही पडे उसे

---

1 'A Verb is a world denoting action, being or becoming with some reference to time and manner and used as predicate'
A. Sharma, A Basic Grammer of Modern Hindi, P. 27

ाकर्मक-धातु कहते हैं। उदाहरणार्थ—म्हुठा जाँहु आँ, 'लडका जाता है।' वाक्य मे क्र्या के व्यापार का फल केवल कर्त्ता पर ही पड रहा है। कर्त्ता—'म्हुठा' 'लडका' है जस पर क्रिया के व्यापार का फल पड रहा है। इसी कारण—जा—'जाना' क्रिया ाकर्मक है। जैसा कि 'अकर्मक' शब्द से स्वयं ही स्पष्ट है कि बिना कर्म या 'कर्महीन' क्र्या-पद।

.7 1 2. सकर्मक-धातु—

जिस धातु से सूचित होने वाले व्यापार का फल कर्ता से निकल कर किसी दूसरी ास्तु पर पडे उसे 'सकर्मक धातु' कहते हैं। उदाहरणार्थ—मैं चोर पकडया—'मैंने ोर पकडा' वाक्य मे पकड्या—'पकडा' क्रिया के व्यापार का फल कर्ता 'मैं'—मैंने से निकल कर 'चोर' पर पडता है जो कि यहाँ पर 'कर्म' है। इसी कारण—पकड्या—'पकडा' सकर्मक-धातु है। 'सकर्मक' शब्द से स्वय ही स्पष्ट है कर्म-सहित। अत कर्म के साथ आने वाली क्रिया 'सकर्मक' कहलाती है।

3 7.1 3 अकर्मक तथा सकर्मक धातुएँ—

मण्डियाली की समस्त क्रिया धातुएँ अकर्मक या सकर्मक दोनो मे से किसी एक वर्ग के अन्तर्गत रखी जा सकती हैं। अ-कर्मक-धातुओ से सकर्मक-धातुएँ तथा कई बार सकर्मक से अकर्मक-धातुएँ व्युत्पन्न होती हैं। अकर्मक से सकर्मक तथा सकर्मक से अकर्मक ातुएँ व्युत्पन्न होने पर आन्तरिक ध्वनि परिवर्तन होते हैं, जिन्हे दूसरे शब्दो मे रूप-ध्वनिमिक परिवर्तन कहा जा सकता है।

अकर्मक से सकर्मक तथा सकर्मक से अकर्मक-धातुएँ व्युत्पन्न होने पर मण्डि-याली मे निम्नाकित रूपस्वनिमिक परिवर्तन आते हैं, जिन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

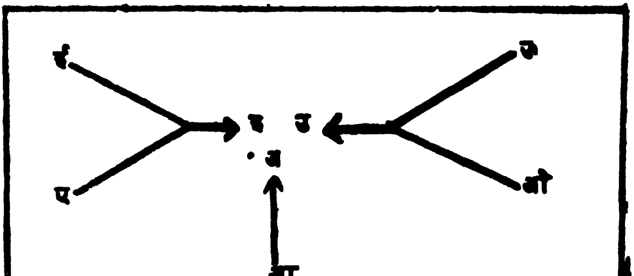

*

उदाहरणार्थ—

3.7.1 3 1.

रूपस्वनिमिक परिवर्तन	सकर्मक	अकर्मक	
	मूल	व्युत्पन्न	
	तोड	टुट	'टूटना'
/ओ→उ/	फोड	फुट	'फूटना'
	खोल्ह	खुल	'खुलना'
	झोल	झुल	'झूलना'
	मोड	मुड	'मुडना'
/ई→इ/	चीर	चिर	'चीरना'
	खीज	खिज	'खीचना'
{/ए→इ/}	बेच	बिक	'बिकना'
{/च→क्/}	फेर	फिर	'फिरना'
/ख→स/	देख	दिस	'दिखना'
	घूम	घुम	'घूमना'
/ऊ→उ/	लूट	लुट	'लूटना'
	बाल	बल्	'जलना'
/आ→अ/	बाढ	बढ	'कटना'
	टाल	टल	'टलना'
	पाल	पल	'पलना'

3.7.1.3 2.

अकर्मक	सकर्मक	
मूल	व्युत्पन्न	
चल	चला	'चलना'
चक	चका	'उठाना'

3.7.2. योगिक-धातु—

जो धातुएँ मूल धातुओ मे परप्रत्यय के योग से बनाई जाती हैं, उन्हें योगिक-धातुएँ कहा जाता है। उदाहरणार्थ—'घुल' से 'घुला' अर्थात् 'लड' से 'लडा' तथा 'चल' से 'चला' आदि। योगिक धातुओ के अन्तर्गत प्रेरणार्थक-धातुओ को लिया गया है।

3 7 2 1 प्रेरणार्थक-धातु—

अकर्मक तथा सकर्मक धातुओ से प्रेरणार्थक धातुएँ व्युत्पन्न होती है। प्रेरणार्थक-धातुएँ सकर्मक हुआ करती हैं। 'मूल क्रिया के जिस विकृत रूप से क्रिया के व्यापार मे कर्ता पर किसी की प्रेरणा समझी जाती है, उसे प्रेरणार्थक-धातु कहते हैं।'[1]

उदाहरणार्थ— राम, स्याम्मा थे चिट्ठी पढ़ाँ आं - 'राम, श्याम से चिट्ठी पढाता है।' इस वाक्य मे मूल धातु 'पढ' है, जिससे व्युत्पन्न रूप 'पढ़ा' बना। इससे यह पता चलता है कि श्याम पढने का कार्य राम की प्रेरणा से कर रहा है, इसलिए 'पढा' प्रेरणार्थक धातु है, तथा 'राम प्रेरक [मात्र] कर्ता और स्याम— 'श्याम' प्रेरित कर्ता है।

'मालिक नौकर से गाडी चलवाता है।' इस वाक्य मे मूल-धातु 'चल' का विकृत रूप 'चलवा' है जिससे जाना जाता है कि नौकर गाडी चलाने का कार्य मालिक की प्रेरणा से करता है। इसलिए 'चलवा' प्रेरणार्थक-धातु है और 'मालिक' प्रेरक कर्ता है तथा 'नौकर' प्रेरित कर्ता है।'[2]

अतः प्रेरणार्थक-धातुएँ मूल-धातुओ मे परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न होती है। मण्डियाली मे प्रेरणार्थक-धातुएं दो प्रकार की हैं—

[1] प्रथम प्रेरणार्थक-धातुएं तथा

[2] द्वितीय प्रेरणार्थक-धातुएँ।

प्रेरणार्थक-धातुओ के इन दोनो रूपो मे अर्थ-स्तर पर अन्तर है। इस अन्तर को यहाँ पर स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है।

3 7 2 1 0 प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक धातुओ मे अन्तर—

प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक धातुओ मे अर्थ स्तर पर अन्तर होता है। प्रथम-प्रेरणार्थक धातुओ मे दो सज्ञाएँ होती हैं, जिनमे प्रथम सज्ञा प्रेरक तथा दूसरी सज्ञा प्रेरित हुआ करती हैं। उदाहरणार्थ—सीता, गीता जो चार बजे पढाँई—'सीता, गीता को चार बजे पढाती है।' इस वाक्य मे 'सीता' कर्तृ प्रेरक है तथा 'गीता' प्रेरित है, और 'पढा' प्रथम प्रेरणार्थक रूप है।

द्वितीय प्रेरणार्थक मे तीन सज्ञाएँ होती है, जिनमे प्रथम सज्ञा मात्र-प्रेरक दूसरी-सज्ञा प्रेरित और प्रेरक तथा तीसरी सज्ञा मात्र-प्रेरित हुआ करती है।

उदाहरणार्थ—राम, स्याम्मा जो चार बजे पढवाँ आं—'राम, श्याम को चार बजे पढवाता है।' इस वाक्य मे 'राम' मात्र कर्ता प्रेरक है 'कोई व्यक्ति' [जिसकी ओर सकेत मात्र है] प्रेरित-प्रेरक है, तथा —स्याम 'श्याम' प्रेरित है, तथा 'पढवा' द्वितीय प्रेरणार्थक रूप है।

---

1 कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, पृ० 88

2 कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी-व्याकरण, पृ० 88

अत प्रथम प्रेरणार्थक मे जहाँ कर्ता प्रेरक और प्रेरित हुआ करते हैं, वहाँ द्वितीय प्रेरणार्थक मे कर्ता प्रेरक, प्रेरित प्रेरकतथा प्रेरित हुआ करते हैं। इन्हे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

⌈ सज्ञा ⌉
प्रथम प्रेरणार्थक = + मात्र कर्ता ⌈ सज्ञा ⌉
⌊ + प्रेरक ⌋ ⌊ + कर्ता प्रेरित ⌋ + प्रेरणार्थक[1]

⌈ सज्ञा ⌈ सज्ञा ⌉ ⌊ सज्ञा ⌉
द्वितीय प्रेरणार्थक - + प्रेरित + प्रेरित ⌊ + कर्ता प्रेरित ⌋ + प्रेरणार्थक[2]
⌊ + प्रेरक, ⌊ + प्रेरक, ⌋

प्रथम प्रेरणार्थक रूप क्रिया धातुओ मे (-आ) परप्रत्यय तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप (-वा) परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न होते हैं। अत (-आ) रूपिम प्रथम प्रेरणार्थक परप्रत्यय है तथा (-वा) रूपिम द्वितीय प्रेरणार्थक परप्रत्यय है।

प्रथम प्रेरणार्थक परप्रत्यय (-आ) तथा द्वितीय प्रेरणार्थक परप्रत्यय (-वा) से व्युत्पन्न रूपो को लेकर इस प्रकार विचार किया जा सकता है—

3 7 2 1 1 **प्रथम प्रेरणार्थक—**

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि प्रेरणार्थक धातुओ मे क्रिया हेतु दूसरे व्यक्ति को प्रेरणा दी जाती है या क्रिया हेतु प्रेरित किया जाता है। अकर्मक तथा सकर्मक धातुओ से प्रथम प्रेरणार्थक रूप बनाने के लिए क्रिया धातु मे (-आ) परप्रत्यय जोडा जाता है। अत प्रथम प्रेरणार्थक परप्रत्यय (-आ) है, जिसके सपरिवर्तक निम्नाकित हैं—

(-आ)

०० -आ, ०० -या, ०० -याल,, ०० -वाल, ०० -ϕ

[1] ०० -आ—परप्रत्यय के योग से अकर्मक-धातुओ मे निम्नाकित रूप-स्वनिमिकपरिवर्तन आते हैं—

उदाहरणार्थ—

/आ>अ/, /ई>अ/, /इ>अ/, /ऊ>उ/, /ए>अ/ तथा /ल>ल्ह/।

विशेष—सकर्मक रूप भी धातु मे परप्रत्यय जोडने से व्युत्पन्न होते हैं, अत सकर्मक-धातुएँ भी योगिक धातुएँ हुआ करती है।

उदाहरणार्थ—

अकर्मक धातु

मूल धातु	+परप्रत्यय	प्र० पे० धातु	
जाग		जगा	'जगाना'
हार		हरा	'हराना'
छीक		छका	'छीकाना'
चिण		चणा	'चिनाना'
हिल		हुला	'हिलाना'
घूम		घुमा	'घुमाना'
कूद		कुदा	'कुदाना'
छेक		छका	'फड़ाना'
खेल	(-आ)	खल्हा	'खिलाना'
गल		गला	'पिघलाना'
तर		तरा	'तैराना'
सट		सटा	'फेंकाना'
घुल़		घुल़ा	'लडाना'
चमक		चमका	'चमकाना'
भगरेल़		भगरेल़ा	'उलझाना'

सकर्मक धातुओ मे (-आ) परप्रत्यय के योग से निम्नाकित रूप-स्वनिमि परिवर्तन आते हैं—

उदाहरणार्थ—

/आं>अँ/, /आ>अ/, /ई>अ/, /इ>अ/, /ऊ>उ/, ओ>उ/ तथा /ल>ल्ह/।

*

उदाहरणार्थ—

सकर्मक-धातु

सकर्मक मूल	+परप्रत्यय	प्र० प्रे० धातु	
लाँघ		लँघा	'लँघाना'
बाँट		बँटा	'बँटाना'
कात		कता	'कताना'
नाच		नचा	'नचाना'
जीत		जता	'जिताना'
चीर		चरा	'चिराना'
चिण		चणा	'चिनाना'
लिख		लखा	'लिखाना'
तोड		तुडा	'तुडाना'
ओठ	(-आ)	उठा	'उठाना'
खोल्ह		खुल्हा	'खुलाना'
बुण		बुणा	'बुनाना'
सुण		सुणा	'सुनाना'
कर		करा	'कराना'
पढ		पढा	'पढाना'
पूछ		पुछा	'पुछाना'
कूट		कुटा	'मराना, चुथाना'

सकर्मक-धातु

सकर्मक मूल	+परप्रत्यय	प्र० प्रे० धातु
पकड	(-आ)	पकडा 'पकडाना'
निगल		निगला 'निगालना'
समझ		समझा 'समझाना'

[2] ००-या—सपरिवर्तक का प्रयोग केवल सकर्मक-धातुओ मे ही होता है। जिसके योग से निम्नांकित रूपस्वनिमिक परिवर्तन आते हैं—

उदाहरणार्थ—/ई>ϕ/ ।

सकर्मक-धातु	+परप्रत्यय	प्र० प्रे० धातु	
अकर्मक-धातु			
पी	(-या)	प्या	'पिलाना'
सी		स्या	'सिलाना'

[3] ०० याल—सपरिवर्तक के योग से अकर्मक तथा सकर्मक धातुओ मे निम्नांकित रूपस्वनिमिक परिवर्तन आते हैं ।

उदाहरणार्थ—/ऐ>अ/ तथा/इ>अ/ ।

उदाहरणार्थ—

[क] अकर्मक-धातु

	+परप्रत्यय	प्र० प्रे० धातु	
अकर्मक-मूल			
बैठ	(-याल)	बठ्याल	'बिठाना'

[ख] सकर्मक-धातु

	+परप्रत्यय	प्र० प्रे० धातु	
सकर्मक-मूल			
सिख	(-याल)	सख्याल	'सिखाना'

[4] ००-वाल—सपरिवर्तक का प्रयोग केवल अकर्मक धातुओ मे ही होता है, जिसके योग से निम्नांकित रूप-स्वनिमिक परिवर्तन आते है—उदाहरणार्थ—
/3>ϕ/तथा/अ >ϕ/ ।

उदाहरणार्थ—

अकर्मक-धातु	+परप्रत्यय	प्र० प्रे० धातु	
अकर्मक-मूल			
उठ	(-वाल)	ठ्वाल	'उठाना'
उबल		ब्वाल	'उबालना'

विशेष—बहुवचन तथा आदरसूचक के लिए परप्रत्यय /-याल/ के स्थान पर /-याला~यालो/तथा परप्रत्यय/-वाल/ के स्थान पर /वाला~वालो/ का प्रयोग होता है। इसी प्रकार /-या/ परप्रत्यय के स्थान पर /-यावा~याओ/ का प्रयोग होता है। अर्थात् इन परप्रत्ययो का प्रयोग तब होता है, जब प्रेरित बहुवचन या आदर-सूचक होता है।

[5] ०० -वार—सपरिवर्तक का प्रयोग अकर्मक धातुओं मे ही होता है, जिसके योग से निम्नांकित रूपस्वनिमिक परिवर्तन आते हैं।

उदाहरणार्थ—/उ>ϕ/।

अकर्मक-धातु	+परप्रत्यय	प्र० प्रे० धातु	
अकर्मक-मूल			
उतर	(-वार)	तृवार	'उतारना'

[6] ००-ϕ संपरिवर्तक का प्रयोग सकर्मक तथा अकर्मक धातुओं मे होता है। जिन धातुओं मे /-ϕ /सपरिवर्तक जोडा जाता है, वे आकारात हुआ करती हैं।

उदाहरणार्थ—

[क] अकर्मक-धातु	+परप्रत्यय	प्र० प्रे० धातु	
सरमा		सर्‌मा	'शर्माना'
पछता		पछता	'पछताना'
[ख] सकर्मक-धातु	(-ϕ)	प्र० प्रे० धातु	
दुखा		दुखा	'दुखाना'
ग्‌वा		ग्‌वा	'गवाना'
दोह्‌रा		दोह्‌रा	'दोहरा'

उपर्युक्त धातुएँ प्रेरणार्थक धातुओं के रूप मे प्रयुक्त होती हैं, तो इनमे अलग से कोई योगिक परप्रत्यय नही जुडता, इसलिए यहाँ पर /-ϕ/ सपरिवर्तक की स्थिति स्वीकार की गई है।

3 7 2 1 2. द्वितीय प्रेरणार्थक—

अकर्मक तथा सकर्मक-धातुओं से द्वितीय प्रेरणार्थक रूप बनाने के लिए क्रिया धातु मे (-वा) परप्रत्यय जोडा जाता है। (-वा) परप्रत्यय के सपरिवर्तक निम्नांकित हैं—

(-वा)

००-वा

[1] ००-वा—परप्रत्यय के योग से अकर्मक धातुओं मे निम्नांकित रूपस्वनिमिक परिवर्तन आते हैं—उदाहरणार्थ—

/आ>अ/ /ऊ>उ/,/ए>अ/,/ उ>अ/, /इ>अ/, तथा/ ओ>अ/।

विशेष—परप्रत्यय (-वार) बहुवचन तथा आदरसूचक के लिए (-वारा∾वारो) मे बदल जाता है।

उदाहरणार्थ—

[क] अकर्मक-धातु

अकर्मक-मूल	+परप्रत्यय	द्वि० प्रे० धातु	
जाग		जग्वा	'जगवाना'
हास्स		हस्वा	'हँसवाना'
घूम		घम्वा	'घुमवाना'
कूद		कद्वा	'कुदवाना'
टेक		टक्वा	'टिकवाना'
घुल		घल्वा	'लडवाना'
चिण		चण्वा	'चिनवाना'
मिल	(-वा)	मल्वा	'मिलवाना'
दौड		दडवा	'दुडवाना'
मल		मलवा	'मालिश करवाना' [मलवाना]
जम		जम्वा	'जमवाना'
बदल		बदल्वा	'बदलवाना'

००-वा—परप्रत्यय के योग से सकर्मक धातुओ मे निम्नांकित रूप स्वनिमिक परिवर्तन आते हैं—

/आ>अ/, /इ>अ/, /उ>अ/, /ई>अ/,/ओ>अ/, तथा /उट>अड/ ।

उदाहरणार्थ—

[ख] सकर्मक धातु

सकर्मक-मूल	+परप्रत्यय	द्वि० प्रे० धातु	
कमा		कम्वा	'कमवाना'
छा		छ्वा	'छवाना'
गा		ग्वा	'गवाना'
लिख		लख्वा	'लिखवाना'
गिण		गण्वा	'गिनवाना'
बुण		बण्वा	'बुनवाना'
सुण		सण्वा	'सुनवाना'
जीत	(-वा)	जत्वा	'जितवाना'
चीर		चर्वा	'चिरवाना'
मोड		मड्वा	'मुडवाना'
छुट		छड्वा	'छुड़वाना'
चर		चर्वा	'चरवाना'

कुछ अकर्मक स्वरांत धातुएँ ऐसी हैं जिनमे (-वा) परप्रत्यय के योग से निम्नांकित रूपस्वनिमिक परिवर्तन आते हैं—उदाहरणार्थ—/ओ>φ/तथा /औ>φ / ।

[क] अकर्मक धातु

अकर्मक मूल	+परप्रत्यय	द्वि० प्रे० धातु	
रो	(-वा)	र्‌वा	'रुलवाना'
सो		स्वा	'सुलवाना'

सकर्मक स्वरात धातुओ मे (-वा) परप्रत्यय के योग से निम्नाकित रूपस्वनिमिक परिवर्तन होते हैं—
उदाहरणार्थ—/आ>φ/,/ ऊ>φ/, /ए>φ/, तथा /ओ>φ/ ।

[ख] सकर्मक-धातु

सकर्मक मूल	+परप्रत्यय	द्वि० प्रे० धातु	
खा		ख्वा	'खिलवाना'
पा		प्वा	'डलवाना'
छू	(-वा)	छ्वा	'छुलवाना'
दे		द्वा	'दिलवाना'
धो		ध्वा	'धुलवाना'

3.7 3 क्रिया-धातु आक्षरिक व्यवस्था—

आक्षरिक व्यवस्था के आधार पर मण्डियाली मे निम्नाकित अक्षरो वाली क्रिया धातुएँ मिलती हैं—

उदाहरणार्थ—

[1] स	आ	'आना'
[2] सव	उड	'उडना'
[3] स व	ओढ	'ओढना'
[4] स-व स व	उतर	'उतरना'
[5] व सः	जा	'जाना'
[6] व स व	मिल	'मिलना'
[7] व स व	चीर	'चीरना'

विशेष—बहुवचन तथा आदरसूचक के लिए (-वा) परप्रत्यय के स्थान पर (-वावा~ वाओ) परप्रत्यय का प्रयोग होता है ।

[8] व स व	हौड	'चल, चलना'
[9] व स-व स व	निकल	'निकलना'
[10] व स व-व स व	भगरेल्	'उलझाना'
[11] व स व-व स व	मुक्खर	'मुकरना, अस्वीकारना'
[12] व स व व-व स.व	पच्छयाण	'पहिचान'

मण्डियाली मे क्रिया धातुओ की अक्षर व्यवस्था उपर्युक्त प्रकार की ही मिलती है। यह अक्षर व्यवस्था क्रिया-धातुओ के प्रेरणार्थक रूपो को लेकर है। अर्थात् उपर्युक्त उदाहरणो मे अन्तिम उदाहरण को छोडकर अन्य सभी क्रिया-धातुओ के प्रेरणार्थक रूप सम्भव हैं। वैसे क्रिया-धातुओ की अक्षर व्यवस्था और भी मिलती है मगर ऐसे रूपो के प्रेरणार्थक रूप सम्भव नही। ऐसी क्रिया धातुएँ इस प्रकार हैं—उदाहरणार्थ—पटराल—'मारना', टबल्याख—'देखते रहना' या 'हैरान होना' आदि।

3 8 [पक्ष असपैक्ट] —

डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव 'पक्ष' [असपैक्ट] को कालबोध के एक स्तर के रूप मे स्वीकार करते हैं—'कालबोध का दूसरा स्तर वह है जो क्रिया व्यापार मे आयुक्त समय-विस्तार [कालावधि]के बोध को निर्धारित एव नियन्त्रित करता है, जिसे व्याकरण मे 'पक्ष' कहते हैं।'[1]

डॉ० आर्येन्द्र शर्मा के शब्दो मे—'क्रिया के वे रूप जो कार्य आदि के लक्षण के प्रभेद की ओर सकेत करते हैं 'पक्ष' कहलाते है।'[2]

पक्षो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] असमापक-पक्ष [इम्परफैक्टिव असपैक्ट]

[2] समापक-पक्ष [परफैक्टिव अस्पैक्ट]

क्रिया व्यापार के सामान्य [-सीमित] असमापक तथा समापक पक्षो को काल के सदर्भ मे देखते हुए उन्हे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

---

1 डॉ० रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, 'हिन्दी भाषा-विज्ञान अक' मे सम्पादित लेख, 'काल और पक्ष', पृ० 201

2 'The form of a verb Indicating the type of the character of the action etc. Denoting by it are called aspect.'

A Sharma, A Basic Grammar af modern Hindi, P. 75.

पक्ष	असमापक पक्ष		समापक-पक्ष
काल	अभ्यासित	सातत्य	
	[हांऊ] खांह् आं ।	[हांऊ] खांद्‌दा लगिरा ।	मैं खाद्‌दिरा ।
	[मैं] खाता हूं ।'	[मै] खा रहा हूं ।'	मैने खाया है ।
वर्तमान	[हांऊ] चलां आं ।	[हांऊ] चलदा लगिरा ।	हाऊँ चलिरा ।
काल	[मै] चलता हूं ।'	[मै] चल रहा हूं ।'	'मैं चला हूं ।'
	[हाऊ] खांह् था ।	[हाऊँ] खांद्‌दा लगिरा था ।	'मं खद्‌दिरा था ।
	[मैं] खाता था ।'	[मै] खा रहा था ।'	मैने खाया था ।
भूतकाल	[हाऊँ] चला था ।	[हाऊँ] चलदा लगिरा था ।	[हाऊँ] चलिरा था ।
	[मै] चलता था ।'	[मै] चल रहा था ।'	'मै चला था ।'
	[हाऊँ] खांह्‌गा ।	....	......
	[मै] खाऊँगा ।'	.....	......
भविष्यत्	[हाऊँ] चलगा ।	.	...
काल	[मं] चलूगा ।'		

[1] {अभ्यासित/—आंह्, आं
पक्ष— धातु+[2] {सातत्य /—द+वचन, लिंग प्रत्यय≠≠लगिर-} +
वचनलिंग प्रत्यय
[3] समापक/—इर—

मण्डियाली मे पक्षो को लेकर निम्नाकित नियमो को ध्यान मे रखना आवश्यक है ।

3 8 1. असमापक पक्ष—

असमापक-पक्ष के अन्तर्गत अभ्यासित तथा सातत्य-पक्षो को लेकर निम्नाकित नियम ध्यान मे रखने आवश्यक हैं—

3 8.1.1 अभ्यासित पक्ष —

अभ्यासित पक्ष मे निम्नाकित नियम ध्यान मे रखना आवश्यक है—

नियम—[1] [धातु+आंह्, आं+वचन, लिंग प्रत्यय≠≠सतार्थक क्रिया +वचन, लिंग प्रत्यय]

अर्थात् उपर्युक्त नियम अभ्यासित वर्तमान काल तथा भूतकाल दोनो कालो के अभ्यासित पक्षो मे जुडने वाली प्रक्रियाओ को व्यक्त करता है ।

अत. क्रिया धातु के साथ अभ्यासित पक्ष [वर्तमान काल] तथा अभ्यासित पक्ष [भूतकाल] एकवचन पुल्लिग मे निम्नाकित अन्तर ध्यान देने योग्य है—

[क] अभ्यासित पक्ष [वर्तमान काल] मे नियम इस प्रकार है—

[1] [धातु + आंह्, आं ≠ ≠ सत्तार्थक—क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय] अर्थात [धातु + आंह्, आं ≠ ≠ ह् + आ /इ/ए]

[2] अभ्यासित पक्ष वर्तमानकाल मे [-आंह्, आं] के कारण सत्तार्थक-क्रिया अनुनासिक हो जाती है । अतः सत्तार्थक-क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय इस प्रकार जुडते हैं—

√ह् + आ → आ + अनुनासिकता → आं
√ह् + ई → ई + अनुनासिकता → इं
√ह् + ए → ए + अनुनासिकता → एँ

अर्थात् सत्तार्थक-क्रिया धातु (ह्-) मे लिंग, वचन प्रत्यय के योग से धातु (ह्-) का लोप हो जाता है ।

नियम—[2] $\left.\begin{matrix}\text{आ + आंह्}\\ \phi\text{-आ + आं}\end{matrix}\right\} \rightarrow \left\{\begin{matrix}\text{-आंह्}\\ \text{-आं}\end{matrix}\right\}$ अर्थात् धातु + आंह्, आं

उदाहरणार्थ—

खा + आंह् → खांह् ≠ ≠ सत्तार्थक-क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय [खाता है]
जा + आंह् → जांह् ≠ ≠ सत्तार्थक-क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय [जाता है]
चल + आं → चलां ≠ ≠ = सत्तार्थक-क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय [चलता है]
कर + आं → करां ≠ ≠ सत्तार्थक-क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय [करता है]

उपर्युक्त नियम [2] मे (आ + आंह्) तथा (ϕ~अ + आं) से (-आंह्) तथा (-आं) दोनो बनते हैं ।

नियम—[3] अभ्यासित भूतकाल मे निम्नाकित नियम लागू होते हैं—

[1] (धातु + आंह्, आं + वचन, लिंग प्रत्यय ≠ ≠ थ + वचन, लिंग प्रत्यय) अर्थात् (धातु + आंह्, आं + एक० व० पुल्लिग = धातु + आंह्, आं) अर्थात् (धातु + आंह्, आं + बहु० व० पुल्लिग = आंह्, आं + एँ) [अर्थात (धातु + आंह्, आं + एक व० तथा बहुव० स्त्री०)]

(= आंह्, आं + इं)

उदाहरणार्थ—

[1]	हाऊँ पढ़ां था ।	'मै पढ़ता था ।'
[2]	हाऊँ जांह् था ।	'मै जाता था ।'
[3]	आस्से पढ़ां एँ थे ।	'हम पढ़ते थे ।'

[4] आस्से जाँह् एँ थे। 'हम जाते थे।'
[5] हाऊँ पढ़ाँई थी। 'मैं पढ़ती थी।'
[6] आस्से जाँह् इँ थी। 'हम जाती थी।'

उपर्युक्त उदाहरणो से यह स्पष्ट हो जाती है कि (आँह्~आँ) के साथ अभ्यासित भूतकाल मे एक वचन पुल्लिंग प्रत्यय (-आ) का प्रयोग नही होता है, जबकि बहुवचन, पुल्लिंग प्रत्यय (-ए) तथा स्त्रीलिंग एक वचन तथा बहुवचन प्रत्यय (-ई) का प्रयोग होता है। ये दोनो वचन, लिंग प्रत्यय (-आँह्~आँ) के कारण अनुनासिक हो जाते हैं।

विशेष—

मण्डियाली मे एक विशेष अक्षर नमूने वाली क्रिया धातुएँ (पक्ष-प्रत्यय≠≠ सहायक क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय) के साथ आएँ तो उनमे 'प्राणत्व' अर्थात् 'ह्' ध्वनि का आगमन हो जाता है। क्रिया धातुओ का अक्षर नमूना इस प्रकार है—

व स व→ (चल्) 'चल, चलना'
(कर) 'कर, करना'
(तर) 'तैर, तैरना'
(मर) 'मर, मरना'
(मल्) 'मालिश करना' आदि।

उपर्युक्त नमूने वाली क्रिया धातुओ मे व्यजनो के मध्य 'अ' स्वर ही आता है, अन्य स्वर नही। अन्य स्वरो के आगमन पर तथा अन्य अक्षर नमूने वाली क्रिया-धातुओ मे 'प्राणत्व' अर्थात् 'ह्' ध्वनि का आगमन नही होता है।

उदाहरणार्थ—

(चीर्) 'चीर, चीरना'
(घूम) 'घूम, घूमना'
(फेर) 'फेर, फेरना'
(झाड) 'झाड, झाडना'
(उट्ठ) 'उठ, उठना' आदि।

(अभ्यासित प्रत्यय≠≠सहायक क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय) के साथ उदाहरण इस प्रकार हैं—

व स व→(चल्) = (चह्लाँ आँ) 'चलता है।'
(कर) = (कह्राँ इँ) 'करती है।'
(तर) = (तह्राँ एँ) 'तैरते हैं।'

उपर्युक्त उदाहरणो को ध्यान मे रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि /चल/ तथा /चह्ल/ और /चलाँ/ तथा /चह्लाँ/ मे आर्थी-स्तर पर कोई अन्तर नही है। दोनो शब्द एक ही अर्थ के वाचक हैं। वास्तव मे मूल क्रिया धातुएँ—

/चल/, /कर/ तथा /तर/ ही हैं। अर्थात् मूल रूप मे वे /चह्ल/, /कह्र/ तथा /तह्र/ नही हैं। अभ्यासित-पक्ष मे वे /चह्लाँ/ /, /कह्राँ/ तथा /तह्राँ/ रूप मे मिलती है। मगर /चलाँ/ चह्लाँ/, /कराँ/ /कह्रा/ तथा /तराँ/ /तह्राँ / मे आर्थी-स्तर पर अन्तर न होने के कारण /चलाँ/, /कराँ/ तथा /तराँ/ रूपो को ही स्वीकार किया गया है।

(आँह्≈आँ) के नियम को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

अभ्यासित-पक्ष

√आकारांत	+ईकारांत	+स्वरांत, व्यंजनांत -आकारांत-ईकारांत
√+आँ	√+याँ	√+आँ
+ह्	—ह	—ह

उदाहरणार्थ—

पी+याँ	→	पीयाँ	'पीता'
सी+याँ	→	सीयाँ	'सीता' आदि।

अन्य उदाहरण तालिका मे दिए जा चुके है।

3.8.1 2 सातत्य पक्ष—

सातत्य पक्ष मे निम्नांकित नियम ध्यान मे रखने आवश्यक है—

नियम—[1] (धातु+द्+वचन, लिंग प्रत्यय≠≠लग+इर वचन, लिंग प्रत्यय) सातत्य पक्ष के वर्तमान-काल मे सहायक-क्रिया—(-आँ) का लोप हो जाता है। अर्थात् सहायक-क्रिया की अनुपस्थिति वर्तमान काल का बोध कराती है।

नियम—[2] स्वरांत धातु मे—

यदि धातु स्वरांत हो तो दो प्रक्रियाएँ होती हैं या जुडती हैं—

[1] स्वर अनुनासिक हो जाता है।

[2] (-द-) दीर्घ (-दद-) हो जाता है।

3.8 2 समापक पक्ष—

समापक पक्ष के अन्तर्गत निम्नांकित नियमो को ध्यान मे रखना आवश्यक है—

नियम—[1] (धातु+इर+वचन, लिंग प्रत्यय)

[क] समापक पक्ष मे वर्तमान काल के अन्तर्गत सातत्य पक्ष की तरह ही सहायक-क्रिया (आँ) का लोप हो जाता है।

नियम—[2] (धातु+द+इर+वचन, लिंग प्रत्यय)

उदाहरणार्थ—

मै खाद्दिरा 'मैने खाया है।'

[1] अर्थात् धातु 'खा' के साथ√+द+इर+वचन, लिंग प्रत्यय जुड़ता है।

[2] (-द) दीर्घ (-द द-)-हो जाता है।

नियम—[3] (धातु+त्+इर+वचन, लिंग प्रत्यय)

अर्थात् कुछ स्वरांत [ईकारांत तथा एकारांत] तथा व्यंजनांत [कर] धातुएँ ऐसी हैं, जिनमे (-त) जुड़ता है।

उदाहरणार्थ—

√पी—मै पित्तिरा	'मैने पिया है।'	/ई>इ/
√सी—मै सित्तिरा	'मैने सिला है।'	/ई>इ/
√दे—मै दित्तिरा	'मैने दिया है।'	/ए>इ/
√कर—मै कित्तिरा	'मैने किया है।'	/कर>कि/
		/र>ϕ/

उपर्युक्त धातुओ के साथ निम्नांकित प्रक्रियाएँ होती या जुड़ती हैं—

[1] √+त्+इर+वचन, लिंग प्रत्यय।

[2] (-त) दीर्घ (-त्त-) हो जाता है।

नियम—[4] [√जा+इर+वचन, लिंग प्रत्यय]

[1] समापक-पक्ष मे√जा अपना रूप ही बदल लेती है।

उदाहरणार्थ—

जा→गइरा 'गया है' /ज>ग/

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणो को ध्यान मे रखते हुए निम्नांकित रूप स्वनिमिक परिवर्तन हैं—/ई>इ/, /ए>इ/, /कर>कि/, /र>ϕ/तथा/ ज >ग/।

[1] अतः समापक पक्ष मे√+ (-द-) तथा (-त-)+इर+वचन, लिंग प्रत्यय के साथ स्वरांत धातुओ मे दीर्घ (-द द-) तथा (-त्त-) हो जाता है।

[2] समापक पक्ष मे स्वर अनुनासिक नही होता। उदाहरण तालिका मे दिए जा चुके हैं।

4.8.0 सहायक क्रिया [एग्जीलरी वर्ब] —

मण्डियाली सहायक-क्रिया के वर्तमान, भूत तथा भविष्यत् रूपो को इस प्रकार दिखा सकते हैं—

सहायक-क्रिया— √ह्-, √थ-, √ग- +वचन, लिंग प्रत्यय

नियम—[1] वर्तमान काल मे[$\sqrt{}$ह + वचन, लिंग प्रत्यय] मे [ह-] का लोप हो जाता है।

अर्थात् $\sqrt{}$ह + अ→अ + वचन, लिंग प्रत्यय।

सहायक-क्रिया को उदाहरणो सहित तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष	[हाऊँ चलाँ] आँ।	[आस्से चलाँ] एँ
	[मैं चलता] हूँ।'	[हम चलते] हैं।'
म० पुरुष	[तू चलाँ] आँ।	[तुस्से चलाँ] एँ।
पुल्लिग	[तू चलता] है।'	[तुम चलते] हो।']
अ० पुरुष	[से चलाँ] आँ।	[सयो चलाँ] एँ।
	[वह चलता] है।'	[वे चलते] हैं।
	[खरा म्हठा] आ	[खरे म्हठे] ऐ।
	[अच्छा लड़का] है।	[अच्छे लड़के] हैं।'
उ० पुरुष	[हाऊँ चलाँ] ईं।	[आस्मे चलाँ] ईं।
	[मैं चलती] हूँ।'	[हम चलती] हैं।'
म० पुरुष	[तू चलाँ] ईं।	[तुस्से चलाँ] ईं।
स्त्रीलिंग	[तू चलती] है।'	[तुम चलती] हो।'
अ० पुरुष	[से चलाँ] ईं।	[सँयो चला] ईं।'
	[वह चलती] है।'	[वे चलती] है।'
	[खरी म्हठी] ई।	[खरी म्हठियाँ] ईं।'
	[अच्छी लड़की] है।'	[अच्छी लड़कियाँ] हैं।'

वर्तमान काल मे सहायक-क्रिया के विभिन्न रूपो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

लिंग	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिग	$\sqrt{}$ह + आँ→आँ	ह + एँ→एँ
	$\sqrt{}$ह + आ→आ	ह् + ए→ए
स्त्रीलिंग	$\sqrt{}$ह + ईं→ईं	ह् + ईं→ईं
	$\sqrt{}$ह् + ई→ई	ह् + ई→ई

उपर्युक्त तालिका से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मण्डियाली मे सहायक-क्रिया की धातु -ह अर्थात् $\sqrt{}$ह है। [$\sqrt{}$ह् + वचन-लिंग प्रत्यय→'आँ' [अभ्यासित] तथा 'आ'—[विशेषण] के साथ आता है।]

मण्डियाली मे सहायक-क्रिया को लेकर निम्नांकित बाते ध्यान देने योग्य हैं—

[1] जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि वर्तमान काल मे धातु -ह् अर्थात् √ह् का वचन, लिंग प्रत्यय के साथ लोप हो जाता है।

[2] भूतकाल मे सहायक-क्रिया रूप मण्डियाली मे हिन्दी के समान √थ+वचन लिंग प्रत्यय है।

अर्थात् √थ+आ/ई/ए/

[3] भविष्यत् काल मे भी सहायक-क्रिया का रूप हिन्दी के समान ही मिलता है—
√ग+वचन, लिंग प्रत्यय।

अर्थात्—√ग+आ/ई/ए

भविष्यत् काल मे स्वरात धातु मे √ग+आ/ई/ए के योग से निम्नांकित प्रक्रियाएँ जुडती हैं—

[1] धातु का स्वर अनुनासिक हो जाता है।
[2] [-ग-] दीर्घ [-ग् ग-] हो जाता है।

3 9 प्रकार मूडज —

'क्रिया के वे रूप जो कार्य के विधान करने की रीति को सकेतित करें [कि ऐसा होता है या करने की आज्ञा दी गई है, या किसी शर्त पर आधारित है, आदि] प्रकार कहलाते हैं।'[1]

कामता प्रसाद गुरु ने 'प्रकार के लिए 'अर्थ' शब्द का प्रयोग किया है —क्रिया के विधान करने की रीति को अर्थ कहते है।'[2]

'प्रकार' को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँट कर उनका अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है, जो कि निम्नांकित है—

[1] निश्चयार्थक
[2] अनिश्चयार्थक

उपर्युक्त दोनो वर्गों के अन्तर्गत आने वाले 'प्रकार' के उपभेदो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

1. 'The form of a verb indicating the manner of the action (whether it has happens, or is ordered to be done, or is dependent upon a condition etc.) are called moods'

A. Sharma, A Basic grammar of Modern Hindi, P 77

2. कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, पृ० 116

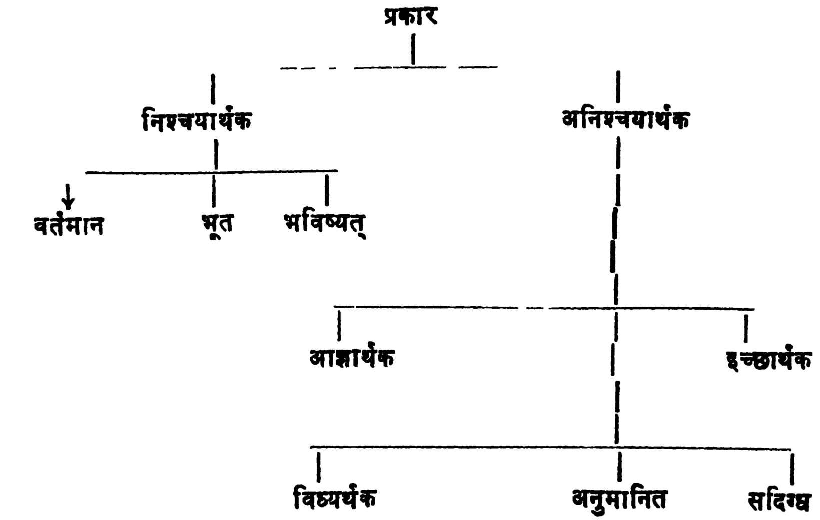

3 9 1 **निश्चयार्थक [इन्डीकेटिव]—**

क्रिया के जिस रूप से कोई निश्चित विधान या प्रश्न किया जाता है, उसे निश्चयार्थक कहते हैं। निश्चयार्थक का बोध निम्नांकित कालो तथा पक्षो मे होता है—

[1] निश्चयार्थक, काल से मिल कर वर्तमान निश्चयार्थक, भूत-निश्चयार्थक और भविष्यत् निश्चयार्थक की कोटियाँ निर्धारित करता है।

[2] वर्तमान काल तथा भूतकाल के सम्बन्ध मे अपूर्ण और पूर्ण पक्षो के उपभेद मिलते हैं, जिसमे अपूर्ण के भी दो भेद देखे जा सकते हैं—

[1] अभ्यामित तथा [2] सातत्य। पक्ष से सयोजित होकर इसीलिए हमे ऐसी भी कोटियाँ मिलती हैं—

अभ्यासित-निश्चयार्थक, सातत्य-निश्चयार्थक, तथा पूर्ण निश्चयार्थक आदि जिनका विश्लेषण नीचे किया गया है।

3.9 1.1 **वर्तमान-निश्चयार्थक [इन्डीकेटिव प्रेजेन्ट]—**

वर्तमान निश्यार्थक के दो भेद किए जा सकते हैं—

1 अपूर्ण वर्तमान तथा

2 पूर्ण-वर्तमान।

3.9.1.1 1 **अपूर्ण वर्तमान—**

अपूर्ण वर्तमान के दो उपभेद किए जा सकते हैं—

[1] अभ्यासित-निश्चयार्थक तथा

[2] सातत्य निश्चयार्थक।

3 9.1 1 1 1 अभ्यासित-निश्चयार्थक—

अभ्यासित वर्तमान निश्चयार्थक, क्रिया-धातु मे अभ्यासित वर्तमान कालिक कृदत (-आंह्, -आं) तथा सत्तार्थक-क्रिया (आ) के योग से बनता है।

मण्डियाली मे अभ्यासित वर्तमान निश्चयार्थक की रचना इस प्रकार होती है—

[√ + अभ्यासित वर्तमान कालिक कृदत ≠ ≠ सत्तार्थक-क्रिया]

अर्थात्—(धातु + आंह्, आं ≠ ≠ आं)

उदाहरणार्थ—पढ़-'पढ़ना' धातु के अभ्यासित वर्तमान निश्चयार्थक रूप इस प्रकार हैं—

		एकवचन	बहुवचन
	उ० पुरुष	हाऊँ पढ़ां आं।	आस्से पढां एँ।
		'मै पढ़ता हूं।'	'हम पढते हैं।'
	म० पुरुष	तू पढां आं।	तुस्से पढ़ां एँ।
पुल्लिग		'तू पढ़ता है।'	'तुम पढते हो।'
	अ० पुरुष	से पढ़ां आं।	स्यो पढां एँ।
		'वह पढ़ता है।'	'वे पढते हैं।'

		एकवचन	बहुवचन
	उ० पुरुष	हाऊँ पढां ईं	आस्से पढां ईं।
		'मैं पढता हूं।'	'हम पढती हैं।'
	म० पुरुष	तू पढां ई।	तुस्से पढां ईं।
		'तू पढ़ती है।'	'तुम पढती है।'
स्त्रीलिंग			
	अ० पुरुष	से पढां ईं।	सयो पढां ई।
		'वह पढती है।'	'वे पढती हैं।'

1 1 आदर सूचक—

मण्डियाली मे आदर सूचक के लिए—तुस्से 'आप' का प्रयोग होता है, जो कि हमेशा बहुवचन के रूप मे प्रयुक्त होता है। 'आदरसूचक मे सत्तार्थक-क्रिया के मध्यम पुरुष पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग बहुवचन रूप प्रयुक्त होते हैं।

विशेष—अभ्यासित वर्तमान निश्चयार्थक मे अभ्यासित वर्तमान कालिक कृदत अविकारी है। अर्थात् इसमे कर्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं आता। विकार जो आता है वह सत्तार्थक [सहायक] क्रिया मे आता है। अर्थात् सत्तार्थक-क्रिया कर्त्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलती है। कृदत (आंह्, आं) के प्रयोग के लिए देखे 'पक्ष' [3 8 1.1.]।

उदाहरणार्थ—

तुस्से पढाँ एँ । — 'आप पढते हो ।' [पु०]
तुस्से पढाँ ईं । — 'आप पढती हो ।' [स्त्री०]

[√+अभ्यासित वर्तमान कालिक कृदत≠≠सत्तार्थक-क्रिया (लिंग, बहुवचन)]
अर्थात् (धातु+आँह्, आँ≠≠एँ/ईं)

1.2 निषेध अभ्यासित वर्तमान-निश्चयार्थक—

निषेध अभ्यासित वर्तमान निश्चयार्थक मे निषेध निपात (नी) क्रिया से पूर्व आता है तथा क्रिया-धातु मे वर्तमान कालिक कृदत (-द+वचन, लिंग प्रत्यय) जोडा जाता है । अत इसकी रचना इस प्रकार होती है—

[निषेध-निपात+√+वर्तमान कालिक कृदत]
अर्थात्-(नी+धातु+द+वचन, लिंग-प्रत्यय)

उदाहरणार्थ—

हाऊँ नी पढ़ दा । — 'मैं नही पढ़ता ।'
हाऊँ नी पढ दी । — 'मैं नही पढ़ती ।'
आस्से नी पढ़ा दे । — 'हम नही पढ़ते ।'

विशेष—

[1] यदि धातु स्वरात हो तो स्वर अनुनासिक हो जाता है ।
[2] [-द-] दीर्घ [-द द-] हो जाता है ।

उदाहरणार्थ—खा—'खाना' धातु से—

हाऊँ नी खाँद्दा । — 'मैं नही खाता ।'
हाऊँ नी खाँद्दी । — 'मैं नही खाती ।'
आस्से नी खाँद्दे । — 'हम नही खाते ।'

1.3. प्रश्नवाचक अभ्यासित वर्तमान निश्चयार्थक—

प्रश्नवाचक अभ्यासित वर्तमान निश्चयार्थक मे (क्या) का प्रयोग होता है । 'क्या' का प्रयोग वाक्य मे अनेक स्थानो पर हो सकता है । प्रश्नवाचक वाक्यो मे —क्या—तथा धातु मे अभ्यासित वर्तमान कालिक कृदत (-आँह्, आँ) और सत्तार्थक-क्रिया जोडी जाती है ।

उदाहरणार्थ—

क्या से पढ़ाँ आँ । — 'क्या वह पढता है ?'
क्या से पढाँ ईं । — 'क्या वह पढती है ?'
क्या सयो पढाँ एँ । — 'क्या वे पढते हैं ?'

क्या सँयो पढ़ाँ ई । — 'क्या वे पढ़ती हैं ?'
से क्या खाँह् आँ । — 'वह क्या खाता है ?'
से क्या खाँह् ई । — 'वह क्या खाती हैं ?'

विशेष—

अनेक बार वाक्य मे प्रश्नवाचक (क्या) का लोप भी हो जाता है, मगर तब ऐसे वाक्यो मे सुरलहर या अनुतान काम करती है। वास्तव मे सभी प्रश्नवाचक वाक्यो मे अनुतान रहती है। इस बात को 'अनुतान' [2 2] के अन्तर्गत स्पष्ट किया गया है।

प्रश्नवाचक वाक्यो मे सत्तार्थक-क्रिया कर्त्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलती है।

यदि वाक्य में कोई-'कोई' प्रश्नवाचक सर्वनाम हो तो [प्रश्नवाचक सार्वनामिक-विशेषण, या सार्वनामिक क्रिया-विशेषण] 'क्या' का लोप हो जाता है।

उदाहरणार्थ—

तेत्थी कुण जाँह् आँ ? — 'वहाँ कौन जाता है ?' [कुण-कर्ता]
से क्या पढाँ आँ ? — 'वह क्या पढता है ?' [क्या-कर्म]
से कित्तणा पढाँ आँ ? — 'वह कितना पढ़ता है ?' [कित्तणासार्वनामिक-विशेषण]
से केत्थी पढाँ आँ ? — 'वह कहाँ पढता है ?' [केत्थी-सार्वनामिक क्रिया-विशेषण]

उपर्युक्त वाक्यो मे सत्तार्थक-क्रिया कर्त्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलती है।

उदाहरणार्थ—

सूयो क्या पढाँ एँ ? — 'वे क्या पढ़ते हैं ?' [क्या-कर्म]
सूयो केत्थी पढ़ाँ ई ? — 'वे कहाँ पढती हैं ?' [केत्थी-सार्वनामिक क्रिया-विशेषण]

3.9.1.1 I 2 सातत्य-वर्तमान—

सातत्य वर्तमान निश्चयार्थक, क्रिया-धातु मे वर्तमान कालिक कृदत (-द + वचन, लिंग प्रत्यय ≠ ≠ लग + इर + वचन लिंग प्रत्यय) के योग से बनता है।

मण्डियाली मे सातत्य वर्तमान निश्चयार्थक की रचना इस प्रकार होती है—

[√ + द + वचन, लिंग प्रत्यय ≠ ≠ लग + इर + वचन, लिंग प्रत्यय] अर्थात् (धातु + द + आ/ई/ ए ≠ ≠ लग + इर + आ /ई/ ए) पढ—'पढना' धातु के साथ सातत्य वर्तमान निश्चयार्थक की रचना इस प्रकार होगी—

		एकवचन	बहुवचन
	उ० पुरुष	हाऊँ पढदा लगिरा ।	आस्से पढ़दे लगिरे ।
		'मैं पढ रहा हूँ ।'	'हम पढ रहे हैं ।'
	म० पुरुष	तू पढदा लगिरा ।	'तुस्से पढदे लगिरे ।
पुल्लिग		'तू पढ रहा है ।'	'तुम पढ रहे हो ।'
	अ० पुरुष	से पढदा लगिरा ।	स्यो पढदे लगिरे ।
		'वह पढ रहा है ।'	'वे पढ रहे हैं ।'
	उ० पुरुष	हाऊँ पढदी लगिरी ।	आस्से पढदी लगिरी ।
		'मैं पढ रही हूँ ।'	'हम पढ रही हैं ।'
	म० पुरुष	तू पढदी लगिरी ।	तुस्से पढदी लगिरी ।
स्त्रीलिंग		'तू पढ रही है ।'	'तुम पढ रही हो ।'
	अ० पुरुष	से पढदी लगिरी ।	स्यो पढ़दी लगिरी ।
		'वह पढ रही है ।'	'वे पढ रही हैं ।'
पुल्लिग	उ० पुरुष	हाऊँ खाँद्दा लगिरा ।	आस्से खाँद्दे लगिरे ।
		'मैं खा रहा हूँ ।'	'हम खा रहे हैं ।'
स्त्रीलिंग	उ० पुरुष	हाऊँ खाँद्दी लगिरी ।	आस्से खाँद्दी लगिरी ।
		'मैं खा रही हूँ ।'	'हम खा रही हैं ।'

खा—'खाना' धातु के मध्यम तथा अन्य पुरुषो के सातत्य रूप उत्तम पुरुष पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के समान ही बनते हैं ।

नियम—स्वरात क्रिया धातु मे निम्नाकित प्रक्रियाएँ जुडती हैं—

[1] स्वरात धातु मे स्वर अनुनासिक हो जाता है ।
[2] [-द-] दीर्घ [-द्द-] हो जाता है ।

3.9.1.1 2. पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थक—

पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थक, क्रिया-धातु मे पूर्ण वर्तमान कालिक कृदत (-इर + वचन, लिंग प्रत्यय) के योग से बनता है ।

पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थक की रचना इस प्रकार होगी—

[√ + पूर्ण वर्तमान कालिक कृदत + वचन, लिंग प्रत्यय]
अर्थात् (धातु + इर + वचन, लिंग प्रत्यय)

उदाहरणार्थ—

चल—'चलना' धातु के साथ पूर्ण वर्तमान-निश्चयार्थक के रूप इस प्रकार हैं—

		एकवचन	बहुवचन
	उ० पुरुष	हाँऊ चलिरा ।	आस्से चलिरे ।
		'मैं चला हूँ ।'	'हम चले हैं ।'
	म० पुरुष	तू चलिरा ।	तुस्से चलिरे ।
पुल्लिंग		'तू चला है ।'	'तुम चले हो ।'
	अ० पुरुष	से चलिरा ।	स्यो चलिरे ।
		'वह चला है ।'	'वे चले हैं ।'
	उ० पुरुष	हाऊँ चलिरी ।	आस्से चलिरी ।
		'मैं चली हूँ ।'	'हम चली हैं ।'
	म० पुरुष	तू चलिरी ।	तुस्से चलिरी ।
स्त्रीलिंग		'तू चली है ।'	'तुम चली हो ।'
	अ० पुरुष	से चलिरी ।	स्यो चलिरी ।
		'वह चली है ।'	'वे चली हैं ।'

नियम—

[1] यदि क्रिया-धातु अल्प प्राण व्यजनात हो तो अन्तिम व्यजन, (-इर+वचन, लिंग प्रत्यय) से पूर्व दीर्घ हो जाता है ।

[2] यदि क्रिया-धातु स्वरात हो तो क्रिया-धातु मे [-द-] तथा [-त-] दीर्घ [-दद-] तथा [-त्त] का प्रयोग होता है । ऐसी क्रिया-धातुएँ निम्नाकित हैं—

उदाहरणार्थ—

खा→खा+द्द्+इर+वचन, लिंग प्रत्यय	—खाद्दिरा	'खाया है'
जा→ग+इर+वचन, लिंग प्रत्यय	—गइरा	'गया है'
पी→पि+त+इर+वचन, लिंग प्रत्यय	—पित्तिरा	'पिया है'
सी→सि+त+इर+वचन, लिंग प्रत्यय	—सित्तिरा	'सिला है'
दे→दि+न+इर+वचन, लिंग प्रत्यय	—दित्तिरा	'दिया है'
हो→हु+इर+वचन, लिंग प्रत्यय	—हुइरा	'हुआ है'

व्यजनात क्रिया-धातु का एकमात्र उदाहरण जिसमे दीर्घ [-त्त] का प्रयोग होता है ।

उदाहरणार्थ -

कर—कि+त्त+इर+वचन, लिंग प्रत्यय—कित्तिरा 'किया है'

उपर्युक्त उदाहरणो मे क्रिया धातुएँ—'जा' तथा 'हो' ऐसी हैं जिनमे [-द] या [-त] का प्रयोग नही होता है, मगर पूर्ण वर्तमान-कालिक-कृदत (इर+वचन, लिंग प्रत्यय) का प्रयोग होता है ।

उपर्युक्त उदाहरणो मे निम्नाकित रूप स्वनिमिक परिवर्तन आए हैं—

/ज>ग/, /ई>इ/, ओ>उ/, /अ>इ/ तथा /र>ϕ/ ।

3 9.1.2. भूत-निश्चयार्थक [पास्ट-इन्डीकेटिव]—

भूत-निश्चयार्थक के दो भेद किए जा सकते हैं—

[1] अपूर्ण-भूत तथा

[2] पूर्ण-भूत।

3.9 1 2.1 अपूर्ण-भूत निश्चयार्थक—

अपूर्ण भूत निश्चयार्थक के दो उपभेद किए जा सकते हैं—

[1] अभ्यासित-भूत तथा

[2] सातत्य-भूत।

3 9 1.2.1 1 निश्चयार्थक अभ्यासित-भूत—

निश्चयार्थक अभ्यासित-भूत, क्रिया-धातु मे अभ्यासित वर्तमान कालिक-कृदत '-आंह्, आं) तथा सत्तार्थक-क्रिया (-थ + वचन, लिग प्रत्यय) के योग से बनता है।

निश्चयार्थक अभ्यासित-भूत की रचना इस प्रकार होती है—

[√ + अभ्यासित वर्तमान कालिक कृदत + वचन, लिग प्रत्यय ≠ ≠ सत्तार्थक-क्रिया + वचन, लिग प्रत्यय]

अर्थात्—(धातु + आंह्, आं + आ/ इ/ ए ≠ ≠ थ + आ /ई/ ए)

पढ़—'पढना' धातु के साथ उदाहरण इस प्रकार है—

		एकवचन	बहुवचन
	उ० पुरुष	हांऊ पढां था	आस्से पढांएँ थे।
पुल्लिग		'मैं पढता था।'	'हम पढते थे।'
	म० पुरुष	तू पढां था।	तुस्से पढांएँ थे।
		'तू पढता था।'	'तुम पढते थे।'
		एकवचन	बहुवचन
अ० पुरुष		से पढां था।	स्यो पढांएँ थे।
		'वह पढता था।'	'वे पढते थे।'
	उ० पुरुष	हाऊँ पढांई थी।	आस्से पढांई थी।
स्त्रीलिंग		'मैं पढती थी।'	'हम पढती थी।'
	म० पुरुष	तू पढांई थी।	'तुस्से पढांई थी।
		'तू पढती थी।'	'तुम पढती थी।'
	म० पुरुष	से पढांई थी।	स्यो पढांई थी।
		'वह पढ़ती थी।'	'वे पढती थी।'

3 9 1 2 1.2. निश्चयार्थक सातत्य-भूत—

निश्चयार्थक सातत्य भूत, क्रिया-धातु मे वर्तमान कालिक-कृदत (-द + वचन,

विशेष—अभ्यासित-वर्तमान कालिक कृदंत (-आंह्, आं) के प्रयोग को लेकर 'पक्ष' [3.8 1 1.] के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है।

लिग प्रत्यय≠≠लग + दूर + वचनलिंग प्रत्यय≠≠थ + वचन, लिंग प्रत्यय) के योग से बनता है।

निश्चयार्थक सातत्य भूत को रचना इस प्रकार होती है—

[√ + वर्तमान कालिक कृदन्त + वचन, लिग प्रत्यय≠≠लग + इर + वचन, लिंग प्रत्यय≠≠सत्तार्थक-क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय]

अर्थात्—(धातु + द + आ /ई/ ए≠≠लग + इर + आ /ई/ ए≠≠थ + आ /ई/ए)

पढ 'पढ़ना' क्रिया-धातु के साथ निश्चयार्थक सातत्य-भूत के रूप इस प्रकार हैं—

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष	ह्राऊँ पढदा लगिरा था।	आस्से पढदे लगिरे थे।
	'मैं पढ़ रहा था।'	'हम पढ रहे थे।'
पुल्लिग म० पुरुष	तू पढदा लगिरा था।	तुस्से पढदे लगिरे थे।
	'तू पढ रहा था।'	'तु-म पढ रहे थे।'
अ० पुरुष	से पढदा लगिरा था।	स्यो पढदे लगिरे थे।
	'वह पढ रहा था।'	'वे पढ रहे थे।'
उ० पुरुष	ह्राऊँ पढदी लगिरी थी।	आस्से पढदी लगिरी थी।
	'मैं पढ रही थी।'	'हम पढ रही थी।'
स्त्रीलिंग म० पुरुष	तू पढदी लगिरी थी।	तुस्से पढदी लगिरी थी।
	'तू पढ रही थी।'	'तुम पढ रही थी।'
अ० पुरुष	से पढ़दी लगिरी थी।	स्यो पढदी लगिरी थी।
	'वह पढ रही थी।	'वे पढ रहो थी।'
पुल्लिग उ० पुरुष	ह्राऊँ खाँद्दा लगिरा था।	आस्से खाँददे लगिरे थे।
	'मै खा रहा था।'	'हम खा रहे थे।'
स्त्रीलिंग उ० पुरुष	ह्राऊँ खाँद्दी लगिरी थी।	आस्से खाँद्दी लगिरी थी।
	'मै खा रही थी।'	'हम खा रही थी।'

स्वरात क्रिया-धातु के मध्यम तथा अन्य पुरुषो के रूप उत्तम-पुरुष पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के समान ही होते है।

नियम—स्वरात क्रिया-धातु मे निम्नाकित प्रक्रियाएँ जुडती हैं—

[1] स्वरात क्रिया-धातु का स्वर अनुनासिक हो जाता है।

[2] [-द], दीर्घ [-द्द-] हो जाता है।

3 9 1.2.2 पूर्ण भूत निश्चयार्थक—

पूर्ण-भूत निश्चयार्थक की रचना मे क्रिया धातु मे भूत-कालिक कृदत (य/ϕ + वचन, लिंग प्रत्यय) तथा सत्तार्थक-क्रिया (थ- + वचन, लिंग प्रत्यय) जुडते है।

पूर्ण भूत निश्चयार्थक की रचना इस प्रकार होगी—

[√+भूतकालिक कृदत+वचन, लिंग प्रत्यय≠≠सत्तार्थक-क्रिया+वचन लिंग प्रत्यय]

अर्थात् (धातु+य/ϕ+आ/ई/ए≠≠थ+आ/ई/ए)

चल—'चलना' धातु के साथ पूर्ण-भूत निश्चयार्थक के रूप इस प्रकार हैं—

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष	हाँऊ चल्या था।	आस्से चले थे।
	'मै चला था।'	'हम चले थे।'
पुल्लिग म० पुरुष	तू चल्या था।	तुस्से चले थे।
	'तू चला था।'	'तुम चले थे।'
अ० पुरुष	से चल्या था।	स्यो चले थे।
	'वह चला था।'	'वे चले थे।'
उ० पुरुष	हाऊँ चली थी।	आस्से चली थी।
	'मैं चली थी।'	'हम चली थी।'
स्त्रीलिंग म० पुरुष	तू चली थी।	तुस्से चली थी।
	'तू चली थी।'	'तुम चली थी।'
अ० पुरुष	से चली थी।	स्यो चली थी।
	'वह चली थी।'	'वे चली थी।'

विशेष—

कुछ क्रिया धातुएँ, जिन्हे लेकर पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थक [3 9.1 1.2] के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है। उन क्रिया-धातुओ मे भूत कालिक कृदत के योग से वही रूपस्वनिमिक परिवर्तन आते हैं तथा वही नियम प्रयुक्त होते हैं।

वर्तमान निश्चयार्थक तथा भूत निश्चयार्थक की रचना को यदि तालिका या चित्र मे दिखाना हो तो निम्नवत् दिखा सकते हैं—

प्रकार

[1] अभ्यासित
{धातु+आँह्, आँ+आ/ई/ए≠≠सत्तार्थक क्रिया
—इर+आ/ई/ए}

[2] सातत्य+समापक पूर्ण
{—सत्तार्थक क्रिया
+इर+आ/ई/ए}

[3] सातत्य
यदि धातु स्वरात हो—
{धातु+अनुनासिकता

[4] समापक पूर्ण
यदि धातु स्वरात हो—
{धातु—अनुनासिकता

उदाहरणार्थ—

[1] ह्राऊँ जाँह् ऑं ।	'मैं जाता हूँ ।'	[अभ्यासित]
[1 1.] ह्राऊँ पढ़ाँ ऑं ।	'मैं पढ़ता हूँ ।'	[अभ्यासित]
[2] ह्राऊँ चलिरा ।	'मैं चला हूँ ।'	[पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थक]
[3] ह्राऊँ खाँद्दा लगिरा ।	'मैं खा रहा हूँ ।'	[सातत्य वर्तमान]
[4] ह्राऊँ चलिरा ।	'मै चला हूँ ।'	[पूर्ण वर्तमान निश्चयार्थक]

वर्तमान निश्चयार्थक तथा भूत निश्चयार्थक की रचना के अन्तर को उपर्युक्त तालिका या चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा चुका है। अन्य बाते जो समान रूप से विद्यमान हैं, उन्हे यहाँ नही दिखाया गया है। अन्य सभो बाते 'प्रकार' के भेदो के साथ-साथ स्पष्ट की गई है।

3 9 1.3. भविष्यत्-निश्चयार्थक—

भविष्यत् निश्चयार्थक, क्रिया-धातु मे दो प्रकार के प्रत्यय जोडने से बनता है।

[1] [√भविष्यत् कालद्योतक प्रत्यय + लिंग, वचन प्रत्यय]
अर्थात्—(धातु + ग् + आ/ई/ए)

[2] [√ + भावार्थक-सज्ञा द्योतक प्रत्यय + लिंग, वचन प्रत्यय]
अर्थात्—(धातु + ण, न + आ/ई/ए)

[1] चल—'चलना' धातु के साथ भविष्यत्—निश्चयार्थक के रूप इस प्रकार हैं—

		एकवचन	बहुवचन
	उ० पुरुष	ह्राऊँ चल्गा ।	आस्से चल्गे ।
		'मैं चलूँगा ।'	'हम चलेंगे ।'
	म० पुरुष	तू चल्गा ।	तुस्से चल्गे ।
पुल्लिग		'तू चलेगा ।'	'तुम चलोगे ।'
	उ० पुरुष	से चल्गा ।	सयो चल्गे ।
		'वह चलेगा ।'	'वे चलेंगे ।'
	उ० पुरुष	ह्राऊँ चल्गी ।	आस्से चल्गी ।
		'मै चलूँगी ।'	'हम चलेगी ।'
	म० पुरुष	तू चल्गी ।	तुस्से चल्गी ।
स्त्रीलिंग		'तू चलेगी ।'	'तुम चलोगी ।'
	अ० पुरुष	से चल्गी ।	स्यो चलगी ।
		'वह चलेगी ।'	'वे चलेगी ।'
पुल्लिग	उ० पुरुष	ह्राऊँ खाँह्ग्गा	आस्से खाँह्ग्गे
		'मैं खाऊँगा ।'	'हम खाएँगे ।'

स्त्रीलिंग उ०पुरुष	हाऊँ खाँहू ̐गी ।	आस्से खाँहू ̐गी ।
	'मै खाऊँगी ।'	'हम खाएँगी ।'

स्वरात-धातु-खा-'खाना के मध्यम तथा अन्य पुरुषो के रूप उत्तम पुरुष पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के समान ही हुआ करते है ।

नियम—

स्वरात धातु मे निम्नांकित प्रक्रियाएँ जुडती हैं—

[1] स्वरात धातु का स्वर अनुनासिक हो जाता है ।

[2] [-ग-], दीर्घ [-गग-] हो जाना है ।

[2] [√+भावार्थक-सज्ञा प्रत्यय+लिंग, वचन प्रत्यय]

आर्थात् (धातु+ण, न+आ/ई/ए)

भावार्थक-सज्ञा प्रत्यय+लिंग, वचन प्रत्यय से वाक्य मे कुछ निश्चितता का भाव आ जाता है, जो कि भविष्यत् काल द्योतक प्रत्यय+लिंग, वचन प्रत्यय के योग से नही आता ।

भावार्थक-सज्ञा प्रत्यय के लिए निम्नांकित नियम ध्यान मे रखने योग्य हैं—

नियम—

[1] भावार्थक-सज्ञा प्रत्यय (-ण-/-न-) का प्रयोग अपूर्ण-पक्ष अर्थात् भविष्यत् काल मे ही होता है ।

[2] जिस वाक्य मे कर्ता + क्रिया होते हैं, उस वाक्य मे (धातु+ण/न+आ)का ही प्रयोग होता हे । अर्थात् ऐसे वाक्यो मे क्रिया, कर्ता के अनुसार नही बदलती ।

[3] जिस वाक्य मे कर्त्ता+कर्म+क्रिया होते है, उस वाक्य मे (धातु+ण/न+आ/ई/ए) का प्रयोग होता है । अर्थात् क्रिया कर्ता के अनुसार बदलती है ।

पढ—'पढना' धातु के साथ उदाहरण इस प्रकार है—

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिग उ० पुरुष	मॉं पढना ।	आस्सा पढना ।
	'मैं पढ़ूँगा ।'	'हम पढेंगे ।'
स्त्रीलिंग उ० पुरुष	मॉं पढना ।	अस्सा पढना ।
	'मैं पढ़ूँगी ।'	'हम पढेंगी ।'

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के रूप उत्तम पुरुष पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग के समान ही हुआ करते हैं । (-ण-, -न-) के प्रयोग को लेकर 'भावार्थक-सज्ञा' के अन्तर्गत आगे चलकर विचार किया गया है ।

3 9.2 अनिश्चयार्थक—

क्रिया के जिस रूप मे अनिश्चितता का भाव बना रहे या क्रिया के जिस रूप से कोई निश्चित विधान या प्रश्न न किया जाए उसे अनिश्चयार्थक कहते हैं । अनिश्चयार्थक का बोध निम्नांकित स्थितियो मे होता है ।—

3.9 2 1 आज्ञार्थक [इम्पैरीटिव]—

आज्ञा केवल वर्तमान तथा भविष्यत् मे ही दी जाती है। अर्थात् आज्ञार्थक का सम्बन्ध वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल से ही है।

'आज्ञार्थक प्रकार, क्रिया का वह रूप है, जो कार्य को एक आज्ञा, एक प्रार्थना, एक चेतावनी, निषेध आदि के रूप को व्यक्त करता है।'[1]

[1] वर्तमान काल मे वास्तव मे आज्ञा मध्यम पुरुष को ही दी जाती है। मगर अप्रत्यक्ष रूप से आज्ञा अन्य पुरुष को भी दी जाती है। उत्तम पुरुष आज्ञा लेता है अर्थात उत्तम पुरुष को आज्ञा दी जाती है।

आज्ञा लेने और देने की दृष्टि से आज्ञार्थक प्रत्ययो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पढ—'पढ़ना' धातु के साथ आज्ञार्थक के रूप इस प्रकार बनेगे—

	एकवचन	बहुवचन	
उ० पुरुष पु०/स्त्री०	हाऊँ पढूँ। (-ऊँ) 'मैं पढूँ।'	आस्से पढिए 'हम पढे।'	(-इए-)
म० पुरुष पु०/स्त्री०	तू पढ (-ϕ) 'तू पढ।'	तुस्से पढो। 'तुम पढ़ो।'	(-ओ)
अ० पुरुष पु०/स्त्री०	से पढो। (-ओ) 'वह पढे।'	स्यो पढो। 'वे पढे।'	(-ओ)

यदि उत्तम पुरुष किसी दूसरे व्यक्ति से आज्ञा ले रहा हो तो क्रिया-धातु मे (-ऊँ) प्रत्यय जोडा जाता है। एकवचन के साथ क्रिया-धातु मे (-ऊँ) तथा बहुवचन मे (-इए) प्रत्यय जोडा जाता है।

जब आज्ञा मध्यम पुरूष को दी जाती है तो एकवचन के साथ क्रिया-धातु मे (-ϕ) प्रत्यय जोडा जाता है अर्थात् क्रिया-धातु स्वय मे ही, आज्ञा का भाव निहित है। मध्यम-पुरुष बहुवचन के साथ क्रिया-धातु मे (-ओ~आ) जोडा जाता है। क्रिया-धातु मे कई बार आघात तथा सुरलहर का प्रयोग भी होता है।

जब आज्ञा अन्य पुरुष को दी जाती है तो एकवचन तथा बहुवचन दोनो रूपो के साथ क्रिया-धातु मे (-ओ) प्रत्यय जोडा जाता है। ये सभी बाते उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट हैं।

आदरसूचक के लिए क्रिया-धातु मे (-ओ~आ) व्यजनात तथा (-ओ~वा) [स्वरात] प्रत्यय जोडकर आज्ञा दी जाती है। आदरसूचक का प्रयोग हमेशा बहुवचन रूप मे ही होता है।

---

1. 'The imparative mood is a form of a verb expressing an action as a command, a request, a warning prohibitition etc.'
A. Sharma, a Basic grammar of modern Hindi, p. 78.

उदाहरणार्थ—

पु०/स्त्री०	तुस्से पढो≈पढा/	(-ओ≈आ)
	'आप पढिए।'	
पु०/स्त्री०	तुस्से जाओ≈जावा/	(-ओ≈वा)
	'आप जाइए।'	

[2] भविष्यत् काल मे आज्ञा केवल मध्यम पुरूष को ही दी जाती है। पढ—'पढना' धातु के साथ आज्ञार्थक के उदाहरणार्थ इस प्रकार हैं।

	एकवचन	बहुवचन	
	तू काल पढयाँ।(-याँ)	तुस्से काल पढयो।	(-यो)
	'तू कल पढना।'	'तुम कल पढना।'	
	तू काल खायाँ।(-या)	तुस्से काल खायो।	(-यो)
म०पुरुष पु०/स्त्री०	'तू कल खाना।'	'तुम कल खाना।'	
	तू नी पढयाँ। (-याँ)	तुस्से नी पढयो।	(-यो)
	'तू मत पढना।'	'तुम मत पढना।'	
	तू नी खायाँ (-याँ)	तुस्से नी खायो।	(-यो)
	'तू मत खाना।'	'तुम मत खाना।'	

भविष्यत्-काल मे आज्ञार्थक के लिए क्रिया-धातु मे (-याँ) प्रत्यय एकवचन के साथ तथा (-यो) प्रत्यय बहुवचन के साथ जोडा जाता है। यह बात उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट हो जाती है।

3 9 2 2 **इच्छार्थक (ओपटेटिव)—**

इच्छार्थक के द्वा‍ा एक इच्छा, आज्ञा, आवश्यकता, उद्देश्य तथा कई बार स्थिति, अनुमान, सम्भावना आदि बाते व्यक्त होती हैं। मुख्य रूप से इच्छा व्यक्त होने के कारण ही इमे इच्छार्थक नाम दिया गया है। इच्छार्थक के लिए क्रिया-धातु मे जुडने वाले प्रत्ययो को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पढ-'पढना' क्रिया धातु के साथ इच्छार्थक के रूप इस प्रकार हैं—

	एकवचन		बहुवचन	
उ० पुरुष पु/स्त्री०	हाऊँ पढूँ।	(-ऊँ)	आस्मे पढिए।	(-इए)
	'मैं पढूँ।'		'हम पढे।'	
म० पुरुष पु०/स्त्री०	तू पढो।	(-ओ)	तुस्से पढो।	(-ओ)
	'तू पढे।'		'तुम पढो।'	
अ० पुरुष पु०/स्त्री०	से पढो।	(-ओ)	स्यो पढो।	(-ओ)
	'वह पढे।'		'वे पढे।'	

आदरसूचक के साथ इच्छार्थक के उदाहरण इस प्रकार हैं—

पु०/स्त्री०	तुस्से पढो।	(-ओ)
	'आप पढे।'	

'तुस्से खाओ ।　　　(-ओ)
'आप खाएँ ।'

कुछ अन्य प्रकार के उदाहरण इस प्रकार है—

[1] परमात्मा तुस्माओ राजी रक्खो ।　　　'भगवान् आपको जीवित रखे ।' [आशा, इच्छा]

[2] म्हठ्याँ जो बोल्लो पाणी प्याओ ।　　　'लडको को कहो, पानी पिलाएँ ।' [अप्रत्यक्ष आज्ञा]

[3] हाऊँ तुस्मा साउगी पढूँ ।　　　'मैं आपके साथ पढूँ ।' [इच्छा या आवश्यकता]

[4] एढा काम करो जेस्स थे भला हो ।　　　'ऐसा काम करो जिससे भला' हो ।' [उद्देश्य]

[5] साएद से परसी पढो ।　　　'शायद वह परसो पढे ।' [सम्भावना]

[6] म्हाणु मई आ जे जे ओक्खी बेल्ला काम आओ।　　　'आदमी वही है जो कि मुसीबत मे काम आए ।' [स्थिति]

उपर्युक्त उदाहरणो मे अन्तिम उदाहरण को छोडकर अन्य सभी उदाहरण भविष्यत् को ही व्यक्त या सकेतित करते हैं । अन्तिम उदाहरण मे समय की ओर कोई सकेत नही है । यह उदाहरण एक स्थिति या अवस्था का व्यक्त करता है ।

3 9 2 3 विध्यर्थक [पोटैशियन]—

विध्यर्थक रूप से एक इच्छा, शर्त तथा सम्भावना व्यक्त हो सकती है, लेकिन आज्ञा, प्रार्थना तथा उद्देश्य व्यक्त नही हो सकता । विध्यर्थक, वर्तमान तथा भूत से जुडा है, इसीलिए इसके दो रूप स्वीकार किए जा सकते है—

[1] वर्तमान विध्यर्थक तथा
[2] भूत-विध्यर्थक ।

3 9 2 3 1 वर्तमान विध्यर्थक [प्रेजेन्ट पोटैशियल] -

वर्तमान विध्यर्थक मे क्रिया-धातु मे वर्तमान कालिक कृदत (-द + वचन, लिंग प्रत्यय ≠ ≠ हो) जोडा जाना हे ।

अर्थात् (-द + आ/ई/ए/≠ ≠ हो) ।
पढ + 'पढना' क्रिया-धातु के साथ विध्यर्थक की रचना इस प्रकार होगी—
[√पढ़ + द + आ/ई/ए ≠ ≠ हो]

विशेष—कई बार इच्छार्थक के लिए मध्यम तथा अन्य पुरुष एकवचन मे क्रिया-धातु के साथ (-ए) प्रत्यय का प्रयोग भी मिलता । आदरसूचक का प्रयोग हमेशा बहुवचन मे होता हे ।

उदाहरणार्थ—

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष पु०	हाऊँ पढदा हो 'मैं पढता होऊँ।'	आस्से पढ़दे हो। 'हम पढ़ते हो।'
उ० पुरुष स्त्री०	हाऊँ पढ़दी हो। 'मैं पढती होऊँ।'	आस्से पढ़दी हो। 'हम पढती हो।'

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के वर्तमान विध्यर्थक रूप उत्तम पुरुष पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग और एकवचन तथा बहुवचन के समान ही हुआ करते हैं।

नियम—

स्वरात धातु मे निम्नाकित प्रक्रियाएँ जुडती हैं—

[1] स्वरात क्रिया-धातु मे स्वर अनुनासिक हो जाता है।

[2] (-द,) दीर्घ (-दद-] हो जाता है।

विशेष—आ-'आना' क्रिया-धातु दीर्घ(-दद-) की अपवाद है तथा इसके विध्यर्थक रूप मे (-उंदा) जोडा जाता है।

उदाहरणार्थ—

आउंदा हो 'आता हो।'

3 9 2 3 2. भूत-विध्यर्थक [पास्ट पोटेंशियल]—

भूत विध्यर्थक मे क्रिया-धातु मे भूत कालिक कृदत (-य+वचन-लिंग प्रत्यय≠≠हो) जोडा जाता है।

अर्थात् (-य+आ/इ/ए/≠≠हो)

पढ-'पढाना' क्रिया-धातु के साथ भूत विध्यर्थक की रचना इस प्रकार होगी—

[√पढ+य+आ/ई/ए≠≠हो]

उदाहरणार्थ—

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष पु०	हाऊँ पढया हो। 'मैं पढा होऊँ।'	आस्से पढ़े हो। 'हम पढे हो।'
उ० पु० स्त्री०	हाऊँ पढी हो। 'मैं पढी होऊँ।'	आस्से पढ़ी हो। 'हम पढ़ी हो।'

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के भूत विध्यर्थक रूप उत्तम पुरुष पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग और एकवचन तथा बहुवचन के समान ही हुआ करते हैं।

विशेष—क्रिया-धातु मे स्त्रीलिंग (-ई) तथा बहुवचन प्रत्यय (-ए) के योग पर प्रत्यय (-य) का लोप हो जाता है। इन स्थितियो मे भूत कालिक कृदत (-ϕ) स्वीकार किया गया है। अर्थात् [$\surd + \phi$ + आ/ई/ए$\neq\neq$हो]

कुछ क्रिया-धातुएँ ऐसी हैं जो कि भूतकालिक कृदत (-य) की अपवाद हैं।

भूत विध्यर्थक रूप निम्नाकित प्रत्ययो के साथ भी बनते हैं—

उदाहरणार्थ—

[1] [धातु + द्द + आ/ई/ए$\neq\neq$हो]

उदाहरणार्थ—

खा→खाद्दा हो—'खाया हो।'

[2] [धातु + त + आ/ई/ए$\neq\neq$हो]

उदाहरणार्थ—

पी →पित्ता हो	'पिया हो।'
सी →सित्ता हो	'सिला हो।'
दे →दित्ता हो	'दिया हो।'
सो →सुत्ता हो	'सोया हो।'
कर→कित्ता हो	'किया हो।'

[3] जा —'जाना' क्रिया-धातु मे (-य + वचन, लिंग प्रत्यय) के योग पर क्रिया-धातु अपना रूप ही बदल लेती है। 'जा'—क्रिया धातु का भूत विध्यर्थक रूप इस प्रकार होगा—

उदाहरणार्थ—

जा→गया हो 'गया हो।'

उपर्युक्त उदाहरणो मे भूत विध्यर्थक रूप बनाने पर निम्नाकित रूप स्वनिमिक परिवर्तन आए हैं—/ई>इ/,/ए>/इ,/ओ>उ/अ>इ/,/र>ϕ/तथा ज>ग।

कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं—

[1] साएद से घरा पढदा हो। 'शायद वह घर पढता हो।' [वर्तमान-सम्भावना]

[2] परमात्मा करे से चली गया हो। 'भगवान् करे वह चला गया हो।' [भूत इच्छा]

[3] जे तिन्ने पढया हो ता साद्दो। 'यदि उसने पढा हो तो बुलाओ।' [भूत-शर्त]

[4] जे से पढ़दा हो ता नी सादणा। 'यदि वह पढता हो तो मत बुलाना।' [वर्तमान-शर्त]

विध्यर्थक को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

विध्यर्थक	
वर्तमान	भूत
+द+आ /ई/ए	+य,ϕ+आ /ई/ए
+अनुनासिकता [स्वरात धातु मे]	-अनुनासिकता

विशेष—वर्तमान विध्यर्थक का सातत्व रूप भी मिलता है, जिसे लेकर यहाँ पर विस्तार से विचार नही किया जा रहा है। वर्तमान सातत्य-विध्यर्थक की रचना निश्चयार्थक सातत्य वर्तमान से मिलती है। अन्त मे विध्यर्थक द्योतक 'हो' जोडा जाता है।

अर्थात [$\surd$+द+वचन, लिंग प्रत्यय$\neq\neq$लग+इर+वचन, लिंग प्रत्यय $\neq\neq$हो]

अत [धातु+द+आ /ई /ए लग$\neq\neq$इर+आ /ई/ ए$\neq\neq$हो]

उदाहरणार्थ—

[1] जे से पढदा लगिरा हो ता नी साद्दो। 'यदि वह पढ रहा हो तो मत बुलाओ।' [वर्तमान-शर्त]

वर्तमान विध्यर्थक-सातत्य रूप के विस्तार के लिए देखें 'सातत्य वर्तमान-निश्चयार्थक' [3 9 1.1.1 2]।

3 9 2 4 अनुमानित [प्रीजम्पटिव]—

अनुमानित रूप मुख्य रूप से सम्भावना तथा अनुमान को व्यक्त करते हैं। अनुमानित रूपो की रचना क्रिया-धातु मे दो प्रकार के कृदत [वर्तमान तथा भूत] जोडने से हुआ करती है। इसी कारण अनुमानित रूपो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँट सकते हैं।

[1] वर्तमान अनुमानित तथा

[2] भूत-अनुमानित।

इन दोनो रूपो को 'सदिग्ध वर्तमान' तथा 'सदिग्ध भूत' नाम देना अनुचित है, जैसा कि कुछ वैयाकरणो ने किया है। ये रूप कभी भी सन्देह को व्यक्त नही करते।[1]

3.9 2 4 1 वर्तमान अनुमानित [प्रेजैन्टप्रजम्पीटिव]—

वर्तमान अनुमानित, क्रिया-धातु मे वर्तमान कालिक कृदत (-द+वचन, लिंग प्रत्यय] तथा 'हो' मे भविष्यत् रूप [ग+वचन, लिंग प्रत्यय] जोडने से बनता है।

पढ़—'पढ़ना' क्रिया-धातु के साथ वर्तमान अनुमानित के उदाहरण इस प्रकार हैं—

---

1 'The names 'Doubtful present' and 'Doubtful past' for these forms, adopted by some Grammarians are misleading, the forms seldom denote 'doubt'

A. Sharma, A Basic grammar of Modern Hindi, p. 106

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के रूप उत्तम पुरुष पुल्लिग तथा स्त्रीलिग और एक-वचन तथा बहुवचन के समान हुआ करते हैं।

वर्तमान कालिक कृदत (-द-) के साथ स्वरात क्रिया-धातु मे निम्नाकित प्रक्रियाएँ जुडती हैं—

[1] स्वर अनुनासिक हो जाता है।

[2] [-द-], दीर्घ [-दद-] हो जाता है।

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष पु०	ह्राऊँ पढदा हुँग्गा।	आस्से पढते हुँग्गे।
	'मैं पढता हूँगा।'	'हम पढते होगे।'
उ० पुरुष स्त्री०	ह्राऊँ पढदी हुँग्गी।	'आस्से पढदी हुँग्गी।'
	'मैं पढ़ती हूँगी।'	'हम पढती होगी।'

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के पुल्लिग तथा स्त्रीलिग और एकवचन तथा बहु-वचन रूप उत्तम पुरुष रूपो के समान ही हुआ करते है।

अर्थात् वर्तमान अनुमानित की रचना इस प्रकार है—

[√+द+वचन, लिंग प्रत्यय≠≠ह्रो+ग+वचन, लिंग प्रत्यय]

अत (धातु+द+आ/ई/ए≠≠ह्रो+ग+आ/ई/ए)

नियम—'ह्रो' धातु मे भविष्यत् रूप [-ग+वचन, लिंग प्रत्यय] जोडने से निम्नाकित प्रक्रियाएँ जुडती हैं—

[1] /ओ>उ/।

[2] स्वर अनुनासिक हो जाता है।

[3] [-ग-] दीर्घ [-गग-] हो जाता है।

उदाहरणार्थ—

ह्रो—हुँग्गा··· 'होगा।'

वर्तमान कालिक कृदत (-द+वचन, लिंग प्रत्यय) को लेकर नियम पहले ही दिए जा चुके हैं।

वर्तमान अनुमानित का सातत्य रूप भी मिलता है।

3 9 2 4 1.1 अनुमानित सातत्य-वर्तमान—

अनुमानित सातत्य वर्तमान की रचना क्रिया-धातु मे वर्तमान कालिक कृदत (-द+वचन, लिंग प्रत्यय) सातत्य रूप (लग+इर+वचन, लिंग प्रत्यय) तथा अनु-मानित रूप (ह्रो+ग+वचन, लिंग प्रत्यय) जोड कर होती है।

अर्थात् (√+द+वचन, लिंग प्रत्यय≠≠लग+इर+वचन, लिंग प्रत्यय ≠≠ह्रो+ग+आ/ई/ए]

पढ़—'पढ़ना' धातु के साथ उदाहरण इस प्रकार है—

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष पु०	हाऊँ तेब्भे पढ़दा लगिरा हुँग्गा ।	आस्से तेब्भे पढदे लगिरे हुँग्गे ।
	'मैं तब पढ रहा हूँगा ।'	'हम तब पढ़ रहे होगे ।'
उ० पुरुष स्त्री०	हाऊँ तेब्भे पढ़दी लगिरी हुँग्गी ।	आस्से तेब्भेप ढदी लगिरी हुँग्गी
	'मैं तब पढ रही हूँगी ।'	'हम तब पढ रही होगी ।'

3.9 2 4 2. भूत-अनुमानित [पास्ट-प्रीजम्पटिव]—

भूत-अनुमानित, क्रिया-धातु मे भूतकालिक कृदत (-य + वचन, लिंग प्रत्यय) तथा 'हो' मे अनुमानित रूप (-ग + वचन, लिंग प्रत्यय) जोड कर बनता है ।

अर्थात् [√ + य + वचन, लिंग प्रत्यय ≠ ≠ हो + ग + वचन, लिंग प्रत्यय]

अतः (धातु + या + आ /ई/ ए ≠ ≠ हो + ग् + आ /ई/ए)

पढ़—'पढ़ना' धातु के साथ उदाहरण इस प्रकार है—

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष पु०	हाऊं तेब्भे पढया हुँग्गा ।	आस्से तेब्भे पढ़े हुँग्गे ।
	'मैं तब पढ़ा हूँगा ।'	'हम तब पढे होगे ।'
उ० पुरुष स्त्री०	हाऊँ तेब्भे पढ़ी हुँग्गी ।	आस्से तेब्भे पढी हुँग्गी ।
	'मैं तब पढी हूँगी ।'	'हम तब पढी होगी ।'

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग और एकवचन तथा बहुवचन रूप उत्तम पुरुष के रूपो के समान ही हुआ करते हैं ।

विशेष—मुख्य क्रिया-धातु मे जुडने वाले भूतकालिक-कृदत (-य + वचन, लिंग प्रत्यय) को लेकर 'भूत-विध्यर्थक' [3 9 2 3 2] के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है ।

कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं—

[1] से घरा पढदा हुँग्गा । 'वह घर पढता होगा ।' [वर्तमान अनुमानित]

[2] से पढदा लगिरा हुँग्गा । 'वह पढ रहा होगा ।' [सातत्य अनुमानित]

[3] से रोट्टी खाँद्दा हुँग्गा । 'वह रोटी खाता होगा' [वर्तमान अनुमानित]

[4] से खाँददा लगिरा हुँग्गा 'वह खा रहा होगा ।' [सातत्य अनुमानित]

[5] राम एब्भे चल्या हुँग्गा । 'राम अब चला होगा' [भूत-सम्भावना]

[6] समान राम्मे दित्ता हुँग्गा । 'सामान राम ने दिया होगा ।' [" "]

3.9 2 5 संदिग्ध [कौंटीजेंट]—

सदिग्ध रूप मुख्य रूप से एक स्थिति को व्यक्त करते हैं, जो कि तथ्य या वास्तविकता के विरुद्ध होती है । सदिग्ध रूप मे एक इच्छा भी व्यक्त होती है जो कि पूर्ण नही होती है । इसी कारण इसे सदिग्ध की संज्ञा दी गई है ।

सदिग्ध रूप की रचना क्रिया-धातु मे विभिन्न कृदत जोड कर होती है जो कि निम्नांकित हैं—

[1] क्रिया-धातु मे वर्तमान कालिक कृदत (-द + वचन, लिंग प्रत्यय) जोड़ने से संदिग्ध रूप की रचना होती है ।

अर्थात् [√ + द + वचन, लिंग प्रत्यय]

अतः (धातु+द+आ /ई/ए)

पढ़ 'पढ़ना' क्रिया-धातु के साथ उदाहरण इस प्रकार है—

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष पु०	जे हाऊँ पढ़दा ।	जे आस्से पढ़दे ।
	'यदि मै पढता ।'	'यदि हम पढते ।'
उ० पुरुष स्त्री०	जे हाऊँ पढ़दी ।	जे आस्से पढदी ।
	'यदि मै पढती ।'	'यदि हम पढती ।'

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग और एकवचन तथा बहुवचन रूप उत्तम पुरुष के रूपो के समान ही हुआ करते हैं ।

स्वरात क्रिया-धातु को लेकर नियम 'निश्चयार्थक' के अन्तर्गत (1 2) मे दिए जा चुके हैं ।

[2] क्रिया-धातु मे वर्तमान कालिक कृदन (-द+वचन, लिंग प्रत्यय) तथा 'हो' धातु मे वर्तमान कालिक कृदत (-द+वचन, लिंग प्रत्यय) जोड कर सदिग्ध रूप की रचना होती है ।

अर्थात् [√+द+वचन, लिंग प्रत्यय≠≠हो+द+वचन, लिंग प्रत्यय]

अतः (धातु+द+आ /ई/ ए≠≠हो+द+आ /ई/ए)

पढ—'पढना' धातु के साथ उदाहरण इस प्रकार है

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष पु०	जे हाऊँ पढ़दा हुँद्दा ।	जे आस्से पढदे हुँद्दे ।
	'यदि मैं पढता होता ।'	'यदि हम पढ़ते होते ।'
उ० पुरुष स्त्री०	जे हाऊँ पढदी हुँद्दी ।	जे आस्से पढदी हुँद्दी ।
	'यदि मै पढ़ती होती ।'	'यदि हम पढती होती ।'

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग और एकवचन तथा बहुवचन रूप उत्तम पुरुष के रूपो के समान हुआ करते हैं ।

नियम—स्वरात धातु मे निम्नाकित प्रक्रियाएँ जुडती हैं—

[1] स्वर अनुनासिक हो जाता है ।

[2] [-द-], दीर्घ [-द्द] हो जाता है ।

[3] /ओ/>उ/ (केवल 'हो' धातु के साथ) ।

उपर्युक्त रूप वर्तमान भूत तथा भविष्यत् किसी भी रूप मे प्रयुक्त हो सकते हैं ।

[3] [√+द+आ /ई/ ए≠≠हो+ द+आ /ई/ए] का सातत्य सदिग्ध रूप इस प्रकार बनता है—

[√+द+वचन, लिंग प्रत्यय≠≠लग+इर+वचन, लिंग प्रत्यय≠≠हो+द +वचन, लिंग प्रत्यय]

अर्थात् (धातु+द्+आ/ई/ए≠≠लग+इर+आ /ई/ए≠≠हो+द+आ+ /ई/ए)

पढ़—'पढ़ना' क्रिया-धातु के साथ उदाहरण इस प्रकार हैं—

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष पु०	हाऊँ पढदा लगिरा हुँददा	आस्से पढदे लगिरे हुँददे ।
	'मै पढ रहा होता ।'	'हम पढ रहे होते ।'
उ० पुरुष स्त्री०	हाऊँ पढदी लगिरी हुँददी	आस्से पढदी लगिरी हुँददी ।
	'मै पढ रही होती ।'	'हम पढ रही होती ।'

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग और एकवचन तथा बहुवचन रूप उत्तम पुरुष के रूपो के समान हुआ करते है ।

अन्य नियम सदिग्ध [2] के अन्तर्गत दिए जा चुके हैं ।

[4] क्रिया-धातु मे भूतकालिक कृदत (-य/ϕ+वचन, लिग प्रत्यय) तथा 'हो' धातु मे वर्तमान कालिक कृदत (-द+वचन, लिग प्रत्यय) के योग से सदिग्ध रूप की रचना होती है । इसे सदिग्ध-भूत कहा जा सकता है । सदिग्ध-भूत की रचना इस प्रकार है—

[$\sqrt{}$+य/ϕ+वचन, लिग प्रत्यय≠≠हो+द+वचन, लिग प्रत्यय] अर्थात् (धातु+य/ϕ+आ /ई/ ए≠≠हो+द+आ /ई/ए)

पढ़—'पढना' क्रिया-धातु के साथ सदिग्ध-भूत के उदाहरण इस प्रकार हैं—

	एकवचन	बहुवचन
उ० पुरुष पु०	जे हाऊँ पढया हुँददा ।	जे आस्से पढे हुँददे ।
	'यदि मै पढा होता ।'	'यदि हम पढे होते ।'
उ० पुरुष स्त्री०	जे हाऊँ पढी हुँददी ।	जे आस्से पढी हुँददी ।
	'यदि मै पढी होती ।'	'यदि हम पढी होती ।'

मध्य तथा अन्य पुरुषो के पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग रूप और एकवचन तथा बहुवचन रूप उत्तम पुरुष के रूपो के समान होते हैं ।

('हो'+द+आ /ई/ए) के साथ जुडने वाली प्रक्रियाएँ सदिग्ध [2] के अन्तर्गत दी जा चुकी है ।

कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं—

[1] जे से बोल्दा ता हाऊँ जाँद्दा ।	'यदि वह कहता तो मै जाता [मगर उसने नही कहा] ।'
[2] जे [तू] पढदा ता पास हुँद्दा ।	'यदि तू पढता तो पास होता [मगर तू नही पढा] ।'
[3] जे तुस्से गए हुँददे ।	'यदि तुम/आप गए होते [मगर तुम/आप नही गए ।']
[4] कित्तणा खरा हुँद्दा जे तुस्से पैह्ले लिख्या हुँद्दा ।	'कितना अच्छा होता यदि आपने पहले लिखा होता [मगर आपने नही लिखा] ।'

3.10. काल [टेंस]—

'क्रिया के उस रूपान्तर को काल कहते हैं, जिससे क्रिया के व्यापार का तथा समय और उसकी पूर्ण या अपूर्ण अवस्था का बोध होता है।'[1]

'काल बोध को हम दो स्तरो पर ग्रहण करते हैं, एक वह स्तर है, जिससे यह पता चलता है कि समय के धरातल पर व्यापार कहाँ घटित हो रहा है। अगर क्रिया व्यापार 'अब और आज' के बोध से सयुक्त होकर व्यक्त होता है तो वर्तमान काल और अगर वह वर्तमान से पूर्व की स्थिति मे है तो भूतकाल तथा उसके बाद की स्थिति मे है तो भविष्यत्-काल के रूप से स्वीकृत होता है।'[2]

'क्रिया के वे रूप जिनसे कार्य के समय का बोध हो, काल कहलाते हैं।'[3]

कामता प्रसाद गुरु—'वह चला' वाक्य को काल-सापेक्ष मानने के पक्ष मे हैं, जबकि डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव इस वाक्य को काल-निरपेक्ष के रूप मे स्वीकार करते हैं। वे इस वाक्य को पक्ष सापेक्ष मानने के पक्ष मे हैं, मगर काल-सापेक्ष मानने के पक्ष मे नही।

डॉ० श्रीवास्तव के शब्दो मे—गुरु जी 'वह चला' को सामान्य भूत और 'वह चला था' को पूर्ण भूत काल का वाक्य मानते हैं। पर सघटना के स्तर पर इन दोनो वाक्यो मे अन्तर भूतकाल सूचक सहायक-क्रिया 'था' की उपस्थिति/अनुपस्थिति का ही अन्तर तो है अन्यथा 'चलना' क्रिया का रूप दोनो ही वाक्यो मे पूर्ण-पक्ष के अनुरूप है। यह कहा जा सकता है कि क्रिया पक्ष के स्तर पर ये दोनो वाक्य समान हैं, पर काल की दृष्टि से एक काल-निरपेक्ष वाक्य है तो दूसरा काल-सापेक्ष [भूत]।'[4]

क्रिया की पूर्णता तथा अपूर्णता के आधार पर मण्डियाली मे काल विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है—

---

1 कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ-177-178

2. डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, हिन्दी भाषा-विज्ञान अक मे प्रकाशित लेख—'काल और पक्ष' पृष्ठ 201

3. 'The forms of a verb indicating the time of the action are called tenses.'
A. Sharma, A Basic Grammar of Modern Hindi, P. 78

4. डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव 'हिन्दी भाषा विज्ञान अंक' मे प्रकाशित लेख—'काल और पक्ष', पृष्ठ-205-206

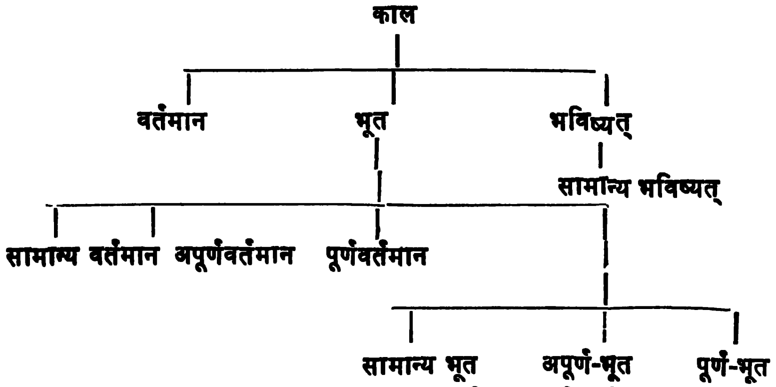

क्रिया व्यापार के सामान्य (-सीमित), अपूर्ण एव पूर्ण पक्षो को काल के सदर्भ मे देखते हुए मण्डियाली के काल भेद को तालिका मे इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं—

काल	सामान्य	अपूर्ण	पूर्ण
वर्तमान	[से] चलाँ आँ ।	[से] चल्दा लगिरा ।	[से] चलिरा ।
	[वह] चलता है ।	[वह] चल रहा है ।	[वह] चला है ।
	[से] खाँह् आँ ।	[से] खाँद्दा लगिरा ।	[तिन्ने] खाद्दिरा ।
	[वह] खाता है ।	[वह] खा रहा है ।	[उसने] खाया है ।
	[से] चलाँ था ।	[से] चल्दा लगिरा था ।	[से] चलिरा था ।
	[वह] चलता था ।	[वह] चल रहा था ।	[वह] चला था ।
भूत	[से] खाँह् था ।	[से] खाँद्दा लगिरा था ।	[तिन्ने] खह्दिरा था ।
	[वह] खाता था ।	[वह] खा रहा था ।	[उसने] खाया था ।
	[से] चल्गा ।	... .. .	......
	[वह] चलेगा ।		
भविष्यत्	[से] खाँह्गा ।	....	......
	[वह] खाएगा ।		

यहाँ कालो की रचना को लेकर विचार किया जा रहा है—

3.10.1. वर्तमान-काल (प्रेजेन्ट टेंस)—

वर्तमान काल मे व्यापार या तो अभ्यासित रूप से होता है, या हो रहा होता है, या व्यापार वर्तमान काल मे ही पूर्ण हुआ होता है । वर्तमान काल एक सर्वसत्य को भी व्यक्त करता है । वर्तमान काल की उपर्युक्त विशेषताओ को ध्यान मे रखते हुए उसके तीन भेद किए जा सकते हैं—

[1] सामान्य वर्तमान काल
[2] अपूर्ण-वर्तमान काल तथा
[3] पूर्ण वर्तमान काल ।

3 10 1 1 **सामान्य वर्तमान काल**—

मण्डियाली मे सामान्य वर्तमान काल की रचना, क्रिया-धातु मे (-आँह्, आँ) तथा (सहायक-क्रिया + वचन, लिंग प्रत्यय) के योग से होती है । सामान्य वर्तमान की रचना इस प्रकार होती है ।

(धातु + आँह्, आँ ≠ ≠ अँ + आ/ई/ए)

सामान्य वर्तमान की रचना को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुल्लिग/स्त्रीलिंग

एकवचन		**बहुवचन**
-आँह् ≠ ≠ आँ [पु०]		-आँह् ≠ ≠ एँ [पु०]
-आँ ≠ ≠ आँ [पु०]		-आँ ≠ ≠ एँ [पु०]
	-आँह् ≠ ≠ ई (स्त्री०)	
	-आँ ≠ ≠ ईं (स्त्री०)	

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ चलाँ आँ ।
'मै चलता हूँ ।'

[2] आस्से चलाँ एँ ।
'हम चलते हैं ।'

[3] हाऊँ चलाँ ईं ।
'मै चलती हूँ ।'

[4] आस्से चलाँ ईं ।
'हम चलती हैं ।'

मध्यम तथा अन्य पुरुषो के पुल्लिग, स्त्रीलिंग तथा एकवचन, बहुवचन रूप उत्तम पुरुष के रूपो के समान ही होते है ।

विशेष—सामान्य वर्तमान काल मे अभ्यासित वर्तमान कालिक कृदत (-आँह्, आँ) अविकारी है अर्थात् वह कर्त्ता के लिंग, वचन के अनुसार अपना रूप नही बदलता है । केवल सहायक-क्रिया (अँ) कर्त्ता के लिंग, वचन के अनुसार अपना रूप बदलती है ।

(-आँह्, आँ) के प्रयोग के लिए देखे 'पक्ष', (3.8 1.1.)

3.10.1 2 **अपूर्ण वर्तमान काल (प्रेजेन्ट परफैक्ट)—**

अपूर्ण वर्तमान काल की रचना, क्रिया-धातु मे (-द+वचन, लिंग प्रत्यय) तथा (लग+इर+वचन, लिंग प्रत्यय) के योग से होती है। अपूर्ण वर्तमान की रचना दूसरे ढग से भी होती है—क्रिया-धातु मे

(-या≠≠करां≠≠सहायक-क्रिया+वचन, लिंग प्रत्यय)।

[1] (धातु+द+आ/ई/ए≠≠लग+इर+आ/ई/ए)

अपूर्ण वर्तमान की रचना को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुंल्लिग/स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
[-द+आ≠≠लग+इर+आ [पु०]	-द+एϽ≠लग+इर+ए [पु०]
	-द+इ≠≠लग+इर+ई [स्त्री०]

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ चल्दा लगिरा।
'मैं चल रहा हूँ।'

[2] आस्से चल्दे लगिरे।
'हम चल रहे हैं।'

[3] हाऊँ चल्दी लगिरी।
'मैं चल रही हूँ।'

[4] आस्से चल्दी लगिरी।
'हम चल रही हैं।'

मध्यम तथा अन्य पुरुष के पुंल्लिग स्त्रीलिंग तथा एकवचन, बहुवचन, रूप उत्तम पुरुष के रूपो के समान ही होते हैं।

विशेष—स्वरात धातु के साथ वर्तमान कालिक कृदत (-द+वचन, लिंग प्रत्यय) को लेकर नियम 'पक्ष' (3 8 1.2.) के अन्तर्गत दिए जा चुके हैं।

[2] (धातु+या≠≠करां≠≠अँ+आ/ई/ए)

इसे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुंल्लिग/स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
-या#करां#अँ+आ [पु०]	-या#करां#अँ+ए [पु०]
	-या#करां अँ+ई [स्त्री०]

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ चल्या करी आँ।
'मै चल रहा हूँ।'

[2] आस्से चल्या करी एँ।
'हम चल रहे हैं।'

[3] हाऊँ चल्या करी ईं।
'मैं चल रही हूँ।'

[4] आस्से चल्यी करी ईं।
'हम चल रही हैं।'

3 10 1 3 पूर्ण-वर्तमान (प्रेजेन्ट परफेक्ट)—

पूर्ण-वर्तमान से तात्पर्य कार्य की पूर्णता से है, जिसका प्रभाव अब तक अर्थात् वर्तमान मे भी है।

'पूर्ण वर्तमान काल मे कार्य की पूर्णता व्यक्त होती है, जिसका प्रभाव अब तक भी है। वास्तव मे यह भूत का ही काल है, मगर यह भूत मे हुए कार्य को वर्तमान से जोडता है। पूर्ण वर्तमान मे जिस व्यक्ति या चीज को व्यक्त किया जाता है, जीवित होनी चाहिए या उसका अस्तित्व अब तक होना चाहिए, और इस प्रकार वह वर्तमान से जुडी होती है।'[1]

पूर्ण वर्तमान काल की रचना क्रिया-धातु मे पूर्ण वर्तमान कालिक कृदत (-इर +वचन, लिंग प्रत्यय) जोडा जाता है। पूर्ण वर्तमान की रचना को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुल्लिग/स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
-इर+आ [पु०]	-इर+ए [पु०]
-इर+ई [स्त्री०]	

1 'The present perfect represents a completed act, the effect of which is still present It is, in fact, a tens of the past, but it brings o past act into relation with the present. The person or the thing referred to by the verb in the present perfect 'must be living or still existing and thus related to the Present.'

A. Sharma, A Basic Grammar of Modern Hindi, P. 95

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ चलिरा ।
'मै चला हूँ ।'

[2] आस्से चलिरे ।
'हम चले हैं ।'

[3] हाऊँ चलिरी ।
'मै चली हूँ ।'

[4] आस्से चलिरी ।
'हम चली हैं ।'

3 10 2. भूत-काल (पास्ट टैंस)—

भूत-काल मे व्यापार या तो अभ्यासित रूप मे होता है, या हो रहा होता है, या व्यापार भूत-काल मे ही पूर्ण हो चुका होता है। भूत काल की उपर्युक्त इन विशेषताओ को ध्यान मे रखते हुए इस काल के तीन भेद किए जा जा सकते हैं—

[1] सामान्य भूत-काल
[2] अपूर्ण-भूत काल तथा
[3] पूर्ण भूत काल ।

3 10 2 1 सामान्य भूत काल (सिम्पल पास्ट टैंस)—

सामान्य भूत से यह जाना जाता है कि व्यापार भूत काल मे अभ्यासित तथा नियमित रूप से होता आया है। डॉ० आर्येन्द्र शर्मा इसे 'अभ्यासित भूत'[1] की संज्ञा देते हैं।

सामान्य भूत की रचना क्रिया-धातु मे (-आंह्, आं+वचन, लिंग प्रत्यय) तथा सहायक-क्रिया का भूत रूप (-थ+वचन, लिंग प्रत्यय) के योग से होती है। सामान्य भूत की रचना इस प्रकार होती है—

(धातु+आंह्, आं#थ+आ/ई/ए) ।

सामान्य भूत की रचना को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुल्लिंग/स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
-आंह्+आ#थ+आ [पु०]	-आंह्+ए#था+ए [पु०]
-आं+आ#था+आ [पु०]	-आं+ए#थ+ए [पु०]

-आंह्+ई#थ+ई [स्त्री०]
-आं+ई#थ+ई [स्त्री०]

1. 'The Habitual Past tense represents an act as habitually or regularty done in the past.'
Dr A Sharma, A Basic Grammar of Modern Hindi, P. 79

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ चलाँ था ।
'मैं चलता था।'

[2] आस्से चलाँएँ थे ।
'हम चलते थे।'

[3] हाऊँ चलाँई थी ।
'मैं चलती थी।'

[4] आस्से चलाँई थी ।
'हम चलती थीं।'

[5] हाऊँ खाँह् था ।
'मैं खाता था।'

[6] हाऊँ खाँह्ई थी ।
'मै खाती थी।'

विस्तार के लिए देखें 'पक्ष' [3 8 1.1.]

3 10.2 2. अपूर्ण-भूत काल (पास्ट इम्परफेक्ट टेंस)—

अपूर्ण भूत मे व्यापार पूर्ण नही हुआ होता है, मगर जारी रहता है। कामता प्रसाद गुरु जी सामान्य भूत' [वह चलता था] के वाक्य को 'अपूर्ण-भूत'[1] का वाक्य मानते हैं। मगर [वह चलता था] वाक्य 'अपूर्ण-भूत' का न होकर 'सामान्य भूत' का वाक्य है।

डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के शब्दो मे—'सघटना के स्तर पर अगर 'वह चलता है' सामान्य-वर्तमान का उदाहरण है तब 'वह चलता था' को सामान्य भूत का वाक्य क्यो नही कहा जा सकता? इन दोनो वाक्यो का अन्तर तो मात्र कालसूचक तत्व 'है' और 'था' के प्रयोग का अन्तर है।'[2]

मण्डियाली मे अपूर्ण भूत की रचना दो प्रकार से सम्भव है—

[1] क्रिया-धातु मे वर्तमानकालिक कृदन्त—(-द+वचन, लिंग प्रत्यय#लग+इर+वचन, लिंग प्रत्यय#सहायक-क्रिया भूत+वचन, लिंग प्रत्यय)।

[2] क्रिया-धातु मे भूतकालिक कृदन्त (-या#करां#सहायक-क्रिया भूत+वचन, लिंग प्रत्यय)।

[1] (धातु+द+आ/ई/ए#लग+इर+आ/ई/ए#थ+आ/ई/ए)

अपूर्ण भूत की रचना को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

---

1. कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ, 178-179
2. डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, 'हिन्दी भाषा-विज्ञान अक' मे प्रकाशित लेख—'काल और पक्ष', पृष्ठ 205-206

पुंल्लिंग/स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
-द+आ#लग+इर+आ #थ+आ [पु०]	-द+ए#लग+इर+ +ए#थ+ए [पु०]
-द+ई#लग+इर+ई#थ+ई [स्त्री०]	

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ चल्दा लगिरा था।
'मैं चल रहा था।'

[2] आस्से चल्दे लगिरे थे।
'हम चल रहे थे।'

[3] हाऊँ चल्दी लगिरी थी।
'मैं चल रही थी।'

[4] आस्से चल्दी लगिरी थी।
'हम चल रही थीं।'

[2] दूसरी प्रकार से अपूर्ण भूत की रचना इस प्रकार होती है—
(धातु+या#करा+आ/ई/ए#थ+आ/ई/ए)
इसे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुंल्लिंग/स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
-या#करा+आ#थ+आ [पु०]	-या#करा+ए#थ+ए [पु०]
-या#करा+ई#थ+ई [स्त्री०]	

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ चल्या करा था।
'मैं चल रहा था।'

[2] आस्से चल्या कराएँ थे।
'हम चल रहे थे।'

[3] हाऊँ चल्या कराई थी।
'मैं चल रही थी।'

[4] आस्से चल्या कराईं थी।
'हम चल रही थीं।'

3.10 2 3. पूर्ण-भूतकाल [पास्ट परफैक्ट टैंस]—

पूर्ण-भूतकाल मे व्यापार भूतकाल मे ही पूर्ण हो चुका होता है। 'पूर्ण भूतकाल से ज्ञात होता है कि व्यापार को पूर्ण हुए बहुत समय बीत चुका है।'[1]

मण्डियाली मे पूर्ण भूत की रचना दो प्रकार से सम्भव है—

[1] (धातु+इर+वचन, लिंग प्रत्यय#सहायक क्रिया [भूत]+वचन लिंग प्रत्यय)

[2] (धातु+य/ϕ+वचन, लिंगप्रत्यय#सहायक-क्रिया [भूत]+वचन लिंग प्रत्यय)

[1] (धातु+इर+आ/ई/ए#थ+आ/ई/ए)

इसे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते मे—

पुल्लिग/स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
-इर+आ#थ+आ	-इर+ए#थ+ए
[पु०]	[पु०]

[-इर+ई#थ+ई [स्त्री०]

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ चलिरा था।
'मैं चला था।'

[2] आस्से चलिरे थे।'
'हम चले थे।'

[3] हाऊँ चलिरी थी।
'मैं चली थी।'

[4] आस्से चलिरी थी।
'हम चली थीं।'

[2] दूसरी प्रकार से पूर्ण भूत की रचना इस प्रकार सम्भव है—
(धातु+य/ϕ+आ/ई/ए#थ+आ/ई/ए)

इसे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुल्लिग/स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
-य+आ [पु०]	-ϕ+ए [पु०]

-ϕ+ई [स्त्री०]

---

1. कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ 179

उदाहरणार्थ—

[1] ह्राऊँ चल्या था ।
'मैं चला था ।'

[2] आस्से चले थे ।
'हम चले थे ।'

[3] ह्राऊँ चली थी ।
'मैं चली थी ।'

[4] आस्से चली थी ।
'हम चली थीं ।'

विशेष—कुछ क्रिया-धातुएँ जो कि भूतकालिक कृदन्त (-य/ϕ) की अपवाद हे, उनको लेकर यहाँ पर उदाहरण मात्र दिए जा रहे है—

खा	→	खाद्‌दा था	'खाया था ।'
पी	→	पित्ता था	'पिया था ।'
सी	→	सित्ता था	'सिला था ।'
दे	→	दित्ता था	'दिया था ।'
कर	→	कित्ता था	'किया था ।'

विस्तार के लिए देखे 'समापक पक्ष' [3 8 2]

3.10 3 भविष्यत्-काल [फ्यूचर टेंस]—

भविष्यत् काल मे व्यापार या तो अभी ही आरम्भ होने वाला होता है या भविष्यत् मे होने की ओर सकेत होता है । भविष्यत् काल का एक ही भेद है—

[1] सामान्य भविष्यत् काल ।

3.10 3 1. सामान्य भविष्यत् काल [सिम्पल फ्यूचर टेंस]—

क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार का आने वाले समय मे होना पाए जाने की ओर सकेत हो, सामान्य भविष्यत् काल कहलाता है ।

मण्डियाली मे सामान्य भविष्यत् काल की रचना दो प्रकार से सम्भव है—

[1] (√+ग+वचन, लिंग प्रत्यय)
अर्थात् (धातु+ग+आ/ई/ए)

[2] (√+भावार्थक सज्ञा प्रत्यय)
अर्थात् (धातु+ण/न+आ)

[1] क्रिया-धातु मे (-ग+आ/ई/ए) के साथ भविष्यत् काल की रचना को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुल्लिग/स्त्रीलिंग

एकवचन		बहुवचन
-ग+आ [पु०]		-ग+ए [पु०]
	-ग+ई [स्त्री०]	

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ चल्गा।
'मै चलूँगा।'

[2] आस्से चल्गे।
'हम चलेंगे।'

[3] हाऊँ चल्गी।
'मै चलूंगी।'

[4] आस्से चल्गी।
'हम चलेगी।'

नियम—स्वरात क्रिया धातु मे निम्नाकित प्रक्रियाएँ जुडती हैं—

[1] स्वर अनुनासिक हो जाता है। अर्थात्, स्वरात धातु मे (-आंह्+ग+आ/ई/ए) का प्रयोग होता है।

[2] [-ग-], दीर्घ [-गग-] हो जाता है।

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ खांह्ग्गा।
'मै खाऊँगा।'

[2] आस्से खांह्ग्गे।
'हम खाएँगे।'

[3] हाऊँ खांह्ग्गी।
'मै खाऊँगी।'

[4] आस्से खांह्ग्गी।
'हम खाएँगी।'

[2] क्रिया-धातु मे (-ण/न+आ) के साथ भविष्यत् काल की रचना को तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

पुल्लिग/स्त्रीलिंग

एकवचन बहुवचन

[-ण/न+आ]

उदाहरणार्थ—

[1] माँ चल्‌ना । [पु०/स्त्री०]
'मै चलूंगा/चलूंगी ।'

[2] आस्सा चल्‌ना । [पु०/स्त्री०]
'हम चलेंगे/चलेगी ।'

[3] माँ जाणा । [पु०/स्त्री०]
'मैं जाऊँगा/जाऊँगी ।'

[4] आस्सा जाणा । [पु०/स्त्री०]
'हम जाएँगे/जाएँगी ।'

विशेष—भविष्यत्-काल के दोनो रूपो (-ग+आ/ई/ए) तथा (-ण/न+आ) के प्रयोग मे अर्थ स्तर पर किंचित मात्र अन्तर है। (-ग+आ/ई/ए) के योग से क्रिया मे या व्यापार मे सदेह तथा अनिश्चितता का भाव बना रहता है। मगर (-ण/न+आ) के प्रयोग से यह सदेह भी कम हो जाता है तथा निश्चितता का भाव भी आ जाता है।

मण्डियाली भाषा-भाषी इस बात का अर्थात् निश्चितता तथा अनिश्चितता के भाव का थोडा-बहुत ध्यान अवश्य रखते हैं। लेकिन इस सबके बावजूद यह पाया गया है कि इन दोनो रूपो का प्रयोग बिना किसी भेद भाव के किया जाता है।

(-ण/न+आ) के प्रयोग को लेकर 'भावार्थक-सज्ञा' के अन्तर्गत विचार किया गया है।

3.11. भावार्थक-सज्ञा [इनफिनिटिव]—

भावार्थक-सज्ञा, क्रिया का वह रूप है, जो क्रिया कि अवस्था या व्यापार की ओर केवल सकेत करता है। भावार्थक-सज्ञा, क्रिया के प्रकार, काल तथा पुरुष को व्यक्त नही करता।

मण्डियाली मे भावार्थक,'सज्ञा क्रिया-धातु मे(-ण/-न + लिंग, वचन प्रत्यय)जोड़कर बनाई जाती है। भावार्थक सज्ञा, सज्ञा तथा विशेषण के रूप मे प्रयुक्त होती है।

3.11.1. भावार्थक-सज्ञा : सज्ञा के रूप में—

भावार्थक सज्ञा का प्रयोग संज्ञा के रूप मे होता है, इसीलिए इसे भावार्थक-सज्ञा का नाम दिया गया है।

उदाहरणार्थ—

[1] जादा खाणा ठीक नी आँ—'अधिक खाना अच्छा नही है।'

विशेष—सभी उदाहरणो के मध्यम तथा अन्य पुरुषो के पुल्लिग, स्त्रीलिंग तथा एकवचन, बहुवचन रूप उत्तम पुरुष के रूपो के समान हुआ करते हैं। इसी कारण मध्यम

[2] जादा पढ़ना खरा हुआं आं—'अधिक पढ़ना अच्छा होता है।' आदि।

3.11.2. भावार्थक-सज्ञा, विशेषण के रूप मे—

अनेक बार भावार्थक-सज्ञा का प्रयोग विशेषण के रूप मे होता है।

उदाहरणार्थ—

[1] बह्ल्द रोकणा था—'बैल रोकना था।'

[2] द्वार बद करना था—'दरवाजा बन्द करना था।' आदि।

भावार्थक-सज्ञा द्वारा जो भी अमूर्त भाव व्यक्त होता है, अचेतन होता है। यदि भावार्थक-सज्ञा, उद्देश्य आदि व्यक्त करे तो—कठे- 'के लिए' का प्रयोग किया जाता है। आ—'आना' तथा जा—'जाना' धातु के साथ—कठे 'के लिए' का प्रयोग हो भी सकता है और नही भी।

उदाहरणा—

[1] हाऊँ तेज्जो मिलने [कठे] गया था —'मैं उसे मिलने गया था।'

[2] राम मिलने [कठे] आया था —'राम मिलने आया था।' आदि।

अर्थात् जब कठे—'के लिए' का प्रयोग 'आ' तथा 'जा' धातु से पूर्व हुआ हो, तो कठे—'के लिए' का प्रयोग ऐच्छिक हो जाता है।

3 11.3 भावार्थक सज्ञा (प्रत्यय)

भावार्थक सज्ञा बनाने के लिए क्रिया धातु मे निम्नाकित प्रत्ययो का प्रयोग किया जाता है—

(-ण-)

००-ण-, ००-न-

(1) ००-ण—का प्रयोग स्त्रीलिंग चिन्ह्क (-ई) तथा पुल्लिग एकवचन तथा बहुवचन-चिन्ह्क (-आ), (-ए) से पूर्व होता है।

००-ण+ई (-णी) का प्रयोग क्रिया-धातु मे तब होता है, जब क्रिया-धातु से पूर्व स्त्रीलिंग सज्ञा-पद हो।

उदाहरणार्थ —

गाए छाड-णी थी	'गाय छोडनी थी।'
लकडी टुक-णी थी	'लकडी काटनी थी।'
ऊन कात्त-णी थी	'ऊन कातनी थी।' आदि।

००-ण+आ (-णा) को प्रयोग क्रिया-धातु मे तब होता है जब क्रिया-धातु से पूर्व पुल्लिग सज्ञा-पद हो।

उदाहरणार्थ—

आम्ब खा-णा था	'आम खाना था।'

रान्मा जा-णा था — 'राम को जाना था।'

सेऊ काट्-णा था — 'सेब काटना था।' आदि।

-००ण+ए [णे] का प्रयोग क्रिया-धातु मे तब होता है, जब क्रिया-धातु से पूर्व बहुवचन संज्ञा-पद हो।

उदाहरणार्थ—

केले खा-णे थे — 'केले खाने थे।'

आम्ब भेज-णे थे — 'आम भेजने थे।'

कपड़े सी-णे थे — 'कपड़े सिलने थे।' आदि।

[2] ००-न—का प्रयोग स्त्रीलिंग चिन्हक (-ई) तथा पुल्लिग एकवचन तथा बहुवचन चिन्हक (-आ), (-ए) से पूर्व होता है।'

[1] ००-न+ई [-नी] का प्रयोग क्रिया-धातु मे तब होता है, जब क्रिया-धातु से पूर्व स्त्रीलिंग संज्ञा-पद हो।

उदाहरणार्थ—

आग बाल-नी चाहिए — 'आग जलानी चाहिए।'

चाद्दर झाडनी थी — 'चादर झाडनी थी।'

डोहरी खण्-नी थी — 'खेत खोदना था।' आदि।

[2] ००-न+आ [-ना] का प्रयोग तब होता है, जब क्रिया-धातु से पूर्व एक वचन, पुल्लिग संज्ञा पद हो।

उदाहरणार्थ—

रान्मा मिल-ना था — 'राम को मिलना था।'

तेस्स घुल-ना था — 'उसे लडना था।'

सेऊ सड-ना चाहिए — 'सेब सडना चाहिए।' आदि।

[3] ००-न+ए [-ने] का प्रयोग क्रिया-धातु मे तब होता है, जब क्रिया-धातु से पूर्व बहुवचन पुल्लिग संज्ञा पद हो।

उदाहरणार्थ—

पात्थर घड-ने थे। — 'पत्थर घडने थे।'

पात्तर झड़-ने थे। — 'पत्ते झडने थे।'

गाणे सुण-ने थे। — 'गाने सुनने थे।' आदि।

भावार्थक-संज्ञा परप्रत्यय (-ण-/न+आ) का प्रयोग क्रिया-चाँह—'चाहना' से पूर्व होता है।

विशेष—(-ण-) का प्रयोग स्वरांत क्रिया-धातुओ तथा ल, ल़, ड, ण, ड़, र व्यंजनात क्रिया-धातुओं को छोड़कर अन्य सभी क्रिया-धातुओ के साथ होता है।

खा-णा चाँह् आँ ।	'खाना चाहता है ।'
भेज-णा चाँह् आँ ।	'भेजना चाहता है ।'
मिल्-ना चाँह् आँ ।	'मिलना चाहता है ।'
कर्-ना चाँह् आ ।	"करना चाहता है ।' आदि ।

3.1 1.4 भावार्थक-संज्ञा, भविष्यत्-काल द्योतक—

मण्डियाली मे भावार्थक-संज्ञा की मुख्य विशेषता यह है कि धातु मे (-ण/न + आ) जोडने से भविष्यत् काल का भाव भी आ जाता है । अर्थात् (-ण-/न + आ) भावार्थक-संज्ञा परप्रत्यय भविष्यत् काल-चिन्हक भी है ।

उदाहरणार्थ—

माँ जा-णा ।	'मैं जाऊँगा ।'
तेस्सा कर्-ना ।	'वह करेगी ।'
माँ पाणी पी-णा ।	'मैं पानी पीऊँगा ।'
माँ खेतर खण-ना ।	'मैं खेत खोदूंगा ।'
तेस्स रोट्टी खा-णी ।	'वह रोटी खाएगा ।'
आस्सा भाण्डे माँज-णे	'हम बर्तन साफ करेंगे ।'
तिन्हाँ पात्थर भर-ने ।	'वे पत्थर भरेंगे ।' आदि।

3 12 कृदत-विशेषण तथा निरपेक्षिक [पार्टीसिपल्ज एँड एब्सोल्यूटिव]—

3 12 1 कृदत-विशेषण [पारट्रीसिपल्ज]—

क्रिया के वे रूप जो सज्ञा या सर्वनाम की विशेषता व्यक्त करें तथा साथ मे क्रिया के भी कुछ गुण रखते हो, कृदत विशेषण कहलाते हैं । कृदत-विशेषण, क्रिया-धातु से व्युत्पन्न होते हैं ।

मण्डियाली कृदत-विशेषणो को मुख्य रूप ने दो वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] वर्तमान कालिक कृदत विशेषण तथा

[2] भूतकालिक कृदत विशेषण ।

3 12.1 1 वर्तमान कालिक कृदत विशेषण—

वर्तमान कालिक कृदत विशेषण, विशेषण का ही नाम है, जो कि क्रिया-धातु से व्युत्पन्न है । क्रिया-धातु मे (-द-) जोड कर वर्तमान कालिक कृदत विशेषण की व्युत्पत्ति होती है ।

विशेष—(-न-) परप्रत्यय का प्रयोग [ल, ल, ड, ण, ढ र] व्यजनात क्रिया-धातुओ के साथ होता है ।

भावार्थक सज्ञा परप्रत्यय अपने कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलता है ।

नियम—वर्तमान कालिक कृदत (-द-) जोड़ने पर क्रिया-धातु मे निम्नांकित क्रियाएँ जुड़ती हैं—

[1] धातु का स्वर अनुनासिक हो जाता है ।

[2] स्वरात धातु मे [-द-] दीर्घ [-दद-] हो जाता है ।

इसे तालिका मे इस प्रकार दिखा सकते हैं ।—

वर्तमान कालिक कृदंत (-द-)

धातु

स्वरात	व्यंजनात
{ +अनुनासिकता +[-दद-] [दीर्घता] }	{ -अनुनासिकता -दीर्घता }

उदाहरणार्थ—

क्रिया-धातु	कृदंत-विशेषण	
खा	खाँद्‌दा	'खाता'
पी	पिंद्‌दा	'पीता'
कर	कर्‌दा	'करता
चल	चल्‌दा	'चलता' आदि ।

वर्तमान कालिक कृदत, क्रिया के कर्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार अपन रूप बदलता है । वास्तव में (-द-) वैसे ही रहता है मगर (-द-) मे जुड़ने वाला पर प्रत्यय अपना रूप बदलता है ।

वर्तमान कालिक कृदत का प्रयोग निम्नांकित रूपो मे हो सकता है—

3.12.1.1.1 वर्तमान कालिक कृदत 'विशेषात्मक' प्रयोग—

वर्तमान कालिक कृदंत का विशेषण के रूप मे प्रयोग होता है ।

उदाहरणार्थ—

न्हाँद्‌दी म्हठी जो नी छेड़ा ।	'नहाती लड़की को मत छेड़ो ।'
चलदे म्हाणु जो रोकको ,	'चलते आदमी को मत रोको ।'
खिलदे फूल तोड़े ।	'खिलते फूल तोड़े ।' आदि ।

3.12.1.1.2 वर्तमान कालिक कृदत 'क्रिया विशेषणात्मक' प्रयोग—

वर्तमान कालिक कृदत का प्रयोग क्रिया-विशेषण के रूप मे भी होता है ।

उदाहरणार्थ—

से चलदे-चलदे बैट्ठी गई ।	'वह चलते-चलते बैठ गई ।

स्यों पढ़दे-पढदे थक्की गए । 'वे पढते-पढ़ते थक गए ।'

हाउँ खेल्दे-खेलदे पई गृया । 'मैं खेलते-खेलते गिर गया ।'

वर्तमान कालिक कृदंत जब क्रिया-विशेषण के रूप मे प्रयुक्त होता है, तो वह कर्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलता है ।

3.12.1.1 3. **वर्तमान कालिक-कृदंत 'विधेयक' प्रयोग—**

वर्तमान कालिक कृदत का विधेय के रूप मे भी प्रयोग होता है । विधेय के रूप मे इस कृदंत मे क्रिया-विशेषण के गुण होते हैं ।

उदाहरणार्थ—

मैं, म्हठी जो गाँद्दे सुणया ।	'मैंने लडकी को गाते सुना ।'
मैं, सीता खाँद्दी देक्खी ।	'मैंने सीता को खाते देखा ।'
आस्से, म्हठे रोद्दे सुणे ।	'हमने लडको को रोते सुना ।' आदि ।

3.12.1.1.4 **वर्तमान कालिक कृदंत संज्ञा प्रयोग—**

वर्तमान कालिक कृदत का प्रयोग सज्ञा के रूप मे भी होता है।

उदाहरणार्थ—

उठ्-दे जो सुवाओ ।	'उठते को सुलाओ ।'
बोल्-दे जो चुप्वाओ	'बोलते को चुपाओ ।'
डुब्-दे जो बचाओ ।	'डूबते को बचाओ ।' आदि ।

3 12.1.2 **भूत कालिक कृदत विशेषण—**

क्रिया-धातु का वह रूप जिससे भूत काल का बोध हो, भूतकालिक कृदत विशेषण कहलाता है ।

क्रिया-धातु मे भूत कालिक कृदत (-य/ϕ) जोडकर भूतकालिक कृदत विशेषण व्युत्पन्न होता है ।

'आ, ऊ, ऐ, ओ तथा औ' से अन्त होने वाली क्रिया-धातुओ मे तथा व्यजनात क्रिया-धातुओ मे [एकवचन, पुल्लिग] के साथ (-य-) तथा [बहुवचन, स्त्रीलिंग] के साथ (-ϕ) जोड़ा जाता है ।

उदाहरणार्थ—

क्रिया-धातु	**कृदत-विशेषण**	
आ	आया	'आया
छू	छुया	'छूआ'
लै	लया	'लिरा'
धो	धोया	'धोया'
पौ	पया	'पिरा'

क्रिया धातु	कृदंत विशेषण	
मर	मर्‌या	'मरा'
बोल	बोल्‌या	'बोला'
चल	चल्‌या	'चला'
मर	मरी	'मरी'
चल	चले	'चले'
चली	चली	'चली' आदि ।

विशेष—ऐसी क्रिया-धातुएँ जो कि (-य-/ϕ) भूत कालिक-कृदत की अपवाद हैं, को लेकर पहले ही [3.9.2.3.2.] के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है । भूत कालिक कृदत विशेषण का प्रयोग निम्नांकित रूपो मे होता है ।

3.12.1.2.1. भूत कालिक कृदत 'विशेषणात्मक' प्रयोग—

भूत कालिक कृदत का प्रयोग अनेक बार विशेषण के रूप मे होता है ।

उदाहरणार्थ—

मैं मुइरी गाए देक्खी ।	'मैंने मरी हुई गाय देखी ।'
मैं मुइरा म्हाणु देख्या ।	'मैंने मरा हुआ आदमी देखा ।'
आस्से मुइरे कुत्ते देक्खे ।	'हमने मरे हुए कुत्ते देखे ।'

3.12.1.2.2. भूत कालिक कृदत 'क्रिया विशेषणात्मक' प्रयोग—

भूत-कालिक कृदत का प्रयोग 'क्रिया-विशेषण के रूप मे होता है ।

उदाहरणार्थ—

तेज्जो गए त्राए साल हुई गए ।	'उसे गए तीन साल हो गए।
हाऊँ खड़िरे-खड़िरे थक्की गया ।	'मैं खड़े-खडे थक गया ।'
हाऊँ खडिरे-खडिरे थक्की गई ।	'मैं खडे-खडे थक गई ।'

3.12.1.2.3. भूत-कालिक कृदत 'संज्ञा' प्रयोग—

भूतकालिक कृदत का संज्ञा के रूप मे भी प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ—

पढ़े-लिक्खे जो क्या समझाइए ।	'पढ़े-लिखे को क्या समझावें ।
समझदारा जो क्या बोलिए ।	'समझदार को क्या कहा जाए ।
मुइरे जो नी मारो ।	'मरे को मत मारो ।'

3.12.2. निरपेक्षिक [एब्सोल्यूटिव]—

मण्डियाली मे निरपेक्षिक की रचना क्रिया-धातु मे (-ई) तथा (कने) 'कर' जोड़कर होती है । अतः निरपेक्षिक की रचना इस प्रकार होगी—

(क्रिया-धातु+ई##कने~के)

उदाहरणार्थ—

आई कने/के	आकर/के
करी कने/के	करके
चली कने/के	चल कर/के आदि ।

कामता प्रसाद गुरु जी इस प्रकार की रचना को 'पूर्व-कालिक कृदंत' की संज्ञा देते हैं—'पूर्व कालिक कृदत अव्यय धातु के रूप मे रहता है अथवा धातु के अन्त में 'के', 'कर' या 'करके' जोड़ने से बनते हैं।'[1]

डॉ० आर्येन्द्र शर्मा धातु मे 'कर' या 'करके' जोड़ने से बने रूप को 'निरपेक्षिक' की संज्ञा देते हैं—'निरपेक्षिक की रचना मुख्य-क्रिया की धातु मे क्रिया+कर 'कर' के योग से बनती है।'[2]

3.12.2.1. संयुक्त निरपेक्षिक—

संयुक्त निरपेक्षिक मे दो मूल धातुएँ साथ-साथ आती हैं तथा उनके पश्चात् करने—'कर' जोड़ा जाता है।

उदाहरणार्थ—

खाई-पी कने/के	'खा-पी कर/के'
पढ़ी-लिक्खी कने/के	'पढ़-लिख् कर/के' आदि ।

निरपेक्षिक में क्रिया-विशेषण के गुण हैं। क्रिया-विशेषण होने के कारण वाक्य के कर्ता या कर्म के लिंग, वचन के कारण इस पर कोई प्रभाव नही पडता है। निरपेक्षिक का हर स्थान पर यही रूप प्रयुक्त होता है।

उदाहरणार्थ—

माँ रोट्टी खाई कने जाणाँ।	'मैं रोटी खा कर जाऊँगा'	[समय]
से सई कने आया।	'वह सो कर आया।'	[रीति]
एत्ताओ सुणी कने से रोया।	'यह सुन कर वह रोया।'	[कारण]

निरपेक्षिक के कुछ विशेष प्रयोग इस प्रकार हैं—

उदाहरणार्थ—

खास करी कने।	'विशेष कर के।'
एक्-एक् करी कने।	'एक-एक करके।'
एत्थी ते लेई कने बणा तक।	'यहाँ से लेकर जगल तक।' आदि।

---

1. कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ 187
2. 'The Absolutvie is formed by combining the verb कर —'do' with the root-form of the main verb'.
A.sharma, A basic grammar of Modern Hindi, P. 113

3.12 3 परसर्ग 'वाला≈औला' [कृदंत विशेषण]—

'वाला≈औला' रूप या परसर्ग को कृदत विशेषण के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। यह कृदत-विशेषण, भावार्थक-सज्ञा-पद मे 'वाला≈औला' —'वाला' जोड कर बनता है। वाला≈औला-'वाला' से तात्पर्य कर्ता या'करने वाला' से है। इस प्रकार यह विशेषण का कार्य करता है।

उदाहरणार्थ—

मारने वाला/औला	'मारने वाला।'
पीणे वाला/औला	'पीने वाला।' आदि।

इस कृदत विशेषण का प्रयोग निम्नाकित रूपो मे होता है।

3 12 3 1. 'सज्ञा' के रूप मे—

वाला≈औला- 'वाला' सज्ञा पदो के पश्चात् जुडकर सज्ञा-पद का मालिक य स्वामी बनता है।

उदाहरणार्थ—

घरा वाला≈औला	'घर वाला।'
केलें वाला≈औला	'केले वाला।' आदि।

3 12 3 2. 'विधेयक' के रूप मे—

विधेयक के रूप मे यह भविष्यत् की ओर सकेत करता है।

उदाहरणार्थ—

से जाणे वाला आ।	'वह जाने वाला है।'
से मरने वाली ई।	'वह मरने वाली है।'
हाऊँ उठणे वाला आ।	'मै उठने वाला हूँ।'

विशेष— वाला≈औला—'वाला' परसर्ग से बना रूप मुख्य रूप से विशेषण होने के कारण वाक्य के कर्त्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलता है। अर्थात् बालें≈औलें—'वाले' तथा वाली≈औली 'वाली' रूप बनते हैं।

3 13 संयुक्त क्रियाएँ [कम्पाऊँड वर्बज]—

दो या अधिक क्रियाओ के योग से सयुक्त-क्रियाएँ बनती हैं लेकिन इसके साथ यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि दो या अधिक क्रियाओ का फलयोग सयुक्त-क्रिया की सज्ञा नही पाती। अत यह आवश्यक है कि क्रिया-सयोग और सयुक्त-क्रिया मे भेद कर लिया जाए।

इस भेद को स्पष्ट करने के लिए निम्नाकित उदाहरण दिए जा सकते है—

[1] [क] राम जाँह् आँ — 'राम जाता है।'

[ख] म्हूठिया थे दवार खुल्ली गया। 'लडकी से दरवाजा खुल गया।'

[ग] म्हठा दौडदा लगिरा 'लडका दौड रहा है।'
[घ] एत्थी नी सई हुँद्दा। 'यहाँ नही सोया जाता।'

उपर्युक्त वाक्यो पर यदि ध्यान दिया जाए, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक वाक्य मे कम से कम दो क्रियाओ का सयोग है, जिसकी प्रथम इकाई मुख्य-क्रिया है और दूसरी इकाई सहायक-क्रिया है। लेकिन इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि प्रथम इकाई अर्थात् मुख्य-क्रिया अपनी प्रकृति मे 'कोशीय' [लैक्सीकल] है, जिसके अर्थ को भाषा के शब्द कोश मे ढूढा जा सकता है। इसके विपरीत क्रिया-सयोग की दूसरी या तीसरी इकाई की प्रकृति व्याकरणिक है। व्याकरणिक इकाईयो का जहाँ तक प्रश्न है, उनका कोशीय अर्थ नही होता, वे एकमात्र व्याकरणिक प्रकार्य के सूचक चिन्ह होते हैं।

उदाहरण के लिए प्रथम वाक्य [क] मे अगर 'जाँह्'—'जाता' कोशीय-क्रिया 'जाना' हे तो सहायक-क्रिया के रूप मे 'आँ' 'है' मात्र काल सूचक चिह्न है। इसी प्रकार दूसरे वाक्य [ख] मे 'खुल्ली गया'—'खुल गया' पदबन्ध मे 'खुलना' तो मुख्य क्रिया होने के कारण कोशीय है पर 'गया मात्र कर्मवाच्य सूचक चिह्न है। इसी प्रकार तीसरे वाक्य [ग] मे 'दौडना' यदि कोशीय क्रिया है तो 'लगिरा'— 'रहा है' पक्ष और काल का सूचक चिन्ह माना जा सकता है। इसी प्रकार चौथे वाक्य [घ] मे 'सोना' मुख्य क्रिया है और 'हुँददा' 'जाता' भाववाचक का सूचक मात्र प्रत्यय है।

ऐसे क्रिया-सयोग को संयुक्त-क्रिया की सज्ञा नही दी जा सकती, जिसमे मुख्य क्रिया के अतिरिक्त जो क्रिया सयुक्त हो मात्र व्याकरणिक हो।

सयुक्त-क्रिया के लिए आवश्यक है कि मुख्य-क्रिया के साथ सयुक्त होने वाली क्रिया, मुख्य-क्रिया के अर्थ मे रजकता लाने का कार्य करे। यह कहा जा सकता है कि सयुक्त-क्रिया = मुख्य क्रिया + रजक-क्रिया का सयोग है।

निम्नाकित उदाहरण लिए जा सकते हैं—

[2] [क] से खाँद्दा लगया। 'वह खाने लगा।'
[ख] से दौडी पया 'वह दौड़ पडा।'
[ग] मोहणे कताब पढी लई 'मोहन ने किताब पढ ली।'
[घ] म्हठा आम्ब खाई गया 'लडका आम खा गया।'

अगर प्रथम वाक्य [क] पर ध्यान दे तो लगणा—'लगना', खाँद्दा—'खाने' की क्रिया का प्रारम्भ होने के रजक अर्थ से सयुक्त है। दूसरे वाक्य [ख] मे पया—'पडना' 'दौडने' की क्रिया का आकस्मिकता के अर्थ से रजित करता है। तीसरे [ग] तथा चौथे [घ] वाक्यो मे लई- लिया' और 'गया' मुख्य क्रिया के अर्थ की पूर्णता के अर्थ से रजित करता है। ऊपर के सभी उदाहरणो मे रजक-क्रिया उस प्रकार की व्याकरणिक क्रिया नही है जैसा कि [1] के अन्तर्गत दिए गए उदाहरणो के वाक्यो मे है।

सयुक्त-क्रियाओ के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

[1] से खाँददा लगया 'वह खाने लगा।'
[2] सुयो गाँद्वे लगे 'वे गाने लगे।'

[3] स्यो पिंद्दी लगी — 'वे पीने लगी।'
[4] से घुल्दा गया — 'वह लड़ने गया।'
[5] हाऊँ चली पया — 'मैं चल पड़ा।'
[6] आस्से खांद्दे लगगे — 'हम खाने लगेंगे।'
[7] हाऊँ खेल्दा चल्या — 'मैं खेलने चला।'
[8] हाऊँ गांद्दा लग्या — 'मैं गाने लगा।'
[9] से रोद्दा लगा ओं — 'वह रोने लगता है।'
[10] हाऊँ बैठ्दा लगया — 'मैं बैठने लगा।'
[11] हाऊँ हास्सी बैठ्या — 'मैं हँस बैठा।'
[12] से गाई बैठ्या — 'वह गा बैठा।'

मुख्य-क्रिया के आधार पर मण्डियाली मे सयुक्त-क्रियाओ को मुख्य रूप से चार वर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] मुख्य-क्रिया 'धातु' — [निरपेक्षिक रूप]
[2] भावार्थक 'सज्ञा' — [इनफिनिटिव]
[3] वर्तमान कालिक 'कृदत — [प्रैजैन्ट पारटिसिपल्ज]
[4] भूतकालिक कृदत — [पास्ट पारटिसिपल्ज]

3.1 3.1. मुख्य क्रिया 'धातु' [निर्पेक्षिक-रूप]

सयुक्त-क्रिया के इस वर्ग मे मुख्य-क्रिया निरपेक्षिक-क्रिया होती है। निरपेक्षिक-क्रिया की सहायक या सयुक्त क्रिया के रूप मे निम्नाकित क्रियाएँ आ सकती हैं—

[क] जाणा—'जाना' सयुक्त-क्रिया कार्य की 'पूर्णता' व्यक्त करती है। उदाहरणार्थ—

[1] मां सारा काम करी जाणा। — 'मैं सारा काम कर जाऊँगा।'
[2] स्यो सब किच्छ बोल्ली गए। — 'वे सब कुछ बोल गए।'
[3] से चली गया। — 'वह चला गया।'
[4] गीता पई गई। — 'गीता गिर गई।'

[ख] बैठणा--'बैठना' संयुक्त-क्रिया कार्य की पूर्णता को व्यक्त करती है। उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ खाई बैठ्या — 'मैं खा बैठा।'
[2] आस्से न्हाई बैठ्ठे — 'हम नहा बैठे।'
[3] तिन्हां खाई बैठ्णा। — 'वे खा बैठेंगे।'
[4] हाऊँ गाई बैठ्ठी थी। — 'मैं गा बैठी थी।'

[ग] देणा—'देना' सयुक्त क्रिया के रूप मे कार्य की 'पूर्णता' को व्यक्त करती है। अप्रत्यक्ष रूप से इसका अपना अर्थ भी व्यक्त होता है।

उदाहरणार्थ—

[1] ए काम तेस्स करी देणा । — 'यह काम वह कर देगा ।'
[2] हाऊँ राम्मे पढाई दित्ता । — 'मुझे राम ने पढ़ा दिया ।'
[3] रस्सी छाड्डी दित्ती । — 'रस्सी छोड दी ।'

[घ] लेणा≈लैणा 'लेना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य की 'पूर्णता' को व्यक्त करती है । इससे 'इच्छा' भी व्यक्त होती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] मां पढी लैणा । — 'मै पढ लूंगा ।'
[2] मैं मारी लया । — 'मैंने मार लिया ।'
[3] तेस्से सुणी लया था । — 'उसने सुन लिया था ।' (स्त्री०)

[ङ] पौणा—'पडना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य की 'पूर्णता' तथा इच्छा को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] से चली पया । — 'वह चल पडा ।'
[2] आस्से हास्सी पए । — 'हम हँस पडे ।'
[3] स्यो बोल्ली पई । — 'वे बोल पडी ।'

[च] सकणा—'सकना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य को करने की योग्यता तथा 'शक्ति' को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ जाई सक्कां आं । — 'मैं जा सकता हूँ ।'
[2] से नी मारी सक्या । — 'वह नही मार सका ।'
[3] से नी खाई सकदी । — 'वह नही खा सकती ।'

[छ] रखणा—'रखना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य को समय से पूर्ण' करने की ओर सकेत करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] तेस्स डोली रखणा । — 'वह उडेल रखेगा ।'
[2] तिन्ने गाई रख्या । — 'उसने खा रखा ।'
[3] हाऊँ मारी रखगा । — 'मैं मारे रखूगा ।'

[ज] मारना—'मारना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य के प्रति 'असावधानी' को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ रुढाई मारी । — 'मुझे गिरा मारा ।' [स्त्री०]
[2] पाणी डोली मार्या । — 'पानी उंडेल मारा ।'

[3] से सट्टी मारगा ।　　　　'वह फैंक मारेगा ।'

इसी प्रकार—आउँणा—'आना' तथा मरना—'मरना' आदि क्रियाओं का भी सयुक्त-क्रिया निरपेक्षिक-क्रिया के रूप मे प्रयोग होता है ।

3.13 2 मुख्य-क्रिया [भावार्थक सज्ञा]—

मुख्य-क्रिया, भावार्थक सज्ञा का प्रयोग सयुक्त-क्रिया के साथ दो प्रकार से होता है—

[1] मुख्य क्रिया भावार्थक संज्ञा　　　　[प्रत्यक्ष रूप]
[2] मुख्य क्रिया, भावार्थक मज्ञा　　　　[तिर्यक् रूप]

3.13 2.1. मुख्य क्रिया, भावार्थक सज्ञा [प्रत्यक्ष रूप]—

मुख्य क्रिया भावार्थक सज्ञा [प्रत्यक्ष रूप] के साथ निम्नाकित क्रियाएँ, सयुक्त-क्रिया के रूप मे प्रयुक्त होती हैं—

[क] चाँह् —'चाहना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे इच्छा को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊँ जाणा चाँह् था ।　　　　'मैं जाना चाहता था ।'
[2] से खाणा चाँह्गा ।　　　　'वह खाना चाहेगा ।'
[3] से बैठणा चाँह् आँ ।　　　　'वह बैठना चाहता है ।'

[ख] पौणा—'पडना' सयुक्त क्रिया के रूप मे 'आवश्यकता' या 'विवशता' को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] तुज्जो जाडा पौंणा ।　　　　'तुझे जाना पडेगा ।'
[2] मज्जो बैठणा पया ।　　　　'मुझे बैठना पडा ।'
[3] तेज्जो आउँणा पौ ।　　　　'उसे आना पडे ।'

3 13 2 2 मुख्य क्रिया, भावार्थक सज्ञा [तिर्यक् रूप]—

मुख्य क्रिया भावार्थक सज्ञा [तिर्यक् रूप] के साथ निम्नाकित क्रियाएँ, सयुक्त क्रिया के रूप मे प्रयुक्त होती है ।

[क] देणा—'देना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य की 'इच्छा, आज्ञा, प्रारम्भ तथा पूर्णता' को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] तेज्जो खाणे द्यो ।　　　　'उसे खाने दो ।'
[2] मज्जो मारने दे ।　　　　'मुझे मारने दे ।'
[3] तेज्जो पाणी दित्ता ।　　　　'उसे पानी दिया ।'

[ख] लगणा—'लगना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य की 'इच्छा' तथा 'प्रारम्भिकता' को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ --

[1] मीं पाणी पिद्दे लगणा । 'मैं पानी पीने लगूंगा ।'
[2] राम जांद्दा लग्या । 'राम जाने लगा ।'
[3] से खांद्दी लगी । 'वह खाने लगी ।'
[4] आस्से दौडदे लगे 'हम दौडने लगे ।'

3 13 3 मुख्य क्रिया [वर्तमान कालिक कृदत]—

वर्तमान कालिक कृदत की मुख्य क्रिया, कर्ता या कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप बदलती है । वर्तमान कालिक कृदत के साथ मुख्य क्रिया के साथ निम्नांकित सयुक्त क्रियाएँ आती है—

[क] रैह्.णा—'रहना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य की 'निरन्तरता तथा अभ्यास' को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] पाणी घट्दा रौंह्. आं । 'पानी घटता रहता है ।'
[2] तेस्से खांद्दे रैह्.णा । 'वह खाता रहेगा ।'
[3] से चल्दा रैह्.या । 'वह चलता रहा ।'

[ख] जाणा—'जाना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य की 'निरन्तरता तथा पूर्णता' को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] रात घट्दी जांह्. ई 'रात घटती जाती है ।'
[2] राम बैठदा गया । 'राम बैठता गया ।'

[ग] आउंणा—'आना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य की 'निरन्तरता तथा पूर्णता' को व्यक्त करती है ।

उदाहरणार्थ—

[1] तेस्स खांद्दे आउंणा । 'वह खाता आएगा ।'
[2] सीता हास्सदी आई । 'सीता हँसती आई ।'

3 13 4 मुख्य-क्रिया [भूतकालिक-कृदत]—

जब मुख्य-क्रिया, भूत कालिक कृदत के योग से बनी हो, तो मुख्य-क्रिया [वर्तमान कालिक कृदत] की तरह वाक्य के कर्ता या कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार अपना रूप नही बदलती । मगर मुख्य-क्रिया के साथ जो दूसरी क्रिया, सयुक्त-क्रिया के रूप मे आती है, वह वाक्य के कर्ता तथा कर्म के अनुसार अपना रूप बदलती है ।

मुख्य-क्रिया [भूतकालिक-कृदत] के साथ निम्नांकित क्रियाएँ, सयुक्त-क्रिया के रूप मे आती हैं—

[क] करना—'करना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे 'आज्ञा, इच्छा' को व्यक्त करती हैं ।

उदाहरणार्थ—

[1] तू पढ़्या कर। 'तू पढ़ा कर।'

[2] तुस्से चल्या करो। 'तुम चला करो।'

[ख] जाणा—'जाना' सयुक्त-क्रिया कार्य की 'पूर्णता' को व्यक्त करती है।

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊं बैट्ठी गया। 'मैं बैठ गया।'

[2] से हास्सी गई। 'वह हँस गई।'

[ग] लेणा~लैणा—'लेना' सयुक्त-क्रिया कार्य की 'पूर्णता' तथा 'इच्छा' को व्यक्त करती है।

उदाहरणार्थ—

[1] हाऊं सई लया। 'मै सो लिया।'

[2] मां दौडी लैणा। 'मै दौड लूंगा।'

[3] हूण हे पढी लेयां आं। 'अभी ही पढ़े लेता हूं।'

[घ] पौंणा—'पडना' सयुक्त-क्रिया के रूप मे कार्य की 'पूर्णता' तथा 'सन्देह' को व्यक्त करती है।

उदाहरणार्थ—

[1] म्हूठा चली पवां आं। 'लडका चल पडता है।'

[2] से दौडी पया। 'वह दौड पडा।'

[3] तेस्स चली पौंणा। 'वह चल पड़ेगा।'

विशेष—

मण्डियाली मे सयुक्त-क्रियाओ का प्रयोग अधिक होता है। संयुक्त-क्रियाओ से मुख्य रूप से कार्य की पूर्णता, इच्छा, आज्ञा, प्रारम्भ, निरन्तरता तथा पक्ष आदि बातें व्यक्त होती हैं।

3.14. क्रिया-विशेषण [एडवर्बज़]—

क्रिया-विशेषण वे पद हैं, जो क्रिया के विशेष्य के रूप मे प्रयुक्त होते हैं। दूसरे शब्दो मे क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाले पद क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।

सार्वनामिक क्रिया विशेषण, निश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक तथा प्रश्नवाचक सर्वनाम पदो से व्युत्पन्न हैं। मण्डियाली मे क्रिया-विशेषण पदो को मुख्य रूप से निम्नांकित वर्गों मे बांट सकते हैं—

[1] स्थानवाचक क्रिया-विशेषण [एडवर्बज प्लेस]

[2] कालवाचक क्रिया-विशेषण [एडवर्बज टाईम]

[3] रीतिवाचक क्रिया-विशेषण [एडवर्बज ऑफ मैन्नर]

[4] परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण [एडवर्बज ऑफ क्वांटिटी]

3.1 4.1. स्थानवाचक क्रिया विशेषण—

स्थानवाचक क्रिया-विशेषणो को मुख्य रूप से तीन उपवर्गों मे बाँट सकते हैं—

स्थितिवाचक	दिशावाचक		प्रश्नवाचक
एत्थी 'यहाँ'	एत पास्से	'इस ओर'	
तेत्थी 'वहाँ'	एस्स-पास्से	'इसी ओर'	केत्थी 'कहाँ'
जेत्थी 'जहाँ'	तेस्स-पास्से	'उसी ओर'	केस्स-पास्से 'किस
	जेस्स-पास्से	'जिस ओर'	ओर'

अन्य स्थानवाचक क्रिया-विशेषण इस प्रकार हैं—

आग्गे	'आगे'	भित्तर	'अन्दर'
पिच्छे	'पीछे'	बाह्र	'बाहर'
प्रयाल्हे	'ऊपर'	देह्णे	'दाएँ'
थाल्ले	'नीचे'	बाँवे	'बाएँ'
बुन्ह	'नीचे'	नेड्डे	'समीप'
दूर	'दूर'	मझा	'बीच'
सारे	'सारे'	चहूँ-पा'मे	'चारो ओर'

3 14.2 कालवाचक क्रिया-विशेषण—

कालवाचक क्रिया-विशेषणो को मुख्य रूप से चार उपवर्गों मे बाँट सकते है—

[1] समयवाचक		[2] अवधि वाचक	
एब्भे~एब्बे	'अब'	एब्भे-एब्बे तक	'अब तक'
तेब्भे~तेब्बे	'तब'	तेब्बे-तेब्बे तक	'तब तक'
जेब्भे~जेब्बे	'जब'	जेब्भे-जेब्बे तक	'जब तक'

[3] पुन्य वाचक		[4] प्रश्न वाचक
रोज-रोज	'प्रतिदिन'	केब्भे-केब्बे 'कब'
ध्याड-ध्याड	'रोज आना'	
बार-बार	'बार-बार'	
घड़ी-घड़ी	'घड़ी-घड़ी'	

अन्य कालवाचक क्रिया-विशेषण इस प्रकार हैं—

आज	'आज'	तेब्बे-है	'तभी'
काल	'कल'	एब्बे-है	'अभी'

परसी	'परसों'	हुण-हे	'अभी ही'
चौथ	'चौथ'	पैह्‌ले	'पहले'
ध्याड़	'दिन'	फेरी	'फिर'
झट	'जल्दी'	भ्याग्गा	'सुबह'
झटपट	'शीघ्र'	संझा	'शाम'
सुताब्बी	'जल्दी'	एत्तणे-मझा	'इतने में'

3 14.3. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण—

रीतिवाचक क्रिया-विशेषणों को मुख्य रूप से निम्नांकित चार उपवर्गों में बांट सकते हैं—

[1] प्रकारवाचक

इह्‌यां	'ऐसे'
तिह्‌यां	'वैसे'
जिह्‌यां	'जैसे'

[2] निश्चयवाचक

जरूर	'अवश्य'
सच	'सच'
बेसक	'बेसक'

[3] अनिश्चयवाचक

साएद	'शायद'
सायद	'शायद'
बोह्‌त करी के	'बहुत करके'

[4] प्रश्नवाचक

किह्‌यां	'कैसे'
की	'क्यों'

अन्य रीतिवाचक क्रिया-विशेषण इस प्रकार हैं—

मट्ठे	'धीरे'	आप्पू मझा	'आपस में'
मट्ठे-मट्ठे	'धीरे-धीरे'	ध्यान्ना कने	'ध्यान से'
चानक	'अचानक'	आप्पू ही	'आप, स्वय ही'
सुलै	'धीरे'	सई≈सह्‌ई	'ठीक, सही'
सुलै-सुलै	'धीरे-धीरे	ठीक	'ठीक'
मज्जे कने	'आराम से'	एस्स-कठे	'इसलिए'
हां	'हाँ'	केस्स-कठे	'किसलिए'
नी≈नई	'नहीं'	तेस्स-कठे	'उसी लिए'
मत	'मत'	तिद्धिरे-कठे	'उसी लिए'
		किद्धिरे-कठे	'किसलिए'

3 14 4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण—

परिमाणवाचक क्रिया-विशेषणों को मुख्य रूप से निम्नांकित चार उपवर्गों में बांट सकते हैं—

[1] अधिकता बोधक		[2] न्यूनता बोधक	
बोह्त	'बहुत'	थोडा	'थोडा'
भतेरा	'काफी'	'जरा-जे	'थोडा-सा'
काफी	'काफी'	'थोडा-जे	'थोडा-सा'
बड्डा	'बडा'	किच्छ	'कुछ'
भारी	'भारी'	कुछ	'कुछ'

[3] तुलनाबोधक		[4] प्रश्न बोधक	
जादा	'ज्यादा'	कित्तणा	'कितना'
घट	'कम'		
इत्तणा	'इतना'		
तित्तणा	'उतना'		
जित्तणा	'जितना'		

अन्य परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण इस प्रकार हैं—

बरोबर	'बराबर'	सिर्फ	'केवल'
बिल्कुल	'बिल्कुल'	काफी	'काफी'
बड्डा भारी	'बहुत भारी'	बारी-बारी	'बारी-बारी'

3.15. युक्त-पद [क्लीटिक्स]—

युक्त पद वे पद हैं, जिनमे कारक परसर्ग तथा काल-परप्रत्यय नही जोडे जाते। इन्हे आबद्ध रूप भी कहा जा सकता है, क्योकि ये दूसरे युक्त-पदो के साथ ही आते हैं। इनका प्रयोग अपने आप अकेले या स्वतन्त्र रूप मे नही होता है। इसी कारण अर्थात् विभिन्न पदो मे विभिन्न स्थानो मे जोडे जाने के कारण ही इन्हे तीन वर्गों मे बाँटा जा सकता है—

[1] पूर्वा-श्रयी [प्रोक्लीटिक्स]
[2] मध्य-श्रयी [इनक्लीटिक्स]
[3] पश्चा-श्रयी [पोस्ट-क्लीटिक्स]

पूर्वाश्रयी सज्ञा या किसी अन्य युक्त [क्लीटिक्स] से पूर्व आते हैं। मध्यश्रयी, सज्ञा, क्रिया या पूर्वाश्रयी के पश्चात् आते हैं, तथा पश्चाश्रयी, पूर्वाश्रयी के पश्चात् आते हैं।

3 15.1. पूर्वाश्रयी [प्रो-क्लीटिक्स]—

पूर्वाश्रयी को दो उपवर्गों मे बाँट सकते हैं—

[1] निश्चयवाचक-पूर्वाश्रयी तथा
[2] प्रश्नवाचक-पूर्वाश्रयी।

3.15.1.1. निश्चय-वाचक पूर्वाश्रयी—

निश्चयवाचक-पूर्वाश्रयी को फिर दो उपवर्गों मे बांटा जा सकता है—

[1] अव्यवहित तथा [रीमोट]

[2] प्राक्सिमेट [प्रोक्सीमेट]

3. 15. 1. 1. 1. अव्यवहित निश्चयवाचक पूर्वाश्रयी [रिमोट डैमोन्सट्रेटिव प्रो-क्लीटिक्स]—

(तित्त-)

०० तित्त—, ०० तिह्—, ०० तेस्स—

[1] ०० तित्त—परिमाणवाचक, तुलना बोधक मे(-णा)परप्रत्यय से पूर्व आता है। उदाहरणार्थ—

तित्त-णा 'उतना'

[2] ००तिह्—रीतिवाचक, प्रकारवाचक मे (-याँ) परप्रत्यय से पूर्व आता है। उदाहरणार्थ—

तिह्-याँ 'वैसे'

[3] ००तेस्स—स्थानवाचक, दिशावाचक में (-पास्से) परसर्ग से पूर्व तथा रीतिवाचक मे (कठे) परसर्ग से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

तेस्स-पास्से 'उस ओर'

तेस्स-कठे 'उसी लिए'

मण्डियाली मे (तेस्स-)पूर्वाश्रयी, सर्वनाम भी है मगर यहाँ पर यह अव्यवहित निश्चयवाचक पूर्वाश्रयी के रूप मे प्रयुक्त हुआ है।

3. 15. 1 1. 2. प्राक्सिमेट निश्चयवाचक पूर्वाश्रयी [प्रोक्सीमेट डैमोन्सट्रेटिव प्रो-क्लीटिक्स]—

(इत्त-)

०० इत्त—, ०० तिह्— ००एत्त—

[1] ०० इत्त—परिमाणवाचक, तुलना बोधक मे(-णा) परप्रत्यय से पूर्व आता है। उदाहरणार्थ—

इत्त-णा 'इतना'

[2] ०० तिह्—रीतिवाचक-प्रकारवाचक मे (-याँ) परप्रत्यय से पूर्व आता है। उदाहरणार्थ—

तिह्-याँ 'वैसे'

[3] ००एत्त—स्थानवाचक दिशावाचक मे (-पास्सै) परप्रत्यय से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

एत्त-पास्से 'इस ओर'

3 15.1 2 प्रश्नवाचक पूर्वाश्रयी [इ टैरोगेटिव प्रो-क्लीटिक्स]—

(कित्त-)

०० कित्त—, ००किह्—, ००की—, ००केस्स—, ००किढिरे—

[1] ०० कित्त—परिमाणवाचक, प्रश्न बोधक मे (-णा) परप्रत्यय से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

कित्त-णा 'कितना'

[2] ०० किह्—रीतिवाचक, प्रश्न बोधक मे (-यां) से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

किह्-यां 'कैसे'

[3] ०० की—रीतिवाचक क्रिया-विशेषण मे प्रश्नवाचक मे (-ϕ) परप्रत्यय से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

की-ϕ 'क्यों'

[4] ०० केस्स—स्थानवाचक, प्रश्नवाचक मे (-पास्से) परसर्ग से पूर्व तथा रीतिवाचक मे (-कठे) परसर्ग से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ |

केस्स-पास्से 'किस ओर'

केस्स-कठे 'किस लिए'

[5] ०० किढिरे—रीतिवाचक मे (-कठे) परसर्ग से पूर्व आता है।

उदाहरणार्थ—

किढिरे-कठे 'किस लिए'

3.15.2. मध्याश्रयी [इनक्लीटिक्स]—

मण्डियाली मे मध्यश्री-युक्तो को दो उपवर्गों मे बांट सकते है—

[1] अवधारक [एमफैटिक्स]

[2] सयोजक [कन्जक्टिवज]

मध्याश्रयी, अवधारक तथा सयोजक का महत्त्व वाक्य स्तर पर ही समझा जा सकता हैं।

3।15.2.1. अवधारक [एम्फाटिक्स]—

(ही)

अवधारक (ही) को लेकर वाक्य-विन्यास के अन्तर्गत विचार किया गया है। देखे [5 । 4.] [परिबाधक]

3 15 2 2 सयोजक [कन्जीक्टिवज़]—

मण्डियाली मे सयोजको को निम्नाकित चार उपवर्गों मे बांट सकते हैं—

[1] सयोजक
[2] वियोजक
[3] विरोध दर्शक तथा
[4] सकेत दर्शक ।

3.15 2 2 1 सयोजक [कन्जक्टिवज]—

सयोजक से तात्पर्य योजक से है। अर्थात् ऐसे युक्त जो दो वाक्यो या पदो को जोड़े सयोजक कहलाते हैं। मण्डियाली मे निम्नाकित पद सयोजक का कार्य करते हैं।

(होर)

००होर, ०० भी~बी, ०० पर, ००ता

[1] ०० होर—सयोजक युक्त-पद सर्वनाम-पदो के मध्य आता है।

उदाहरणार्थ—

हाऊँ होर तू	'मैं और तू।'
मेज होर कुर्सी	'मेज और कुर्सी।'
रेत होर पात्थर	'रेत और पत्थर।' आदि ।

[2] ००भी~वी के प्रयोग के लिए देखे 'वाक्य-विन्यास' [5 1 4] तथा (5 1 5 3 2]।

[3] ०० पर—यह युक्त-पद, क्रिया-पद तथा सर्वनाम-पद के मध्य आता है।

उदाहरणार्थ—

हाऊँ गया पर से	'मैं गया परन्तु वह ।'
आस्से बैट्ठे पर स्यो ··	'हम बैठे परन्तु वे ।'
तुस्से बोल्या पर हाऊँ··	'आपने कहा लेकिन मैं··।'

[4] ००ता—युक्त-पद के लिए देखें [5 1 5 3 3] 'वाक्य-विन्यास।'

3 15.2 2.2 वियोजक [डिसकन्जक्टिवज]—

मण्डियाली मे वियोजक के अन्तर्गत ही विरोध दर्शक तथा सकेत-दर्शक दोनो भाव विद्यमान रहते हैं। वियोजक से तात्पर्य है अलगाने वाला । अर्थात् ऐसे युक्तपद जो एक वाक्य को दूसरे वाक्य से या एक पद को दूसरे पद से अलगाए, वियोजक कहलाते हैं।

मण्डियाली मे निम्नांकित युक्त-पद वियोजक/का कार्य करते है, जो विरोध-
दर्शक तथा संकेत-दर्शक भी है···

(या)

००या, ००भावे≈चाहे, ००ना/ना, ००नह्ईं ता≈नईं ता
'नही तो'

[1] ०० या—यह वियोजक युक्त-पद सज्ञापदो के मध्य या सज्ञापद तथा क्रिया-पद के मध्य आता है।

उदाहरणार्थ—

तू या से कोई आओ	'तू या वह कोई आओ।'
हाऊँ गया या से गया	'मैं गया या वह गया।'
मां जाणा या तेस्स जाणा	'मैं जाऊँगा या वह जाएगा।'

[2] भावे≈चाहे—(या)वियोजक की तरह ही प्रयुक्त होते है। अर्थात् भावे≈चाहे≈या, मुक्त-वितरण मे हैं।

[3] ०० ना/ना—प्रथम-ना वाक्य के आरम्भ मे सज्ञा-पद से पूर्व आता है तथा दूसरा—ना क्रिया-पद तथा सज्ञा-पद के मध्य आता है।

डॉ० जगदेव सिंह इसे नकारात्मक योजक [नैगेटिव कनैक्टिव] के रूप मे स्वीकार करते हैं—'वह नकारात्मक-योजक [नैगेटिव-कनैक्टिव] के रूप मे काम कर सकता है, और उन शब्दो के बीच रखा जा सकता है, जिन्हे नकारात्मक बनाना हो, उदाहरणार्थ—ना राम ना मोती—'नीदर राम नॉर मोती', राम ना मोती—'नीदर राम नॉर मोती।'[1]

उदाहरणार्थ—

ना एज्जो भेज्जा ना मज्जो।	'न इसे भेजो न मुझे।'
ना रोट्टी खाणी ना पाणी पीणा।	'न रोटी खाऊगा न पानी पीऊँगा।'
ना हास्सणा न रोणा।	'न हसूँगा न रोऊँगा।'

[4] ०० नह्ई ता—यह क्रिया-पद तथा सज्ञा-पद के मध्य आता है।

उदाहरणार्थ—

तेस्स जाणा नह्ई-ता मॉं	'वह जाएगा नही तो मैं।'
तुस्से बैट्ठो नह्ईं-ता हाऊँ गया	'तुम बैठो नही तो मैं गया।'

---

1 'It may Serve as a negative connective and Placed between the Word to be negated E g na ram na moti—'neither Ram nor moti' ram na moti—'Neither Ram nor Moti'

J D Singh, A Descriptive Grammar of Bangru, p 68

तू बोल नह्ईं-ता से आया	'तू बोल नही तो वह आया।'
ह्राऊँ चल्या नह्ईं ता बैठ	'मै चला नही तो बैठ।'

3 15 3 पश्चाश्रयी [पास्ट क्लीटिक्स]—

पश्चाश्रयी से तात्पर्य उन परप्रत्ययो से है जो कि क्रिया-विशेषण पदो के अन्त मे जुडते हैं। पश्चाश्रयी युक्त-पदो के निम्नाकित भेद किए जा सकते हैं—

[1] रीतिवाचक युक्तपद	[क्लीटिक्स ऑफ मैन्नर]
[2] परिमाणवाचक युक्तपद	[क्लीटिक्स ऑफ क्वालिटी]
[3] दिशावाचक युक्तपद	[क्लीटिक्स ऑफ डाएरेक्शन]
[4] स्थितिवाचक युक्तपद	[क्लीटिक्स ऑफ पोजिशन]

3.15.3.1 रीतिवाचक युक्त पद—

(-याँ)

०० -याँ, ०० -कठे

[1] ००-याँ—रीतिवाचक प्रकारवाचक मे परप्रत्यय के रूप मे आता है—

उदाहरणार्थ—

इह्-याँ	'ऐसे'
तिह्-याँ	'वैसे'
किह्-याँ	'कैसे'

[2] ००-कठे—रीतिवाचक क्रिया-विशेषणो मे परसर्ग के रूप मे आता है।

उदाहरणार्थ—

एस्स-कठे	'इसलिए' [मानवीय]
इद्धिरे-कठे	'इसलिए' [अमानवीय]
केस्स-कठे	'किसलिए' [मानवीय]
किद्धिरे-कठे	'किसलिए' [अमानवीय]
तेस्स-कठे	'उसीलिए' [मानवीय]
तिद्धिरे-कठे	'उसके लिए' [अमानवीय]

3 15.3.2 परिमाणवाचक-युक्तपद—

(-णा)

००-णा

[1] ००-णा—परिमाणवाचक मे तुलना बोधक तथा प्रश्नवाचक क्रिया-विशेषणो मे परप्रत्यय के रूप मे आता है। (-णा) अपने कर्ता तथा कर्म के अनुसार अपना रूप बदलता है।

उदाहरणार्थ—

इत्त-णा	'इतना'
एत्त-णा	'इतना'
इत्त-णी	'इतनी'
तित्त-णी	'उतनी'
तित्त-णा	'उतना'
कित्त-णा	'कितना'
कित्त-णे	'कितने' आदि ।

3 15 3 3 **दिशावाचक युक्तपद—**

(-पास्मे)

०० -पास्से

(1) ००-पास्से—स्थानवाचक क्रिया-विशेषणो मे दिशावाचक तथा प्रश्नवाचक क्रिया-विशेषणो मे परप्रत्यय के रूप मे जुडता है।

एत-पास्से	'इस ओर'
एस्स-पास्से	'इस ओर'
केस्स-पास्से	'किस ओर' आदि ।

3 15 3 4. **स्थितिवाचक युक्त-पद—**

(-थी)

००-थी

[1] ००-थी—स्थितिवाचक क्रिया-विशेषणो मे निश्चयवाचक तथा प्रश्नवाचक मे परप्रत्यय के रूप मे जुडता है।

उदाहरणार्थ—

एत्-थी	'यहाँ'
तेत्-थी	'वहाँ'
जेत्-थी	'जहाँ'
केत्-थी	'कहाँ'

3 16 **विस्मयादि-बोधक (इन्टरजेक्शन)—**

विस्मयादि-बोधक उन पदो को कहते है, जिनसे मन के विस्मय, हर्ष, शोक तथा तिरस्कार आदि भाव व्यक्त होते है। इन पर अलग से विचार इसलिए किया जा रहा है, क्योकि इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से होता है, तथा ये पद एक भाव विशेष को व्यक्त करते हैं।

कुछ विस्मयादि-बोधक पद ऐसे हैं, जिनका प्रयोग पूर्व-प्रत्यय के रूप मे सज्ञा-पद से पूर्व होता है, ऐसे पद सम्बोधन के लिए प्रयुक्त होते हैं—

उदाहरणार्थ—

हे भगवान । 'हे भगवान्'
हे राम ! 'हे राम'
ओ भाऊ ! 'ओ लडके ।'

मण्डियाली मे अन्य विस्मयादि बोधक अव्यय निम्नांकित है—

3 16 1. विस्मयादि बोधक—

/ओ हो !, /हैं/, /क्या/, /सच/, /क्या-क्या/, /हुला/ ।

3 16 2 हर्ष बोधक—

/आहा/, बाह्/, /बाह्-बाह्/, साबास/, /धन्नै/, /धन-हो/, /जय-हो/ ।

3 16. 3 शोक बोधक—

/ओह्/, /हाय/, हे राम/, /राम राम/, हाय-दइया, हाय-आम्मा/, /मेरिए-दइया /।

3 16 4 अनुमोदन-बोधक—

/हाँ/, /ठीक/, /बिल्कुल-ठीक/, /हाँ-हाँ/, /हाँ जी/, /जी/ ।

3 16 5 तिरस्कार-बोधक—

/छि /, /छि -छि /, /दुर/, /हट/, /चुप/, /हैत/, थू/, /थू-थू/, /बस-बस/ /परे कर/ ।

3 16 6 स्वीकृति बोधक—

/हाँ/, हाँ/जी/, /अच्छा/, /जरूर/, /बिल्कुल/, /हाँज्जी/ ।

3 16.7 सम्बोधन बोधक—

/ओ/, /ओ-जी/, /ए/, /ओ≈ए/ ।

*

वाक्य-विन्यास

4.0 सामान्य-परिचय

वाक्य-विन्यास के अन्तर्गत मुख्य रूप से वाक्य के सरचनात्मक-घटको को लेकर विचार किया जा रहा है ।

वाक्य विन्यास को ध्यान मे रखते हुए मण्डियाली मे कई प्रकार के वाक्य मिलते है, उदाहरणार्थ—साधारण, मिश्र, सयुक्त, आज्ञार्थक, प्रश्नवाचक, आश्चर्यात्मक तथा निषेधात्मक आदि । वाक्य-विन्यास के अन्तर्गत सामान्य रूप से इन सभी प्रकार के वाक्यो के विन्यास के सरचनात्मक घटको को लेकर विचार किया जा रहा है ।

मण्डियाली वाक्य-विन्यास पर विचार करने से पूर्व वाक्य-विन्यास की सामान्य विशेषताओ पर सक्षेप मे विचार करना आवश्यक है ।

भाषाविदो ने 'वाक्य' को अनेक तरह से परिभाषित करने का प्रयत्न किया है, किन्तु कोई भी परिभाषा विवाद-मुक्त नही है । कुछ भाषाविद् वाक्य को 'पदो का समूह' मानते है, मगर इसके विरुद्ध अनेक भाषाओ या बोलियो मे यह देखा जाता है कि वाक्य एक पद' का भी होता है ।

कुछ भाषाविद् वाक्य को 'अखण्ड' मानते हैं, मगर यह अवधारणा भी ठीक नही हे । वाक्य को पदो मे खण्डित या वितरित किया जा सकता है ।

कुछ भाषाविद् वाक्य को 'पूर्ण' अर्थात् पूर्ण-भाव या विचार मानते हैं, मगर इसके विरुद्ध यह कहा जा सकता है कि वाक्य अनेक बार पूर्ण-भाव या विचार अभिव्यक्त नही कर पाता और कई बार पूर्ण-भावो को एक ही वाक्य मे समाहित भी कर लिया जाता है ।

कामता प्रसाद गुरु वाक्य को 'पूर्ण' अर्थात् पूर्णभाव या विचार मानते हैं । उनके शब्दो मे—'एक विचार पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं ।'[1]

उपर्युक्त तर्कों को ध्यान मे रखते हुए कहा जा सकता है कि वाक्य की सर्वमान्य परिभाषा कर पाना आसान या सम्भव कार्य नही है । उपर्युक्त तर्कों की भांति

---

1. कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ 351

ही वाक्य की परिभाषाओ मे अनेक तर्क ऐसे मिलते हैं जो कि बहुत ही विवादास्पद है।

हॉकेट ने वाक्य की जो परिभाषा दी है, उस आधार पर यह कहा जा सकता है कि—

[1] वाक्य एक व्याकरणिक रूप है।

[2] जिस व्याकरणिक धरातल पर वाक्य सरचना के रूप मे घटित होता है' उस धरातल पर वह किसी अन्य व्याकरणिक रूप का घटक नही होता।[1]

हॉकेट के अनुसार वाक्य एक सघटना है पर वह किसी अन्य सघटना का घटक नही, इस दृष्टि से जब हम वाक्य की वाक्य या उपवाक्य से तुलना करते है, तब उनके बीच का अन्तर स्पष्ट हो जाता है। उपवाक्य एक ओर दो या दो से अधिक पदबन्धो से निर्मित रचना है, तो दूसरी ओर वह वाक्य का घटक भी है। इसी प्रकार पद-बन्ध जब एक ओर एक या दो पदो से निर्मित रचना है, तो दूसरी ओर वह उप-वाक्य का एक घटक भी, लेकिन वाक्य व्याकरणिक धरातल पर एक या एक से अधिक उप-वाक्यो की सचरना तो हो सकता है पर वह किसी अन्य व्याकरणिक रूप का घटक नही हो सकता।

अतः 'वाक्य' जहाँ व्याकरणिक विश्लेषण की उच्चतम इकाई है, वहाँ रूपिम प्रकार्यात्मक स्तर पर वाक्य की निम्नतम सार्थक—[सिग्नीफिकैंट] इकाई है। 'उपवाक्य' और 'पदबन्ध' वाक्य तथा रूपिम के बीच की इकाईयाँ हैं।

यहाँ पर इन सभी मुख्य इकाइयो को अर्थात् उच्चतम इकाई से निम्नतम इकाई तक या निम्नतम इकाई से उच्चतम इकाई तक पहुँचने के लिए जिन इकाइयो से गुजरना होता है, उन्हे आरेख मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

उदाहरण के लिए यह वाक्य लिया जा सकता है—

(1) तुस्से झट चला होर फेरी बैट्ठा।
आप जल्दी चलो और फिर बैठो।

उपर्युक्त वाक्य को वाक्य की उच्चतम इकाई से निम्नतम इकाई तक या दूसरे शब्दो मे निम्नतम इकाई से उच्चतम इकाई के रूप मे इस प्रकार दिखा सकते है—

---

1 'A sentence is a grammatical form which is not in construction with any other grammatical form a constitute which is not a constituent'

C. F. Hockett, A Course in Modern Linguistics, P. 199

	तुस्से झट चला + होर फेरी बैट्ठा ।	वाक्य
	'आप जल्दी चलो और फिर बैठो ।'	|
[तुस्से]	फेरी बैट्ठा ।	उपवाक्य
'आप	'फिर बैठो ।'	|
[तुस्से]	झट चला ।	पदबन्ध
'आप'	'जल्दी चलो ।'	|
[तुस्से]	चला ।	पद
'आप	'चलो ।'	|
[तुस्सा + ए]	चल + आ [चला] ।	रूपिम
[तुस्से]	'चलो ।'	

उपर्युक्त वाक्य को रूपिमो मे इस प्रकार बाँट सकते हैं—

	पद	रूपिम	
[1]	तुस्से	तुस्सा + ए	[दो रूपिम]
[2]	झट	झट	[एक रूपिम]
[3]	चला	चल + आ	[दो रूपिम]
[4]	होर	होर	[एक रूपिम]
[5]	फेरी	फेरी	[एक रूपिम]
[6]	बैट्ठा	बैट्ठ + आ	[दो रूपिम]

इस प्रकार उपर्युक्त वाक्य मे छ पद तथा नौ रूपिम है। उपर्युक्त सभी रूपिमो मे रूपिम — होर 'और' सयोजक का कार्य करता है ।

उपर्युक्त वाक्य को यदि पद-बन्धो मे बाँटना हो तो इस प्रकार बाँट सकते हैं—

तुस्से	झट चला	होर	फेरी बैट्ठा ।
सप०	क्रिवि०प०	सयो०	क्रि० वि० प०

अर्थात् उपर्युक्त वाक्य मे चार पदबन्ध हैं ।

मण्डियाली सज्ञा-पदबन्ध से सम्बन्धित कुछ नियम हैं, इन नियमो के अन्तर्गत ही मण्डियाली वाक्य-विन्यास के सरचनात्मक-घटको या सरचना के व्याकरणिक घटको को लेकर उन्हे समझने का प्रयास किया गया है ।

मण्डियाली सज्ञा-पदबन्ध से सम्बन्धित नियम निम्नाकित हैं—

4 1. संज्ञा पदबन्ध (नाउन्ज़ फ्रेज़)—

मण्डियाली वाक्य-विन्यास के सरचनात्मक घटको या सरचना के व्याकरणिक

घटको पर विचार करने के लिए संज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत ही कुछ नियमो को ध्यान मे रखा गया है।

इससे पूर्व कि मण्डियाली सज्ञा पद-बन्ध पर विचार किया जाए पेटर कोले की सज्ञा पद-बन्ध सम्बन्धी अवधारणा से अवगत होना आवश्यक है। पेटर कोले सज्ञा-पद-बन्ध को परिमाणवाचक के रूप मे स्वीकार करते हैं।

उपर्युक्त उदाहरण से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि वाक्य मे दो पदबन्ध—सज्ञा पदबन्ध तथा क्रिया पद-बन्ध—अवश्य होते हैं। अत कहा जा सकता है कि एक साधारण वाक्य का निर्माण दो पदबन्धो—सज्ञा पदबन्ध तथा क्रिया-पदबन्ध के योग से होता है।

अर्थात्—

वा→सप० + क्रि०प० ।

यहाँ पर वाक्य-विन्यास के अन्तर्गत ऊपर दिए गए वाक्य के उदाहरण के समान ही अन्य प्रकार के सरचनात्मक-घटको या सरचना के व्याकरणिक घटको को लेकर विचार किया जा रहा है। मण्डियाली वाक्यो के सरचनात्मक-घटको को लेकर सज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत विचार किया जा रहा है।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि वाक्य का निर्माण दो प्रकार के पद-बन्धो—सज्ञा-पदबन्ध तथा क्रिया पदबन्ध—के योग से होता है।

अत वाक्य→सज्ञा-पदबन्ध + क्रिया-पदबन्ध ।

[वा→सप० + क्रि०प०]

उनके शब्दो मे—'मेरा दावा है कि सभी सज्ञा-पदबन्ध वास्तव मे परिमाण-वाचक हैं या वे परिमाणवाचक जैसे परिवर्तको को बाँधते हैं।'[1]

कोले की सज्ञा-पदबन्ध को लेकर उपर्युक्त अवधारणा से ज्यो का त्यो सहमत नही हुआ जा सकता। अत सज्ञा-पदबन्ध को परिमाणवाचक के रूप मे स्वीकार नही किया जा सकता, मगर परिमाणवाचक को सज्ञा-पदबन्ध का एक आवश्यक अग अवश्य स्वीकार किया जा सकता है। यहाँ पर मण्डियाली सज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत परिमाण-वाचक को सज्ञा-पदबन्ध का एक आवश्यक अग स्वीकार किया गया है। परिमाणवाचक को लेकर सज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत अलग से विचार किया है। यह बात सज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत निर्धारित नियमो से स्वय ही स्पष्ट हो जाएगी।

---

1 'I claim that all noun—phrases are in fact quantifiers (or that they bind variables like quantifiers).'
Studies in Linguistic Sciences, Volume 2, Number 1, Spring, 1972—'Noun Phrase as Quantifiers'
Peter Cole, P. 28, Edited by G. M. Green.

मण्डियाली वाक्य-विन्यास के सरचनात्मक घटको या सरचना के व्याकरणिक-घटको पर विचार करने के लिए सज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत निम्नाकित नियमो को ध्यान मे रखा गया है—

4 1 1 अनिर्धारित (इन्डरमीनेट)—

[1] सप० {व्यक्तिवाचक + (अ) / निर्धारक + सज्ञा}

[2] निर्धारित (क) + {निर्धारित / अनिर्धारित}

[3] अनिर्धारित {अनिश्चित निर्धारक / अनिश्चित} + स

[4] अनिश्चित निर्धारक भतेरा, बौहुत, ज्यादा≈जादा, थोडा, घट, कम, एक, सब्भे, सैकडे, हजारा, लक्खा आदि।

[5] अनिश्चित किच्छ≈कुछ, कई, कोई

सकेत→ अ→ अभिस्थापी
क→ क्या, कुण आदि।
स → सयोजक।

अनिश्चित निर्धारक—'सब्भे' का दूसरा उच्चारण 'सभे' भी मिलता है जो कि 'प्रत्यक' या 'हरेक' के अर्थ मे भी प्रयुक्त होता है। अनिश्चित निर्धारक-सब्भे≈सभे—'प्रत्यक, हरेक' तथा समुदायवाचक 'निर्धारित'—'सब' मे अर्थ स्तर पर अन्तर है। इस बात को आगे चल कर 'समुदायवाचक' के अन्तर्गत स्पष्ट किया गया है तथा वही पर अनिश्चित निर्धारक को लेकर भी विचार किया गया है।

सज्ञा-पद या कर्ता-वर्ग को लेकर अन्त मे विचार किया जाएगा, क्योकि सज्ञा-पद या कर्ता वर्ग मे पूर्व 'अनिश्चित-निर्धारक या अनिश्चित आदि पद आ सकते हैं। इसी-लिए यहाँ पर सर्वप्रथम इन्ही को लेकर विचार किया जा रहा है।

4 1 2 निर्धारित [ब डिटरमीनेट]—

[6] निर्धारित परिमाणक
परिबाधक + (सकतक) + (परिमाणक)
(समुदायवाचक)

[7] सकेतक — निश्चित + निर्देशक + (अ)

[8] निर्देशक — समीपवर्ती
दूरवर्ती

[9] समुदायवाचक — (सब, सारा, पुरा)

[10] परिबाधक — (सिर्फ ··ही, बस ˙ ही,)
(घट-थे-घट···ता, एत्थी तक···थी,)
(एस्सरे लावा·· बी≈भी, आदि)

[11] परिमाणक — (सख्यावाचक)
(परिमाणवाचक)
(बलात्मक)

'निर्धारित' मे आने वाले 'सकेतक' मे 'निर्देशक' आवश्यक होता है। यह निर्देशक दो प्रकार का हो सकता है—

[1] निकटवर्ती निर्देशक तथा

[2] दूरवर्ती निर्देशक।

इन्हे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

निकटवर्ती + [एकवचन / बहुवचन] — [ए 'यह' / यो 'ये']

दूरवर्ती + [एकवचन / बहुवचन] = [से 'वह' / स्यो 'वे']

इन्हे आरेख मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

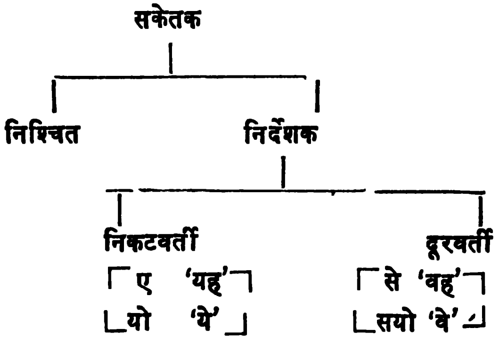

निकटवर्ती तथा दूरवर्ती निर्देशको के उदाहरण इस प्रकार हैं—

निकटवर्ती—

[2] ए राम्मा री पोत्थी [कताब] थी।
'यह राम की पुस्तक थी।'
[3] यो आस्सारी डोह्रियाँ थी। या
यो आस्सारे खेत्तर थे।
'ये हमारे खेत थे।'

दूरवर्ती—

[4] से आस्सारी म्हुठी ई।
'वह हमारी लड़की है।'
[5] सयो आस्सारे म्हुठे ए।
'वे हमारे लड़के है।'

4 1 3 समुदायवाचक [एग्रीगेटिव]—

सज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत 'निर्धारित' वर्ग मे 'सब' 'सारा', तथा 'पूरा' पद, समुदायवाचक या समूहवाचक का कार्य करते है। अर्थात् ये पद 'एक' की अपेक्षा 'अधिक' या 'समूह' के लिए प्रयुक्त होने हैं। इन रूपिमो से हमे समुदाय या समूह का ज्ञान होता है। समुदायवाचक या समूहवाचक रूपिमो को 'निर्धारित' वर्ग के अन्तर्गत रखा गया है।

'हिन्दी सज्ञा पदबन्ध मे समुदायवाचक, निर्धारित व्यवस्था के अन्तर्गत एक तत्व है। यह पृथक रूप से शाब्दिक इकाइयो जैसे—सारा तथा सब के रूप मे प्रस्तुत की जाती है।'[1]

गणनावाचक विशेषण के साथ 'हे' तथा 'हे' रूपिम जोडने से समुदायवाचक या समूहवाचक-पद बनते है। गणनावाचक विशेषण-रूपिम 'दो' के साथ 'हे', 'तीन से नौ' तक के गणनावाचक विशेषण-रूपिमो के साथ 'हे' तथा 'दस' के साथ 'हे~हे' रूपिम जोडने से समुदायवाचक विशेषण-पद बनते हैं।

उदाहरणार्थ—

दो + समुदायवाचक	[-हे]—दुहे	'दोनो'
त्राए + समुदायवाचक	[-हे]—त्राहे	'तीनो'

---

1 'Aggregative is a Constituent in the Determinate system of Hindi noun phrase It is, in isolation, represented by Such lexical items as Saaraa and Sab'
M K Verma, A Synchronic Comparative Study of the structure of the Nonn Phrase in English and Hindi, P. 106.

चार + समुदायवाचक	[-हे]—चार्हे	'चारो'
पाँज + समुदायवाचक	[-हे]—पाँज्हे	'पाँचो'
छे + समुदायवाचक	[-हे]—छेहे	'छ ओं'
सात् + समुदायवाचक	[-हे]—सात्त्हे	'सातो'
आट्ठ + समुदायवाचक	[-हे]—आट्ठहे	'आठो'
नौ + समुदायवाचक	[-हे]—नौहे	'नौओ'
दस + समुदायवाचक	[-हे]—दस्हे	'दसो

गणनावाचक तथा समुदायवाचक मे अन्तर है। गणनावाचक-पद की अपेक्षा समुदायवाचक-पद मे अधिक निश्चितता का भाव रहता है।

उदाहरणार्थ—

[6] दो म्हठे गए।
'दो लडके गए।'

[7] दुहें म्हठे गए।
'दोनो लडके गए।'

[8] चार बह्ल्द खरिद्दे।
'चार बैल खरीदे।'

[9] चार्हे बहल्द खरिद्दे।
'चारो बैल खरीदे।'

उपर्युक्त उदाहरणो [6] तथा [8] मे 'दो म्हठे' तथा 'चार बह्ल्द' मे और अधिक म्हठो—'लडको' तथा बह्ल्द 'बैलो' की सम्भावना हो सकती है, मगर इसके विपरीत उदाहरण [7] तथा [9] म ऐसी सम्भावना नही है। उदाहरण [7] तथा [9] मे समुदायवाचक विशेषण-पदो के कारण कुछ निश्चितता का भाव है।

उपर्युक्त उदाहरणो से ही यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि गणनावाचक तथा समुदायवाचक विशेषण-पदो का प्रयोग सज्ञा-पद से पूर्व होता है।

गणनावाचक तथा समुदायवाचक से पूर्व-सकेतक-निर्देशक का प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ—

[10] से दो सेऊ मैं खाई लै ज्यो तुस्से दित्ते थे। या

विशेष—मण्डियाली मे दस से अधिक गणनावाचक विशेषण-पदो के समुदायवाचक बनाने के लिए 'हे' तथा 'हे' रूपिमो का प्रयोग नही होता। या दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि दस से अधिक के समुदायवाचक नही बनते। दस से अधिक के समुदायवाचक इस प्रकार बन सकते हैं--गणनावाचक + रे + गणनावाचक = समुदायवाचक, उदाहरणार्थ—ग्यारा-रे-ग्यारा-'ग्याराह्-के-ग्याराह्' पज्याह्-रे-पज्याह्—'पचास-के-पचास' 'पचासो' अर्थात् सभी, 'पचास के पचास' आदि।

[11] सयो दो सेऊ मै खाई लै ज्यो तुस्से दित्ते थे ।
'वे दो सेब मैंने खा लिए जो आपने दिए थे ।'
[12] से दुहे सेऊ मै खाई लै ज्यो तुस्मे दित्ते थे ।
[13] स्यो दुहे सेऊ मै खाई लै ज्यो तुस्से दित्ते थे ।
'वे दोनो सेब मैने खा लिए जो आपने दिए थे ।'
[14] ए त्राए आम्ब खाणे थे । या
[15] यो त्राए आम्ब खाणे थे ।
'ये तीन आम खाने थे ।'
[16] ए त्राहे आम्ब खाणे थे । या
[17] यो त्राहे आम्ब खाणे थे ।
'ये तीनो आम खाने थे ।'

कई वार सकेतक-निर्देशक के लिए समुदायवाचक का ही प्रयोग होता है । उदाहरणार्थ—

[18] स्यो दो सेऊ मै खाई ले ज्यो तुस्से दित्ते थे । या
[19] से दो सेऊ मै खाई ले ज्यो तुस्से दित्ते थे ।
'वे दो सेब मैने खा लिए जो आपने दिए थे ।'
[20] दुहे सेऊ मै खाई ले ज्यो तुस्से दित्ते थे ।
'दोनो सेब मैने खा लिए जो आपने दिए थे ?'

सर्वनाम-पद के साथ गणनावाचक विशेषण-पद तथा समुदायवाचक विशेषण-पद दोनो के प्रयोग मे आर्थी-स्तर पर अन्तर है । सर्वनाम-पद के साथ गणनावाचक विशेषण-पद एक बात को व्यक्त करता है तथा समुदायवाचक विशेषण-पद दूसरी बात को व्यक्त करता है । इस अन्तर को उदाहरणो द्वारा इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है ।

उदाहरणार्थ—

सर्व + गणनावाचक वि०—
[21] आस्से चार भाई ऐ ।
'हम चार भाई हैं ।'
[22] स्यो दुई बैह्णा ई ।
'वे दो बहिने हैं ।'

विशेष—उपर्युक्त उदाहरणो मे हर उदाहरण के दोनो रूप स्वीकार किए जा सकते हैं, मगर फिर भी यह पाया गया है कि मण्डियाली मे गणना-वाचक या समुदाय-वाचक पद से पूर्व बहुवचन सकेतक-निर्देशक का प्रयोग अधिक होता है । अर्थात् 'स्यो दो सेऊ' —'सयो दहें सेऊ'—'वे दो सेब' 'वे दोनो सेब' का प्रयोग अधिक मिलता है ।

[23] तिन्हें त्राए सैहड़् पकड ।
'उन्होंने तीन खरगोश पकड़े ।'

[ख] सर्व+समुदायवाचक वि०—
अर्थात् सर्व+गणनावाचक+समुदायवाचक वि०

[24] आस्से चार्हे भाई ए।
'हम चारों भाई हैं।'

[25] सयो बुहें बैह्णा ई ।
'वे दोनो बहिने हैं।'

[26] तिन्हें त्राए सैह्ण पकडे ।
'उन्होने तीनों खरगोश पकड़े ।'

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सर्व०+गणनावाचक विशेषण-पद तथा सर्व०+समुदायवाचक विशेषण-पद मे आर्थी-स्तर पर अन्तर है। यह अन्तर केवल निश्चितता का है। सर्व०+समुदायवाचक विशेषण-पद मे सर्व०+गणनावाचक विशेषण-पद की अपेक्षा निश्चितता का भाव अधिक रहता है।

सब्भे≈सभे—'सभी' तथा सब—'सब' रूपिम समुदायवाचक के ही द्योतक हैं। उदाहरणार्थ—

[27] दुइ-दुइ आम्ब सब्भे म्हठ्याँ जो द्यो ।
'दो-दो आम सभी लड़को को दो ।'

[28] दुई-दुई आम्ब सब्भे म्हठ्या जो द्यो ।
'दो-दो आम प्रत्येक लड़के को दो ।'

[29] सब म्हठे आइरे थे ।
'सब लड़के आए थे ।'

[30] दो-दो सेउ सब्भे म्हठियाँ जो बाँड्डा।
'दो-दो सेब हरेक लड़की को बाँटो ।'

[31] सब सेउ बांड्डी दित्ते ।
'सब सेब बाँट दिए ।'

उपर्युक्त उदाहरणो से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि मण्डियाली मे—सब्भे ≈सभे—'सभी' रूपिम मे समुदायवाचक तथा प्रत्येक [हरेक] का भाव भी विद्यमान रहता है। मण्डियाली मे ऐसा इसलिए है क्योंकि 'प्रत्येक [हरेक] मे वही अर्थ विद्यमान है जो कि सभी' मे है। इसी कारण यहाँ पर सब्बे≈सभे—'सभी' तथा 'प्रत्येक या हरेक' दोनो अर्थों को व्यक्त करता है।

सब्भे≈सभे 'सभी' के साथ कुछ निश्चितता का भाव आ जाता है। अत समुदायवाचक रूपिम—सब्भे≈सभे, सब, सारा (सारे, सारी) तथा पूरा (पूरे, पूरी) रूपिमो के प्रयोग से निश्चितता का भाव आ जाता है।

मण्डियाली मे सब्भे≈सभे 'सभी' तथा सब—'सब' के प्रयोग को लेकर कोई अन्तर नही मिलता। अर्थात् दोनो मे ही निश्चितता का भाव रहता है।

उदाहरणार्थ—

[32] सब म्हठियाँ साद्दिरी।
'सब लड़कियाँ बुलाई हैं।'

[33] सब्भे म्हठियाँ साद्दिरी।
'सभी लड़कियाँ बुलाई हैं।'

[34] सब म्हठे साद्दिरे।
'सब लड़के बुलाए हैं।'

[35] सब्भे म्हठे साद्दिरे।
'सभी लड़के बुलाए हैं।'

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सज्ञा-पद से पूर्व सब्भे≈सभे—'सभी' तथा सब—'सब' के प्रयोग मे कोई अन्तर नही है। दोनो मे ही समान भाव रहता है, तथा वह भाव निश्चितता का है।

जब सब्भे≈सभे—'सभी' तथा सब—'सब' का प्रयोग क्रिया-पद से पूर्व किया जाता है, तब भी मण्डियाली मे अर्थ-स्तर पर कोई भिन्नता नही मिलती। क्रिया-पद से पूर्व दोनो का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरणार्थ—

[36] सब साद्दिरे।
'सब बुलाए हैं।'

[37] सब्भे साद्दिरे।
'सभी बुलाए हैं।'

[38] तुस्से सब साद्दिरे।
'आप/तुम सब बुलाए हैं।'

[39] तुस्से सब्भे साद्दिरे।
'आप/तुम सभी बुलाए हैं।'

मण्डियाली-वक्ता सब्भे≈सभे– 'सभी' तथा सब—'सब' का प्रयोग संज्ञा-पद तथा क्रिया-पद से पूर्व निश्चितता का भाव व्यक्त करने के लिए करते हैं। मगर इन दोनो प्रयोगो को लेकर यह अवश्य पाया गया है कि क्रिया-पद से पूर्व सब—'सब' समुदायवाचक रूपिम का प्रयोग होता है।

अत मण्डियाली मे सब्भे≈सभे—'सभे' तथा सब—'सब' का प्रयोग समुदाय या समूह के लिए ही होता है। अर्थात् सब्भे≈सभे—'सभी' तथा सब—[सब] समुदायवाचक रूपिम है।

यहाँ पर सर्वप्रथम अनिश्चित निर्धारक—'थोड़ा' तथा 'एक' को लेकर विचार किया जा रहा है। इन दोनो अनिश्चित निर्धारको मे अर्थगत अन्तर है। इस अन्तर को यहाँ पर केवल उदाहरणो द्वारा ही स्पष्ट किया जा सकता है। वास्तव मे इस अन्तर को स्पष्ट करने के लिए इन्हे [थोडा, एक] अलग-अलग ढग से लिपि-चिन्हित किया जा सकता है, मगर यहाँ पर अलग लिपि-चिन्ह देना सम्भव नही है। इसी कारण इनके अन्तर को उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

इन दोनो रूपो के अर्थगत अन्तर को स्पष्ट करने के लिए डॉ० वर्मा की पक्तियाँ उद्धरण रूप मे ली जा सकती है—'पदबन्ध मे अनिश्चित-निर्धारको एक तथा थोड़ा मे बल की मात्रा उनके सख्यात्मक विशेषण तथा विशेषणात्मक प्रयोग की तुलना मे कम होती है।'[1]

उदाहरणार्थ—

'एक'—

[40] एक म्हठी गई। [पता नी कुण थी।] [अनिश० नि०]
एक लडकी गई [मालूम नहीं कौन थी।]

[41] एक म्हठी गई। [दो नी।] [विशे०]
एक लड़की गई [दो नहीं।]

[42] एक म्हठा आया था। [पर चली गया।] [अनिश० नि०]
एक लडका आया था। [परन्तु चला गया।]

[43] एक म्हठा आया था। [ज्यादा नी।] [विशे०]
एक लडका आया था। [अधिक नहीं।]

'थोड़ा' थोडा—'जे'

[44] थोडा—जे पाणी दे। [हात्थ धोणे।] [अनिश० नि०]
थोड़ा पानी दे। [हाथ धोने।]

[45] थोडा पाणी दे। [ज्यादा नी।] [विशे०]
थोड़ा पानी दे। [अधिक नहीं।]

[46] थोड़े—जे चौल द्यो। [बनाणे थे।] [अनिश० नि०]
थोड़े चावल दो। [बनाने थे।]

---

1 'Both of the Indef. Determiners ek and thoraa receive a lesser degree of emphasis in a phrase as compared to their numerals and Adjectives counterparts'
M K Verma, A Synchronic Comparative study of the Structure of the noun phrase in English and Hindi, P. 98.

[47] थोड़ो चोल् द्यो। [ज्यादा नी] [विशे०]

थोड़े चावल दो। [अधिक नहीं।]

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि 'एक' तथा 'थोडा' तथा इसके अन्य रूप (थोडे, थोडी) का प्रयोग अनिश्चित निर्धारक तथा विशेषण के रूपो मे होता है, तथा दोनो ही रूपो के प्रयोग मे अर्थ-स्तर पर अन्तर है जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणो से स्पष्ट है।

अर्थात् इन उदाहरणो का अर्थ है—'बिल्कुल थोडा-सा पानी' तथा 'बिल्कुल थोडे-से चावल'। इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणो मे केवल विशेषणात्मक प्रयोग ही है अनिश्चित निर्धारक का नही।

4 1 4 [परिबाधक लीमिटरज]—

सज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत 'ही~हे, बी~भी' तथा 'ता—तो' निपातो का प्रयोग होता है। वास्तव मे इन तत्त्वो को बलात्मक या अवधारक (इमफैटिक) की सज्ञा से अभिहित किया गया है मगर वाक्य मे कुछ प्रयोगात्मक अन्तर के कारण ये परिबाधक (लिमिटरज) का काम भी करते हैं। इनके अवधारक प्रयोग के लिए डॉ० आर्येन्द्र शर्मा की निम्नाकित पक्तियाँ इनके अवधारक के रूप मे प्रयोग को स्पष्ट करती हैं—

'निपात—ही, तो, भी आदि का प्रयोग उसी शब्द के पश्चात् होता है, जिस पर बल देना हो।'[1]

उपर्युक्त परिबाधक तत्त्वो के यहाँ पर बलात्मक या अवधारक प्रयोग को लेकर उदाहरण दिए जा रहे हैं—

उदाहरणार्थ—

[48] यो चार हे म्हठियाँ ।

'ये चार ही लडकियाँ ।' [चार ही पाँच नही]

[49] यो चार म्हठियाँ ही ।

'ये चार लडकियाँ ही ··।' [लडकियाँ ही लडके नही]

[50] यो चार म्हठियाँ बी···

'ये चार लड़कियाँ भी·· ।'

[51] यों चार म्हठियाँ ता···।

'ये चार लड़कियाँ तो···।' [चार विशेष लडकियाँ]

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि 'हे~ही, बी, ता—'तो' का प्रयोग वही किया जाता है, जहाँ वाक्य के किसी अश पर बल देना हो। उदाहरण

---

1 'The particles ही, तो, भी etc are placed after the word which they emphasise'

A. Sharma, A Basic Grammar of Modern Hindi, P.179

[48] में 'चार' संख्या पर बल है अर्थात् केवल चार ही लडकियाँ 'चार से अधिक या कम नही है।' इसी प्रकार उदाहरण (49) मे 'म्हठियाँ ही' लडकियो पर बल है अर्थात् 'केवल चार लडकियाँ ही लडके नही।' अत: उपर्युक्त सभी उदाहरणो मे हे~ही, बी, ता—'तो' का प्रयोग बलात्मक है।

इन निपातो मे बलात्मक का भाव तो होता ही है, मगर बलात्मक या अवधारक के साथ-साथ परिबाधक (लिमिटरज्) का भाव भी रहता है।

उदाहरणार्थ—

[52] ए घर लम्बा ही आ उच्चा नी।
'यह घर लबा ही है ऊँचा नहीं।'

[53] एक हे म्हठा छेल आ।
'एक ही लड़का सुन्दर है।'

[54] दुहें हैं म्हठे आए।
'दोनों ही लड़के आए।'

उपर्युक्त उदाहरणो [52] तथा [53] मे बलात्मक या अवधारक के साथ-साथ परिबाधक का भाव भी व्यक्त होता है। मगर उदाहरण [54] मे परिबाधक का भाव व्यक्त नही होता है। इस उदाहरण मे केवल बलात्मक का भाव ही व्यक्त होता है।

परिबाधक [लिमिटरज] भाव पर अधिक बल देने के लिए मण्डियाली मे—'सिरफ, बस खासकर, तथा घट-बे-घट' आदि तत्वो का प्रयोग होता है।

उदाहरणार्थ—

[55] सिर्फ दो हे म्हठे आए।
'केवल दो ही लडके आए।'

[56] सिर्फ दो म्हठे ही आए।
'केवल दो लड़के ही आए।'

[57] सिर्फ दो म्हठे आए।'
'केवल दो लडके आए।'

उपर्युक्त सभी उदाहरणो मे परिबाधक का भाव विद्यमान है। अत कहा जा सकता है कि—'सिरफ, बस, खासकर तथा घट-बे-घट' आदि तत्त्व परिबाधक का काम करते हैं। इनके साथ आने वाले निपात—'ही, बी, ता' —'तो' इन परिबाधक तत्वो के क्षेत्र-चिन्हक हैं।

उपर्युक्त अन्तिम उदाहरण [57] से ऐसा लगता है कि मानो 'ही' निपात परिबाधक [लिमिटरज] का ऐच्छिक तत्त्व हो, मगर उसे ऐच्छिक रूप मे स्वीकार नही किया जा सकता। ऐसा अर्थात् 'ही' को परिबाधक का ऐच्छिक तत्त्व स्वीकार करने पर 'सिरफ' सख्यावाचक विशेषण 'दो' का विश्लेषण करता है, न कि पूरे सज्ञा-पदबन्ध का। इसलिए यह कहा जा सकता है कि 'ही' निपात का कार्य परिबाधक के क्षेत्र-चिन्हक का है।

निपात 'ह्री बी, ता—तो' मण्डियाली में विभिन्न परिबाधक तत्त्वो के साथ आते हैं। उदाहरणार्थ—सिरफ, बस, आबा बै-आबा तथा खासकर के साथ 'हे~ह्री' निपात का प्रयोग होता है। परन्तु घट-बे-घट – 'कम-से-कम' के साथ 'ता-तो' का प्रयोग होता है। एस्सरे लावा—'इसके अलावा', एत्थी तक भई—'यहां तक कि' के साथ 'बी' निपात का प्रयोग होता है।

निपात 'ह्री, भी, ता'—'तो' का प्रयोग परिबाधक तत्त्वो के बिना हो सकता है, मगर परिबाधक तत्त्वो का प्रयोग 'निपात' के बिना सम्भव नही है। लेकिन इसके बावजूद कई बार परिबाधक तत्त्वो का प्रयोग इन निपातो के बिना भी पाया गया है, मगर ऐसी स्थिति मे परिबाधक-तत्त्व, परिबाधक [लिमिटरज्] का काम नही करते। इस बात को उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—

[58] सिर्फ त्राए म्हठे गए।
'केवल तीन लड़के गए।'

[59] सिर्फ त्राए हे म्हठे गए। [संख्यावाचक उप-विशेषक]
'केवल तीन ही लड़के गए।'

[60] सिर्फ त्राए म्हठे गए।
'केवल तीन लड़के गए।' [परिबाधक]

[61] सिर्फ तराए म्हठे ही गए।
'केवघ तीन लड़के ही गए।'

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि परिबाधक के रूप मे 'ह्री' निपात का प्रयोग सज्ञा-पद के साथ होता है, अन्यथा वह उपर्युक्त उदाहरण की तरह सख्यावाचक-विशेषण के उप-विशेषक का कार्य करता है।

मण्डियाली मे 'ह्री' निपात के प्रयोग को एक स्थिति मे आसानी से पहचान सकते हैं कि इसका प्रयोग यहाँ पर संख्यावाचक उप-विशेषक के रूप मे हुआ है या परिबाधक [लिमिटरज] के रूप मे हुआ है।

उदाहरणार्थ—

[62] तुस्से त्राहे हे जाओ। [सख्यावाचक उप-विशेषक]
'आप तीनो ही जाओ।'

[63] तुस्से त्राए हे जाओ। [परिबाधक]
'आप तीन ही जाओ।'

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि 'ह्री' का प्रयोग सख्यावाचक उप-विशेषक के रूप मे—सर्व० + गणनावाचक + समुदायवाचक—के साथ होता है, तथा परिबाधक के रूप मे—सर्व० + गणनावाचक—के साथ होता है। सख्यावाचक

उपविशेषक तथा परिबाधक के रूप मे 'ही' के प्रयोग को इस प्रकार दिखा सकते हैं।—

सख्या० उप-विशेषक (सर्व० + गणना० + सम० + ही)

परिबाधक = (सर्व० + गणना० + ही)

यह् बात ध्यान देने योग्य है कि सख्यावाचक उप-विशेषक के रूप मे हे 'ही' का प्रयोग बलात्मक रूप मे होता है।

उदाहरणार्थ—

[64] त्राए हे म्हठियाँ गई। [बलात्मक निषेधक]

'तीन ही लड़कियाँ गई।'

[65] त्राहे हे म्हठियाँ गई। [बलात्मक]

'तीनो ही लड़कियाँ गई।'

'ही' निपात के अन्य प्रयोगो को लेकर आगे चलकर [5 1 5 3] के अन्तर्गत विचार किया गया है।

'बी' का प्रयोग भी सख्यावाचक उप-विशेषक के रूप मे सम्भव है। सख्यावाचक उप-विशेषक के रूप मे 'बी' का प्रयोग नकारात्मक वाक्यो मे होता है।

उदाहरणार्थ—

[66] दस बी आदमी नी थे। [सख्यावाचक उप-विशेषक बलात्मक]

'दस भी आदमी नहीं थे।'

[67] दस बी आदमी नी थे। [परिबाधक]

'दस आदमी नहीं थे।'

उपर्युक्त दोनो उदाहरण अलग-अलग अर्थ व्यक्त करते हैं। उदाहरण [66] सख्यावाचक उप-विशेषक के रूप मे यह अर्थ व्यक्त करता है कि 'अधिक तो क्या वहाँ पर दस भी आदमी नही थे।' उदाहरण [67] परिबाधक [लिमिटरज] के रूप मे यह व्यक्त करता है कि 'जो दस थे वे भी आदमी नही थे, कुछ ओर थे' अर्थात् उनका व्यवहार आदमी जैसा नही था।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि 'बी' का 'सख्यावाचक उप-विशेषक' के रूप मे प्रयोग 'बलात्मक' के रूप मे होता है। लेकिन सज्ञा-पदबन्ध मे परिबाधक' के रूप मे इसका प्रयोग [एस्मरे लावा —'इसक अलावा' आदि] के साथ होता है। सयुक्त-निपात [इनक्लूयूसिव—पार्टिकल] के साथ ही इसका प्रयोग बलात्मक रूप मे भी सम्भव है।

विशेष- परिबाधक 'हे'—'ही' का प्रयोग सख्यावाचक विशेषण-पदो के साथ परिबाधक तथा उप-विशेषक के रूप मे होता है, तथा अन्य स्थानो पर 'ही'—'ही' का ही प्रयोग होता है। कई बार ऐसा भी पाया गया है कि इन दोनो का प्रयोग मुक्त-वितरण [फ्री-वेरिएशन] मे है।

इन दोनो रूपो 'संख्यावाचक उप-विशेषक तथा बलात्मक' और 'परिबाधक तथा बलात्मक' के प्रयोग के उदाहरण दिए जा सकते है—

उदाहरणार्थ —

[68] [एस्सरे लावा] एक म्हठा बी नी चल्या ।
'[इसके अलावा] एक लड़का भी नहीं चला ।'

[69] [एत्थी तक भई] एक म्हठा बी नी चल्या ।
'[यहाँ तक कि] एक लड़का भी नही चला ।'

उपर्युक्त उदाहरण 'सख्यावाचक उप-विशेषक' के है तथा बलात्मक या अवधारक भी है । लेकिन निम्नांकित उदाहरण लिए जा सकते हैं—

उदाहरणार्थ—

[70] [एस्सरे लावा] एक बी म्हठा नी चल्या ।
'[इसके अलावा] एक भी लड़का नहीं चला ।'

[71] [एत्थी तक भई] एक बी म्हठा नी चल्या ।
'[यहाँ तक कि] एक भी लड़का नहीं चला ।'

उपर्युक्त उदाहरणो मे 'भी' का प्रयोग 'परिबाधक' के रूप मे हुआ है तथा साथ ही 'बलात्मक' का भाव भी विद्यमान है । 'परिबाधकत्व' पर अधिक बल देने के लिए ही यहाँ पर—एस्सरे लावा—'इसके अलावा तथा—एत्थी तक भई—'यहाँ तक कि' आदि तत्त्वो का प्रयोग किया गया है । इस बात को डॉ० वर्मा के शब्दो द्वारा और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है—

निपात 'भी' के साथ इसके अलावा, या 'यहाँ तक कि' आदि परिबाधक रूप [लिमिटरज आईटम] निहित रहते हैं ।'[1]

4 1 5 **परिमाणक [क्वांटीफायरज]—**

[12] परिमाणक	सख्यावाचक परिमाणवाचक बलात्मक	
[13] सख्यावाचक	सन्निकटिक	गणनावाचक
	क्रमवाचक	गुणात्मक
		प्रभागवाचक

1 The partiol BHII implies a limiter item like ISKE ALAAWAA or YAHAA TAK KI, etc
M K Verma, A Synchronic comparative study of the Structure of the noun-phrase in English and Hindi, P. 116.

[14] सन्निकटिक	घट-थे-घट, आदा-थे-आदा, कोई बस [···ही], सिरफ [···ही] आदि
[15] क्रमवाचक	पैह्ला, दुज्जा, त्रिज्जा, चौत्था, अगला, पिच्छला, आखरी,···आदि
[16] गणनावाचक	एक, दो, त्राए, चार, पंज ···आदि
[17] गुणात्मक	दूणा, त्रियुणा, त्रिगणा, चौगणा ··आदि
[18] प्रभागवाचक	आद्धा, पौणा, डेढ, ढाई, सवाए···आदि

यहाँ पर पेटर कोले की पंक्तियो को याद किया जा सकता है कि संज्ञा पदबन्ध परिमाणक जैसे परिवर्तको को बान्धते हैं ··। दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि परिमाणको का प्रयोग सज्ञा-पद के साथ होता है।

पेटर कोले सज्ञा पदबन्ध को जहाँ परिमाणक [क्वांटीफायरज़] के रूप मे स्वीकार करते हैं, वहाँ पर डॉ० वर्मा परिमाणक वर्ग के अन्तर्गत सख्यावाचक, परिमाणवाचक तथा बलात्मक तत्त्वो को स्वीकार करते हैं।

यहाँ पर संज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत परिमाणको का सख्यावाचक, गणनावाचक तथा बलात्मक रूपो मे ही विश्लेषित किया गया है। इन परिमाणको के साथ 'सन्निकटिक' तथा 'क्रमवाचक' विशेषण-पद ऐच्छिक रूप से उप-विशेषक [सब-मोडीफायरज़] के रूप मे आ सकते हैं।

यहाँ पर परिमाणको [क्वांटीफायरज़] के अलग-अलग रूपो को लेकर विचार किया जा रहा है।

4.1.5.1 परिमाणक संख्यावाचक [क्वांटीफायरज़-न्यूमरल्ज़]—

सख्यावाचक	सन्निकटिक		गणनावाचक
		+	गुणात्मक
	क्रमवाचक		प्रभागवाचक

पारिमाणक-सख्यावाचक मे गणनावाचक, गुणात्मक तथा प्रभागवाचक विशेषण-पद अवश्य होते हैं। सन्निकटिक तथा क्रमवाचक ऐच्छिक तत्त्व हैं, ऐच्छिक तत्व आ भी सकते हैं और नही भी।

परिमाणक-सख्यावाचकों को उदाहरणो द्वारा इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं—

उदाहरणार्थ—

[72]	दो	ज्हुठे	कोई	दूणा	जांह्	एं ।
	|	|	|	|	|	|
	गण०	सप०	सन्नि०	गुणा	क्रि० प०	

'दो लड़के [करीब] दुगना जाते हैं।'

[73] एक्की म्हठे [दुव्वे] रोज [कोई] ढाई किल्लो आम्ब खावूदे
| | | | | | | |
गण० सप० क्रम० सप० सन्नि० प्रभा-सप० सप० क्रि०प०

'एक लड़के ने [दूसरे] दिन [करीब] ढाई किलो आम खाए।

परिमाणक-सख्या वाचक से पूर्व निर्देशक—यो-'ये' [तथा तिर्यक रूप इन्हां—'इन'] या स्यो-'वे' [तथा तिर्यक् रूप—तिन्हां —'उन'] का प्रयोग होता है। निर्देशक तथा इनके तिर्यक् रूपो मे अर्थ स्तर पर अन्तर है, जिसे उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—

[74] यों त्राए म्हठियां पढाई थी।
'ये तीन लड़कियां पढ़ती थीं।'

[75] इन्हां त्राए म्हठियां मझा एक म्हठी छैल ई।
'इन तीन लड़कियों मे एक लडकी सुन्दर है।'

[76] स्यो दस म्हठे पढाएँ थे।
'वे दस लड़के पढ़ते थे।'

[77] तिन्हां दस म्हठ्यां मझा नो म्हठे पास ए।
'उन दस लडकों मे नौ लडके पास हैं।'

[78] यों कोई दो सो आदमी हुँगा।
'यें करीब दो सो आदमी होंगे।'

[79] स्यों कोई दो सो आदमी हुंगे।
'वे करीब दो सो आदमी होंगे।'

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि परिमाणक-संख्यावाचक से पूर्व निर्देशक के प्रयोग से निश्चितता का भाव आ जाता है।

उपर्युक्त उदाहरणो से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि—'कोई, करीब' सर्वनाम पद 'कोई' मे भिन्न है सन्निकटिक कोई—'करीब' हमेशा सख्यावाचक-पद से पूर्व आता है, जबकि सर्वनाम पद—'कोई' सख्यावाचक-पद से पूर्व नही आता है, इस बात को उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

उदाहरणार्थ—

[80] कोई दो सो म्हठे गए। [परिमाणक-सख्या]
'करीब दो सो लड़के गए।'

[81] कोई म्हठा गया। [सर्वनाम]
'कोई लड़का गया।'

4.1.5.2. परिमाणवाचक [क्वांटीफायरज़् एन्युमीरेटिवज़]—

[19] परिमाणवाचक—[सन्निकटिक] + {गणनावाचक / प्रभागवाचक} + संज्ञा [+माप]

[20] परिमाणवाचक—{एक् सेर, दो किल्लो, त्राए मीटर गज, त्राए दो मण, दो बिग्घे, थोड़ा, घट, बौह्त, आदि}

परिमाणवाचको के प्रयोग को उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—

[82] [घट-थे-घट] दो सेर चौल्।

सन्नि० गण० परि० सप०

'कम-से-कम दो सेर चावल।'

[83] [जादा-थे-जादा] ढाई गज धोत्ती।

सन्नि० प्रभा० परि० सप०

'ज्यादा-से-ज्यादा ढाई गज धोती।'

परिमाणवाचक के अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं—

[84] दो किल्लो आट्टा।

'दो किलो आटा।'

[85] चार मीटर कपड़ा।

'चार मीटर कपड़ा।'

[86] थोड़ा घियु।

'थोड़ा घी।'

[87] त्राए बिग्घे रा खेत्तर।

'तीन बीघे का खेत।'

यदि वस्तु एक सेर, एक गज, एक मीटर, एक मण - 'एक मन' आदि हो, तो यहाँ पर गणनावाचक विशेषण-पद ऐच्छिक है अर्थात् ऐसे वाक्यो मे गणनावाचक 'एक' का प्रयोग हो भी सकता है और नही भी। क्योकि—सेर, गज, मीटर तथा मण—'मन' आदि मे 'एक' का भाव स्वय ही विद्यमान रहता है। इस बात को उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

उदाहरण—

[88] [एक] सरे चौल्।

'एक सेर चावल।'

[89] [एक] गज धोत्ती।

'एक गज धोती।'

[90] [एक] मण आटा।'
'एक मन आटा।'

परिमाणक-परिमाणवाचक से पूर्व निर्देशक का प्रयोग भी हो सकता है। निर्देशक के प्रयोग से कुछ निश्चितता का भाव आ जाता है।

उदाहरणार्थ—

[91] ए त्राए गज कपडा था।
'यह तीन गज कपड़ा था।'

[92] यों कोई दस मण चौल थे।
'ये करीब दस मन चावल थे।'

[93] से ढाई मीटर धोती थी।
'वह ढाई मीटर धोती थी।'

[94] यो दो ग्लास दुद्धा रे थे।
'ये दो गिलास दूध के थे।'

[95] स्यो दो-दो बिग्घे रे खेत्तर थे।
'वे दो-दो बीघे के खेत थे।'

परिमाणक परिमाणवाचकों को आरेख मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

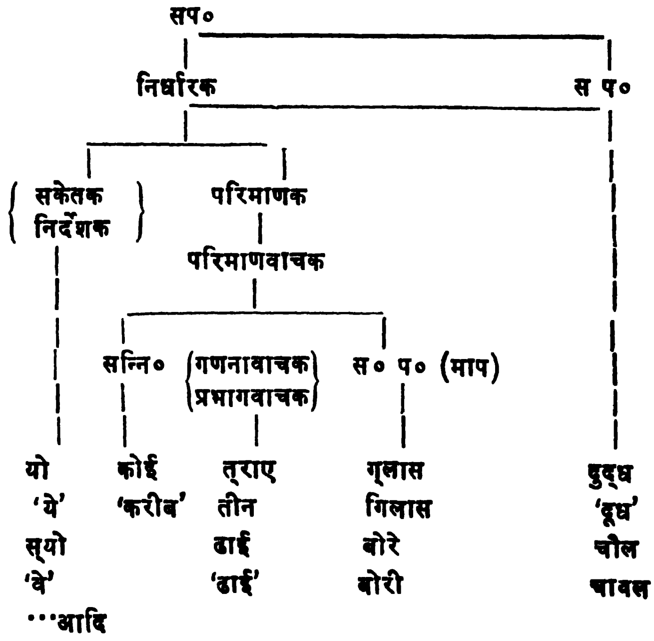

उदाहरणार्थ—

[96] यो/स्यो [कोई] त्राए ग्लास दुद्ध ।
'ये/वे [करीब] तीन गिलास दूध ।'

[97] यो/स्यो [कोई] चार बोरे चौल ।
'ये/वे [करीब] चार बोरी चावल ।'

[98] यो/स्यो [कोई] ढाई बोरे चोल ।
'ये/वे [करीब] ढाई बोरी चावल ।'

4.1 5.3 परिमाणक-बलात्मक (क्वांटीफायरज्-एमफैटिक्स)—

	प्रतिबन्धित
[21] बलात्मक	समावेशित
	निश्चयसूचक
[22] प्रतिबन्धित	(सिर्फ, भर, ही)
[23] समावेशित	(तक~तिकरा, भी~बी)
[24] निश्चयसूचक	(ता—'तो')

बलात्मक-पदो को परिमाणक के अन्तर्गत ही एक उपशाखा के रूप मे स्वीकार किया गया है, क्योकि इनका प्रयोग परिमाणक के रूप मे होता है ।

4.1.5.3.1. प्रतिबन्धित—

प्रतिबन्धित के रूप में—सिर्फ—'मात्र' का प्रयोग (सर्वनाम-पद) के पश्चात् तथा गणनावाचक या प्रभागवाचक विशेषणपद के पूर्व होता है । इस बात की स्पष्टता के लिए उदाहरण दिए जा सकते हैं ।

उदाहरणार्थ—

[99] मंज्जो सिर्फ दस डबे द्यो ।
'मुझे मात्र दस पैसे दो । या
'मुझे दस पैसे मात्र दो ।'

[100] सिरफ दस डबे द्यो ।
'मात्र दस पैसे दो ।'
'दस पैसे मात्र दो ।'

उपर्युक्त उदाहरणो से इस प्रकार और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है—

मज्जो	सिर्फ	दस डबे	द्यो ।
|	|	|	|
सर्व० प०	प्रति०	गणना० सं० पस०	क्रि० प०

सिर्फ	बस डबे	ध्यो ।
|	|	|
प्रति०	गणना० स० प०	क्रि० प०

'भर' के प्रतिबन्धित के रूप मे प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार हैं—

उदाहरणार्थ—

[101] से दिन भर नी बैठ्या ।
'वह दिन भर नहीं बैठा ।'

[102] हाऊँ रात भर नी सुत्ता ।
'मैं रात भर नहीं सोया ।'

[103] हाऊँ	दिन	भर	सुत्ता
|	|	|	|
सर्व	संप०	प्रति०	क्रि० प०

'मैं दिन भर सोया ।'

'ही' के प्रतिबन्धित के रूप मे प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार हैं—

संज्ञा या सर्वनाम-पद के साथ उदाहरण—

[104] राम ही आया था ।
'राम ही आया था ।'

[105] हाऊँ ही बैठ्या था ।
'मै ही बैठा था ।'

क्रिया-पद के साथ उदाहरण—

[106] आस्से चले ही थे ।
'हम चले ही थे ।'

[107] से बैठ्या ही था ।
'वह बैठा ही था ।'

संकेतक-निर्देशक के साथ उदाहरण—

[108] स्यों ही गइरे थे ।
'वे ही गए हुए थे ।'

[109] ए ही आया था ।
'यही आया था ।'

संख्यावाचक के साथ उदाहरण—

[110] त्राए ही म्हठे आइरे ।
'तीन ही लड़के आए हैं ।'

[111] पाइया ही दुद्ध था ।
'पाव ही दूध था ।'

[112] दूणा ही करी दित्ता ।
'दुगना ही कर दिया ।'

[113] दुज्जा ही म्हठा था ।
'दूसरा ही लड़का था ।'

[114] जादा-थे-जादा सौ ही म्हठे थे ।
'ज्यादा-से-ज्यादा सौ ही लड़के थे ।

परिमाणवाचक के साथ उदाहरण—

[115] चार मण ही कणक थी ।
'चार मन ही गेहूँ थी ।'

[116] दो गज ही कपडा था ।
'दो गज ही कपड़ा था ।'

[117] त्राए विग्घे ही जमीन थी ।
'तीन बीघे ही जमीन थी ।'

4.1.5 3 2 समावेशित—

समावेशित के रूप मे तक~तिकरा--'तक' तथा भी~बी—'भी' के प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार हैं—

'तक~तिकरा' के प्रयोग के उदाहरण —

[118] से घरा तक चली गया ।
'वह घर तक चला गया ।'

[119] त्यो बणा तक पहूँची गए ।
'वे वन तक पहुँच गए ।'

[120] आस्सा ठाणे तक जाणा ।
'हम थाने तक जाएँगे ।'

[121] दसा तक पाहड़े बोल्लो ।
'दस तक पहाड़े बोलो ।'

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि तक~तिकरा—'तक' का प्रयोग संज्ञा-पद, सर्वनाम-पद तथा गणनावाचक विशेषण-पद के साथ होता है ।

भी~बी—'भी' के प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार हैं—

[122] राम छैल भी आ ।
'राम सुन्दर भी है ।'

[123] हाऊँ भी बैठ्या था ।
'मैं भी बैठा था ।'

[124] त्राए भी म्हठे साद्दे ।

'तीन भी लड़के बुलाए ।'

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि 'समावेशित' के रूप मे 'भी~बी'—'भी' का प्रयोग सज्ञा-पद, सर्वनाम-पद, क्रिया-पद तथा विशेषण-पद के साथ होता है। कुछ और उदाहरण दिए जा सकते हैं—

[125] राम भी आइरा ।

'राम भी आया है ।'

[126] से बैठ्या भी कि नई ।

'वह बैठा भी या नहीं ।'

सकेतक—निर्देशक के साथ उदाहरण—

[127] ए/से भी बैठ्या था ।

'यह/वह भी बैठा था ।'

[128] यो/स्यो भी गए थे ।

'ये/वे भी गए थे ।'

क्रिया-पद के साथ उदाहरण—

[129] राम उट्ठी भी गया ।

'राम उठ भी गया ।'

[130] स्यो/यो आई भी गए ।

'वे/ये आ भी गए ।'

4 1 5 3.3 निश्चयसूचक—

निश्चय सूचक के रूप मे—ता—'तो' के प्रयोग के उदाहरण इस प्रकार हैं—

सज्ञा-पद तथा सर्वनाम-पद के साथ उदाहरण—

[131] तेस्स ता आउँणा ।

'वह तो आएगा ।'

[132] राम्मा ता जाणा ।

'राम तो जाएगा ।'

निश्चयसूचक—ता—'तो' का प्रयोग जब विशेषण-पद तथा क्रिया-पद के साथ होता है, तो इसके [निश्चयसूचक—ता—'तो'] साथ—पर—'लेकिन' तत्त्व का प्रयोग होता है ।

विशेष—परिमाणक-बलात्मक रूपिमो मे कुछ भाव परिबाधक (लिमिटरज़) का भी रहता है ।

उदाहरणार्थ—

[133] नरेश छैल् ता आ पर · ···।
'नरेश सुन्दर तो है, लेकिन······।'

[134] तेस्स जाणा ता आ पर आउँणा नी।
'उसे जाना तो है, लेकिन आयेगा नहीं।'

[135] माँ आउँणा ता आ पर बैठणा नी।
'मुझे आना तो है, लेकिन बैठूंगा नहीं।'

संकेतक—निर्देशक के साथ उदाहरण—

[136] ए/से ता आया था।
'यह/वह तो आया था।'

[137] यों/स्यों ता गए थे।
'ये/वे तो गये थे।'

सख्यावाचक के साथ उदाहरण—

[138] दो ता बहल्द थे।
'दो तो बैल थे।'

[139] दुग्णा ता काम कित्ता।
'दुगना तो काम किया।'

[140] पाइया ता दुद्ध था।
'पाव तो दूध था।'

[141] दूज्जा ता लम्बा था।
'दूसरा तो लम्बा था।'

मण्डियाली मे एक से अधिक बलात्मक रूपो का प्रयोग एक साथ होता है।

उदाहरणार्थ—

[142] हाऊँ तेस्स तक ही गया था।
'मैं उस तक ही गया था।'

[143] एस्स ओबरे हाऊँ ही ता सर्वा आँ।
'इस कमरे में मैं ही तो सोता हूँ।'

[144] एत्थी राम ही ता बैठ्या था।
'यहाँ राम ही तो बैठा था।'

[145] तेस्स भी ता एत्थी आउँणा।
उसे भी तो यहाँ आना है।'

[146] तेस्सा भी ता तुस्सा साउगी जाणा।
'उसे भी तो आप के साथ जाना है।'

उपर्युक्त सभी उदाहरणो मे दो-दो बलात्मक रूप एक साथ आए हैं। सभी उदाहरणो मे बलात्मक का दूसरा रूप परिबाधक [लिमिटर] का कार्य करता है। ऐसा लगता है कि मानों दूसरा बलात्मक रूप पूर्व के सज्ञा-पद या सर्वनाम-पद के परिबाधक [लिमिटर] का कार्य कर रहा हो।

अत· इसी कारण दो बलात्मक रूपो से युक्त वाक्यो को 'परिबाधक' [लिमिटर] के रूप मे स्वीकार करना तर्कसंगत प्रतीत होता है। 'बलात्मक' तथा 'परिबाधक' के अन्तर को उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—

[147] राम ही आया था। [बलात्मक]
'राम ही आया था।'

[148] राम ही ता आया था। [परिबाधक]
'राम ही तो आया था।'

[149] त्राए ही म्हठे थे। [बलात्मक]
'तीन ही लडके थे।'

[150] त्राए ही ता म्हठे थे। [परिबाधक]
'तीन ही तो लड के थे।'

4 1.6 घटक 'क' [द कन्स्टीचुएंट-क [बह]—

सज्ञा पदबन्ध के अन्तर्गत कुण—'कौन' क्या—'क्या' आदि घटको का प्रयोग भी होता है अत घटक—'क' के अन्तर्गत यहाँ पर इन्ही घटकों को लेकर विचार किया जा रहा है। सज्ञा-पदबन्ध मे इन घटको का प्रयोग प्रश्न या प्रश्नवाचक वाक्यो मे होता है।

प्रश्न भाव को लेकर उदाहरण दिए जा सकते हैं, जैसे—कुण म्हठा 'कौन लडका ?', कुण बहल्द—'कौन बैल ?' क्या काम—'क्या काम ?' तथा क्या चीज—'क्या चीज ?' आदि। अत. इन उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि—कुण—'कौन' तथा क्या 'क्या' आदि घटको का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यो मे होता है।

इन घटको को प्रश्नवाचक-निर्धारक की सज्ञा भी दी जा सकती है। इन घटको के प्रयोगो मे विभिन्नता दिखाई पडती है, जिसे इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है—

[151] कुण म्हठा गया ?
'कौन लडका गया ?'

[152] क्या चीज मिली ?
'क्या चीज मिली ?'

इन उदाहरणो को और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है—

कुण	म्हूठा	गया
क+अनि० नि०	सप०	क्रि० प०
'कौन	लड़का	गया ?'

क्या	चीज	मिली ?
|	|	|
क+अनि० नि०	सप०	क्रि० प०
'क्या	चीज़	मिली ?'

क+अनिश्चित नि०+सज्ञा→कुण+सज्ञा→कुण म्हूठा—कौन लड़का ?
क+अनिश्चित नि०+सज्ञा→कुण—जे+सज्ञा→कुण जे म्हूठा—कौन सा लड़का ?'

क+अनिश्चित नि०+सर्व→कुण—'कौन'
[मानव]

क+अनिश्चित नि०+सर्व→क्या—'क्या'
चीज़ [अमानव]

क+निश्चित नि०+सर्व→कुण-जे –'कौन-सा'

मण्डियाली मे अनिश्चित प्रश्नवाचक सर्वनामो मे 'मानव' तथा 'चीज़' [अमानव] को लेकर अन्तर है। मगर निश्चित प्रश्नवाचक सर्वनाम के साथ यह अन्तर समाप्त हो जाता है।

अनिश्चित प्रश्नवाचक सर्वनाम को लेकर 'मानव' तथा 'चीज़' [अमानव] मे अन्तर है, जिसे उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—

[153] कुण म्हूठा बैठ्या था ? [मानव]
'कौन लड़का बैठा था ?'

[154] कुण कताब थी ? [चीज, अमानव]
'कौन किताब थी ?'

[155] क्या काम किता ?
'क्या काम किया ?'

[156] क्या चीज थी ? [चीज]
'क्या चीज़ थी ?'

[157] क्या हुआ ? [चीज]
'क्या हुआ ?'

उपर्युक्त उदाहरणो को लेकर कहा जा सकता है कि—

अनिश्चित प्रश्नवाचक सर्व०→कुण—'कौन'
[मानव]

अनिश्चित प्रश्नवाचक सर्व०→क्या—'क्या'
[अमानव, चीज]

अनिश्चित प्रश्नवाचक सर्व०→कुण—'कौन'
[अमानव, चीज]

या

(अनिश्चित प्रश्नवाचक निर्धारक)→[कुण—'कौन']

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अनिश्चित प्रश्नवाचक सर्वनाम -'मानव'—तथा 'अमानव, चीज' के लिए समस्वन [होमाफोनियस] हैं। मगर निश्चित प्रश्नवाचक सर्वनाम [निर्धारक] मे 'मानव' तथा 'अमानव' चीज का यह अन्तर समाप्त हो जाता है, या अन्तर नही रहता है इस बात को उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—

[158] कुण-जे म्हुठी आई ? [मानव]
'कौन-सी लड़की आई ?'

[159] कुण जे घर रूढ़्या ? [अमानव, चीज]
'कौन-सा घर गिरा ?'

[160] कुण-जे म्हुठा गया ? [मानव]
'कौन सा लड़का गया ?'

[161] कुण-जे कताब पढी ? [अमानव, चीज]
'कौन-सी पुस्तक पढ़ी ?'

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि निश्चित प्रश्नवाचक सर्वनाम को लेकर 'मानव' तथा 'अमानव, चीज' के लिए एक ही निश्चित प्रश्नवाचक सर्वनाम कुण—'कौन' का प्रयोग हुआ है। मण्डियाली मे निश्चित प्रश्नवाचक सर्वनाम— कुण-जे -'कौन-सा' लिंग, वचन, पुरुष के कारण परिवर्तित नही होता है, जैसा कि हिन्दी मे '-सा' अपना रूप, लिंग, वचन, पुरुष के कारण (सी, से) रूप बदलता है। मण्डियाली मे—कुण-जे -'कौन-सा' अर्थात्—'जे' अपना रूप नही बदलता है।

विशेष —

घटक—'क' के लिए डॉ० वर्मा दो नाम देते हैं—[1] घटक—'क' तथा [2] वृह—'वह'। वास्तव मे इस वर्ग के लिए घटक—'क' नाम तर्क-सगत प्रतीत होता है, क्योंकि इस वर्ग के अन्तर्गत 'क' से आरम्भ होने वाले रूपो पर ही विचार किया गया है। उदाहरणार्थ—कुण—कौन' 'क्या—'क्या' आदि।

डॉ०महेन्द्र ने इस वर्ग या कोटि के लिए 'अवयव-ज'[1] नाम का प्रयोग किया है, जबकि—'अवयव-ज' नामकरण उतना तर्क-सगत प्रतीत नही होता, जितना कि—'अवयव-क' या 'घटक-क'।

---

1 डॉ० महेन्द्र, हिन्दी भाषा विज्ञान विशेषांक, लेख—'हिन्दी सज्ञा पदबन्ध, पृष्ठ, 159, 1973

इस वर्ग के अन्तर्गत क्योंकि 'क' से आरम्भ होने वाले रूपों या तत्त्वों पर विचा किया जाता है, इसी कारण इस वर्ग को 'घटक क' नामकरण से अभिहित करना तर्क संगत है।

4 | 7 कर्त्ता-वर्ग (व कैटेग्री नाम)—

(25) कर्त्ता→ {संज्ञा / सर्वनाम}

कर्ता वर्ग के अन्तर्गत संज्ञा-पद तथा सर्वनाम-पद को लेकर विचार किया ज रहा है। संज्ञा तथा सर्वनाम—पदों को अनेक वर्गों में बाँटा जा सकता है—

उदाहरणार्थ—सामान्य संज्ञा-पद, जैसे - मूर्त तथा भाववाचक, संख्यावाच तथा राशिवाचक आदि। व्युत्पन्न-संज्ञा-पद, जैसे—भाववाचक मूर्त और चेतन तथ अचेतन आदि भेद संज्ञा-पदों के हैं।

सर्वनाम-पद, जैसे - निश्चयसूचक, प्रश्नवाचक, अनिश्चयवाचक तथा पुरुष वाचक सर्वनाम (जैसे—उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम।)

व्युत्पत्ति की दृष्टि से पुरुषवाचक सर्वनाम इस प्रकार हैं—

निश्चित + निर्देशक + सर्व०[1] →हाऊँ (बहु० व०— आस्सा)
'मैं' 'हम'

निश्चित + निर्देशक[1] + सर्व[2]→तू≈तू (बहु०व०— तुस्सा)
'तू' 'तुम'

निश्चित + निर्देशक[1]सर्व→ए, (बहु० व०—यो)
'यह' 'ये'

निश्चित + निर्देशक[2] + सर्व०→से (बहु० व०—स्यो)
'वह' 'वे'

उदाहरणार्थ—

[162] ए से म्हठा आ जे काल आया था।
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
सके०निर्दे०सप०स०क्रि० ज० क्रि०वि० क्रि०प०
'यह वह लड़का है जो कल आया था।'

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि मण्डियाली में निर्देशक[1] तथा निर्देशक का प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। इस अन्तर को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—

निकटवर्ती निर्देशक[1]

[163] ए नरेस आ। ए तुस्सा साउवी चलूगा।
'यह नरेश है। यह आपके साथ चलेगा।'

[164] एछैल म्हृठा आ।
'यह सुन्दर लड़का है।'

दूरवर्ती निर्देशक²

[165] जे समान तुस्से भेज्या था, से मिली गया था।
'जो सामान आपने भेजा था, वह मिल गया था।'

[166] हुण नरेस आया था, से तुस्साओ टोलदा लगिरा था।
'अभी नरेश आया था, वह आपको ढूंढ रहा था।'

उपर्युक्त उदाहरणो मे निर्देशक¹ निकटवर्ती सर्वनाम का उदाहरण है। तथा निर्देशक² दूरवर्ती सर्वनाम का उदाहरण है। निर्देशक¹ तथा निर्देशक² का प्रयोग केवल पुरुषवाचक सर्वनाम के साथ ही होता है। अनिश्चयवाचक सर्वनाम मे निश्चित घटक के स्थान पर अनिश्चित घटक का प्रयोग होता है। अनिश्चयवाचक सर्वनाम के साथ निर्देशक¹ तथा निर्देशक² का प्रयोग नही होता है।

अनिश्चयवाचक सर्वनामो की व्युत्पत्ति इस प्रकार है—

अनिश्चित + सर्व०→कोई 'कोई'
[मानव]

अनिश्चित + सर्व०→किच्छ 'कुछ'
[अमानव, चीज]

अनिश्चयवाचक तथा पुरुषवाचक सर्वनामो के साथ निकटवर्ती तथा दूरवर्ती निर्देशको का प्रयोग होता है, मगर अनिश्चयवाचक सर्वनामो के साथ निर्देशको का प्रयोग नही होता है। इस बात को उदाहरणो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरणार्थ—

[167] ए राम आ, ए काल भी आया था। [निश्च०वा० सर्व०]
'यह राम है, यह कल भी आया था।'

[168] जे म्हृठा काल आया था, से राम आं। [नि० वा० सर्व०]
'जो लड़का कल आया था, वह राम है।'

[169] कोई म्हृठा आया था। [अनि० वा० सर्व०]
'कोई लड़का आया था।' [मानव]

[170] एत्थी कोई बैठ्या था। [अनि० वा० सर्व०]
'यहां कोई बैठा था।' [मानव]

[171] एत्थी किच्छ आइरा था। [अनि० वा० सर्व०]
'यहां कुछ आया हुआ था।' [अमानव]

[172[किच्छ जरूर हुइरा। [अनि०वा० सर्व०]
'कुछ अवश्य हुआ है।' [अमानव, चीज]

उपर्युक्त उदाहरणो से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि निर्देशक[1] तथा निर्देशक[2] का प्रयोग पुरुषवाचक तथा निश्चयवाचक-सर्वनामो के साथ ही होता है, अनिश्चयवाचक सर्वनामो के साथ नही, लेकिन कभी-कभी अनिश्चयवाचक-सर्वनाम के साथ भी निर्देशक[1] तथा निर्देशक[2] का प्रयोग मिल जाता है, मगर इस प्रकार का प्रयोग कम मिलता है।

उदाहरणार्थ —

[173] ए किच्छ जरूर हुइरा एत्थी।
'यह कुछ अवश्य हुआ है यहाँ।' या
'यहाँ यह कुछ अवश्य हुआ है।'

[174] से किच्छ लिख्या करां था।
'वह कुछ लिख रहा था।'

4 1 8 क्रिया-पदबन्ध (वर्ब-फरेज)—

यो सामान्यत क्रियाहीन वाक्य बोलचाल की भाषा मे असम्भव तो नही, परन्तु कथन की पूर्ण अभिव्यक्ति एव व्याकरणिक व्यवस्था की दृष्टि से वाक्य मे क्रिया का महत्त्व निश्चित है। अत कहा जा सकता है कि क्रिया के अभाव मे वाक्य सभव ही नही है।

यहाँ पर क्रिया-पदबन्ध-सरचना के नियमो को दिया जा रहा है। क्रिया-पदबध-सरचना [क्रिया-पदबन्ध सरचना] के नियम निम्नाकित हैं—

[1]	वा० —	स०प० + क्रि०प०
[2]	सप० —	[वि०] + स०
[3]	क्रि०प० —	[सप०] + [क्रि०वि०] + [पू०] + क्रि०
[4]	पू० —	वि०≈स०
[5]	क्रि० —	मु०क्रि० + [सहा०क्रि०]
[6]	वि० —	खरा, बुरा, लो, त्राए, च.र ·
[7]	स० —	म्हूठा, हाथी, कुर्सी
[8]	क्रि०वि० —	मुले, झट, सताब्बी
[9]	मु०क्रि० —	बैठ, उठ्ठ, चल, खा, जा
[10]	सहा० क्रि० —	हो, आ

सप० तथा वि० आदि को लेकर पहले ही विचार किया जा चुका है। क्रि० वि० तथा पू० आदि को लेकर क्रिया-विशेषण के अन्तर्गत विचार किया गया है। यहाँ पर क्रि०प० को लेकर ही विचार किया जा रहा है।

यदि हम कुछ गहराई मे जाये ना कहा जा सकता है कि रूप-रचना को भी वाक्य रचना क अन्तर्गत ही समटा जा सकता है। एक वाक्य उदाहरणस्वरूप लिया जा सकता है, जिसके पदबन्ध-सरचना (प०स०) नियम इस प्रकार होगे—

सिमने रे सेऊ सभी देस्सा जो जाँह् एँ।

'शिमला के सेब सभी देशो मे जाते हैं।'

[1]	वा०—	स०प० + क्रि०प०
[2]	स०प०—	[वि०] + स०
[3]	क्रि०प०—	[क्रि०वि०] + क्रि०
[4]	क्रि०—	मु०क्रि० + सहा०क्रि०
[5]	स०—	सिमला, सुऊ, देस ··
[6]	वि०—	सभी ·
[7]	प्रत्यय—	ए, आ, आँह्, एँ · ·
[8]	परसर्ग—	रे, जो ··
[9]	पक्ष—	आँह्
[10]	मु०क्रि०—	जा ·
[11]	सहा०क्रि०—	हो≈आ···

अत उपर्युक्त नियमो को देखने मे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्रत्यय, परसर्ग, पक्ष आदि को भी वाक्य मे पदबन्ध-सरचना (पस) नियम के अन्तर्गत रखा जा सकता है।

इस बात की स्पष्टता के लिए डॉ० भोलानाथ तिवारी की निम्नाकित पक्तियाँ ली जा सकती हैं—

'रूप व्याकरण और विस्तार मे जाकर रूप-रचना को भी वाक्य-रचना मे ही समेट लेता है, अत प्रत्ययो आदि को भी 'पस' नियम मे रखा जा सकता है।'[1]

4 2 क्रिया विशेषण (एडवर्ब)—

क्रिया वाक्याश (कि०वा०) मे एक मुख्य-क्रिया तथा एक सहायक-क्रिया होती है। विशेषण, सज्ञापद की विशेषता बतलाते है तथा विधेय-पूरक के रूप मे आते हैं, उसी प्रकार क्रिया-विशेषण भी विधेय-पूरक (प्रेडकप) के रूप मे आते हैं।

मण्डियाली से उदाहरण के रूप मे खरा 'अच्छा तथा बुरा—'बुरा' विशेषणो को लिया जा सकता है। ये दोनो पद, विशेषण तथा क्रिया-विशेषण का काम करते हैं। जब ये सज्ञा की विशेषता व्यक्त करते हैं, तो विशेषण कहलाते हैं, मगर जब क्रिया को विकृत (मोडीफाई) करते है, तो ये क्रिया-विशेषण कहलाते है।

विशेषण रूप मे उदाहरण इस प्रकार हैं—

[1]	खरा म्हुठा	'अच्छा लडका।'
[2]	खरी म्हुठी	'अच्छी लडकी।'

उपर्युक्त दोनो उदाहरण निम्नाकित प्रकार के वाक्यो से व्युत्पन्न हैं—

1. डॉ० भोलानाथ तिवारी, आधुनिक भाषा-विज्ञान, पृष्ठ 183

उदाहरणार्थ—

[1] खरा म्हठा आ→खरा म्हठा 'अच्छा लडका'
'अच्छा लड़का है।'

[2] खरी म्हठी ई →खरी म्हठी 'अच्छी लडकी'
'अच्छी लड़की है।'

इसी प्रकार दूसरा उदाहरण—बुरा म्हठा—'बुरा लडका' बुरा म्हठा आ—'बुरा लडका है।' से व्युत्पन्न है।

इन विशेषण-पदो के क्रिया-विशेषण के रूप मे उदाहरण इस प्रकार हैं—

[1] राम खरा गाँह् आँ—
'राम अच्छा गाता है।'

इसे आरेख मे इस प्रकार दिखा सकते हैं—

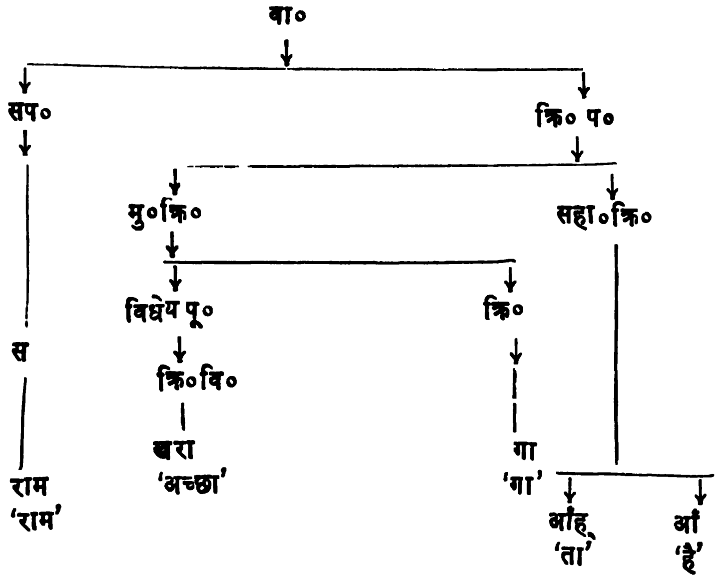

राम खरा गाँह् आँ।
'राम अच्छा गाता है।'

[2] राम तेज चलाँ आँ।
'राम तेज चलता है।'

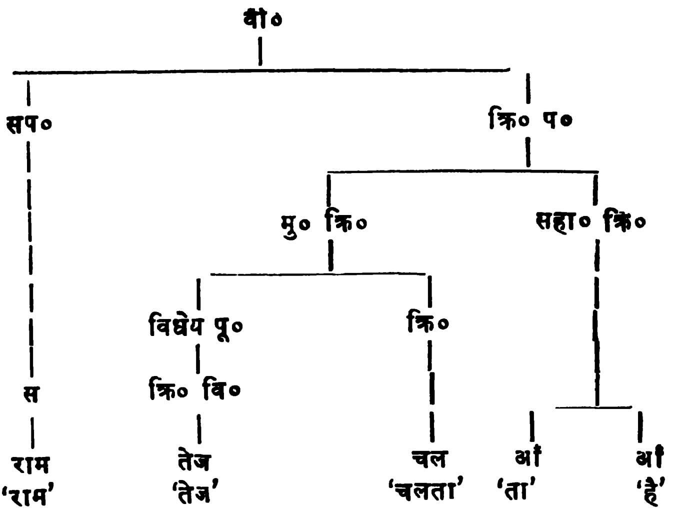

राम तेज चलाँ आँ

'राम तेज चलता है।'

मण्डियाली मे क्रिया-विशेषणो को निम्नाकित वर्गों मे बाँट सकते हैं—

क्रिया-विशेषण→ { क्रि० वि० [स्थान], क्रि० वि० [काल], क्रि० वि० रीति], क्रि० वि० [परिमाण] }

[1] क्रि० वि० [स्थान]

एत्थी	'यहाँ'
तेत्थी	'वहाँ'
केत्थी	'कहाँ'
आग्गे	'आगे'
पिच्छे	'पीछे'
प्रवाल्हे	'ऊपर'
बुन्हा	'नीचे'
भित्तर	'अन्दर'
बाह्र	'बाहर'
दैह्णे	'दाहिने'
बाँवे	'बाँये'
नेडे	'नजदीक'
दूर	'दूर'

उदाहरणार्थ—

[1] तू एत्थी आ।

'तू यहाँ आ।'

[2] तू तेत्थी जा ।
'तू वहाँ जा ।'

[3] तुस्से केत्थी चले ?
'आप कहाँ चले ?'

[4] तू आग्गे चल ।
'तू आगे चल।'

[5] स्यो पिच्छे चले ।
'वे पीछे चले ।'

[6] स्यो प्रयाल्हे बैट्ठे ।
'वे ऊपर बैठे ।'

[7] तू बुन्ह जा ।
'तू नीचे जा ।'

[8] तू भित्तर बैठ ।
'तू अन्दर बैठ ।'

[9] तू बाह्र सो ।
'तू बाहर सो ।"

[10] तू दैह्डे मुड़ ।
'तू दाहिने मुड़ ।'

[11] तुस्से बाँवें चलो ।
'तुम बाएँ चलो ।'

[12] तुस्सारे नेडे बैठ्या ।
'आपके समीप बैठा ।

[13] तू दूर बैठ ।
'तू दूर बैठ ।'

[2] क्रिया-विशेषण [काल]

एब्बे	'अब'
तेब्बे	'तब'
जेब्बे	'जब'
केब्बे	'कब'
आज	'आज'
काल	'काल'
पैह्ले	'पहले'
ध्याड	'रोज'
परसी	'परसों'
स्ताब्बी	'जल्दी'

उदाहरणार्थ—

[1] तेस्स एब्बे जाणाँ ।
'उसे अब जाना है ।'

[2] स्यो तेब्बे गए ।'
'वे तब गए ।'

[3] जेब्बे आया तेब्बे ही चला गया ।
'जब आया तभी चला गया ।

[4] तेस्स केब्बे जाणा ?
'वह कब जाएगा ?'

[5] हाऊँ आज आया ।
'मै आज आया ।'

[6] से काल गया ।
'वह कल गया ।'

[7] हाऊँ पैह्ले गया था ।
'मै पहले गया था ।'

[8] से तत्थी ध्याड ही जाँह्आँ ।
'वह वहाँ रोज ही जाता है ।'

[9] से पर्सो गया ।
'वह परसो गया ।'

[10] मज्जो स्ताब्बी लगिरी ।
'मुझे जल्दी लगी है ।'

[3] क्रिया-विशेषण [रीति]—

एढा	'ऐसा'
तेढा	'वैसा'
केढा	'कैसा'
जेढा	'जैसा'
जेढा केढा	जैसा-कैसा
इह्याँ	'ऐसे'
तिह्याँ	'वैसे'
किह्याँ	'कैसे'
जिह्याँ	'जैसे'
सुलै	'धीरे'
सुलै-सुलै	'धीरे-धीरे'
मजेकन्ने	'आराम से'
ध्यान्ना-कन्ने	'ध्यान से'
झटपट	'जल्दी'
जेढे-रा-तेढा	'वैसे-का-वैसा'
तेज	'तेज'

उदाहरणार्थ—

[1] एढा बैठ्या ।
'ऐसा बैठा ।'

[2] तेढा कित्ता ।
'वैसा किया ।'

[3] केढा बण्ना ।
'कैसा बनेगा ।'

[4] से जेढा पैह्न्नो ठीक आ ।
'वह जैसा पहने ठीक है ।'

[5] जेढा-केढ़ा बणे ठीक आ ।
'जैसा कैसा बने ठीक है ।'

[6] इह्यां चलना ।
'ऐसे चलना ।'

[7] तिह्यां कर्ना ।
'वैसे करना ।'

[8] किह्यां कित्ता ?
'कैसे किया ?'

[9] जिह्यां चलना चल ।
'जैसे चलना चल ।'

[10] सुलै जाओ ।
'धीरे जाओ ।'

[11] सुलै-सुलै चलो ।
'धीरे-धीरे चलो ।'

[12] मजे कन्ने जाणा ।
'आराम से जायेंगे ।'

[13] ध्याना कन्ने सुणो ।
'ध्यान से सुनो ।'

[14] झटपट चलो ।
'जल्दी चलो ।'

[15] से जेढे-रा-तेढा चल्या ।
'वह वैसे का वैसा चला ।'

[16] राम स्याम्मा-थे सुलै चलां आं ।
'राम, श्याम से धीरे चलता है ।'

[17] हाऊं तेस्स थे तेज दौड़ां आं ।
'मैं उससे तेज दौड़ता हूं ।'

(4) क्रिया-विशेषण (परिमाण)—

किच्छ	'कुछ'
बोह्‌त	'बहुत'
थोडा	'थोडा'
घट	'कम'
बड्‌डा	'बडा'
बड्‌डा-भारी	'बहुत-भारी'
खरा	'अच्छा'
भतेरा	'काफी'
इत्तणा	'इतना'
उत्तणा	'उतना'
कितणा	'कितना'
बरोबर	'बराबर'
जादा	'ज्यादा'
बोह्‌त-जादा	'बहुत-ज्यादा'
कम	'कम'
जित्तणा	'जितना'

उदाहरणार्थ—

[1] किच्छ बोल्या	'कुछ बोला।'
[2] बोह्‌त चल्या	'बहुत चला।'
[3] थोडा पित्ता	'थोडा पिया।'
[4] घट बोल्या	'कम बोला।'
[5] खरा बोल्या	'अच्छा बोला।'
[6] भतेरा लिखया	'बहुत लिखा।'
[7] इत्तणा चल्या	'इतना चला।'
[8] उत्तणा चल्या ही था	'उतना चला ही था।'
[9] कित्तणा पढया	'कितना पढा।'
[10] जित्तणा टुकणा था	'जितना काटना था।'
[11] बरोबर बांड	'बराबर बांट।'
[12] जादा हांड्या	'ज्यादा चला।'
[13] बोह्‌त् जादा धुल्या	'बहुत ज्यादा लडा।'
[14] रोट्टी कम बणाई	'रोटी कम बनाई।'

कुछ क्रिया-विशेषण ऐसे हैं, जिनका प्रयोग क्रिया-पद से पूर्व नही होता है। ऐसे क्रिया-विशेषण [परिमाणक] बड्‌डा—'बडा' बड्‌डा-भारी 'बहुत भारी' है।

विशेष—

मण्डियाली मे कुछ क्रिया-विशेषण पद ऐसे है, जिनका उच्चारण या प्रयोग दो रूपो मे होता है। ऐसे क्रिया-विशेषण इस प्रकार हैं—'वड्डा-भारी' के लिए 'बोह्‌त-भारी'—'बहुत भारी' 'इत्तणा' के लिए 'एत्तणा'—'इतना', 'किच्छ' के लिए 'कुछ'—'कुछ' तथा 'जादा' के लिए 'ज्यादा'—'ज्यादा' का प्रयोग भी होता है।

4 3 अन्विति-नियम (एग्रीमैंट रूल्ज)—

मण्डियाली मे वाक्य या वाक्याश स्तर पर कुछ अन्विति-नियम हैं, जिनकी सहायता से वाक्यो का निर्माण होता है। अत वाक्य विन्यास के अन्तर्गत हमे कुछ अन्विति नियमो को ध्यान मे रखना होता है। मण्डियाली मे मुख्य रूप से अन्विति नियम वाक्य के अवयव—कर्त्ता, कर्म तथा क्रिया पर आधारित है। वाक्य के अन्विति सम्बन्धी अवयव [नियम] इस प्रकार हैं—

कर्त्ता[स०] + कर्म [ओ] + क्रिया [व०]

मण्डियाली मे अन्विति सम्बन्धी नियमो को इस प्रकार बांट सकते है—

[1] यदि कर्त्ता तथा कर्म दोनो अविकारी अर्थात [-परसर्ग] हो।

[2] यदि कर्त्ता तथा कर्म दोनो मे एक अविकारी अर्थात [-परसर्ग] हो।

[3] यदि कर्त्ता तथा कर्म दोनो विकारी अर्थात [-परसर्ग] हो।

[1] यदि कर्त्ता तथा कर्म दोनो अविकारी अर्थात् [-परसर्ग] हो तो क्रिया कर्त्ता से अन्वित होती है।

[-प] [-प]

[क] [कर्त्ता + कर्म + क्रिया-सहायक]

उदाहरणार्थ—

[1] राम कताब पढाँ आँ	'राम किताब पढ़ता है।'
[2] राम मेज बणाँ आँ।	'राम मेज बनाता है।'
[3] गीता कताब पढाँ ई।	'गीता किताब पढ़ती है।'
[4] गीता मेज बणाँ ई।	'गीता मेज बनाती है।'
[5] म्हूठे कताब पढाँ एँ।	'लडके किताब पढ़ते हैं।'
[6] म्हूठे मेज बणाँ एँ	'लडके मेज बनाते हैं।'
[7] म्हूठियाँ कताब पढाँ ई।	'लडकियाँ किताब पढ़ती हैं।'
[8] म्हूठियाँ मेज बणाँ ई।	'लडकियाँ मेज बनाती हैं।'

[-प] [-प]

[ख] कर्त्ता + कर्म + क्रिया

उदाहरणार्थ—

[1] राम कताब पढी बैठ्या। 'राम किताब पढ़ बैठा।'
[2] राम घोडा बेच्ची आया। 'राम घोडा बेच आया।'
[3] सीता कताब पढी बैट्ठी 'सीता किताब पढ़ बैठी।'
[4] सीता घोडा बेच्ची आई। 'सीता घोडा बेच आई।'
[5] म्हठे कताब पढी बैट्ठे। 'लडके किताब पढ़ बैठे।'
[6] म्हठे घोडा बेच्ची आए। लडके घोडा बेच आए।'
[7] म्हुठियाँ कताव पढी बैट्ठी। 'लडकियाँ किताब पढ़ बैठी।'
[8] म्हुठियाँ घोडा बेच्ची आई। 'लडकियाँ घोड़ा बेच आई।'

उपर्युक्त सभी उदाहरण कर्तरि-प्रयोग के हैं।

विशेष—

सहायक क्रिया की कर्म के साथ अन्विति केवल सामान्य-वर्तमान, सामान्य-भूत तथा सामान्य भविष्यत् मे ही होती है। अन्य सभी कालो मे पूरे क्रियापद की कर्त्ता से अन्विति होती है।

[2] यदि कर्त्ता तथा कर्म दोनो मे से एक अविकारी अर्थात् [-परसर्ग] हो।
[1] यदि कर्त्ता अविकारी अर्थात [-परसर्ग] तथा कर्म विकारी अर्थात [+परसर्ग] हो तो क्रिया, कर्त्ता से अन्विति होती है।

[-प] [-प]
[क] कर्त्ता + कर्म + क्रिया [सहायक]

उदाहरणार्थ—

[1] राम कताब्बा जो फाडा आं। 'राम किताब को फाडता है।'
[2] राम घडे जो तोडा आं। 'राम घडे को तोडता है।'
[3] सीता कताब्बा जो फाडा ई। 'सीता किताब को फाडती है।'
[4] सीता घडे जो तोडा ई। 'सीता घडे को तोड़ती है।'
[5] म्हठे कताब्बा जो फाडा एँ। 'लडके किताब को फाडते हैं।'
[6] म्हठे घडे जो तोडा एँ। 'लड़के घडे को तोड़ते हैं।'
[7] म्हुठियाँ कताब्बा जो फाडा ई। 'लडकियाँ किताब को फाडती हैं।'
[8] म्हुठियाँ घड जो तोडा ई। 'लड़कियाँ घडे को तोडती हैं।'

[-प] [+प]
[ख] कर्त्ता + कर्म + क्रिया

उदाहरणार्थ—

[1] राम पेट्टा जो धोई बैठ्या। 'राम पेट को धो बैठा।'

[2] राम पात्थरा जो तोडी बैठ्या। 'राम पत्थर को तोड़ बैठा।'
[3] सीता पैट्टा जो धोई बैट्ठी। 'सीता पेट को धो बैंठी।'
[4] सीता पात्थरा जो तोडी बैट्ठी। 'सीता पत्थर को तोड बैंठी।'
[5] म्हूठे पैट्टा जो धोई बेट्ठे। 'लडके पेट को धो बैंठे।'
[6] म्हूठे पात्थरा जो तोडी बैट्ठे। 'लड़के पत्थर को तोड बैंठे।'
[7] म्हूठियां पैट्टा जो धोई बैट्ठी। 'लडकियां पेट को धो बैंठीं।'
[8] म्हूठियां पात्थरा जो तोडी बैट्ठी। 'लडकियां पत्थर को तोड़ बैंठीं।'

(2) यदि कर्त्ता विकारी अर्थात [+परसर्ग] तथा कर्म अविकारी अर्थात [-परसर्ग] हो तो क्रिया, कर्म से अन्वित होती है।

[+प] [-प]
[क] कर्त्ता + कर्म + क्रिया

उदाहरणार्थ—

[1] राम्मे कताब पढ़ी। 'राम ने किताब पढ़ी।'
[2] राम्मे पात्थर तोड्या। 'राम ने पत्थर तोडा।'
[3] सीत्ते कताब पढ़ी। 'सीता ने किताब पढ़ी।'
[4] सीते पात्थर तोड़्या। 'सीता ने पत्थर तोड़ा।'
[5] म्हूठिएँ कताब पढ़ी। 'लड़कियों ने किताब पढ़ी।'
[6] म्हूठिएँ पात्थर तोड्या। 'लड़कियों ने पत्थर तोडा।'
[7] म्हूठ्यां कताब पढ़ो। 'लडकों ने किताब पढ़ी।'
[8] म्हूठ्यां पात्थर तोड्या। लडकों ने पत्थर तोडा।'

उपर्युक्त सभी उदाहरण कर्मणि-प्रयोग के हैं।

यदि कर्त्ता विकारी अर्थात [+परसर्ग] हो तो, क्रिया कर्म से अन्वित होती है।

[+प] [-प]
[क] कर्त्ता + कर्म +क्रिया

[1] राम्मा थे कताब नी पढ़ी हुंद्दी।
'राम से किताब नहीं पढ़ी जाती।'
[2] सीता थे कताब नी पढ़ी हुंद्दी।
'सीता से किताब नहीं पढ़ी जाती।'
[3] राम्मा थे मेज नी चक्की हुंद्दा।
'राम से मेज नहीं उठाया जाता।'
[4] सीता थे मेज नी चक्की हुंद्दा।
'सीता से मेज नहीं उठाया जाता।'

[5] म्हृठया थे कताब नी पढ़ी हुँद्‌दी ।
 'लड़कों से किताब नहीं पढ़ी जाती ।'

[6] म्हृठर्यां थे मेज नी चक्की हुँद्‌दा ।
 'लड़कों से मेज नहीं उठाया जाता ।'

उपर्युक्त सभी उदाहरण भावे-प्रयोग के हैं ।

[+प] [+प]
कर्त्ता + कर्म + + क्रिया + आ

यह नियम हिन्दी मे कर्तरि प्रयोग तथा कर्मणि प्रयोग की तरह है । पर हिन्दी मे उपर्युक्त भावे प्रयोग भी मिलता है, वहाँ मण्डियाली मे ऐसी सरचना नही मिलती अर्थात् कर्त्ता विकारी [+परसर्ग] +कर्म विकारी [+परसर्ग] +क्रिया + आ जैसी सरचना नही मिलती ।

भावे प्रयोग मे अन्विति न तो कर्त्ता के साथ होती है और न कर्म के साथ, क्योंकि दोनो ही विकारी होते हैं ।

उदाहरणार्थ—

लड़के ने पेड़ को काटा । [हिन्दी]
म्हृठे डाल् टुक्या । [मण्डियाली]
लड़को ने सभी पेडों को काटा । [हिन्दी]
म्हृठ्यां सब डाल् बाड्‌डे । या [मण्डियाली]
म्हृठ्यां सभी डाल् बाड्‌डे [टुक्के] ।

निष्कर्ष

मण्डियाली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन करने पर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे निम्नांकित तथ्य निष्कर्ष रूप मे सामने आते हैं —

स्वन-प्रक्रिया—

स्वनिम—मण्डियाली मे दस मूल स्वर हैं-/ अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ / चार सध्यक्षर स्वर हैं - अइ, अउ, आइ, आउ, / तथा चौंतीस व्यजन ध्वनियाँ हैं -/ प, फ, ब, भ, म, त, थ, द, ध, ट, ठ, ड, ढ़, क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, म, म्ह, न, न्ह, ण, ल, ल्ह, र, ड, ढ, स, ह, व, य / इस प्रकार मण्डियाली मे अडतालीस खण्डात्मक स्वनिम हैं। जहाँ तक अधिखण्डात्मक स्वमिनो का प्रश्न है, उनकी सख्या मुख्य रूप से पाँच है—1 दीर्घता, 2. आघात, 3. सगम, 4. प्राणत्व तथा तान और 5. अनुनासिकता।

स्वनिम वितरण—स्वनिम वितरण मे मण्डियाली मे शब्दो की अन्त्य-स्थिति मे / अ / तथा / इ / का प्रयोग नही होता है। शब्दो की अन्त्य-स्थिति मे / उ / तथा /ऊ/ मुक्त-वितरण मे है, लेकिन दीर्घ व्यजन के साथ दीर्घ /ऊ/ का ही प्रयोग होता है। मण्डियाली की निजी विशेषता कि इसमे/ण/ का प्रयोग शब्दो की सभी स्थितियो मे होता है तथा /ड/ और /ढ/ का प्रयोग शब्दो की मध्य तथा अन्त्य-स्थितियो मे ही होता है।

द्वित्व व्यजन या व्यजना दीर्घता—मण्डियाली मे दीर्घ [द्वित्व] रूप अल्पप्राण व्यंजनो के ही मिलते हैं। अल्पप्राण व्यजनो मे भी /ण, ल, ड, तथा र/ के दीर्घ रूप नही मिलते हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध मे तान [टोन] को प्राणत्व [ब्रीदिंग] के रूप मे स्वीकार किया गया है, जबकि मण्डियाली मे तान [टोन] का प्रयोग भी देखने को मिलता है।

स्वरानुक्रम—मण्डियाली मे स्वरानुक्रम अधिक-से-अधिक चार स्वरो तक ही मिलता है तथा चार स्वरो का अनुक्रम भी मात्र अन्त्य-स्थिति मे ही मिलता है। दो स्वरो का अनुक्रम शब्दो तीनो स्थितियो मे मिलता है, जबकि तीन स्वरो का अनुक्रम केवल दो ही स्थितियो मे मिलता है — 1 आदि स्वरानुक्रम तथा 2 अन्त्य स्वरानुक्रम।

स्वरानुक्रम मे /ऐ/ तथा /औ/ अनुक्रम के रूप मे नही आते हैं। स्वरानुक्रम मे /अ, इ, ए/ अन्तिम स्वर के रूप मे नही आते हैं। समान स्वर मण्डियाली मे अनुक्रम

के रूप मे नहीं आते हैं । समान स्वरो के ह्रस्व तथा दीर्घ रूप या दीर्घ तथा ह्रस्व रूप भी अनुक्रम मे नही आते हैं, जैसे —/अ आ/ तथा /ई इ/ आदि ।

व्यंजन-गुच्छ · व्यजन-गुच्छो का जहाँ तक प्रश्न है, मण्डियाली मे अधिक-से-अधिक चार व्यजनो के गुच्छ ही मिलते हैं तथा चार व्यजनो के गुच्छ भी मात्र मध्य-स्थिति मे ही मिलते हैं । सभी स्थितियो मे व्यजन-गुच्छो को लेकर कहना अधिक तर्क-सगत नही होगा कि सभी स्थितियो मे व्यजन-गुच्छो की सम्भावनाओ को भी साथ ही दिया गया है ।

अक्षर व्यवस्था · हर भाषा की अक्षर व्यवस्था अपनी-अपनी होती है, यह बात मण्डियाली अक्षर-व्यवस्था पर भी एकदम सही उतरती है । मण्डियाली अक्षर-व्यवस्था का अध्ययन मुख्य रूप से दो प्रकार से किया गया है— 1 अक्षरो के प्रकार के आधार पर तथा 2 अक्षरो की सख्या के आधार पर । अक्षरो के प्रकार के आधार पर मडियाली शब्दो मे अक्षर तीन स्थानो पर मिलते है— 1 शब्दो के आदि मे, 2 शब्दो के मध्य मे तथा 3 शब्दो के अन्त मे । इन तीनो स्थानो पर मिलने वाले अक्षर दो प्रकार के हैं— 1 स्वरात-अक्षर तथा 2 व्यजनांत-अक्षर । अक्षरो की सख्या के आधार पर मडियाली मे अनेक प्रकार के शब्द मिलते हैं— 1 एकाक्षरिक शब्द, 2 द्विआक्षरिक शब्द, 3 त्रिआक्षरिक शब्द, 4 चतुर्अक्षिरिक शब्द, 5 पचमाक्षरिक शब्द वास्तव मे मडियाली मे चतुअक्षिरिक शब्दो तक ही अक्षरो के साँचे उपलब्ध होते हैं । ये सभी प्रकार के शब्द भी दो ही प्रकार के हैं— 1 स्वरात तथा व्यजनात । मडियाली अक्षर-व्यवस्था के अन्तंगत प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध मे जो बात ध्यातव्य है , वह यह है कि अक्षर-व्यवस्था के अन्तंगत यहाँ पर साँचो की सम्भावनाओ को भी व्यक्त किया गया है तथा उन्हे भी साँचे के रूप मे स्वीकार कर लिया गया है ।

रूपस्वन-प्रक्रिया —

रूपस्वन-प्रक्रिया अर्थात् दूसरे अध्याय के अन्तर्गत रूप-प्रक्रिया के सदर्भ मे होने वाले स्वनिमो के परस्पर होने वाले परिवर्तनो को लेकर विचार किया गया है । इसी अध्याय मे स्वनिम आगम, स्वनिम लोप तथा स्वनिम परिवर्तन को लेकर भी विचार किया गया है । अत रूप स्वनप्रक्रिया के अन्तर्गत मण्डियाली मे रूप-स्वनिक स्तर पर होने वाले सभी परिवर्तनो को दिखाया गया है [2 1 से 2 26] ।

रूप-प्रक्रिया—

सज्ञापद मण्डियाली मे सज्ञापदो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँटा गया है— 1 सामान्य सज्ञापद तथा 2 व्युत्पन्न सज्ञापद ।

सामान्य सज्ञापदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँटा गया है—1 मूर्त सज्ञापद तथा 2 भाववाचक या गुणवाचक सज्ञापद । मूर्त सज्ञापदों को फिर दो उपवर्गों मे बाँटा गया है—1. सख्या-वाचक सज्ञापद, 2. राशिवाचक सज्ञापद । सख्यावाचक सज्ञापदो को फिर

दो उपवर्गों मे बाँटा गया है—1 चेतन सज्ञापद तथा 2. अचेतन संज्ञापद। चेतन सज्ञापदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँटा गया है—1 मानव सज्ञापद तथा 2 अमानव सज्ञापद। मानव सज्ञापदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँटा गया है—1. जातिवाचक सज्ञापद तथा 2 व्यक्तिवाचक सज्ञापद। जातिवाचक सज्ञापदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँटा गया है—1 बन्धुतावाचक सज्ञापद तथा 2 अबन्धुतावाचक सज्ञापद।

2. व्युत्पन्न सज्ञापदो के अन्तर्गत पहले मूर्त सज्ञा पदो को लेकर विचार किया गया है। व्युत्पन्न सज्ञापदो को भी दो उपवर्गों मे बाँटा गया है—1. चेतन सज्ञापद तथा 2 अचेतन सज्ञापद। चेतन सज्ञापदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँटा गया है—1 मानवीय सज्ञापद तथा 2 अमानवीय सज्ञापद।

व्युत्पन्न तथा व्युत्पादी सज्ञापदो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँटा गया है—1. मूर्त सज्ञापद तथा 2 भाववाचक सज्ञापद। व्युत्पन्न मूर्त संज्ञापदो के अन्तर्गत केवल मानवीय सज्ञापदो को ही स्वीकार किया गया है। भाववाचक सज्ञापद, प्रातिपदिको मे पूर्व-प्रत्यय तथा पर-प्रत्यय जोडने से व्युत्पन्न होते हैं। भाववाचक सज्ञापदो की व्युत्पत्ति सज्ञा, विशेषण तथा क्रिया पदो मे पूर्व-प्रत्यय तथा पर-प्रत्ययो के योग से हुआ करती है। इसी कारण मण्डियाली मे व्युत्पन्न भाववाचक सज्ञापदो को तीन वर्गों मे बाँटा गया है—1 सज्ञा प्रातिपदिको से व्युत्पन्न, 2 विशेषण प्रातिपदिको से व्युत्पन्न, 3 क्रिया प्रातिपदिको से व्युत्पन्न।

लिग विधान मण्डियाली मे लिग दो प्रकार के होते हैं—1 पुल्लिग तथा 2 स्त्रीलिंग। सभी सज्ञापदो को सर्वप्रथम दो वर्गों मे बाँटा गया है—1 सामान्य सज्ञापद तथा 2 व्युत्पन्न सज्ञापद। सामान्य सज्ञापदो को फिर दो उपवर्गों मे बाँटा गया है—1. चेतन सज्ञापद तथा 2 अचेतन-सज्ञापद। चेतन तथा अचेतन सज्ञापदो के लिंग का निर्णय वाक्य प्रयोग से आसानी से हो जाता है। इसलिए लिंग का निर्णय आवश्यकतानुसार वाक्य की सहायता मे भी किया गया है।

वचन विधान मण्डियाली सज्ञापदो को वचन के आधार पर दो वर्गों मे बाँटा गया है—1 एकवचनद्योतक सज्ञापद तथा 2 बहुवचनद्योतक सज्ञापद। बहुवचनद्योतक सज्ञापदो मे बहुवचनद्योतक पर-प्रत्ययो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँटा गया है—1 पुल्लिग बहुवचनद्योतक पर-प्रत्यय तथा 2 स्त्रीलिंग बहुवचनद्योतक पर-प्रत्यय।

इसके पश्चात् कारक=चिन्हो या परसर्गों को लेकर विचार किया गया है।

सर्वनाम-पद : मण्डियाली मे सर्वनाम-पदो को मुख्य रूप से छ वर्गों मे बाँटा गया है [3 5]।

विशेषण-पद : विशेषण पदो को मण्डियाली मे मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँटा गया है—1 विकारी विशेषण-पद, 2. अविकारी विशेषण-पद। विकारी तथा अविकारी विशेषण-पदो के इस अन्तर को वाक्य प्रयोग द्वारा भी स्पष्ट किया गया है।

संख्यावाचक विशेषण-पद—मण्डियाली मे संख्यावाचक विशेषण-पदो को मुख्य रूप से छ वर्गों मे बाँटा गया है [3 6 3] ।

क्रिया-पद मण्डियाली मे समस्त क्रिया-पदो या धातुओ को दो वर्गों मे बाँटा गया है—1. मूल क्रिया-पद या धातु, 2 यौगिक क्रिया-पद या धातु । मूल क्रिया पद या धातु के दो भेद किए गए हैं—1. अकर्मक-धातु तथा 2. सकर्मक धातु । यौगिक क्रिया-पद या धातु के अन्तर्गत प्रेरणार्थक धातुओ को लिया गया है, जिनमे प्रथम प्रेरणार्थक तथा द्वितीय प्रेरणार्थक धातुएँ आती है । यही पर ही क्रिया-धातु की आक्षरिक-व्यवस्था को लेकर भी विचार किया गया है ।

पक्ष—

पक्षो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँटा गया है—1. असमापक पक्ष तथा 2. समापक पक्ष । पक्ष पर विचार करने के पश्चात् सहायक-क्रिया पर भी विचार किया गया है [4.8 0]।

प्रकार—

प्रकार को भी मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँटा गया है—1 निश्चयार्थक, 2 अनिश्चयार्थक । काल तथा पक्ष के आधार पर इन दोनो के कई उपवर्ग होने पर अलग-अलग से विचार किया गया है [3 9] ।

काल—

मण्डियाली मे काल के मुख्य रूप से तीन भेद हैं—1 वर्तमान, 2 भूत और 3 भविष्यत् । कार्य की पूर्णता और अपूर्णता के आधार पर वर्तमान और भूत के तीन-तीन उपभेद किए गये है, जबकि भविष्यत् का एक ही रूप सामान्य भविष्यत् ही है । मण्डियाली मे सामान्य भविष्यत् की रचना दो प्रकार से सम्भव है [1 10 3] ।

1 [√ + ग + वचन, लिंग प्रत्यय] अर्थात् [धातु + ग + आ /ई/ए]

2 [√ + भावार्थक सज्ञा, प्रत्यय] अर्थात् [धातु + ण/न + आ]

इसके पश्चात् 'भावार्थक सज्ञा' को लेकर विचार किया गया है (3 11) ।

कृदत-विशेषण तथा निरपेक्षिक--

मण्डियाली मे कृदत विशेषणो को मुख्य रूप से दो वर्गों मे बाँटा गया है—1. वर्तमान कालिक कृदत विशेषण तथा 2 भूत कालिक कृदत विशेषण । इसके साथ ही 'निरपेक्षिक' को लेकर विचार किया गया है तथा साथ ही 'सयुक्त-क्रिया' को लेकर विचार किया गया [3.13] ।

क्रिया-विशेषण—

मण्डियाली मे क्रिया-विशेषण पदो को मुख्य रूप मे चार वर्गों मे बाँटा गया है—1. स्थानवाचक, 2. कालवाचक, 3. रीतिवाचक तथा 4. परिमाणवाचक ।

युक्त-पद—

प्रयोग के आधार पर युक्त-पदो को मुख्य रूप से तीन वर्गों मे बाँटा गया है—1 पूर्वाश्रयी, 2 मध्याश्रयी तथा 3 पश्चाश्रयी [3 15]।

इसके पश्चात् 'सयोजक' को लेकर विचार किया गया है [3.15 2.2.] मण्डियाली के संयोजको को मुख्य रूप से चार उपवर्गों मे बाँटा गया है—1 सयोजक, 2 वियोजक, 3 विरोध-दर्शक तथा 4 संकेत-दर्शक। इसी अध्याय के अन्त मे मण्डियाली मे 'विस्मयादिबोधक-पदो' को लेकर भी विचार किया गया है।

वाक्य-विन्यास—

चौथे अध्याय के अन्तर्गत मुख्य रूप से वाक्य-विन्यास के संरचनात्मक घटको को लेकर विचार किया गया है। मण्डियाली वाक्य-विन्यास के सरचनात्मक घटको या संरचना के व्याकरणिक घटको पर विचार करने के लिए सज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत ही कुछ नियमो को ध्यान मे रखा गया है। इसी कारण सर्वप्रथम सज्ञा-पदबन्ध (4.1) को लेकर विचार किया गया है तथा इसके पश्चात् सज्ञा-पदबन्ध के अन्तर्गत निम्नांकित नियमो का ध्यान रखा गया है—

1 अनिर्धारित—

अनिर्धारित के अन्तर्गत 1 स० प०, 2. निर्धारित, 3 अनिर्धारित, 4 अनिश्चित निर्धारक तथा 5 अनिश्चित घटको के प्रयोग के नियमो को लेकर विचार किया गया है।

2 निर्धारित—

निर्धारित मे 6 निर्धारित, 7. सकेतक, 8. निर्देशक, 9. समुदायवाचक, 10. परिबाधक तथा 11 परिमाणक के घटको के वाक्य-प्रयोग के नियमो को लेकर विचार किया गया है।

3. परिमाणक—

परिमाणक के अन्तर्गत 12 परिमाणक, 13. सख्यावाचक, 14. सन्निकटिक, 15 क्रमवाचक, 16 गणनावाचक, 17. गुणात्मक, 18. प्रभाववाचक के घटको के वाक्य प्रयोग के नियमो को लेकर विचार किया गया है।

4. परिमाणवाचक—

परिमाणवाचक के अन्तर्गत परिमाणवाचक के घटको से सम्बन्धित नियमों को लेकर विचार किया गया है [4 1 5 2]।

5. परिमाण-बलात्मक

परिमाणक-बलात्मक मे 21. बलात्मक, 22. प्रतिबन्धित, 23. समावेषित, 24.

निश्चय-सूचक के घटको के वाक्य-प्रयोग के नियमो को लेकर विचार किया गया है।

इसी अध्याय मे 'कर्त्ता-वर्ग' [4 1.7] को लेकर भी विचार किया गया है।

क्रिया-पदबन्ध—

क्रिया-पदबन्ध के अन्तर्गत क्रिया-पदबन्ध सरचना के नियमो को लेकर विचार किया गया है। क्रिया-पदबन्ध के पश्चात् वाक्य मे क्रिया-विशेषण के प्रयोग को लेकर विचार किया गया है [4 2]। चौथे अध्याय के अन्त मे ही मण्डियाली मे वाक्य-स्तर पर जो अन्विति-नियम हैं, जिनकी सहायता से वाक्यो का निर्माण होता है, उन्हे लेकर विचार किया गया है।

परिशिष्ट

5.1 सामग्री—

5 1 1. **पंचतत्रा री कथा**

एक्की बडा सेर रैह्‌याँ था, होर पसु भी बौह्‌त रैयह्‌एँ थे। से सेर आपणी मर्‌जी थे जेस्स भी पशु जो, चाहे तेज्जो मारी देयाँ था, जे कुछ खापा हुआँ था खाई लेयाँ था बाकी इयाई देयाँ था। जगला रे पसु बच्चारे बडे डरीरे रैह्‌याँएँ थे, तिन्हे एक्की ध्याडे आप्पू मझा सल्लाह् कित्ती जे बई, ए ता बुरा काम आ। ए जे आस्सारा राज्जा सेर आ, ए आपणी मर्‌जी आस्मा ओ माराँ आँ। आम्साओ ता एस्स बणाँ रैह्‌णा बी मुस्कल हुई गइरा। तेब्बे एढा करिए जे आस्सा, एस्स कने अरज कर्‌नी, जे आस्सा ही एक एक पसु रोज तुम्सा बाल्ने भेज्जी देया करना, तेस्स जो तुस्से खाई लया करा। एढा तिन्हें जेब्बे बिचार कित्ता स्यो तेस्स बाल्ले गए, अरज कित्ती, 'माह्‌राज! तुस्से आस्सा रे राज्जे ए पर ध्याड ही तुस्से आपणी मर्‌जी कन्ने जेज्जो चाँह्‌ एँ तेस्स पसु जो आस्सा मझा मारी देयाँ एँ। आस्सा ही अरज एढी ई बई आस्सा ही तुस्मा रे खाणे कठे एक पसु रोज भेज्जी देया करना। तुम्सा जो किसी किस्मा रा कस्ट कर्‌ने री जरूर ननी हूणी।" सेर मन्नी गया, 'तिहुयाँ करा'। एब्बे तिन्हाँ एक पसु आज हुआ, काल्लाओ दुज्जा हुआ, इह्‌याँ कई ध्याडे गुजरी गए। एक्की ध्याडे बच्यारे सैह्‌डू री बारी आई। सैह्‌डू चल्या सेरा बाल्ले, डरी-रा-2। मौत्ता थे कुण नी डर्‌दा। मर्‌ने रा डर सब्भी जो हुआँ ताँ जे भी पसु जाँह्‌ था सेरा बाल्ले सं बच्यारा काम्बी-काम्बी कने जाँह्‌ था। की तेज्जो मर्‌ना हुँआ था, मर्‌ना पौणा था। सैह्‌डू बी बडा डरीरा था, चली गया मज्जे मज्जे कने। तेस्सरे पैर तेस्स पास्से ओ नी चलदे थे। रस्ते मझा एक खुह्‌ आया, खुहा पर खडो गया सैह्‌डू, तिन्ने आपणा ढौरा देख्या पाणी मझा। कुछ बुद्धि औला था, बचार कित्ता, होर अग्गे चली पया। सेरा बाल्ले पुजणे जो बी तेज्जो बड्डी वेर हुई गई। सेरा जो भुक्ख लगीरी थी, जह्‌लीरा था। जेब्बे सैह्‌डू सामणे आउँदा देख्या तेब्बे तेस्सरी जह्‌लनी का कोई ठकाणा ही नी रैह्‌या बडे जोरा कने बोल्या—'एक ता तू निक्का जे होर फेरी बेरा थे। बेर करी ती एड्डी बडी।' सैह्‌डूए बोल्या 'माह्‌राज। इदी मझा मेरा कोई दोष नी आँ। हाऊँ आउँदा लगीरा था, रस्ते मज्जो होर सेर मिल्या। होर तिन्ने हाऊँ पकड़ी लया, माय्दा लग्गी

गया । मैं तेस्स थे अर्ज कित्ती माह्‌राज मंज्जो छाड्‌डी देया, मां आई जाणा एत्थी जो । ह्राऊं जरूरी काम्माओ चल्लिरा, मज्जो छाड्डी देया, मां आई जाणा । हो माह्‌रा । तेब्बे मज्जो ऐ बेर हुई ।' सेरे जेब्बे यो गल्लां सैह्‌डू री सुणी, भई दुज्जा सेर बी एत्थी आ होर तिन्ने ए पकडी ल्‌या तेज्जो बडा क्रोध आया, बडी जह्‌लनी आई । बड्‌डी भारी जह्‌लनी मझा सेर बोल्या 'चल दस तू मज्जो केत्थी आ से सेर ?' सैह्‌डू अग्गे-अग्गे चल्या सेर पिच्छे-पिच्छे । सैह्‌डू सेरा जो खुह्‌ा बाल्ले ली आया, 'माह्‌राज एत्थी आ से सेर । इन्ने पकडया था ह्राऊं ।' सेर जेब्बे खुह्‌ा बक्खाओ देक्खां आं तेज्जो दुज्जा सेर दिस्सी गया, आपणा ढीरा । तेज्जो जह्‌लनी ता आइरी थी, तेस्सा जह्‌-लनी मझा से बडा गरज्‌या होर तिन्ने खुह्‌ा मका छाल देई दित्ती । खुह्‌ा थे बाह्‌र निकलना सेरा जो मुस्कल था, बडा काट्‌डा था, से तेन रैह्‌या होर बच्यारा सैह्‌डू बच्ची गया होर जेत्थी रैप्‌यां था तेस्स ठकाणे ओ चली पाया । भाई ए कथा सुणाई, अक्कल हुआं ई । केत्थी सेर ता केत्थी सैह्‌डू । सैह्‌डूए अक्कला कने काम किता होर सेर मरवाई दित्ता । तेब्बे ही ता बोल्लांऐं जे केक्कल बड्‌डी हुआं ई म्हैंस नी बड्‌डी हुँददी ।

हिन्दी रूपान्तर

पचतंत्र की कहानी (कथा)

एक जगल मे शेर रहता था, और पशु भी बहुत रहते थे। वह शेर अपनी इच्छा से जिस भी पशु को चाहे उसे मार देता था, यदि कुछ खाना होता था खा लेता था बाकी फैंक देता था। जगल के पशु बिचारे बहुत डर कर रहते थे, उन्होने एक दिन आपस मे सलाह की, कि यह तो बुरा काम है। यह जो हमारा राजा शेर है, यह अपनी इच्छा हमे मारता है। हमे तो इस जगल मे रहना भी बहुत मुश्किल हो गया है। अब ऐसा करते हैं कि हम इसमे प्रार्थना करेंगे कि हम ही एक-एक पशु प्रतिदिन आपके पास भेज दिया करेंगे, उसे आप खा लिया करें। ऐसा उन्होने जब विचार किया, वे उसके पास गए, प्रार्थना की, 'महाराज आप हमारे राजा है, लेकिन रोज खाना ही आप अपनी इच्छा से जिसे चाहते हो उस पशु को हमारे बीच मार देते हो।' हमारी प्रार्थना ऐसी है कि हम ही आपके खाने के लिए एक पशु रोज खाना भेज दिया करेंगे। आपको किसी तरह का कष्ट करने की जरूरत नही होगी। शेर मान गया, 'वैसे करो।' अब उन्होने एक पशु आज हुआ कल को दूसरा हुआ, ऐसे कई दिन गुजर गए। एक दिन बेचारे खरगोश की बारी आई। खरगोश चला शेर के पास, डरा हुआ। मौत से कौन नही डरता। मरने का भय सभी को होता है। जो भी पशु जाता था, शेर के पास वह बेचारा कॉप-कॉप कर जाता था। क्योंकि उसे मरना होता था, मरना पडता था। खरगोश भी बहुत डरा था, चला गया मजे मजे के साथ। उसके पाँव उस ओर नही चलते थे। रास्ते मे एक कूआं आया, कूएँ पर खडा हो गया खरगोश, उसने अपनी परछाईं देखी पानी मे। कुछ बुद्धि वाला था, विचार किया और आगे चल पडा। शेर के पास पहुँचने के लिए भी उसे बहुत देर हो गई। शेर को भूख लगी हुई थी, क्रोधित था। जब खरगोश सामने आता देखा तब उसके क्रोध की कोई सीमा ही नही रही। बहुत जोर से बोला—'एक तो तू छोटा-सा और फिर देर से। देर कर दी इतनी अधिक।' खरगोश ने कहा—'महाराज, इसमे मेरा कोई दोष नही है। मैं आ रहा था। रास्ते मे मुझे और शेर मिला, और उसने मुझे पकड लिया, मारने लग पडा। मैंने उससे प्रार्थना की, महाराज मुझे छोड दो। मैं आ जाऊँगा यही को। मैं जरूरी काम से जा रहा हूँ, मुझे छोड दो मैं आ जाऊंगा। हे महाराज। तब मुझे यह देर हुई।' शेर ने जब ये

बातें खरगोश की सुनी कि दूसरा शेर भी यहीं है, और उसने यह पकड लिया, उसे बहुत क्रोध आया। बहुत अधिक क्रोध ग शेर बोला -'चल बता तू मुझे कहाँ है वह शेर ?' खरगोश आगे-आगे चला और शेर पीछे-पीछे। खरगोश शेर को कूएँ के पास ले आया। 'महाराज ! यहीं है वह शेर। इसने पकडा था मुझे।' शेर जब कूएँ की तरफ देखता है, उसे दूसरा शेर दिखाई दिया, अपनी परछाईं। उसे क्रोध आया हुआ था, उसी गुस्से मे वह बहुत गरजा और उसने कूएँ मे छलाँग लगा दी। कूएँ से बाहर निकलना शेर के लिए मुश्किल था, बहुत कठिन था। वह उसमे रहा और बेचारा खर-गोश बच गया, और जहाँ रहता था उस स्थान की ओर चल पडा। भाई यह कहानी सुनाई, अक्कल होती है बडी चीज। बोलते हैं कि—अक्कल बडी या भैंस—। तो अक्कल बडी चीज होती है। कहाँ शेर तो कहाँ खरगोश। ख-रगोश ने अक्कल से काम किया और शेर मरवा दिया। तभी तो कहते हैं कि अक्कल बडी होती है भैंस बडी नही होती।

5 1 2 मण्डियाली	हिन्दी रूपान्तर
[1] हाऊँ जाँह आँ।	मैं जाता हूँ।
[2] हाऊँ चलाँ आँ।	मैं चलता हूँ।
[3] हाऊँ जाँह ईं।	मैं जाती हूँ।
[4] हाऊँ चलाँ ईं।	मै चलती हूँ।
[5] आस्से जाँह् एँ।	हम जाते हैं।
[6] आस्से चलाँ एँ।	हम चलते हैं।
[7] आस्से जाँह् ईं।	हम जाती हैं।
[8] आस्से चलाँ ईं।	हम चलती हैं।
[9] हाऊँ चलदा लगिरा /या हाऊँ चल्या कराँ आँ।	मै चल रहा हूँ।
[10] हाऊँ जाँद्दा लगिरा /या हाऊँ जाया कराँ आँ।	मैं जा रहा हूँ।
[11] हाऊँ चलदी लगिरी। या हाऊँ चल्या कराँ ईं।	मैं चल रही हूँ।
[12] हाऊँ जाँद्दी लगिरी। या हाऊँ जाया कराँ ईं।	मै जा रही हूँ।
[13] आस्से चलदे लगिरे। या आस्से चल्या कराँ एँ।	हम चल रहे हैं।
[14] आस्से चलदी लगिरी। या आस्से चल्या कराँ ईं।	हम चल रही हैं।
[15] आस्से जाँद्दी लगिरी। या आस्से जाया कराँ ईं।	हम जा रही हैं।

[16] हाऊँ चलिरा ।	मैं चला हूँ ।
[17] हाऊँ गइरा ।	मैं गया हूँ ।
[18] आस्से चलिरे ।	हम चले है ।
[19] आस्से गइरे ।	हम गए हैं ।
[20] हाऊँ चलिरी ।	मैं चली हूँ ।
[21] हाऊँ गइरी ।	मैं गई हूँ ।
[22] आस्से चलिरी ।	हम चली हैं ।
[23] आस्से गइरी ।	हम गई हैं ।
[24] हाऊँ जाँह् था ।	मै जाता था ।
[25] हाऊँ चलाँ था ।	मैं चलता था ।
[26] आस्से जाह्एँ थे ।	हम जाते थे ।
[27] आस्से चलाँएँ थे ।	हम चलते थे ।
[28[हाऊँ जाँह्ई थी ।	मैं जाती थी ।
[29] हाऊँ चलाँई थी ।	मैं चलती थी ।
[30] आस्से जाँह्इँ थी ।	हम जाती थी ।
[31] आस्से चलाँइँ थी ।	हम चलती थी ।
32] हाऊँ जाँद्दा लगिरा था । या हाऊँ जाया कराँ था ।	मैं जा रहा था ।
[33] हाऊँ चलदा लगिरा था । या हाऊँ चल्या कराँ था ।	मैं चल रहा था ।
[34] आस्से जाँद्दे लगिरे थे । या आस्से जाया कराँएँ थे ।	हम जा रहे थे ।
[35] आस्से चलदे लगिरे थे । या आस्से चल्या कराँएँ थे ।	हम चल रहे थे ।
[36] हाऊँ जाँद्दी लगिरी थी । या हाऊँ जाया कराँ थी ।	मै जा रही थी ।
[37] हाऊँ चलदी लगिरी थी । या हाऊँ चल्या कराँई थी ।	मै चल रही थी ।
[38] आस्से जाद्दी लगिरी थी । या आस्से जाया कराँइँ थी ।	हम जा रही थीं ।
[39] आस्से चलदी लगिरी थी । या आस्से चल्या कराँइँ थी ।	हम चल रही थी ।
[40] हाऊँ चल्या था ।	मै चला था ।
[41] हाऊँ गया था ।	मै गया था ।
[42] आस्से चले थे ।	हम चले थे ।

[43] आम्से गए थे।	हम गए थे।
[44] हाऊँ चली थी।	मैं चली थी।
[45] आस्से चली थी।	हम चली थी।
[46] हाऊँ गई थी।	मै गई थी।
[47] आस्मे गई थी।	हम गई थी।
[48] हाऊँ जांह्ग्गा। या मां जाणा।	मै जाऊँगा।
[49] हाऊँ चलगा। या मां चलना।	मै चलूंगा ?
[50] आस्से जांह्ग्गे। या आस्सा जाणा।	हम जाएँगे।
[51] आस्से चलगे। या आस्सा चलना।	हम चलेगे।
[52] हाऊँ जांह्ग्गी। या मां जाणा।	मै जाऊँगी।
[53] आस्से जांह्ग्गी। या आस्सा जाणा।	हम जाएँगी।
[54] हाऊँ चलगी। या मां चलना।	मै चलूंगी।
[55] आम्से चलगी। या आस्सा चलना।	हम चलेंगे।

5 1 3

अक्कल	'अक्कल' [भा० वा० स०]	आद्धा	'आधा' [वि०]
अंगार	'अंगार' [स०]	आन्	'अनाज' [स०]
अंगूर	'अंगूर' [स०]	आधिया	'शराब की आधी बोतल' [स०]
अंजन	'इंजन' [स०]	आम्मां	'मां [स०]
अग्गे	'आगे' [क्रि० वि०]	आम्ब्	'आम [स०]
अण्डा	'अण्डा' [स०]	आत्मा	'आत्मा' [स०]
अल्ना	'अड़ना' [क्रि०]	आरू	'आड़ु' [स०]
अडना	'जिद करना' [क्रि०]	आद्रा	'अदरक' [स०]
अस्त्	'अस्त' [वि०]	आज	'आज' [क्रि० वि०]
अस्कलु	चावल के आटे का 'पकवान' [स०]	आंज्सु	'आंसू' [स०]

असारा	'इशारा' [सं]०	आट्ठ	'आठ' [वि०]
असार	'असार' [वि०]	आपणा	'अपना' [स०]
अत्याचार	'अत्याचार' [स०]	आप्पू	'स्वय [सर्व०]
अमर्	'अमर' [वि०]	आस	'आशा' [भा० वा० स०]
अर्घ	'अर्घ्य [सं०]	आल्लू	'आलू' [स०]
अलोक्णा	'सिर पर पैसे घुमा कर ग्रह उतरना' [क्रि०]	आड्	'ओट' [सज्ञा०]
अर्ब	'अरब' [वि०]	आल्	'गहरा पानी' [स०]
अँद्रेल	'विवाह की रस्म' [स०]	आट्टा	'आटा [स०]
अग्रेजी	'अग्रेजी' [स०]	इक्की	'इक्कीस' [स०]
आ	'आना' [क्रि०]	इह्याँ	'ऐसे' [क्रि० वि०]
आग्गे	'आगे' [क्रि० वि०]	इदी-मझा	'इसमे' [सर्व०]
आग	'आग' [स०]	इज्जत्	'इज्जत' [भा० वा० स०]
आरा	'आरा' [स०]	इन्हाँ	'इन्होने' [सर्व०]
आउँणा	'आना' [क्रि०]	ईख	'ईख' [सं०]
आँग	'इकाई सख्या' [वि०]	ईल्	'चील' [स०]
आग्या	'आज्ञा' [स०]	ईट्	'ईट' [स०]
ईद्	'ईद' [स०]	उल्	'उल्लू' [स०]
उतर	'उतरना' [क्रि०]	उत्तणा	'उतना' [क्रि० वि०]
उच्चा	'ऊँचा '[वि०]	उन्नी	'उन्नीस' [वि०]
उणृताली	'उनतालीस' [वि०]	उटकणा	'उछलना' [क्रि०]
उप्पर	'ऊपर' [क्रि० वि०]	उम्ला	'उलटा' [वि०]
उमेद	'आशा' [भा० वा० स०]	उक्खल	'ओखली' [स०]
उत्तर	'उत्तर' [स०]	उबलना	'उबलना' [क्रि०]
उडणा	'उडना' [क्रिया]	ऊँ	'ऊँघना' [क्रि०]
ऊन	'ऊन' [स०]	ऊत्	'बेकार अर्थ' [क्रि० वि०]
ऊंट्	'ऊँट' [स०]	ए	'यह' [सर्व०]
एक्	'एक' [वि०]	एस्स्	'इसने' [सर्व०]
एत्थी	'यहाँ' [क्रि० वि०]	एढ़ा	'ऐसा' [वि०]
एब्बे एब्मे	'अब' [क्रि० वि०]	एज्जो	'इसको' [सर्व०]
एक्का	'एकता' [सं०]	एस्स-पास्से	'इस ओर' [क्रि० वि०]
ऐस	'मौज, मस्ती' [स०]	ऐनक	'ऐनक' [स०]

ऐह्साण्	'अहसान' [स०]	ऐब्	'आदत' [स०]
ऐड	'समूह'[सं०]	ऐंह्कल्	'चावल के आटे का पकवान' [स०]
ओट्टा	'बरामदा' [स०]	ओबरा	'नीचे का कमरा' [स०]
ओढणा	'ओढना' [क्रि०]	ओड्	'समाने की शक्ति' [स०]
ओत्तर	'सन्तानहीन' [स०]	ओखत्	'दवा' [स०]
ओक्खा	'सख्त बीमार, मुश्किल[स०]	ओट	'आऊट' [स०]
ओला	'वाला' [अव्य०]	औंद	'आने की आशा' [स०]
ओदक-जौंदक	'आना-जाना' (भा० वा० स०)	कई	'अनेक' [वि०]
कर्म	'कर्म' [स०]	करना	'करना' [क्रि०]
कनारा	'किनारा' [स०]	कम्हार	'कुम्हार' [स०]
कमाई	'मेहनत' [स०]	कप्ट	'कपट' [स०]
कपडा	'कपडा' [स]	क्पाह्	'कपास' [स०]
कताली	'इकतालीस' [वि०]	कह्त्तर	'इकहत्तर' [वि०]
कत्ती	'इकतीस' [वि०]	कतीरी	'कैंची' [स०]
कत्ल	'कत्ल' [स०]	कलई	'कलई'[स०]
क्टार	'कटार' [स०]	कट्टी	'भैंस का बच्चा' [स्त्री० स०]
कट्टू	'भैंस का बच्चा' [पु० स०]	कब्री	'कब्र' [स०]
कब्जी	'कब्ज' [स०]	क्रोड	'करोड' [वि०]
कण्क	'गेहूँ' [स०]	कबेल	'बे मौके' [वि०]
कस्ट	'कष्ट' [स०]	क्सारा	'जादू टोना' [स०]
कस्णा	'कसना' [क्रिया]	कद्धी	'कब' [क्रि० वि०]
कद्दू	'कद्दू' [स०]	कर्जा	'ऋण' [स०]
कर्डू	'बाँस की छोटी सी टोकरी' [स०]	कडा	'कगन' [स०]
कढ़ी	'कढ़ी, कढना' [स०, क्रि०]	कल्थीचडा	'कोलथ सहित पके चावल' [स०]
क्रिया	'क्रिया' [स०]	काम	'काम' [स०]
काम्णी	'कम्पकम्पी' [स०]	कान	'कान' [सं०]
कार	'कार' [स०]	कात	'कातना' [क्रि०]
काप	'कपड़े के टुकड़े' [स०]	काणा	'एक आँख वाला' [स०]
काण	'उरेव, विह्न' [स०]	काढणा	'निकालना' [क्रि०]
काह्ट	'इकसठ' [वि०]	कास्सी	'इक्यासी' [वि०]

कानवें	'इक्यानवें'[वि०]	कागजी	'कागज से सम्बन्धित' [वि०]
कारीगर	कारीगर'[स०]	कारोबार्	'कामकाज' [स०]
काल्का	'स्थान का नाम' [स०]	काला	'काला'[वि०]
कांध	'दीवार' [स०]	कुण	'कौन' [सर्व०]
कुत्ता	'कुत्ता' [स०]	कुत्ती	'कुतिया' [स०]
कुलार्	'दिन का भोजन' [स०]	कुर्ता	'कुर्ता' [स०]
कुलज्	'कुल देवी' [स०]	कुंज्जा	'इक्यावन' [वि०]
कूणा	'कोना' [क्रि० वि०]	कित्तणा	'कितना' [क्रि० वि०]
किह्यां	'कैसे' [क्रि० वि०]	किच्छ्	'कुछ' [क्रिया० वि०]
किर्पा	'पुरुष का नाम' [स०]	किस्ती	'नाव' [स०]
किस्नां	'किस्ते' [स०]	किच्ना	'किचन, [तिर्यक्० वि०]
किन्हां	'किन्होंने' [सर्व०]	केब्बे-केब्भे	'कब' [क्रि० वि०]
केत्थी	'कहां' [क्रि० वि०]	केज्जो	'किसको' [सर्व०]
केसब्	'पुरुष का नाम' [स०]	केस्सरा	'किसका' [सर्व०]
की	'क्यों' [सर्व०]	कीडा	'सांप' [स०]
क्या	'क्या' [सर्व०]	क्यारी	'क्यारी' [स०]
क्वारी	'अविवाहित' [स०]	क्वाह्डी	'चढाई' [स०]
क्रिस्न्	'कृष्ण' [स०]	खसम्	'पति, स्वामी' [तिर्यक् स०]
खस्मा	'पति, स्वामी [तिर्यक् स०]	खर्ब	'खरब' [वि०]
खानग्	'खांसी' [स०]	खण्ना	'खादना' [क्रि०]
खरण्	'शरारती लडकी 'बातूनी' [स०]	खस्रा	'खुरदरा' [स०]
खत्री	'खत्री' [स०]	खच्रां	'खच्चरें' [स०]
खडा	'खडा' [वि०]	खडपा	'जहरीला सांप' [स०]
खप्रा	'बुढा' [स०]	खज्जर खोप्पा	'भूमि मे पाया जाने वाला फल' [स०]
खा	'खाना' [क्रि०]	खाल्ली	'खाली' [वि०]
खाड्	'छोटी नदी' [सं०]	खास्	'विशेष' [वि०]
खान	'खान' [वि०]	खिड्क	'पेड का नाम' [स०]
खिल्ना	'खिलना' [क्रि०]	खिज्णा	'खीचना' [क्रि०]
खीच	'खीच' [क्रि०]	खेल्ना	'खेलना' [क्रि०]
खेलणा	'खेलना' [क्रि०]	खैर्	'पेड का नाम' [क्रि०]
खैढ़	'द्वेष, दुश्मनी' [स०]	(खोल्ना	'खोल्ना' [क्रि०]

खोलणा	'खोलना' [क्रि०]	खोह्ड	'खाने वाला' [स०] विशेष रूप से [कुत्ता]
खल्ह्वाणा	'सुनवाना' [क्रि०]	खल्ह्याणा	'खिलाना' [उ० पु०] [क्रि०]
खड़ाक्का	'आवाज विशेष' [स०]	ख्याल	'विचार' [स०]
ख्याल्ली	'पुरुष का नाम' [स०]	ख्वाब्	'स्वप्न' [स०]
गई	'गई' [क्रि०]	गर्का	'भारी' [वि०]
गज्जर्	'सध्या' [स०]	गद्हा	'गधा' [स०]
गद्दा	'गद्दा' [स०]	गद्दी	'गद्दी, जाति' [स०]
गल्ती	'गल्ती' [स०]	गण्	'गिन' [क्रि०]
गलास्	'गिलाह' [स०]	ग्रांव	'गांव' [वि०]
ग्राग्गड़ा	'बादलो का गरजना	ग्रीब	'गरीब' [वि०]
ग्वाल	'ग्वाला [स०]	ग्वाणा	'खोना, मिटाना' [क्रि०]
ग्यारा	'ग्यारह' [वि०]	ग्यान	'ज्ञान' [स०]
गाली	'गाली'[स०]	गाय्	'गाय' [स०]
गार्ड्	'रक्षक' [स०]	गाणा	'गाना' स०, [क्रि०]
गाभरू	'लडका, जवान' [स०]	गाज्ला	'शरारती,गाजलेपन की स्वानुभूति' [स०]
गिण्ती	'गिनती' [स०]	गीत	'गाना' [स०]
गुप्ता	'गुप्ता' [स०]	गुण	'गुण' [स०]
गुड़	'गुड' [स०]	'गुद्डां	'गूदड' बहु० व० [स०]
गुंद्णा	'हाथो से बनाना, गूंदना'[क्रि०]	गुल्फा	'थूका हुआ कफ [स०]
गूंद	'गोद' [स०]	गोस्ट्	'उपले' [स०]
गोरा	'गोरा' [वि०]	गोल	'गोल'[वि०]
गोली	'गोली' [स०]	गोभ्मी	'गोभी'[स०]
घप्ला	'घपला' [स०]	घर	'घर' [स०]
घड़ा	'घडा' [स०]	घट्टणा	'घटना वि०]
घच्चीमुणा	'प्यार करना'[क्रि०]	घण्चक्कर्	'मूर्ख' [वि०]
घाओ	'जख्म' [स०]	घाट्टा	'घाटा' [स०]
घाह्	'घास' [स०]	घियु	'घी' [स०]
घेर्ना	'घेरना' [क्रि०]	घुल्ना	'लडना' [क्रि०]
घुम्णा	'घूमना' [क्रि०]	घोल	'झगडा' [स०]
घोल्	'घोल' [क्रि०]	घोड़ा	'घोड़ा' [स०]

घ्राट्	'पानी की चक्की [सं०]	घ्वाड़्ना	'खोलना' [क्रि०]
घ्योर्	'मैदे का पकवान'	घउआ	'खेल का नाम' [स०]
चल्ना	'चलना' [क्रि०]	चणाई	'चिनाई' [स०]
चक्णा	'उठाना' [क्रि०]	चमार	'चमार' [स०]
चम्भा	'अचम्भा' [स०]	चप्पल	'चप्पल' [स०]
चप्लाँ	'चप्पले' [स०]	चम्बा	'चम्बा' [स०]
चड्वाई	'चौडाई' [स०]	चम्पा	'चम्पा' [स०]
चन्दर्मा	'चन्द्रमा' [स०]	चर्च्	'चर्च' [स०]
चर्खा	'चर्खा' [स०]	चबारू	'खिडकी' [स०]
चरूँज्जा	'चौवन' [वि०]	चर्स	'चरस' [स०]
चर्वास्सी	'चौराशी' [वि०]	चर्वाह्ट	'चौसठ' [वि०]
चर्वानवे	'चौरानवे' [वि०]	च्वाड्ना	'उखाडना' [क्रि०]
च्वहत्तर	'चोहात्तर' [वि०]	चार	'चार, अचार' [वि०, स०]
चार्हे	'चारो' [वि०]	चाल	'चाल' [स०]
चप्टा	'समतल' [वि०]	चाली	'चालीस' [वि०]
चाच्चा	'चाचा' [स०]	चाह्	'चाय' [स०]
चाह्णा	'चाहना' [म०]	चाम्डी	'चमडी' [स०]
चास्णी	'चासनी' [म०]	चाव्	'चाव, इच्छा' [स०]
चाँद्दी	'चाँदी' [स०]	चाण्क्	'अचानक' [क्रि०वि०]
चाट्टणा	'चाटना' [क्रि०]	चाम्ड्	'पतीला' [स०]
चिम्टा	'चिमटा' [स०]	चिट्टा	'सफेद' [वि०]
चिक्णा	'चिकना' [स०]	चिंग्णा	'चीखना' [क्रि०]
चिट्ठी	'चिट्ठी [स०]	चिक्कड-चाभड	'कीचड' आदि [स०]
ची	'आवाज विशेष' [स०]	चील्	चील का पेड' [स०]
चीर्ना	'चीरना' [क्रि०]	चुक्णा	'चूकना' [क्रि०]
चुल्हा	'चुल्हा' [स०]	चुड्ना	'चुडना' [क्रि०]
चुम्णा	'चूमना' [क्रि०]	चुप्	'चुप' [वि०]
चुथणा	'चूथना' [क्रि०]	चोर्	'चोर' [सं०]
चोल्	'घघरा' [स०]	चौथ	'चौथ' [वि०]
चोत्था	'चौथा' [वि०]	चोबी	'चोबीस' [वि०]
चोत्ती	'चौंतीम' [वि०]	चोदा	'चौदह' [वि०]
चोक्का	'चोका' [वि०]	चोक्की	'चोकी' [स०]

चोकणा	'चौगणा' [वि०]	चोल	'चावल' [स०]
चौडा	'चौडा' [वि०]	चब्बी	'छब्बीस' [वि०]
छत्ती	'छत्तीस' [वि०]	छताली	'छियालीस' [वि०]
छण	'घुंघरू की आवाज [स०]	छपुंज्जा	'छप्पन' [वि०]
छटांक्	'छटांक' [स०]	छाड्णा	'छोडना' [क्रि०]
छिल्ना	'छिलना' [क्रि०]	छिक्णा	'छीकना' [क्रि०]
छेल्लू	'बकरी का बच्चा [पु० सं०]	छेल्ली	'बकरी का बच्चा'[स्त्री०स०]
छेड	'आवाज' [स०]	छेडना	'छेडना' [क्रि०]
छुट्णा	'छूटना' [क्रि०]	छुट्टी	'छुट्टी'[स०]
छुड्डु	'पानी का नाला' [स०]	छोड	'जल्दी' [क्रि० वि०]
छोल्ले	'चने' [स०]	छैल	'सुन्दर' [वि०]
छ्याह्ट्द	'छियासठ' [वि०]		छ्यह्त्तर 'छिहत्तर' [वि०]
छ्यास्सी	'छियासी' [वि०]	छ्यानवें	'छियानवें' [वि०]
छाल	'छलांग' [स०]	छ्वाली	'बच्चो की उल्टी' [स०]
'जन्म्	'जन्म' [स०]	जगल्	'जगल' [स०]
जम्णा	'जमना, जन्म [क्रि०]	जनीत्रू	'बरयात्री' [स०]
जन्त्री	'वार्षिक पत्रिका' [स०]	ज्वाई	'जमाई' [स०]
जठुत्तर	'जेठ का लडका [स०]	जठाणी	'जेठानी' [स०]
जप्फी	'प्यार से कसना' [स०]	जात्	'जाति' [स०]
जाली	'जाली, झूठा' [स०]	जाल	'जाल' [स०]
जाह्ज	'जहाज'[स०]	जाह्र	'हजार' [वि०]
जंग्घा	'टांगे' [स०]	जिल्द	'जिल्द' [स०]
जिमीन्दार्	'जमीदार' [स०]	जिम्मेवार	'जिम्मेवार' [वि०]
जिह्यां	'जैसे' [क्रि०वि०]	जियु	'वतीयत' [स०]
जित्तणा	'जितना' क्रि० वि०	'जीभ्	'जीभ' [स०]
जीत्	'जीत' [स०]	'जुट्टे	'जुत्ते' [स०]
जुन	'मामा की ओर से शादी मे दी गई खाद्य सामग्री' [स०]	जुट्ठा	'जूठा' [वि०]

जून्	'जून' [वि०]	जे	'यदि' [अव्य०]
जेब्बे	'जब' [क्रि० वि०]	जेत्थी	'जहाँ' [वि०]
जेढा	'जैसा' [क्रि० वि०]	जेस्सा	'जिसने' [सर्व०]
जेठ्	'जेठ' [स०]	जैं	'जय'[स०]
जो	'कर्म कारक परसर्ग'	जोत्सी	'ज्योतिषी' [स०]
जोर	'बलशक्ति' [स०]	जो	'जो' [स०]
झल	'आँच' [स०]	झग्ड़ा	'झगड़ा' [स०]
झट्पट्	'जल्दी' [क्रि० वि०]	झण्डा	'झण्डा'[स०]
झाड्ना'	'झाड़ना' [क्रि०]	झोल	'सब्जी' [स०] [सब्जी का नाम]
झोला	'थैला' [स०]	टपक्	'टपक' [स०]
टपकणा	'टपकना' [क्रि०]	टब्ल्याखणा	'हैरान होना' [वि०]
टाल्ना	'टालना' [क्रि०]	टाटटरी	'गजापन' [स०]
टीप्	'जन्मपत्री' [स०]	टुक्णा	'काटना' [क्रि०]
टुक्डा	'टुकड़ा' [स०]	टोणा	'बहरा' [स०]
ठग्	'ठग' [वि०]	ठण्	'आवाज विशेष'[स०]
ठण्ड	'सर्दी [वि०]	ठण्डा	'ठण्डा' [वि०]
छवाल	'उठाना' [क्रि०]	'ठ्योग्	'स्थान का नाम' [स०]
ठोक्कर	'चोट, प्रहार' [स०]	डर	'डर' [स०]
डिब्ला	'गहरा पानी' [स०]	डेढ	'डेढ' वि०]
डुब्की	'गोता'[स०]	डोहगी	'खेत' [स०]
डोरी	'रगदार डोरी' [स०]	डोला	'पालकी' [स०]
डोंड्कबुत्तर	'बुद्धिहीन' [स०]	ड्योढ	'डेढ' [वि०]
ड्वार	'गुफा' [स०]	ड्यूंट्ठी	'छोटा सा मिट्टी का 'दीया' [स०]
ड्राणा	'डराना' [स०]	ढग	'ढग' [वि०]
ढक्कण	'ढक्कन' [स०]	ढाई	'ढाई' [वि०]
ढाल्ना	गिराना [क्रि०]	ढिल्ला	'ढीला' [वि०]
ढोल	'ढोलक' [स०]	ढोल्की	'छोटा ढोलक' [स०]
ढोल्की	'छोटा ढोलक' [स०]	ढवाण	'ओढन' [स०]
तप्त्	'गर्मी' [स०]	तग्डा	'शक्तिशाली' [स०]
तडफ्णा	'तड़पना' [क्रि०]	तड्का	'सुबह और शाम का 'मिलन समय' [स०]
तर्ना	'तैरना' [क्रि०]	तर्ताली	'तरतालीस' [वि०]
तृरियुगुणा	'तिगुना' [वि०]	ता	'तो' [अव्य०]

तालू	'तालू' [सं०]	तात्ता	'गर्म' [वि०]
ताई	'ताई' [स०]	ताऊ	'ताया' [स०]
तारू	'तैराक' [स०]	ताप	'बुखार' [स०]
ताल्	'सुर से सम्बन्धित' [स०]	तक्	'तक'[अव्य]
तिक्रा	'तक' [अव्य०]	तिग्णा	'तिगुना' [वि०]
तिद्धीमझ	'उसमे' [अमानव, सर्व०]	तिन्हाँ	'उन्होने, [सर्व०]
तुल्सी	'तुलसी' [स०]	तुह	'अन्दरकरना'[क्रि०]
तुड्का	'छोक' [स०]	तुस्सा	'आपने' [सर्व०]
तुस्से	'आपने' [भूत० सर्व०]	तुज्जो	'तुझे' [सर्व०]
तू	'तू' [सर्व०]	तूँ	'तू'[सर्व०]
तेरा	'तेरा [सर्व०	तेह्रा	'तेरह' [वि०]
तेत्ती	'तेत्तीस' [वि०]	तेस्स	'उसने' [सर्व०]
तेल्	'तेल' [स०]	तेल्ली	'तेली' [स०]
तेल्लण	'तेलिन' [स०]	तै	'तूने' [सर्व०]
तोपणा	'खोजना' [क्रि०]	तोड्ना	'तोडना'[क्रि०]
तोल्ना	'तोलना' [क्रि०]	तोलणा	'तोलना' [क्रि०]
त्वार्	'उतारना, रविवार [क्रि०]	त्यार्	'तैयार' [वि०]
त्लोंस्सा	'तालू [स०]	तूलुएँ	'तिल के लडडु'[स०]
त्डाक्का	'टूटने की आवाज' [स०]	तरिह्यु	'लोहे का बना तीन टागो वाला विशेष 'ढाँचा' [स०]
त्रिक्का	'तरीका [स०]	त्रिज्जा	'तीसरा' [वि०]
त्रेई	'तेईस' [वि०]	त्र्युज्जा	'तेरप्पन' [वि०]
त्र्योदस्	'तरयोदस' [सं०]	त्र्यानवें	'तिरानवे' [वि०]
त्राहे	'तीनो' [वि०]	'त्यह्त्तर	'तिहत्तर' [वि०]
थाली	'थाली' [स०]	था	'था' [स०]
थे	'करणकारक परसर्ग	थाल्ले	'नीचे' [क्रि० वि०]
थोडा	'थोडा' [वि०]	थोब्डा	'मुँह' [स०]
दस्	'दिखाना' [क्रि०]	दही	'दही' [स०]
दमाग	'दिमाग' [स०]		
ददोह्रा	'पति या पत्नी का दादा दान्' [स०]		-दान-[स०]
दाल्	'दाल' [स०]	दाल्चिन्नी	'दालचीनी' [स०]
दाक्कड़	'मैल की परत' [स०]	दाँवाँ	'पशु बांधने का रस्सा' [स०]

दिसणा	'दिखाई देना' [क्रि०]	दित्ता	'दिया' [क्रि०]
दिन	'दिन' [स०]	दुगणा	'दुगना' [वि०]
दुज्जा	'दूसरा' [वि०]	दुहे	'दोनों' [वि०]
दुई	'दो' [वि०]	दुद्ध	'दूध [स०]
दुकान्दार	'दुकानदार' [स०]	दूज	'दूज [स०]
दूणा	'दुगना' [वि०]	दूर	'दूर' [क्रि०वि०]
दे	'दे' [क्रि०]	देणा	'देना [क्रि०]
देस्	'देश' [स०]	देखणा	'देखना' [क्रि०]
दो	'दो' [वि०]	दोह्रा	'दोहरा' [वि०]
दौड़ना	'दौड़ना' [क्रि०]	द्वार	'दरवाजा' [म०]
द्यार	'देवदारू' [स०]	द्योर	'देवर' [स०]
द्यार	'देवदारू' [स०]	द्योर	'देवर' [म०]
द्वा	'दिलवाना' [क्रि०]	द्वाई	'दवाई' [स०]
द्राणी	'देवरानी [स०]	धर्म्	'धर्म' [स०]
धान्	'धान' [स०]	धार्	'पहाड़ी' [म०]
धाग्गा	'धागा' [म०]	धी	'लड़की' [स०]
धीयाँ	'लड़कियाँ' [स०]	धूड़	'धूल' [स०]
धो	'धो' [क्रि०]	धोणा	'धोना' [क्रि०]
ध्याड़ा	'दिन' [स०]	ध्यान्	'ध्यान' [स०]
ध्वाणा	'तरबूज' [स०]	ध्रूबतारा	'ध्रुवतारा' [स०]
पख्ले	'अजनबी' [स०]	पख	'पक्ष' [स०]
पक्का	'पक्का' [वि०]	पट्ना	'पटना'[स]
पट्वारी	'पटवारी' [स०]	'पट्टड़ा'	'बैठने का विशेष तख्ता' [म०]
पट्टाक्णा	'पीटना' [क्रि०]	पच्णा	'पचना' [क्रि०]
पच्छोह्लण्	'सब्जी विशेष का नाम' [म०]	पच्छनावा	'पश्चाताप' [वि०]
पद्मा	'स्त्री का नाम' [स०]	पद्वी	'पद्वी [स०]
पछ्मी	'पश्चिमी' [स०]	पस्ड़ी	'पसल' [स०]
पड़्दा	'पर्दा' [स०]	पड़यो	'पड़वा [स०]
पन्खा	'पखा' [स०]	पन्चाइती	'पंचायत' तिर्यक[स०]
पन्दरा	'पन्दरह' [वि०]	पनज्याह्	'पचास' [वि०]
पंजताली	'पैंतालीस' [वि०]	पज्याह्ट	'पैंसठ' [वि०]
पज्यह्त्तर	'पिचहत्तर' [वि०]	पज्यास्सी	'पिचासी' [वि०]
पज्जी	'पच्चीस [वि०]	पंज्यानवें	'पिचानवें' [वि०]

पल्म्	'पलम' [स०]	पल्ट	'बदलना' [क्रि०]
पज्यारी	'पुजारी' [स०]	पन्जक	'पजक' [स०]
पन्जक	'पजक' [स०]	पन्च	'पाँच [स०]
हन्ह्यार	'पनिहार' [स०]	पया	'गिरना' [क्रि०]
पउवा	'1/4शराब की बोतल' [स०]	पसीन्ना	'पसीना' [स०]
प्राल	'पुआल' [स०]	प्रयाल्हे	'ऊपर [क्रि० वि०]
प्लाव	'चावल प्लाव'[स०]	प्लेस्सा	'घेरा' [स०]
प्याज	'प्याज' [स०]	प्या	'पिलाना' [क्रि०]
प्याऊ	'प्याऊ' [स०]	प्योक्का	'माइका [क्रि०]
प्वार	'अचेत अवस्था' [स०]	प्युला	'पीला' [वि०]
प्र्भु	'प्रभु' [स०]	पराप्त	'प्राप्त' [वि०]
पार्ट	'पार्ट' [स०]	पात्ली	'पत्तो की पतलें' [स०]
पाक्किस्त्तानी	'पाकिस्तानी' [स०]	पाल्ना	'पालना' [क्रि०]
पाल्की	'पालकी' [स०]	पात्तर	'पत्ते' [स०]
पाध्री	'मैदानी' [वि०]	पात्थर	'पत्थर' [स०]
पाछ	'शास्त्र का घाव' [स०]	पाठ्ली	'गेहूँ, चावल, आदि का कीडा [स०]
पाह्ड	'पहाड' [स०]	पिछ्ला'	'पिछला' [क्रि० वि०]
पिछ्ला	'पिछल' [क्रि० वि०]	पित्ता	'पिया' [क्रि०]
पिच्छे	'पीछे क्रि० वि	पीणा	'पीना' [क्रि०]
पुस्पा	'पुष्पा' [स०]	पुछ्या	'पूछा' [क्रि०]
पुन्या	पूर्णिमा' [स०]	पुज्णा	'पूजना' [क्रि०]
पुक्का	'चुम्बन' [स०]	पैह्रेदार	'पैहरेदार' [स०]
पैर	'पाँव' [स०]	पैह्ल्ला	'पहला' [वि०]
पैत्ती	'पैंतीस' [वि०]	पाँज्	'पाँच' [वि०]
पाँज्हे	'पाँचो' [वि०]	फण	'साँप का फन' [स०]
फल	'फल' [स०]	फट्टणा	'फटना' [क्रि०]
फाग्गण	'फाल्गुण' [स०]	फायदा	'फायदा' [सं०]
फाँस्सी	'फाँसी' [स०]	फिल्म	'फिल्म' [स०]
फिर्ना	'फिरना' [क्रि०]	फेर्ना	'फेरना' [क्रि०]
फेल	'फेल' [वि०]	फैक्टरी	'फैक्टरी' [स०]
फोडना	'फोडना'[क्रि०]	फराक्	'बच्चो की फराक'[स०]
फ्वाण्	'उफान' [स०]	बर्फ	'बर्फ' [स०]
बर्छा	'बरछा' [स०]	बरात्	'बारात' [स०]

बज्का	'टकरा' [क्रि०]	बट्लूँ	'बर्तन का नाम' [स०]
बचा	'बचा' [क्रि०]	बड्डा	'बडा' [क्रि० वि०]
बच्पणा	'बचपन' [वि०]	बदचल्न्	'चरित्रहीन' [क्रि०]
बह्ल्द	'बैल' [स०]	बण	'वन' [स०]
बत्ती	'बतीस' [वि०]	बत्कों	'बत्तके' [स०]
बद्ला	'बदला' [स०]	बक्कडवादी	'बातूनी' [क्रि०]
बताली	'ब्यालीस' [वि०]	बसाओ	'बसाना' [क्रि०]
बह्त्तर	'बहत्तर' [वि०]	ब्याह्	'विवाह' [स०]
बर्ह्मचारी	'ब्रह्मचारी' [स०]	ब्वाल	'उबालना' [क्रि०]
ब्वाल	'गर्मी' [स०]	बाब	'पिता' [स०]
बाल्लू	'रेत' [स०]	बाल	'सहारा' [वि०]
बाड	'बचाव के लिए बाड'[स०]	बाम्र	'मिट्टी' [स०]
बाम्र्णा	'पागल होना'	बाघ	'बाघ' [स०]
बास्ला	'हींग' [स०]	बाल्ना	'जलाना' [क्रि०]
बाल	'बाल' [स०]	बालन	'ईंधन' [सं०]
बाल्ह्	'स्थान का नाम' [स०]	बागर	'हवा' [स०]
बाद	'व्यर्थ, पश्चात्' [क्रि०वि०]	बाट्	'रास्ता' [स०]
बाज्	'पक्षी विशेष' [स०]	बाज	'बजाना' [क्रि०]
बाढ	'काटना' [क्रि०]	बालक	'बालक'[तिर्यक, स०]
बाह्ट	'बासठ' [वि०]	बास्सी	'बास्सी'[वि०]
बानवे	'बानवे' [वि०]	बारा	'बारह' [वि०]
बीण्	'सर की चोटी'[स०]	बिह्	'बीस' [वि०]
बिछडना	'अलग होना' [क्रि०]	बिच्ला	'बीच का'[स०]
बिर्ठ	'पक्षी की टट्टी' [स०]	बिस्वा	'बिसवा' [स०]
बिक्णा	'बिकना' [क्रि०]	बिज्ली	'बिजली' [स०]
बुन्ह्	'नीचे' [क्रि०वि०]	बुझाणा	'बुझाना' [क्रि०]
बुआ	'बूआ' [स०]	बुआई	'फूफा' [स०]
बुसार	'हल्दी' [स०]	बुंज्जा	'बावन' [वि०]
बेर	'देर' [स०]	बेद्दण	'दर्द' [स०]
बेग्मी	'चावल की प्रकार'[स०]	बेज्ती	'बेइज्जती' [स०]
बैर	'बैर, द्वेष'[स०]	बैट्कू	'बिछौना, गद्दी'[स०]
बैठणा	'बैठना' [क्रि०]	बौल	'वालिबाल' [स०]
ब्यूर्ना	'भेड आदि की ऊन काटना' [क्रि०]	भला	'भला' [वि०]
भज्णा	'टूटना, भजना' [क्रि०]	भड्था	'बैंगन का भरता'[स०]

ाद्रा	'भद्रा' [स०]	भलमाण्सी	'भलमानुषपन' [भा०व०स०]
ारेल्ना	'पागल होना' [वि०]	भ्याग्	'सुबह' [वि०]
्वार	'झाड़ू, सफाई' [स०]	भ्र्युआँ	'भवे' [स०]
्राखड़ी	'राखी' [स०]	भास	'राख' [स०]
भाओ	'भाव' [स०]	भाऊ	'लडका' [सं०]
भार	'भार' [स०]	भारी	'भारी'[वि०]
भार्त्	'भारत' [म०]	भाई	'भाई' [स०]
भाँग	'भाँग' [म०]	भानजा	'भानजा' [स०]
भिडना	'पशुओ का लडना' [क्रि०]	भित्तर	'अन्दर' [क्रि०वि०]
भीड	'भीड' [म०]	भुभल	'गर्म राख' [स०]
भुजणा	'आँच मे पकना' [क्रि०]	भून	'भूनना' [क्रि०]
भेड	'भेड' [स०]	भेजणा	'भेजना' [क्रि०]
भोजपुर	'भोजपुर [स०]	भौर	'मधुमक्खियाँ' [स०]
मल्	'पहलवान' [स०]	मल	'क्रीडा विशेष' [स०]
मल	'मलना, मिटाना' [क्रि०]	म्लेक्खा	'गिला, शिकवा [स०]
मच्छी	'मछली' [स०]	मर्न	'मौत [स०]
मस्त्	'मस्त' [वि०]	मलोह्रा	'पति या पत्नी का' 'मामा' [स०]
मज्जो	'मुझे' [सर्व०]	माल्	'सामान' [स०]
माला	'माला' [स०]	माम्मा	'मामा' [सं०]
माम्मी	'मामी' [स०]	माल्टा	'मालटा' [स०]
माल्ती	'फूल का नाम' [स०]	मार्ना	'मारना' [क्रि०]
मार्या	'मारा' [क्रि०]	मास्सी	'मोसी' [स०]
मास्सड	'मोसा' [स०]	माल्क	'मालिक' [स०]
माल्ली	'माली' [स०]	माल्लण	'मालिन' [स०]
मासट्र्याणी	'अध्यापिका'[स०]	माँज्जा	'चारपाई'[स०]
माँज्जो	'माँजो' [क्रि०]	माँग्णा	'माँगना'[क्रि०]
मित्तर	'दोस्त'[स०]	मिल्ना	'मिलना'[क्रि०]
मिलणी	'मिलनी' [भा० वा० स०]	मीयाँ	'जाति का नाम' [स०]
मुक्ता	'स्त्री का नाम' [वि०]	मुक्ट्	'मुकुट' [स०]
मुक्त्	'मुक्त' [वि०]	मुग्ल्	'मुगल' [स०]
मुँग्फली	'मूँगफली' [स०]	मुत्तरना	'पेशाब करना'[क्रि०]
मुसाफरी	'मुसाफिरी' [भा०वा०सं०]	मुल्ख	'मुल्ख' [स०]
मुई	'प्यार की गाली' [स०]	मूछ	'मूँछ'[स०]

मेरा	'मेरा' [सर्व०]	मैल	'मैल' [स०]
मोर	'मोर' [पु०सं०]	मोर्नी	'मोर' स्त्री० [स०]
मोट्टा	'मोटा' [वि०]	मोचेला	'दाँतहीन' [स०]
म्वाम्ला	'मुआवजा'[स०]	म्यान	'म्यान' [स०]
म्रोह्लण	'पकी हुई सब्जी' [स०]	म्याँ	'मिमियाना' [स०]
म्हठा	'लडका' [स०]	म्हठी	'लडकी' [स०]
म्हात्मा	'महात्मा' [सं०]	म्हेण्ती	'मेहनती' भाव वा० [स०]
म्हैस	'भैंस' [स०]	नग्री	'नगरी' [स०]
नल्का	'नलका' [स०]	नमूएं	'गलगल' [स०]
नल्	'पौधा विशेष' [स०]	नग्द	'नकद' [स०]
नड्त्तर	'ननद का लडका'[स०]	नडिनवें	'निन्यानवे' [वि०]
नक्ली	'नकली' [वि०]	नब्बे	'नब्बे' [वि०]
नकर्याणी	'नौकरानी'[स०]	नाम	'ईनाम' [स०]
नान्ना	'नाना' [स०]	नान्नी	'नानी' [स०]
नाक्	'नाक' [स०]	नाच	'नृत्य' [स०]
नाप	'माप' [वि०]	नाली	'नाली' [स०]
निग्ला	'निगलना' [क्रि०]	निफ्ला	'स्वादहीन'[स०]
निकल्ना	'निकलना' [क्रि०]	निंदर	'नींद' [स०]
नी	'नही' [अव्य०]	नोक्कर	'नौकर' [स०]
नैह्र	'नहर' [सं०]	नौल	'नेवला' [स०]
नौ	'नौ' [वि०]	न्रेढना	'अगडाई लेना' [स
न्यूंद्रा	'निमन्त्रण' [सं०]	न्यारा	'न्यारा' [वि०]
न्वार्	'नवार' [स०]	न्ह्यारा	'अन्धेरा' [स०]
न्ह्याल्ना	'इन्तजार करना [स०]	न्ह्वारी	'अल्प भोजन' [स०
न्हूस	'बहु' [स०]	पुंज्जा	'उनचास' [वि०]
ण्वास्सी	'उन्यासी' [वि०]	ण्वाह्ठ	'उनसठ' [वि०]
ण्वह्त्तर	'उनहत्तर' [वि०]	लट्ठा	'कपडा विशेष' [स
लट्का	'लटकाना' [क्रि०]	लट्ठणा	'उडेलना' [क्रि०]
लम्फ	'लैंप' [स०]	लफज	'लफज' [स०]
लग्न	'लग्न' [स०]	लम्बा	'लम्बा [स०]
लक्स्मी	'लक्ष्मी' [स०]	लकड़ी	'लकडी' [स०]
लक्ख	'लाख' [वि०]	लाप	'चम्मच' [स०]
लाल	'लाल' [वि०]	लाल्ली	'लालिमा' [भा०वा०स०]

लाल्ची	'लालची' [सं०]	लाद्णा	'लादना' [क्रि०]
लावाँ	'दहेज' [स०]	लिक्खा	'लिखो' [क्रि०]
लीड्राँ	'लीडर' [बहु० व० सं०]	लुण्का	'नमकीन'[वि०]
लुट्टणा	'लूटना' [क्रि०]	लूण	'नमक' [स०]
लेखणा	'सहवास करना' [क्रि०]	लेण-देण	'लेनदेन' [स०]
लै	'लेना'[क्रि०]	लैह्र	'लहर' [स०]
लोट्टा	'लोटा' [स०]	लोहा	'लोहा' [स०]
ल्याउणा	'लाना' [क्रि०]	लवाही	'उतराई' [क्रि०]
ल्वाक्णा	'झूठा, दिलासा' [क्रि०]	ल्होथ	'निर्जीव शरीर' [स०]
ह्वार	'लुहार' [स०]	ल्हास	'लाश' [स०]
ल्ह्याज	'लिहाज' [स०]	ल्हफ्णा	'पेड का झुकाव' [क्रि०]
ल्ह्वाखणा	'लगातार देखना' [क्रि०]	याद	'याद' [स०]
यार	'यार, दोस्त' [स०]	यारी	'दोस्ती' [भा० वा० स०]
याद्गार	'यादगार' [स०]	रक्बा	'रकबा, जगह [स०]
रक्सा	'रक्षा' [रा०]	रफ्डा	'झझट' [स०]
रत्नी	'स्त्री का नाम' [स०]	राय्	'राय' [स०]
रात्	'रात' [स०]	राज्जा	'राजा' [स०]
राणी	'रानी' [स०]	राहु	'राहु' [स०]
रिच्छ	'रीछ' [स०]	रोणा	'रोना' [क्रि०]
रोग्गी	'रोगी' [स०]	रोग्गण्	'रोगिन' [स०]
र्वालसर	'रिवालसर'[स०]	र्वाज्	'रिवाज' [स०]
र्वाणा	'रुलाना' [क्रि०]	सर्ग	'आसमान' [स०]
सर्म	'शर्म' [स०]	सर्कारी	'सरकारी' [स०]
सम्बन्ध	'सम्बन्ध' [स०]	सम्सान	'शमशान' [स०]
समान	'सामान' [स०]	सगुन्	'सगुन' [स०]
सच्चा	'सच्चा' [वि०]	सच्चाई	'सच्चाई' [भा०वा०स०]
सजा	'सजना, सजा'[स०]	सजणा	'सजना' [क्रि०]
सब	'सब' [वि०]	सभे [सब्भे]	'सभी' [वि०]
सफेद्दी	'सफेदी' [भा० वा० म०]	सच्का	'असली [वि०]
सन्गाह	'सीढी' [स०]	सन्सकार	'सस्कार' [स०]
सन्ख	'शख' [स०]	सत्तोकड	'अधिक सोने वाला' [स०]

सफाई	'सफाई' [स०]	सख़्वाल	'सुविधाएँ' [स०]
साज़्रा	'ताजा' [वि०]	साबूता	'साबुत' [वि०]
साद्गी	'सादगी' [भा० वा० स०]	साह्‌रा	'सहारा' [स०]
सामणे	'सामने' [क्रि०वि०]	साएद	'शायद' [अव्य०]
सारा	'सारा' [वि०]	सिब्जी	'शिवजी' [स०]
सिम्ला	'शिमला' [स०]	सुम्ला	'सीधी तरफ' [ठीक] [वि०]
सुर्ज	'सूर्य' [स०]	सुलै-सुलै	'धीरे-धीरे' [क्रि०वि०
सेप्पूबढी	'मास की बडियाँ' [स०]	सेला	'सर्दी' [स०]
सेक्णा	'तापना' [क्रि०]	सेह्‌रा	'सेहरा' [स०]
सैर	'सैर'[स०]	सैह्‌र	'शहर' [स०]
सैह्‌णा	'सहना' [वि०]	सोला	'सोलह्‌' [वि०]
सौ	'सौ, सोना' [क्रि०वि०]	सौद्‌दावाजी	'सौदागरी' [भा०वा०स०]
सौद्‌दागिरी	'सौदागरी' [भा०वा०स०]	सोह्‌रा	'ससुर, ससुराल'[स०]
स्राध	'श्राद्ध' [स०]	स्वाल	'सवाल' [स०]
स्वाए	'सवा' [वि०]	स्यांद्दी	'सर की मांग' [स०]
स्युन्ना	'सोना' [स०]	सताई	'सताईस, सताना' [वि०]
हजार	'हजार' [वि०]	हठ	'हठ' [स०]
हल्का	'हलका, घटिया' [वि०]	हलचल	'हलचल' [स०]
हनुमान	'हनुमान' [स०]	हल्या	'हत्या'[स०]
हड्ताल्	'हडताल' [स०]	हड्डी	'हड्डी' [स०]
हरा	'हरा' [वि०]	हर्याल्ली	'हरियाली' [भा०वा०स०]
हाल	'हल' [स०]	हात्थ	'हाथ' [स०]
हथ्कडी	'हथकडी' [स०]	हास्सी	'हँसी' [स०]
हाफ्णा	'हाँफना' [क्रि०]	हाथी	'हाथी'[स०]
हात्थण	'हाथिन' [स०]	हाउलें	'धीरे' [क्रि० वि०]
हाक्ख	'आँख' [स०]	हार्ना	'हारना' [क्रि०]
हाय्	'शोक सूचक'[अव्य०]	हाट	'दुकान' [स०]
हाड्कू	'हड्डियाँ' [सं०]	हाऊँ	'मैं' [सर्व०]
हाँ	'हाँ' [अव्य०]	हाँडणा	'चलना'[क्रि०]

हिर्ण	'हिरन' [स०]	हिर्ख्याल्लू	'ईर्ष्या करने वाला' [स०]
ही	'ही' [निश्चय० अव्यय]	ही-ही	'हँसने का शब्द'[स०]
हुकणा	'खेल मे चूकना' [क्रि०]	हुक्म	'हुक्म' [स०]
हुँद्दा	'होता' [क्रि०]	हेठ	'नीचे' [क्रि० वि०]
हेस्सी	'जाति का नाम' [स०]	हे	'आश्चर्य-सूचक शब्द' [अव्य०]
होठ	'होठ' [स०]	होस	'होश' [स०]
होर	'और' [अव्य]	होली	'होली' [स०]

ग्रन्थ-सूची

अग्रवाल, रामेश्वर प्रसाद 1963, बुन्देली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन, रोहिताश्व प्रिंटर्स, लखनऊ।

उप्रेती, मुरारी लाल 1964, हिन्दी मे प्रत्यय विचार, विनोद पुस्तक मदिर, आगरा।

गुरु, कामता प्रसाद 1952, हिन्दी व्याकरण, नागरी प्रचारणी सभा, काशी।

प्रसाद, विश्वनाथ (अनु०) 1968, भाषा (ब्लूम फील्ड) मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, वाराणसी।

बाहरी, हरदेव 1961, हिन्दी कोशो मे उच्चारण सकेतो की आवश्यकता, भाषा, नवम्बर।

भाटिया, कैलाश चन्द्र 1970, हिन्दी भाषा मे अक्षर तथा शब्द की सीमा, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी।

महेन्द्र 1973, हिन्दी भाषा-विज्ञान विशेषांक मे प्रकाशित लेख—'हिन्दी सज्ञा पदबन्ध', हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

मेहरोत्रा, रमेश चन्द्र 1960, हिन्दी मे बलाघात और स्वर लहर, राजर्षि अभिनन्दन ग्रन्थ।

तिवारी, उदयनारायण 1963, भाषा-शास्त्र की रूपरेखा, भारती भण्डार, प्रयाग।

" " हिन्दी के ध्वनिग्राम, हिन्दुस्तानी, इलाहाबाद।

" " 1961, हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, प्रयाग।

" " (अनु०) 1959, भारत का भाषा-सर्वेक्षण, (खण्ड 1, भाग 1) सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग।

" " 1970, भाषा-विज्ञान (साइन्स ऑफ लैंग्वेज), मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, वाराणसी।

तिवारी, भोलानाथ	1961, भाषा-विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद।
” ”	1964, भाषा-विज्ञान-कोश, ज्ञान मंडल लिमिटेड, लीडर प्रेस, वाराणसी।
” ”	1979, हिन्दी भाषा की सरचना, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
” ”	1972, हिन्दी-भाषा, किताब महल, इलाहाबाद।
” ”	1973, हिन्दी ध्वनियाँ और उनका उच्चारण, भारती प्रिंटर्स, दिल्ली।
” ”	1978, आधुनिक भाषा-विज्ञान, लिपि प्रकाशन, भारती प्रिंटर्स, दिल्ली।
तिवारी, भोलानाथ चतुर्वेदी, माणिक लाल, सिंह, भगत	सम्पादक-1972, भारतीय भाषा-विज्ञान की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
निदेशालय, केंद्रीय हिन्दी	1973, हिन्दी भाषा विज्ञान विशेषाक, भारत सरकार, नई दिल्ली।
चाटुर्ज्या, सुनीति कुमार	1957, भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद।
वाजपेयी, किशोरी दास	1959, हिन्दी शब्दानुशासन, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
वर्मा, धीरेन्द्र	1949, हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।
” ”	1954, ब्रज भाषा, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद।
वर्मा, सिद्धेश्वर	1963, अक्षर, भाषा, जनवरी।
वर्मा, सत्यकाम (अनु०)	सैद्धान्तिक भाषा-विज्ञान, मुशीराम मनोहरलाल, दिल्ली।
वर्मा, ब्रजेश्वर तथा राजगोपाल (सम्पा०)	1965, भारतीय भाषाओ का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन, विनोद भण्डार, आगरा।
शास्त्री, मंगल देव	1956, भाषा-विज्ञान, इंडियन प्रेस, प्रयाग।
श्रीवास्तव, रवीन्द्र नाथ	1974, प्रयोजन मूलक हिन्दी, केंद्रीय हिंदी सस्थान, आगरा।
” ”	1972, शैली-विज्ञान और आलोचना की नई भूमिका, केंद्रीय हिंदी-संस्थान, आगरा।
” ”	1973, हिन्दी भाषा-विज्ञान विशेषांक मे प्रकाशित लेक ‘काल और पक्ष,’ हिन्दी निदेशालय, दिल्ली।

सक्सेना, बाबूराम	1972, अवधी का विकास, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद ।
सक्सेना, द्वारिका प्रसाद	1972, भाषा-विज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी भाषा, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, दिल्ली ।
सिंह, कृपाशंकर	1973, भाषा-विज्ञान और भोजपुरी, आदर्श साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ।
Allen, W S	1953, Phonetics in Ancient India, oxford Press, London
" "	162, Sandhi, Mouton & Co, S Gravenhage.
" "	1950-51 'A study in the Anlysis of Hindi Sentence Structure,' Acta Linguistic VI, PP 68-86
Arun, V B.	1961, A Comparative Phonology of Hindi & Punjabi, VVRI 'Press, Hoshiarpur
Abercrombi, D	1956, Problems and Principles in Language Study, London
" "	1966, Elements of General Phonetics, Edinburgh, University Press
Allen J P.B & Buren P.V	1971, Chomsky Selected Readings, cxford University Press, New York
Bloom field, L	1950, Language, New York
Block & Trager	1942, Outline of Linguistic Analysis Baltimore, Md LSA
Balchandran, L B.	1970, A case Grammar of Hindi with special reference to causitive sentences. Ithaca, Cornall University Dissertation
Beams, John	1875, A Comparative Grammer of the Modern Aryan Languages of India, Vol. II, London.
Bhatia, K C.	Consonant sequences in Hindi, Indian Linguistics, Sexena Vol
Chomsky, N.	1965, Aspect of the Theory of Syntax, Cambridge Press MIT Press.

Chatterji, S. K — 1970, The Origin and Development of Bengali Language, George Allen & Unwin Ltd, London

" " — 1960, Indo-Aryan and Hindi, Hindustan Park, Calcutta.

Chaturvadi, M G. — 1969, A Contrastive Study of Hindi-English Stress-Accent, Linguistics, Central Hindi Institute, Agra.

Dineen, F P — 1967, An Introduction to General Linguistics, Holt Rinehart and Winston

Fudge, E C (Ed) — 1973, Phonology, Penguin Book Ltd, Harmodsworth, England

" " — 1969, 'Syllables' J Linguistics, Vol 5, PP 253-86 Argues for 'Generative Phonotactics.'

Francis, W N — 1956, The Structure of American English USA, New York

Firth, J R — 1958, Papers in Linguistics, Oxford University Press, London

Grierson, G A. — 1968, Linguistic Survey of India, Vol IX Part IV, Motilal Banarsidass, Delhi, Varanasi

Gleason, H A — 1961, An Introduction to Descriptive Linguistics, Holt, Rinehart and winston, New York

Hockett, C F — 1958, A Course in Modern Linguistics The Macmillan Co, New York

" " — 1955, A Manual of Phonology, Wavely Press, Baltimore

Hala, B — 1964, Phonetica : 7

Harris, Z S — 1956, Structural Linguistics, University of Chicago Press

Heffner, R M. S. — 1952, General phonetics, University of wisconsion press, Madison.

H. P., Directorate of — 1967, Statistical Outline of H P,

Economics & Statistics Simla. (Source-Census Report of India, 1971)

Hill, A.A. 1958, Introduction to Linguistic Structures, Horcourt Brace & Co Inc, New York

Jones, D. 1967, An outline of English phonetics, W Heffer & Sons Ltd, Cambridge

" " 1967, The phoneme, Its Nature and Use, Heffer, Cambridge

Jakobson, R & Hall, M 1956, Fundamentals of Language, S-Gravenhage

Jesperson, Otto 1964, Language, Its Nature Development and Origin, George Allen & Unwin Ltd, London

Kelkar, A R 1961, Studies in Hindi-Urdu, I Introduction and word phonology, Deccan College, poona

" " 1958, Phonology and Morphology of Marathi, thesis unpublished

Kachru, Y The Syntax of Co-Sentences in hindi-urdu, papers in Linguistics, 2 2, 219-314

" " 1966, An Introduction to Hindi Syntax, Urbana, University of Illinois, USA

Kellog, S H 1893, A Grammar of Hindi Language, Routledge and kegan Paul, London.

Ladefoged, P. 1967, Three Areas of Experimental phonetics, Oxford University press, London

" " 1958, Syllable and Stress, Miscellea phonetica 3 : 1-14

" " 1975, A Course in phonetics, Horcour Brace, Chicago, New York

Langacker, B W. 1967, Language and Its Structure, Horcourt Brace & world, Inc. New York.

Mol, H — 1970, Fundamentals of phonetics, mouton, The hague, paris

Mc Gregor, R S — 1972, Outline of Hindi Grammar, Clarendon press, Oxford

Miltner, V. — 1970, Theory of Hindi syntax Descriptive Generative, Transformational, The hague.

Mathews, P H. — 1974, Morphology . An Introduction to the Theory of Word-Structure, Cambridge University press

Martinet, A — 1949, Phonology as Functional phonetics, London.

Martin, S E — 1952, Morphophonemics of standard colloquial Japanese, Language Dissertation, 47 Baltimore waverly press.

" " — 1954, Korean Morphophonemics, LSA. Baltimore, pp-1-69.

O'Connor, J. D. & Trim — 1953, Vowel, Consonant and syllable.

pike, K L — 1951, Phonetics, The University of Michigan Press

" " — 1954, phonemics, the University of michigan.

postal, M. P. — 1968, Aspects of phonological Theory, Harper and Row, New York.

" " — 1967, Constituent structure . A study of contemporary models of syntatic description, Indiana University, Bloomington, the Hague.

Stetson R. H. — 1951, Motor phonetics, Amerstemdem, North holland, publishing Co

Srivastava, R. N. — 1971, How empty is the Abstract verb (+cause), A case grammar of Hindi causal verb morphology. Proceeding of the first All India conference of linguistics LSA, poona, Dec. pp. 61-76.

Srivastava, R. N. 1968, Theory of monophonematics and Aspirated phonemes of Hindi. Acta linguistica 18. pp. 363-73

" " 1974, Review of syllabic sturcture of Hindi and punjabi, IL 36, 70-79.

" " 1974, Review of practical phonetics. IL. 35, pp. 307-311.

" M. D. 1969, The Element of Hindi grammar, motilal Banarsidass, Delhi.

Singh, J. D. 1970, Descriptive grammar, of Bangru Kurukshetra University, kurukshetra.

" " 1971, 'Hindi verb conjugation,' Indian linguistics, XXXII pp-81-90.

Sharma, Nanak Chand 1968, Origin and Developmet of Hariyanavi Dialect VVRI Hoshiarpur

Spir, E 1949, Language, Horcourt Brace & Co; New York.

Saussure, F. D 1960, Course in general linguistics, peter owen ltd, london.

Shama, A. 1958, A Basic grammar of modern Hindi Ministry of Education, Govt of India.

Sharma, U S. 1972, The phonolgy and Morphology of Jaunsari, Ph D Theis, University of Delhi, deptt. of Linguistics, Delhi.

Twaddell, W. E 1935, 'On Defining the phoneme'. Language monographs, published by the LSA, Vol. XXI.

Trubetzkoy, N.S. 1969, principles of phonology, university of californi press.

Verma, Siddheshwar. 1973, Linguistic Survey of India, A Summary part II, VVRI, hoshiarpur.

" " 1929, Critical Studies in the phonetic Observations of Aneient Indian grammarians, R A S London.

Verma, M. K. 1966, A Synchronic Comparative study of the Noun phrase in English and Hindi, Annurbna